सिन्योर मुसोलिनी (Signor Mussolini)

कला पुस्तक माला का पंचम-पुष्प

राष्ट्रनिर्माता
मुसोलिनी

लेखक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

भारती साहित्य मन्दिर, देहली

(मूल्य तीन रुपया)

सोल एजेंटस:—
एस. चांद ऐण्ड कम्पनी
चांदनी चौक, देहली।

प्रथम वार

ता० १ दिसम्बर सन् १९३७ ई०

मुद्रक—
नेशनल प्रिंटिंग ऐंड पब्लिशिंग हाउस
गली कासिमजान, बल्लीमारान,
देहली।

उपहार

श्रीयुत [illegible]

को सादर भेंट

चन्द्रशेखर शास्त्री

१२. ८. ३८.

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

के

नवयुवक प्रेमियों

को

समर्पित

प्रस्तावना

आज यूरोप की राजनीति में इटली का स्थान अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण है। गत महायुद्ध में महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त करने पर भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान की कमी के कारण जिस इटली की वरसाई की सन्धि-परिषद् में उल्लेखनीय उपेक्षा की गई थी, आज वही इटली अपने नेता मुसोलिनी की कर्मशीलता के कारण ससार भर की राजनीति का केन्द्र बन गया है।

आज इटली की ओर आस्ट्रिया और जर्मनी की निगाह लगी रहती है। यह देश इटली को अपने गुरु के समान मानते हैं। संसार भर के अधिनायक डी० वेलेरा, कमालपाशा और हिटलर आज मुसोलिनी के ही पदचिन्हों पर चल रहे हैं।

आज लन्दन, पेरिस, मास्को, बर्लिन और वाशिंगटन राजनीति के केन्द्र नहीं रहे; उनके स्थान में आज संसार भर की राजनीति रोम में केन्द्रित होगई है। आज मुसोलिनी की भावभंगी पर सभी दृष्टि लगाए हुए हैं। उसकी पदध्वनि एवं गर्जना की उठती ध्वनि से आज संसार भरके शासक कांप उठते हैं। यद्यपि सभी उसके विरोधी हैं और सभी उसका बहिष्कार करना चाहते हैं, किन्तु उनको बराबर हार मान मान कर बारबार उसके सामने सिर झुकाना पड़ता है। राष्ट्रसंघ की बहिष्कार की आज्ञा इस बात का ताजा प्रमाण है। अतएव यह आवश्यक था कि हिन्दी के राजनीति

के विद्यार्थियों के सन्मुख उस महापुरुष के जीवन को विस्तार से उपस्थित करके यह दिखलाया जाता कि उस पुरुष ने एक सामान्य लुहार का पुत्र होते हुए भी किस प्रकार ऐसी भारी उन्नति करके इटली को वास्तव में ही एक सम्माननीय राष्ट्र बना डाला ।

इस ग्रन्थ मे मुसोलिनी के चरित्र के साथ २ इटली का भी अथ से लेकर इति तक का सम्पूर्ण इतिहास संक्षेप में दिया हुआ है। पाठक उसमें देखेंगे कि रोमन काल मे एक प्रबल शक्ति होते हुए भी इटली की जनता में राष्ट्रीय भाव उत्पन्न नहीं हुए। वास्तव में विश्व-विजयी रोमन सम्राटों के पतन का यह एक बड़ा भारी कारण था। रोमन सम्राज्य के पतन पर तो इटली की दशा इतनी बुरी होगई थी कि वह उन्नीसवीं शताब्दी तक बराबर विदेशियों का उसी प्रकार दास बना रहा, जिस प्रकार कई शताब्दियों से हम भारतवासी बने हुए हैं। पाठक इस ग्रन्थ में इटली के तत्कालीन इतिहास में देखेंगे कि उस समय इटली में राष्ट्रीय भावना तो कैसी, वह लोग अपने ही भाइयों के विरुद्ध विदेशियों को सहायता दिया करते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी को इटली का नवीन युग कहना चाहिये। इसमें इटली ने मत्सीनी (मैज़िनी), गारीबाल्डी और कावूर जैसे तीन देश भक्तों को उत्पन्न किया। इन तीनों के अनवरत परिश्रम के फलस्वरूप इटली सन१८७० ई० में विदेशियों के पंजे से पूर्णतया छूट कर एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। किन्तु इस स्वतंत्रता में भी इटलीवासियों का कोई विशेष हाथ न होकर उपरोक्त तीनों महानुभावों का ही विशेष परिश्रम था। इटली की जनता में अब भी राष्ट्रीय भावों का एक-

दम अभाव था। बीसवीं शताब्दी आई, इटली ने महायुद्ध में भाग लिया, इटालियन सैनिकों ने महायुद्ध में अपनी वीरता का अद्भुत परिचय दिया, किन्तु यह सब होते हुए भी इटली में राष्ट्रीय भावों का उदय न हुआ।

महायुद्ध के पश्चात इटली में फासिस्ट पार्टी का जन्म हुआ और उसके पश्चात् अढाई तीन वर्ष में ही वहां का शासनसूत्र फासिस्टों के प्रधान नेता मुसोलिनी के हाथ में आ गया। कुछ समय तक तो मुसोलिनी को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, किन्तु उसने अपने दृढ़ निश्चय और कर्तव्यशीलता से उन सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके इटली को फिर उसके प्राचीन इतिहास के अनुरूप सर्वोच्च-अलंकृत-आसन पर जा बिठलाया। उसने सारे राष्ट्र का इस प्रकार संगठन किया कि उसमें देशभक्ति—राष्ट्रीयता की भागीरथी की पवित्र धारा बहने लगी, जिससे इटालियन राष्ट्र अत्यन्त बलवान और समृद्ध हो गया। उसके इसी गुण के कारण हमने उसको इस ग्रन्थ में 'राष्ट्रनिर्माता' नाम से स्मरण किया है।

आज मुसोलिनी के दृढ़ अध्यवसाय के कारण इटली के पास बड़े २ उपनिवेश हैं और भूमध्यसागर में इंगलैण्ड के साथ उसका भी अक्षुण्ण प्रभाव है।

आज संसार भर में स्वतंत्रता की धारा के तीन रूप हैं—

पार्लमेंटवाद, साम्यवाद और फ़ासिस्टवाद (अथवा नाज़ीवाद)। ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका को पार्लमेंटप्रणाली का आदर्श

समझा जाता है। किन्तु बीसवीं शताब्दी और विशेषकर गत यूरोपीय महायुद्ध ने सिद्ध कर दिया कि पार्लमेंटवाद भी पूंजीवाद का ही दूसरा नाम है और उससे जनता को शान्ति नहीं मिल सकती। इसके अतिरिक्त पार्लमेंटवाद इगलैंड के अतिरिक्त और कहीं सफल भी नहीं हुआ। फ्रांस में तो १९१८ से १९३४ तक के१६ वर्ष में किसी भी मंत्री-मंडल का औसत कार्यकाल आठ माह पच्चीस दिन से अधिक नहीं रहा।

पूंजीवाद के भयंकर से भयंकर रूप की प्रतिक्रिया का स्वरूप साम्यवाद है। यह सन् १९१७ में रूस में प्रगट हुआ था। यद्यपि रूस में आरम्भ में इसके सिद्धान्तों के अनुसार अक्षरशः आचरण किया गया, किन्तु सन् १९२१ में व्यक्तिगत सम्पत्ति के अत्यन्ताभाव को अव्यवहार्य समझ कर उस सिद्धान्त में कुछ परिवर्तन किया गया। इस समय लेनिन ने अपने सिद्धान्त के विरुद्ध व्यक्तिगत व्यापार की स्वीकृति भी दे दी। रूस की शासन-प्रणाली की विशेषता वहां की सोविएट संस्थाएं थीं। किन्तु स्टालिन ने उस शासनप्रणाली को भी अव्यवहार्य समझ कर फिर प्रतिनिधि-सत्तात्मक शासनप्रणाली प्रचलित करके दो धारा सभाएं बनाईं। यद्यपि साम्यवादी लोग इस शासनविधान को आदर्श शासन-विधान कह कर स्टालिन की प्रशंसा के पुल बांधा करते हैं, किन्तु हमारी सम्मति में यह साम्यवाद के ऊपर पार्लमेंटवाद की स्पष्ट विजय है। क्यों कि इससे प्रगट होता है कि स्टालिन ने अव्यवहार्य होने के कारण ही सोविएट शासनप्रणाली का त्याग करके नवीन शासनप्रणाली को अपनाया है।

इन सब के विरुद्ध फ़ासिस्टवाद मध्यम मार्ग है। यह जनता को न तो पूंजीपतियों के अत्याचारों और शोषण का शिकार ही बनने देना चाहता है और न एक दम श्रमिक राज्य को ही पसंद करता है। इसमें धनी और निर्धन दोनों कन्धे से कन्धा भिड़ा कर आपस में प्रेमभाव से राष्ट्रनिर्माण का कार्य करते हैं। यह कहना अभी समय से पूर्व होगा कि यह प्रणाली अपने उच्च व्यक्तित्व वाले संचालकों (हिटलर और मुसोलिनी) के व्यक्तित्व के कारण फल फूल रही है अथवा इसका कारण इसके सिद्धांतों की सुंदरता है। इनमें से पहिली बात से तो किसी प्रकार इंकार नहीं किया जा सकता। रही दूसरी बात सो उसके असली नक्शे का साम्यवादी लोग पता नहीं लगने देते। वह फ़ासिज्म के द्वेष के कारण उसके सम्बन्ध में ऐसी २ भ्रमात्मक बातों का प्रचार करते रहते हैं कि अच्छे से अच्छा बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ भी उनको सुन कर चक्कर में पड़ जाता है।

आज भारतवर्ष भी राष्ट्रनिर्माण के लिये तयार खड़ा है। यह दिखलाई दे रहा है कि उसकी परतन्त्रता-रूपी-काल रात्रि का यह अन्तिम प्रहर है। आशा के अरुण के प्रगट होने से हृदय में उत्साह की तरंगें हिलोरें मार रही हैं। अब यदि कमी है तो केवल स्वतन्त्रता के बालसूर्य के प्रगट होने मात्र की ही है। किन्तु यह हमको अभी से निर्णय करना होगा कि हम उस स्वतन्त्रता देवी को पार्लमेंटवाद, साम्यवाद अथवा फ़ासिस्टवाद में से किस के परिधान में देखना चाहेंगे। हमारी राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस

बहुत समय पूर्व पार्लमेंटवाद के पक्ष में अपनी सम्मति दे चुकी है। इधर आधुनिक भारत के नवनुवक ऋषि राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू साम्यवाद अथवा समाजवाद का शंखनाद कर रहे हैं। सेगांव का महान् सन्त इस परिस्थिति के विषय में कुछ भी राह प्रदर्शित न कर राजनीतिक संन्यास लेकर सेगांव में धूनी रमा रहा है। ऐसी परिस्थिति में भारत के नवयुवक समाज-वाद के नाम की चकाचौंध से दीवाने होकर अधकचरा अध्ययन होते हुए भी समाजवाद के सुर में सुर मिला कर फ़ासिज्म को हज़ार ज़बान से कोसते हुए स्टालिन का गुणानुवाद कर रहे हैं। वह यह भूल जाते हैं कि यूरोपीय रक्त की विशेषताएं सभी यूरोपियनों में एक सी होती हैं। वह हिटलर और मुसोलिनी के हत्याकांडों की निन्दा करते हैं और सोविएट रूस और विधान के नाम पर किये हुए स्टालिन के हत्याकांडों को भूल जाते हैं। वह यह नहीं जानते कि यूरोप की विशेषता निर्दयता तथा क्रूरता और भारत की विशेषता धर्मयुद्ध है। हम पिछले २० साल के अन्दर हिटलर और मुसोलिनी के अत्याचारों के ही समान सोविएट के नाम पर रूस में रक्त की नदियां बहती हुई देख चुके हैं। हम संसार भर के लगभग सभी देशों में साम्यवादियों के गुप्त संगठन द्वारा सैकड़ों ही नहीं, वरन् सहस्रों हत्याओं का रोमांचकारी वर्णन पढ़ चुके हैं। साम्यवादियों ने अपने विरोधियों के गढ़ जर्मनी और इटली तक में पर्याप्त गुप्त हत्याएं कीं। स्वयं हिटलर और मुसोलिनी तक को शिकार बनाने का यत्न किया गया,

किन्तु वह अपने भाग्य अथवा अपने देशवासियों के भाग्य से बराबर बचते ही गए। हम ऐबीसीनिया और स्पेन के निहत्थों पर बम वर्षा की जाने की निन्दा करते है, किन्तु अन्य देशों में उसी से मिलते जुलते दृश्य को शांति से देख लेते हैं। हम इस बात को एक दम भूल जाते हैं कि कौरव पांडवों के जैसा धर्म-युद्ध केवल भारत भूमि में भारतवासियों के द्वारा ही संभव है; यूरोपवासियों के द्वारा तो वह एकदम असम्भव है। पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिये कि क्रूरता के विषय में हिटलर, मुसोलिनी अथवा स्टालिन सभी भाई २ हैं, उनमें कम कोई नहीं है। उन सभी के क्रोध से बचते रहने में ही कुशल है।

अस्तु, इस प्रकार समाजवाद और फ़ासिस्टवाद के अन्दर पक्षपात रहित होकर हमको यह सोचना चाहिये कि हमको अपनी भावी शासनपद्धति में किसको अपनाना है।

मेरी तुच्छ सम्मति में भारत-वसुन्धरा समाजवाद के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है। साम्यवाद अथवा समाजवाद अभी अभ्यास-कोटि में हैं। स्वयं रूस में ही उसके रूप के पश्चात् रूप बदलते रहे हैं। फिर भला धर्मप्रधान भारत देश में यह वर्गयुद्ध वाला आंदोलन किस प्रकार शांति स्थापित कर सकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि फ़ासिस्टवाद में भी डिक्टेटरशाही और सैनिकवाद यह दो तत्त्व अग्राह्य हैं। यदि फ़ासिस्टवाद में से इन दोनों तत्त्वों को प्रथक् कर दिया जावे तो शेष विशुद्ध राष्ट्रीय समाजवाद (National Socialism) बच रहता है।

किन्तु एक बात और भी मजे की है। हम फ़ासिज्म में डिक्टेटरशाही और सैनिकवाद की निन्दा करते हैं, किन्तु यह दोनों तत्त्व साम्यवादी तथा पार्लमेंटवादी दोनों ही प्रकार के देशों में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं। आज संसार की शास्त्रास्त्रों की होड़ में साम्यवादी रूस जर्मनी और इटली से भी आगे बढ़ कर सैनिकवाद का उपासक बना हुआ है। विश्वशान्ति के देवदूत ब्रिटेन और अमेरिका भी आज इस दौड़ में आगे निकल जाने का उद्योग कर रहे हैं। रूस ने तो सारे संसार को फ़ासिस्टों फ़ासिस्ट-विरोधी दो विभागों में बांट कर फासिस्ट-विरोधी सभी शक्तियों को एक ही स्थान में एकत्र करके पापुलर फ्रांट बनाने का आन्दोलन करना आरंभ कर दिया है। भारतवर्ष में भी यह पापुलर फ्रांट का आन्दोलन बड़े भारी रूप में चलाया जा रहा है। इस आन्दोलन के सूत्रधार यह भूल जाते हैं कि डिक्टेटरशाही और सैनिकवाद के विषय में साम्यवाद अथवा फ़ासिस्टवाद दोनों में से कोई भी कम नहीं है। साम्य-वादियों और फासिस्टों दोनों का ही यह विश्वास है कि "राजनीतिक समस्याएं वाद विवाद से तय नहीं की जा सकतीं, अल्पसंख्यकों को कोई संरक्षण नहीं मिलन चाहिये और बल की अपेक्षा तर्क से काम लेना मूर्खता है।" इस समय साम्यवादी अथवा फासिस्ट सभी डिक्टेटर भूतपूर्व ज़ार सम्राटों अथवा पोप के समान निरंकुश सत्ता-धारी हैं। सारांश यह है कि सैनिकवाद और डिक्टेटरशाही के विषय में फासिस्टों और फासिस्ट-विरोधियों में कोई अन्तर नहीं है।

फासिस्टों और फ़ासिस्ट-विरोधियों की नीति में सब से बड़ा अन्तर यह है कि फ़ासिस्ट कूटराजनीति को पसन्द न कर स्पष्टवादिता से काम लेते हैं। वह अपनी आवश्यकता को स्पष्ट शब्दों में रख कर अपनी सेना की ओर संकेत कर देते हैं, किन्तु उनके विरोधी शान्ति के ढोल पीट २ कर सैनिक तयारी किये जाते हैं। इसी लिये फ़ासिस्ट बदनाम हैं और उनको संसार की शान्ति का शत्रु समझा जाता है, जब कि उनके विरोधियों की सैनिकवृत्ति और डिक्टेटरशाही की उपेक्षा करके उनको शान्ति का देवदूत समझा जाता है।

भारतीय राजनीति के विद्यार्थियों को इन सब बातों पर सूक्ष्मदृष्टि से विचार करके भारत को किसी भी यूरोपीय सिद्धान्त के पीछे न बांध कर भारत की परिस्थिति के योग्य महात्मा गान्धी की सम्मति के अनुसार नवीन मार्ग खोजना चाहिये। यूरोपीय राजनीति अध्ययन की वस्तु है, अनुकरण की नहीं। उससे हम ·इतिहास और राजनीति में शिक्षा लेकर अपने देश में की जाने वाली गलतियों से बच सकते हैं। किन्तु राष्ट्र-निर्माण के रचनात्मक कार्य के लिये तो हमको सेगांव के सन्त के चरणों में बैठ कर ही आशीर्वाद प्राप्त करना होगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ में मुसोलिनी के चरित्र का वर्णन करके हमारा हिटलर और मुसोलिनी दोनों के चरित्र को लिखने का संकल्प पूरा हो गया है। पाठक देखेंगे कि हिटलर और मुसोलिनी में अनेक बातों की समानता है—

१. दोनो ही निर्धन कुलों में उत्पन्न हुए थे।

२. दोनों महायुद्ध में सामान्य सैनिक के रूप में सम्मिलित हुए थे।

३. दोनों ही वरसाई की सन्धि के प्रबल विरोधी हैं।

४. दोनों का आन्दोलन वरसाई की सन्धि की प्रतिक्रिया है।

५. दोनों को ही शान्ति की अपेक्षा भुजाओं में अधिक विश्वास है।

६. दोनों के संकेत पर लाखों सैनिक आकर कट और मर सकते हैं।

७. दोनों ने ही अपने २ देश को छोटी स्थिति से उठा कर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया है।

८. साम्यवाद तथा कूटनीति से दोनों ही घृणा करते हैं।

९. दोनों अब तक बराबर उन्नति करते जाते हैं।

१०. दोनों के ही राजनीतिक सिद्धान्त प्राय: एक से हैं।

११. दोनों ही रहन सहन और खानपान में सादे हैं।

इन दोनों महानुभावों में इतनी बातें समान होने के अतिरिक्त कुछ अपनी २ विशेषताएं भी हैं।

हिटलर बालब्रह्मचारी है। उसके हृदय में स्त्री-प्रेम के लिये स्थान नहीं है; जब कि मुसोलिनी विवाहित है और उसके बाल-बच्चे भी हैं। गत वर्षों के अनुभव से स्पष्ट है कि हिटलर शस्त्र बिना उठाए केवल धमकी से ही काम बना लेता है, जब कि मुसोलिनी को प्राय: शस्त्र उठाना पड़ जाता है। जर्मनी के पास इटली की अपेक्षा विज्ञान और कच्चा माल अधिक है। राजनीतिज्ञों का कहना है कि मुसोलिनी गुरु है और हिटलर शिष्य

है। किन्तु आज विज्ञान और कोयले की बदौलत शिष्य गुरू जी से बाज़ी ले जाता हुआ दिखलाई दे रहा है। इत्यादि इत्यादि।

महापुरुषों का इस प्रकार का विश्लेषणात्मक वर्णन न केवल अध्ययन को गम्भीर करता है, वरन् इससे निर्णय-शक्ति को भी अच्छी सहायता मिलती है।

हमने इस ग्रंथ में फ़ासिस्टवाद को मुसोलिनी के शब्दों में रखते हुये भी अपने दृष्टिकोण को स्थान २ प्रगट कर दिया है। यद्यपि इसमें मुसोलिनी की प्रशंशा है, किन्तु उसके दुर्गुणों को भी छिपाने का यत्न नहीं किया गया है। यह अवश्य है कि साम्यवादियों के समान केवल छिद्रान्वेषण का ही कार्य नहीं किया गया है।

अब वर्तमान ग्रन्थ के विषय में दो शब्द और भी कह देने चाहियें। यह हिन्दी का दुर्भाग्य है कि उसमें विद्वानों की बहुत कमी है। हिन्दी के पाठक तथा लेखक प्रायः अल्प अध्ययन के बल पर ही हिन्दी जगत् पर शासन करना चाहते हैं। शोध (Research) की रूपरेखा का तो उनमें से अनेक को आभास तक नहीं है। इसीलिए वह हिन्दी के किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय ग्रंथ को देखते ही फ़ौरन उसको अनुवाद कह डालते हैं। उनको यह पता नहीं है कि इस प्रकार के ग्रंथ गम्भीर शोध से तयार किये जाते हैं और इस शोध का आधार इंगलिश अथवा हिन्दी आदि सभी भाषाओं के ग्रन्थकारों के लिये एकसा होता है।

हिन्दी वालों की दृष्टि में विदेशी भाषाओं में लिखना अथवा

विदेशों में हो आना ही मौलिकता है। उनको पता नहीं कि भारत में रहने वाले अधिकांश यूरोपवासी भी राजनीति के उन गम्भीर तत्वों से अपरिचित हैं, जिनका इस ग्रंथ में वर्णन किया गया है। ऐसे उत्तरदायित्वशून्य समालोचकों तथा पाठकों के लिये ही इस ग्रंथ के अन्त में उस सामग्री का कुछ आभास दिया गया है, जिसके आधार पर इस ग्रन्थ की रचना की गई है। वास्तव में शोध के कार्य में केवल शोध को ही उपस्थित किया जा सकता है, उसकी अधारभूत सामग्री के यथार्थ रूप को तो सर्वांश में उपस्थित किया ही नहीं जा सकता।

अनेक पाठक तथा समालोचक हमारे उच्चारणों पर भी चौंकेंगे। किन्तु इटली के प्रचलित नामों के उच्चारणों को कई २ बार भारत-स्थित अनेक इटालियनों से पूछ २ कर मालूम करने पर हमको पता चला कि इटालियन उच्चारण की पद्धति इंगलिश उच्चारण से एक दम भिन्न है। वास्तव में इटालियन नामों का उच्चारण इंगलिश ढंग से करने से हम उन नामों के वास्तविक उच्चारण से बहुत दूर भटक गए हैं। अपने पाठकों की सुविधा के लिए हमने कुछ ऐसे उच्चारणों की तालिका इस ग्रन्थ के आरम्भ में दे दी है।

आशा है कि हिन्दी के पाठक इस ग्रंथ को हमारे पिछले ग्रंथ 'हिटलर महान्' से भी अधिक अपनावेंगे।

नं० ८११ धर्मपुरा, देहली। }
१—१२—१९३७ } चन्द्रशेखर शास्त्री

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री M. O. Ph., H. M. D.,
काव्य-साहित्य-तीर्थ-आचार्य, प्राच्यविद्यावारिधि, आयुर्वेदाचार्य,
भूतपूर्व प्रोफ़ेसर बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी ।

कुछ नामों के शुद्ध उच्चारण

	इंगलिश आधार का अशुद्ध उच्चारण	शुद्ध इटालियन उच्चारण
Aloisi	अलायसी	ऐलोईज़ी
Arnoldo	ऐरनोल्डो	आरनोल्डो
Badoglio	बैडोगलिओ	बदोल्लिओ
Baron Aloisi	बैरन अलायसी	बैरन ऐलोईज़ी
Bologna	बोलोग्ना	बोलोञ्या
Cavour	कैवर	कावूर
Ciano	सियानो	चानो
Count Ciano	काउंट सियानो	काउंट चानो
Dalmatia	डैलमेशिया	डलमाशिया
D' Annunzio	डी. ऐननज़िओ	दनुनसिओ
Dante	डैन्टे	दान्ते
Emmanuel	एमैनुएल	एमानुएल
Garibaldi	गैरीबाल्डी	गारीबाल्डी
Genoa	जिनोआ	जेनोआ
Giolitti	जिओलिटी	ज्योलीटी
Grandi	ग्रैण्डी	ग्राण्डी
Graziani	ग्रेज़िआनी	ग्रैज़ियानी
Marseilles	मारसीलीज़	मारसेल्स
Mazzini	मैज़िनी	मत्सीनी
Milan	मिलान	मिलन

Naples	नेपिल्स	नेपुल्स
Parma	पैरमा	पारमा
Pavone	पैवोन	पैवोने
Piave	पाएवे	पिआवे
Piedmont	पीडमांट	पिएडमांट
Popalo D' Italia	पोपोलो डी इटैलिया	पोपोलो डीटैलिया
Reichstag	रीश स्टाग	राइक्स्टाग
Romogna	रोमोग्ना	रोमोञ्ञा
Ronchi	रांची	रौंशी
Savoy	सैवाय	सेवाय
Signor	साइनर	सिन्योर
Starace	स्टैरेस	स्ताराचे
Suvitch	सूवीच	सूविच
Teruzzi	टेरूजी	तेरुत्सी
Trieste	ट्रीस्टे	ट्रिएस्टे
Venetia	विनीशिया	वेनेशिया
Versailles	वरसेलीज़	वरसाई
Vienna	वीना	विएना

नोट—अंग्रेजी आधार का मतलब यह नहीं है कि इंगलैंड में भी इन शब्दों का उच्चारण यही किया जाता है और न इटालियन आधार का यह अभिप्राय है कि उस उच्चारण से और कहीं काम नहीं लिया जाता। नगरों के नाम तो प्रायः सारे यूरोप में एकसे ही हैं।

विषयानुक्रमणिका

राष्ट्रनिर्माता
मु सो लि नी

प्रथम अध्याय

इटली का प्राचीन इतिहास

प्राकृतिक वर्णन—यूरोप के मानचित्र में इटली सबसे दक्षिण की ओर भूमध्य सागर के किनारे पर है। इसका आकार बूट जूते से कुछ मिलता जुलता है। इसके उत्तर में स्वीजरलैण्ड और आस्ट्रिया, पूर्व में ऐड्रियाटिक समुद्र, दक्षिण में भूमध्य सागर और पश्चिम में भूमध्यसागर तथा फ्रांस देश हैं। भूमध्य सागर के कनारे होने से यहां का जलवायु यूरोप के सब देशों से अच्छा है। यहां के लोग बड़े कला-प्रिय होते हैं। घरों को चित्रों और मूर्तियों से सजाते तथा गायन प्रेमी होते हैं। यहां का प्राय: प्रत्येक मनुष्य गाना तथा बजाना जानता है। देश की सुन्दरता के कारण ही सम्भवत: यह लोग सुन्दरता के उपासक हो गये हैं।

इटली का उत्तरी भाग लम्बार्डी का मैदान कहलाता है। यहां पो नदी की घाटी गंगाजी की घाटी के समान उपजाऊ है। अत:

हरा-भरा होने के कारण यह देश 'यूरोप का उद्यान' कहलाता है। यहां चावल, मक्का, अंगूर (जिनसे शराब बनाई जाती है) और शहतूत (जिनसे रेशम के कीड़े पाले जाते हैं) बहुत पैदा होते हैं। मिलन नगर में रेशम काम बहुत अधिक होता है।

इटली के दक्षिण भाग में ऐपेनाइन पर्वतमाला फैली हुई है। यह प्रायः ज्वालामुखी है । सबसे बड़ा ज्वालामुखी विसूवियस नेपल्स नगर के पास है । यहां अब भी प्रायः भूकम्प होते और भारी हानि होती रहती है। यहां के निवासी प्रायः किसान हैं ।

मध्य इटली के पश्चिमी किनारे पर रोम का प्रसिद्ध नगर है। जो दो हजार वर्ष पूर्व भी रोम साम्राज्य की राजधानी था। इसके अतिरिक्त जिनोआ, नेपल्स, फ्लोरेंस और ब्रिंडसी आदि अन्य प्रसिद्ध नगर तथा बन्दर हैं ।

दक्षिण में दो बड़े द्वीप सिसली और सार्डीनिया भी इटली के आधीन हैं। सिसली की भूमि बड़ी सुन्दर और उपजाऊ है। इसी के उत्तर में ग्यारह सहस्र फीट ऊंचा एटना नामका ज्वालामुखी है। सिसली में नारंगी आदि फल होते हैं । सार्डीनिया पहाड़ों और जंगलों से ढका है। यहां एक प्रकार की मछली पकड़ी जाती है ।

इटली का प्राचीनतम इतिहास

समृद्धि और पतन के दृश्य रोम के समान पृथ्वी के और बहुत कम नगरों ने देखे हैं। एक समय इटली और यूनान उन्नति के शिखर पर पहुंचे हुए थे। उनके बल, ऐश्वर्य और सामर्थ्य को देखकर अन्य देशों का कलेजा दहलता था। उस समय इटली और

यूनान यूरोप के अन्य देशों के गुरु थे। विज्ञान, गणित, काव्य, चित्रकारी, शिल्प और संगीत आदि अनेक विद्याएं अन्य देशों ने इटली और यूनान से ही सीखी थीं। किन्तु फूट देवी के प्रभाव से इन देशों का ऐश्वर्य नष्ट होकर यह भी भारतवर्ष के समान अनेक शताब्दियों तक पराधीन बने रहे। किन्तु कालचक्र के कारण इन दोनों ही देशों पर स्वतन्त्रता देवी प्रसन्न हुई और उनके कष्ट दूर। इस अध्याय में इटली के उसी प्राचीन वैभव का कुछ पृष्ठों में वर्णन करने का यत्न किया जावेगा।

रोम के इतिहास का आरम्भ ईस्वी सन् के ८०० वर्ष पहिले से होता है। इस समय उत्तर इटली में पो नदी की घाटी के आस पास केल्ट जाति से मिलते हुए कुछ लोग रहते थे। उन्हीं लोगों में लिगूरियन और यूट्रस्कन जाति के लोग भी थे। दक्षिण प्रायद्वीप में इटैलियन लोग थे; जिनमें अम्ब्रियन, सेमनाइत और लैटिन आदि जातियां थीं।

रोमनगर की स्थापना

लैटिन जाति प्रायद्वीप के दक्षिण में टाइबर नदी के मुहाने के पास खेती का काम करती थी। यहीं पर सात छोटी २ पहाड़ियों के बीच में एक नगर की उत्पत्ति हुई, जिसका नाम रोम रक्खा गया। रोमन लोगों ने इसकी उत्पत्ति के विषय में एक कथा बनाई है। उसके अनुसार रोम के पास ही अल्बा नामक नगर में रोम्यूलस और रेमो नामक दो भाई थे, जो वहां के राजा की भतीजी के पुत्र थे। राजा ने इन दोनों को टाइबर नदी में फेंकवा दिया, किन्तु यह भाग्यवश किनारे पर जा लगे। वहां उनको एक भेड़िया ले गया।

और पालता रहा। फिर यह एक गडरिये के हाथ पड़ गये। उसकी स्त्री ने ही उनके नाम रक्खे और उनको पाला। बड़ा होने पर इन्होंने वहां के क्रूर राजा को मार कर अपने नाना को गद्दी पर बिठाया और अपने लिये टाइबर नदी के किनारे एक स्वतन्त्र नगर बसाया। इसी समय इन दोनों भाइयों में झगड़ा हो जाने से रेमो मारा गया। रोम्यूलस ने इस नगर का नाम रोम रक्खा और वही इसका पहला राजा हुआ। उसने अपने पास बसने वाली लैटिन जाति को पराजित करके कई छोटे २ ग्रामों को रोम के राज्य में मिलाया। उसने ७५३ ईस्वी पूर्व से ७१६ ईस्वी पूर्व तक राज्य किया। उसके पीछे उसी के वंश के सात राजा और हुए। जिन्होंने ५१० ई० पू० तक राज्य किया। इनके समय में रोम में नियम्त्रित शासन प्रथा का आरम्भ हुआ। इस समय राजा की सहायता के लिये राज्य के सौ मुखियाओं की एक परामर्श समिति तथा नागरिकों की एक बड़ी सभा बनाई गई। सातवें राजा सुपर्बस के दुराचारी और क्रूर होने के कारण जनता ने उसको ५१० ई० पू० में गद्दी से उतार कर भविष्य में किसी को राजा न बनाने की प्रतिज्ञा की। राजा सुपर्बस ने सेना लेकर इस प्रजातन्त्र पर चढ़ाई की, किन्तु उसको पराजित होकर भागना पड़ा।

रोम के इस प्रजातंत्र में राजा के स्थान में दो मैजिस्ट्रेट नियत किये गये। जो 'कौन्सल' अथवा 'प्रीटोर' कहलाते थे। उनका कार्य-काल केवल एक वर्ष होता था। वह अपने समय के अनियंत्रित शासक होते थे।

इन रोमनों में जन्म के अनुसार दो श्रेणियां थीं। एक धनवानों तथा उच्च वंश वालों की, जो प्ट्रीशियन अथवा सरदार कहलाते थे; दूसरी साधारण लोगों की, जो प्लेबियन कहलाते थे। कोई भी प्लेबियन कौंसल का पद प्राप्त नहीं कर सकता था। युद्ध में जीती हुई भूमि भी उनको नहीं मिलती थी। साथ ही ऋण के कठोर नियमों के कारण उनको समय पर ऋण न चुका सकने से ऋणदाता का दास भी बनना पड़ता था। यह लोग मैजिस्ट्रेट अथवा धर्मोपदेशक का पद भी प्राप्त नहीं कर सकते थे। इस सामाजिक असमानता के कारण प्लेबियन लोगों ने आन्दोलन किया और ४९४ ई० पू० में अपना एक स्वतन्त्र नगर भी बनाया। इनके झगड़े कई शताब्दियों तक चलते रहे। इस बीच में इनके अधिकार बराबर बढ़ते गए।

सन् ४५१ ई० पू० में रोमन लोगों ने अत्यन्त परिश्रम करके अपने तत्कालीन कानूनों को क्रमबद्ध संग्रह करके प्रकाशित किया। इस कानून संग्रह में धीरे-धीरे सुधार होते गये और इसी के आधार पर आगे चल कर यूरोप के अन्य देशों ने अपने-अपने कानून बनाये।

ईस्वी सन् के लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व इन दोनों श्रेणियों की असमानता पूर्णतया दूर हो गई।

रोमनों की विजय

पूर्णतया व्यवस्थित होने पर रोमन लोगों ने आस-पास के लोगों को जीतना आरम्भ किया। उन्होंने उत्तर की यूट्रस्कन जाति

और दक्षिण की कई जातियों को जीता। किन्तु ३७० ई० पू० में गाल लोगों ने रोमनों को भारी पराजय देकर रोम को खूब लूटा और उसके सीनेटरों को मार डाला। अन्त में वह रोमनों से एक सहस्र सुवर्ण मुद्रा लेकर अपने देश को लौट गये।

इसके बाद रोमनों ने राज्य को फिर नये सिरे से बसाया। इस समय उन्होंने कई एक उपनिवेश बसा कर आस-पास की अनेक रियासतों को जीता। इस बार यह इतने प्रबल हो गये थे कि गाल लोगों को भी इनसे पराजित होकर भागना पड़ा।

सेमनाइत युद्ध

इस समय इटली में सेमनाइत जाति रोमनों की प्रतियोगिता करना चाहती थी। उसने कुछ काल के लिये एक दूसरा रोम नगर भी बसाया था। किन्तु सुला की निष्ठुर तलवार के नीचे उसको भी नष्ट होना पड़ा (सन ३४३-३४१ ई० पू०) । इस विजय के कारण रोमनों ने कैम्पेनिया में अपना अधिकार कर लिया। ईसा पूर्व ३३८ में रोमनों को अपने ही लैटिन भाइयों से युद्ध करना पड़ा। यह युद्ध बड़ा विक्राल था। इसमें एक रोमन कौंसल को भी अपनी बलि देनी पड़ी थी।

इसके दस वर्ष बाद दूसरा सोमनाइत युद्ध पेलोपोलिस नामक यूनानी उपनिवेश के कारण हुआ। इस युद्ध में रोमनों को पहिले सन् ३२१ ई० पू० तथा फिर ३१५ ई० पू० में बुरी तरह पराजित होना पड़ा।

किन्तु ३१४ ई० पू० में रोमनों का भाग्य फिर पलटा। उन्होंने

विजय पर विजय प्राप्त करके ३०६ ई० पू० में सोमनाइत लोगों को फिर पराजय दी, जिससे ३०४ ई० पू० में दोनों पक्ष में सन्धि हो गई।

२९८ ई० पू० में तीसरा समनाइत युद्ध हुआ। इस बार गाल लोग और यूट्रस्कन लोग भी सोमनाइत लोगों की ओर ही थे। किन्तु रोमनों ने २८८ तक उन सब को ही पराजित करके अपने राज्य में मिला लिया। इस बार रोम राज्य का विस्तार बहुत बढ़ गया। रोमनों ने आधीन जातियों को भी नागरिकता के अधिकार दिये। किन्तु वह रोम की कमैटिया* में न बैठ सकते थे और न कौंसल ही बनाये जा सकते थे।

रोमन-यूनान युद्ध

सन् २८२ ई० पू० में रोमनों के टैरेन्टम नामक यूनानी राज्य में प्रवेश करने के कारण वहां के एक पाइरस नामक राजा ने रोम

---

*इस समय रोम में एक एक वर्ष के लिये राजा के स्थान पर दो कौंसल बनाये जाते थे। युद्ध आदि के समय या तो उनका कार्यकाल बढ़ा दिया जाता था या उनको डिक्टेटर बना दिया जाता था। युद्ध के समय यही लोग सेनापति भी बनते थे। इनकी सहायता के लिये दो सभाएं होती थीं। पहिली सीनेट अथवा सरदार सभा थी, दूसरी कमैटिया अथवा साधारण सभा थी। सीनेट के निर्णय की अपील कमैटिया में हो सकती थी। पहले इसके सदस्य रोम के समस्त नागरिक होते थे, किन्तु बाद में राज्य विस्तार के साथ २ इसमें बाहिरी मनुष्यों को भी लिया गया, जिससे इसका प्रभाव क्रमशः कम होता गया।

पर चढ़ाई की। रोम ने भी अपनी सेनाएं टेरेन्टम की ओर भेजीं। किन्तु इन सेनाओं को बुरी तरह पराजित होना पड़ा। सन् २७५ ई० पू० में रोमनों ने पाइरस को भी बेनीवेन्टम नामक स्थान पर हरा दिया। अब वेनीवेन्टम एक लैटिन उपनिवेश बना और टेरेन्टम भी रोम के अधिकार में आगया। यह देख कर कारथेज, मिश्र आदि ने भी रोम से सन्धि करली। रोमन इतिहास का यहां तक का समय उनके पवित्र आचरण के कारण स्वर्णयुग (गोल्डेन एज) कहलाता है। इसके पश्चात् रोमनों के आचरण बिगड़ते गये और वह युद्धों में छल, क्रूरता तथा निर्दयता से भी काम लेने लगे।

रोम और कार्थेज का युद्ध

कार्थेज उत्तरी अफ्रीका का एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। अपनी व्यापारिक शक्ति के कारण उसका समस्त उत्तरी अफ्रीका, स्पेन के आधे भाग, कोर्सिका, सार्डीनिया तथा सिसली के बहुत बड़े भाग पर भी अधिकार था। उसकी व्यापारिक बस्तियां समस्त भूमध्य-सागर में फैली हुई थीं। अस्तु, रोम के अभ्युदय के कारण उसका उससे संघर्ष होना अनिवार्य था। अन्त में सिसली की प्रधानता के प्रश्न पर इन दोनों शक्तियों का सिसली के टापू में सन् २६४ ई० पू० में युद्ध आरम्भ हो गया। इन युद्धों में २५६ ई० पू० तक तो रोमनों की विजय हुई, किन्तु इसके पश्चात् उनको बड़ी भारी हानि उठानी पड़ी। सन् २५१ ई० पू० में रोम की सीनेट ने एक और बड़ी सेना भेजी, जिसने कार्थेजियन सेना को

पराजित करके १२० हाथी छीने। किन्तु इतना होने पर भी युद्ध दस वर्ष तक और चला। सन् २४९ ई० पू० में रोमनों को फिर पराजित होना पड़ा। इस पर रोम के नागरिक स्वेच्छा से सेना में भर्ती होकर कार्थेज आए। उन्होंने २४२ ई०पू०में कार्थेज की सेना को पूरी तरह हरा दिया। जिसके फलस्वरूप दोनों में सन्धि हो गई। रोम को ३२०० टेलैन्ट*, सिसली और कुछ दिनों बाद सार्डीनिया के राज्य भी मिल गये। इस युद्ध में रोम के लगभग ५० सहस्र मनुष्य मारेगये।

इसके बाद २१८ ई० पू० तक कार्थेज के साथ सन्धि रही। इस समय रोमन साम्राज्य का विस्तार ऐल्प्स पर्वत को पार करके फ्रांस तक में हो गया था। इसी समय सार्डीनिया में कुछ कार्थेज निवासियों के विद्रोह करने से रोमनों ने वहां आक्रमण किया और अनेक कार्थेजियों को मार कर, वहां अपना अधिकार जमा कर, सैंकड़ों को अपना दास बना लिया। कार्थेज द्वारा विरोध किये जाने पर उससे भी बलपूर्वक एक सहस्र टैलेंट और वसूल किये गये। इससे कार्थेज के वीर जनरल हेमिल्कार ने उनसे बदला लेने के लिये प्रस्थान कर दिया। उसने अपने नौ वर्ष के पुत्र हनीबाल से भी रोमनों से आजन्म युद्ध करते रहने की शपथ कराई। किन्तु जेनरेल हेमिल्कार स्पेन को आधीन करने के पश्चात् ही मर गया। उसके पश्चात् २२१ ई० पू० में २६ वर्ष की आयु में हनीबाल अपने पिता की सेना का नायक हुआ। हनीबाल के साथ २१८ से २०२ ई० पू० तक रुक २ कर अनेक स्थानों पर युद्ध होता

*एक टैलेंट २४४ पौंड अथवा लगभग ३६६० रुपयों के बराबर होता है।

रहा, जिसमें कई बार रोमनों की पराजय हुई और हनीबाल रोम के ८० मील दूर तक बढ़ आया। अपने भाई हेसड्रूबाल के रोमन कौन्सल मेटारस द्वारा मारे जाने तथा दूसरे रोमन कौन्सल सीपियो के कार्थेज पर आक्रमण करने के कारण हनीबाल ई० पू० २०२ में फिर वापिस अफ्रीका में आया। यहां उसको सीपियों ने बुरी तरह पराजित किया। हारकर कार्थेज को सन्धि करनी ही पड़ी।

अब कार्थेज की सीमा अफ्रीका तक ही परिमित कर दी गई। स्पेन और भूमध्य सागर के सब द्वीप उसको छोड़ने पड़े और साथ ही दस सहस्र टैलेंट दण्ड देना पड़ा। उसको अपना जहाज़ी बेड़ा भी रोम को देना पड़ा, जो उसके सामने ही जला दिया गया।

इन युद्धों के कारण रोम के धर्म, आचार तथा शासन प्रबन्ध आदि अनेक बातों में परिवर्तन हो गया। यूनान, फ़िजिया आदि के बहुत से देवता रोम में माने जाने लगे। शासन की वास्तविक शक्ति अब सीनेट के ही हाथ में आगई थी और 'कमैटिया' का प्रभाव बहुत कम हो गया था। सीनेट इस समय ३०० सभासदों की एक स्थायी समिति थी। यह सब सभासद जन्म भर सीनेट के सदस्य रहते थे। कौन्सल सीपियो का भी इससे बहुत सम्मान बढ़ा और उसको अनिश्चित काल के लिये अफ्रीका का कौन्सल बना दिया गया।

मेसेडोन और सीरिया से युद्ध

१९८ ई० पू० में रोम का यूनानी राज्य मेसेडोन के राजा फिलिप से युद्ध हुआ। पराजय स्वरूप फिलिप को सब यूनानी

नगरों को स्वतन्त्रता देनी पड़ी। उसकी सेना भी घटा कर केवल पांच सहस्र ही कर दी गई। उसने रोमनों को अपना जहाजी बेड़ा और एक सहस्र टैलेएट दएड स्वरुप दिये। इस समय यूनानी सभ्यता और कला आदि को देख कर रोमन लोग चकित हुए। उन्होंने यूनानी साहित्य, धर्म और विचारों में से यूनानी राष्ट्रीयता के अतिरिक्त और सबको स्वीकार कर लिया। इस विजय को प्राप्त करके भी रोमनों ने यूनान को अपने राज्य में नहीं मिलाया।

इसके पश्चात् सन् १९१ ई० पू० में रोमनों ने सीरिया के राजा एरिटओकस को बुरी तरह पराजित करके उससे पन्द्रह सहस्र टैलेंट दएड लिया।

फिलिप के पश्चात् ई० पू० १७९ में उसका पुत्र पर्सियस मेसेडोन की गद्दी पर बैठा। उसने रोमनों से युद्ध घोषणा करके ई० पू० १७० में रोमनों को दूसरी बार भी हराजित कर दिया। किन्तु ई० पू० १६८ में सीपियो के मित्र एमिलियस नामक कौन्सल ने उसको पराजित करके क़ैद कर लिया और रोम लाया।

कार्थेज के साथ फिर युद्ध

इसके पश्चात् कई वर्ष तक फिर शान्ति रही। किन्तु कार्थेज की समृद्धि को देख कर ई० पू० १४९ मे रोम ने फिर बहाना निकाल कर उसके साथ युद्ध किया और ई० पू० १४६ तक कार्थेज नगर को लूट खसोट कर और आग लगा कर पूर्णतया नष्ट कर दिया। उसके खएढहर अब तक उसके प्राचीन गौरव का स्मरण कराते हैं।

सीनेट का पतन और पुनरुत्थान

अब रोम का विस्तार बहुत बढ़ गया था। लोग सीनेट के शासन से थक गये थे। दासों के कारण लोग अपने हाथों से हल चलाने में अपनी मान हानि समझने लगे थे। यूनान के सम्पर्क से भी विलासता ही बढ़ी। टाइबीरियस ग्रेक्स नाम के ट्रिब्यून ने इन सब बातों का अनुभव करके जनता को अधिक अधिकार देने चाहे, किन्तु उसका कार्यकाल समाप्त होने पर ई० पू० १३३ में सीनेटरों ने उसे तीन सौ साथियों सहित निर्वाचन के समय जान से मार डाला।

सीनेट के इस कार्य से जनता अप्रसन्न हो गई। लगभग १० वर्ष तक झगड़े चलते रहे। अन्त में १२४ ई० पू० में टाइबीरियस का भाई कायस ग्रेक्स ट्रिब्यून चुना गया। वह प्रभावशाली व्यक्ति था। उसने कई क्रान्तिकारी प्रस्ताव किये। फिर उसने यह नियम प्रचलित कराया कि रोम के किसी नागरिक की हत्या करने वाले को प्राण-दण्ड मिलेगा। इस प्रकार उसने अपने भाई और उसके साथियों की हत्या का बदला लिया। परन्तु रोम के लोग जो कायस के अन्य सुधारों का बड़े ज़ोर से समर्थन कर रहे थे अपने विशेषाधिकारों को छोड़ना नहीं चाहते थे। इसी समय कायस के कुछ साथियों ने टाइबीरियस को मारने वाले की हत्या कर दी। इस पर युद्ध आरम्भ हो गया। कायस के दल के अनेक लोग मारे गये। अत: ई० पू० १२१ में कायस ने स्वयं भी आत्म-हत्या करली। सीनेट फिर पूर्ववत् हो गई और ग्रेक्स बन्धुओं का सब कार्य व्यर्थ हो गया।

११८ ई० पू० में अफ्रीका के पश्चिमी प्रान्त न्यूमीडिया का राजा अपने राज्य को अपने दो पुत्रों और एक जुगुर्था नाम के जारज भतीजे में बांट कर मर गया। जुगुर्था ने एक भाई को मार कर ११४ में दूसरे पर भी आक्रमण करके उसे रोमवालों के सम्मुख ही मार डाला। सीनेट के प्रायः सदस्य रिश्वत के कारण उसकी ओर मिले हुए थे। अतः जनसमूह ने सीनेट की उदासीनता को सहन न कर अपनी ओर से जुगुर्था से युद्ध घोषणा कर दी। इस प्रकार सीनेट और सरदारों का अपमान हुआ।

जन समूह ने १०९ ई० पू० में मेरियस को उससे युद्ध करने भेजा। जुगुर्था ने भी भारी युद्ध किया। सन् १०८ ई० पू० में मेरियस सेनानायक और कौन्सल हुआ। वह एक बड़ी सेना और सुला नामक एक सहायक को लेकर अफ्रीका चला। सन् १०६ में जुगुर्था पकड़ कर रोम लाया गया और तहखाने में बन्द कर के मार दिया गया।

इसी समय रोमवालों पर उत्तर से गाल वालों ने आक्रमण किया। सन् १०५ में उन्होंने अस्सी सहस्र रोमन सैनिकों को काट कर फेंक दिया। अब मेरियस और सुला को उनसे लड़ने को भेजा गया। उन्होंने सन् १०१ ई० पू० में उनको पराजित किया। उनकी वीर स्त्रियों ने अपने भागने वाले पतियों को जान से मार कर स्वयं रोमन सेना का मुकाबला किया। किन्तु स्त्रियां स्त्रियां ही थीं। अपनी पराजय होते देख कर उन्होंने भी आत्मघात कर लिया और परलोक में जाकर अपने २ पतियों का साथ दिया।

रोम के आन्तरिक युद्ध

इस समय रोमन लोग विजातीयों के साथ अत्यन्त भिन्न प्रकार का व्यवहार करने लगे थे, जिससे बड़ा भारी आन्दोलन हुआ। ग्रेक्स आदि कई मनुष्य पहिले भी इसके लिये प्रयत्न कर चुके थे। अब ड्रूसस नामक एक कौन्सल ने भी उनका पक्ष लिया। परन्तु ९० ई० पू० में वह भी किसी अज्ञात मनुष्य द्वारा गुप्त रीति से मार डाला गया।

इस घटना से इटली में बड़ी भारी सनसनी फैल गई। कई जातियों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया और फिर सबने मिलकर रोम की पहाड़ी की दूसरी ओर एक दूसरा रोम नगर बसाया। वहां भी दो कौन्सल और पांच सौ सभासदों की एक सीनेट स्थापित हो गई और सिक्के भी अलग ढल गये। जो अब तक मिलते हैं।

रोम को फिर युद्ध की तैयारी करनी पड़ी। अब इटली वालों पर ही विजय पाने के लिये उसे संसार से सहायता की प्रार्थना करनी पड़ी। युद्ध के लिये रोम ने एक लाख सिपाही भेजे। दक्षिण में कौन्सल जूलियस सीज़र (विजयी जूलियस सीज़र का पिता) और सुला तथा उत्तर में रूमिलियसऔर मेरियस भेजे गये। सेम-नाइत कौन्सलों ने इन दोनों ही सेनाओं को पराजित कर दिया। सीज़र रोम लौट आया। उसकी सलाह से ३४ मित्र उपनिवेशों को नागरिकता के अधिकार दे दिये गये। एक बाद की रोमन घोषणा से अन्य विद्रोही भी रोम की ओर आ गये। ई०

पू० ८८ तक यह आन्तरिक कलह समाप्त हो गया और सेमनाइतों का नाम भी इतिहास से मिट गया।

सुला और मिथ्रिडेटीज़

किन्तु रोम की दलबन्दी अब भी समाप्त नहीं हुई। वृद्ध मेरियस उदार दल का नेता था। किन्तु दूसरे दल ने ८८ ई० पू० में सुला को कौन्सल बनाया। रोम को गृह कलह में फंसा देख अर्मीनिया के पास की पोन्टस नामक एक रियासत के साहसी राजा मिथ्रिडेटीज़ ने रोम पर आक्रमण कर दिया। इस समय उससे युद्ध करने के लिये कौन्सल और सेनापति बनाने का प्रश्न आया। मेरियस और सुला दोनों ही इस पद के उम्मीदवार थे। फलतः दोनों की सेनाओं में युद्ध हुआ। मेरियस की सेना हार गई और मेरियस भाग गया। इस समय सुला रोम का ही नहीं वरन् समस्त इटली का मालिक था।

अब सुला पांच पल्टनें लेकर पूर्व की ओर को चला। साल भर बाद ८६ ई० पू० में उसने ऐथेन्स पर आक्रमण करके वहां के सभी स्त्री पुरुषों को क़त्ल कर दिया। अब वह अपने मित्र थीब्स के राज्य में होकर उत्तर की ओर बढ़ कर करोनी नामक स्थान पर ठहर गया। पोन्टस की सेना भी यहां पर आगई, भारी युद्ध हुआ; परन्तु सुला ने उस समस्त सेना का एक बड़ा भाग क़त्ल कर डाला और शेष को बन्दी कर लिया। कहा जाता है कि इस युद्ध में उसके केवल पन्द्रह मनुष्य ही मरे—परन्तु यह विश्वास योग्य नहीं है।

इस विजय के कारण यूनान ने फिर सुला से मित्रता करली और मिथ्रिडेटीज़ का क्रोध बढ़ गया। उसने आर्केलास के आधीन एक नयी यूनानी सेना भेजी। परन्तु सुला ने उसे भी पराजित कर दिया। उस समय सुला को समाचार मिला कि सीनेट ने उसे कौन्सल के पद से हटा कर फ़्लेकस नामक एक अन्य व्यक्ति तथा सिना को कौन्सल बनाया है। उसी समय मिथ्रिडेटीज़ ने दो सहस्र टैलेंट, ७० जहाज़ और जीते हुए स्थान दे कर सुला से ई० पू० ८४ में सन्धि करली।

फ़्लेकस सेना लेकर सुला की ओर चला; किन्तु वह मार्ग में ही मार डाला गया और उसकी सेना हार गयी। सुला ने अब भी देश को लौटने की शीघ्रता न की। उसने विजित देशों का संगठन किया और एशियावालों से पिछले पांच वर्ष के कर स्वरूप दो सहस्र टैलेंट प्राप्त किये।

रोम आने पर सुला ने युद्ध कर के सब को पराजित कर दिया। कौन्सल सिना को तो सेना ने पहिले ही मार दिया था; अब सुला ने भी अपने शत्रुओं से ढूंढ २ कर उनसे भयंकर बदला लिया। सुला ने आतंक राज्य आरम्भ कर दिया। उसके इस व्यवहार को लोग वर्षों तक न भूले।

सुला की क्रान्तिकारी शासन व्यवस्था

सुला राजनीतिज्ञ भी था। वह सीनेट और सरदारों की शक्ति फिर पहिले के समान करना चाहता था। अतएव पहिले तो उसने इस उद्देश्य में बाधक व्यक्तियों को चुन २ कर मौत के घाट

उतारा। इसके पश्चात् उसने 'डिक्टेटर' की पदवी धारण की। उसके पद की कोई अवधि नहीं थी। कमिटिया ने भी उसको सब अधिकार दे दिये थे। अतएव वह बिना मुकुट के पूर्ण स्वतन्त्र राजा था। अब उसने अपना सुधार कार्य आरम्भ किया। उसने कमिटिया का कानून बनाने का अधिकार सीनेट को दिया। पुरानी म्यूनिसिपैलिटी आदि संस्थाओं को तोड़ कर उसने इटली की एकता को दृढ़ किया। उसने फौजदारी कानून को सुधार कर नौ अदालतें और बढ़ाईं। यह भी प्रबन्ध किया गया कि कोई भी मनुष्य छोटे पद से एक दम सब से ऊंचा पद प्राप्त न कर सके। यह सब कार्य करके ई० पू० सन् ८० में वह अधिकार छोड़ कर सीधा अपने घर चला गया और अध्ययन पूर्वक ग्राम्य जीवन व्यतीत करता हुआ ई० पू० ७८ में मर गया। उसके इस अन्तिम कार्य ने समस्त संसार को आश्चर्य में डाल दिया।

पोम्पी

सुला की मृत्यु के साल भर बाद मेरियस के अनुयाइयों ने स्पेन में विद्रोह खड़ा कर दिया। पोम्पियस अथवा पोम्पी नामक एक युवक उन्हें दबाने को भेजा गया। किन्तु पांच वर्ष तक परिश्रम करने पर भी वह कुछ न कर सका। अन्त में विद्रोही लोग आपस में फूट होने के कारण स्वयं ही नष्ट हो कर हार गये।

ई० पू० ७३ में दासों ने विद्रोह करके लूटमार आरम्भ कर दी। उन्होंने रोमन सेनाओं को हराकर समस्त दक्षिण इटली पर

अधिकार कर लिया। अन्त में क्रेसस नामके एक धनी ने बड़ी कठिनता से इस विद्रोह को दबाया।

७० ई० पू० में यह दोनों विजयी पोम्पी और क्रेसस ही कौंसल बनाये गये।

मिथ्रिडेटीज़ उस समय फिर रोम के विरुद्ध हो चुका था। उसने ८३ ई० पू० में एक बार रोमन सेनाओं को हरा भी दिया था। किन्तु ७४ ई० पू० में वह रोमन सेना से हार कर अपने दामाद–अर्मीनिया के राजा–के पास जा पहुंचा। रोमन सेनाओं से एक बार फिर हारने पर भी उसने ६८ ई० पू० में रोमनों को जेला स्थान पर हरा ही दिया। समुद्री डाकुओं का ज़ोर भी इस समय ऐसा भारी था कि रोमन साम्राज्य की नाक में दम आगया था। किन्तु ६६ ई० पू० में पोम्पी ने भूमध्य सागर में जल सेना का ऐसा जाल बिछाया कि समुद्री डाकू पूर्णतया नष्ट हो गए। डाकुओं का आतंक दूर होने पर राज्य में अनाज सस्ता हो गया, जिससे पोम्पी की कीर्ति बहुत बढ़ी।

अब पोम्पी को ही पचास-सहस्र सना देकर मिथ्रिडेटीज़ से भी युद्ध करने को भेजा गया। पोम्पी ने पार्थीय राजा से मित्रता करके अर्मीनिया की सेनाओं को मिथ्रिडेटीज़ को सेनाओं से न मिलने दिया। आखिर अर्मीनिया के राजा ने भी पोम्पी से सन्धि करली। अन्त म उसने मिथ्रिडेटीज़ को बड़ी भारी पराजय दी, जिससे वह ६३ ई० पू० में मर गया।

अब पोम्पी अर्मीनिया होकर शाम पहुंचा और उसको रोमन

साम्राज्य में सम्मिलित किया। उसने इसी प्रकार आस-पास के कई नगरों को जीत कर रोम में मिलाया। इन विजयों में उसे धन भी बहुत मिला। लगभग पांच करोड़ रुपया तो उसने अपने सिपाहियों में ही बांट दिया और फिर भी अढ़ाई करोड़ रुपया लाकर रोम के कोष में जमा किया।

इस समय रोम में कई प्रसिद्ध मनुष्य थे। सिसरो एक साधारण घर में उत्पन्न हुआ था और वकील बन गया था। वह विद्वान् और प्रभावशाली व्याख्याता था। वह रोम के दो ऊंचे दलों—सरदार और धनिकों को मिलाना चाहता था। आरम्भ में उसे कुछ सफलता मिली, किन्तु बाद में उसे देश निकाला दे दिया गया।

केटो सरदारों में सबसे श्रेष्ठ था और क्रेसस बड़ा भारी धनी था।

जूलियस सीज़र

इनके अतिरिक्त जूलियस सीज़र भी इस समय प्रसिद्ध होता जा रहा था। उसका जन्म ई० पू० १०२ में हुआ था। वह जीवन निर्वाह और वेषभूषा में अधिक व्यय करने वालों का नेता और प्रभावशाली वक्ता था। पोम्पी का वह समर्थक था। उसने पोम्पी को बड़ा स्थान देने का भी अनुरोध किया था। पोम्पी ई० पू० ६२ में विजय से वापिस लौटा। उसने आते ही अपनी सेनाओं को भंग करके अपने ग्राम का मार्ग लिया। वह सीनेट से अपनी सेना को कुछ भूमि दिलाना चाहता था, किन्तु सीनेट ने उसकी एक न सुनी। सीज़र और क्रेसस दोनों उसके प्रशंसक थे। यदि यह तीनों मिल जाते तो सीनेट

कुछ न कर सकती। अतः इन तीनों ने अपना गुट बना लिया। ५६ ई० पू० में सीज़र कौंसल बनाया गया। अब पोम्पी की शर्तें स्वीकार की गईं और उसके सिपाहियों को भूमि ईनाम में दी गई।

इसी वर्ष ट्रिब्यून ने सीज़र को गॉल की चढ़ाई पर भेजने के लिये दो अथवा तीन वर्ष नहीं, वरन् पांच वर्ष के लिये कौन्सल बना दिया। सीज़र भी ख्याति पाने के लिये वहां जाने को तयार हो गया। परन्तु जाने से पूर्व वह रोम में उचित प्रबन्ध करना चाहता था। उसने पोम्पी से अपनी कन्या का विवाह कर दिया और स्वयं दूसरे कौन्सल पीसो की कन्या से विवाह किया। फिर उसने अपने विरोधी केटो को साइप्रस भेज दिया, जिससे वह वहां के पदच्युत राजा को फिर गद्दी पर बिठावे। सीज़र के दूसरे विरोधी सिसरो को सीज़र और पोम्पी की ही युक्ति से देश निकाला दे दिया गया।

पोम्पी को रोम मे छोड़ कर सीज़र २८ मार्च सन् ५८ ई० पू० में एक बड़ी सेना लेकर गॉल की ओर चला। उसने आठ दिन में ही स्वीज़र्लैंण्ड के पास आकर रोम पर आक्रमण की तैयारी करने वाले स्विसों को पराजित कर दिया। फिर उसने गाल की भूमि पर अधिकार करने की इच्छा वाली जर्मनी की ट्यूटोनिक जाति की सेनाओं से युद्ध किया। कई कठिन युद्धों के पश्चात् इनको पराजित करके वह मिजल पाइण्ट में ठहरा। वहां के लोगों को उसने अपने व्यवहार से प्रसन्न किया। उसने पो नदी की घाटी के लोगों को रोम की नागरिकता और समानता का अधिकार दिलवाने का भी वचन दिया।

इस प्रकार रोम की इच्छा को पूरी करके वह अपनी ख्याति और शक्ति के लिये आगे को बढ़ा। ५७ ई० पू० में उसने गाल के उत्तर-पूर्व में बेल्जियन जातियों की लाखों की संख्या वाली सेनाओं को दो बार हराया।

अब सीज़र रोम के लुक्का नामक एक उपनिवेश में लौट आया। यहां उसने ऐसा प्रबन्ध किया जिसके अनुसार पोम्पी और क्रेसस ५५ ई० पू० के लिये कौंसल बनाये गये। यह तय किया गया कि सीज़र की पांच वर्ष की अवधि समाप्त होने पर वह उसको पांच वर्ष के लिये और चुनवा देंगे।

अब सीज़र फिर गॉल में चला और उसने उन युद्धों को आरम्भ किया, जिनके कारण उसकी गणना विश्व विजेताओं में की जाती है।

पहिले उसने वेनेटी नामक एक वीर डाकुओं की जाति को पराजित किया। इसके पश्चात उसने जंगली मनुष्यों से युद्ध किया। इन जंगली सेनाओं ने सीज़र को पराजित कर दिया। किन्तु सीज़र ने उनके नेताओं को सन्धि के छल से बुलाकर कैद में डाल दिया और इस प्रकार बिना नेताओं की सेना को पराजित कर दिया।

इस समय केटो साइप्रस विजय करके रोम वापिस आ गया था। उसने सीज़र के इस कार्य की बहुत निन्दा की, परन्तु पोम्पी और क्रेसस के आगे उसकी कुछ न चली।

अब सीज़र ने फिर राइन पार करके जर्मन जातियों को परा-

जित किया। इसके पश्चात् उसने दो सेनाएं और आठ सौ जहाज़ लेकर डोवर का मुहाना पार कर ब्रिटेन में प्रवेश करके उससे भी नाम-मात्र को अपनी आधीनता स्वीकार कराली। इस समय गॉल में फिर विद्रोह होने का समाचार पाकर उसने शीघ्रता से वापिस आकर उस विद्रोह को दमन किया। गालों के उपद्रव को उत्तर और दक्षिण दोनों ही स्थानों में दबाना पड़ा। इसमें हज़ारों मनुष्य मारे गये, हज़ारों गांव उजाड़े गये, जातियां दास बनाकर बेची गईं और अनेक सैनिक अंगहीन किये गये। इन युद्धों से रोम को गॉल की ओर से चिन्ता जाती रही और जर्मन जातियों के आक्रमण से यूरोप तीन सौ वर्ष तक बचा रहा। इन्हीं विजयों के कारण फ्रान्सीसी राष्ट्र और रियासत की नींव पड़ी। इन युद्धों में सेना भी सीज़र के व्यक्तित्व की भक्त बन गई, जिससे वह उनकी सहायता से भविष्य में सम्राट् पद पाने में समर्थ हुआ।

इस समय रोम में त्रिकूट की मैत्री ढीली पड़ गई थी। पोम्पी और क्रेसस ने अपने-अपने को पांच-पांच वर्ष के लिये स्पेन और सीरिया का शासक नियुक्त करवा लिया था; क्यों कि वहां भी अशान्ति मची हुई थी। क्रेसस ५४ ई० पू० में एक बड़ी सेना लेकर शाम की ओर चला। किन्तु वह वहां मारा गया और रोमन सेना को पराजित होकर वापिस आना पड़ा। इसके पश्चात् रोम की सीमा पूर्व की ओर कभी न बढ़ी।

कौन्सल पद के लिये दो वर्ष तक रक्त-पात रहने के पश्चात् सीनेट ने ५२ ई० पू० में अकेले पोम्पी को ही कौंसल बना दिया।

क्रेसस की मृत्यु से उसका सीज़र से सम्बन्ध टूट ही गया था कि ५४ ई० पू० में पोम्पी की स्त्री और सीज़र की पुत्री जूलिया भी मर गई। अब पोम्पी सीज़र से विद्वेष करने लगा था।

सीज़र सन् ४९ ई० पू० में गाल विजय करके रेवेना स्थान पर आया। यहां उसको सीनेट और पोम्पी द्वारा अपने विरोध का पता चला। अतएव अब वह प्रजातन्त्र और समानता का पक्ष-पाती बन कर पोम्पी से युद्ध करने के लिये आगे बढ़ा।

रोम में सीज़र की विजय और व्यवस्था

सीज़र ने इटली में प्रवेश किया और ४८ ई० पू० से सीज़र और पोम्पी का युद्ध आरम्भ हो गया। उसने मार्च और अप्रैल में ही समस्त रोम और इटली पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् उसने स्पेन को जीत कर उसके साथ दया का व्यवहार किया। अब सीज़र ने एड्रियाटिक सागर पार कर पोम्पी का पीछा किया। ८४ ई० पू० में उसने पोम्पी को पूर्णतया पराजित कर दिया। इसी समय पोम्पी को उसके एक अफ़सर ने मार डाला। इसी यात्रा में उसने मिश्र में भी अराजकता दूर की। इस समय ४८ ई० पू० के अक्टूबर मास में रोम की सीनेट ने उसकी अनुपस्थिति में ही उसे पांच वर्ष के लिये कौन्सल नियत कर दिया।

मिश्र के बाद सीज़र अफ्रीका पहुंचा और वहां भी कई बार विजय प्राप्त कर और न्यू मीडिया का बहुत सा भाग रोम में मिला कर रोम को लौटा।

इस प्रकार युद्धों से निपट कर उसने प्रबन्ध और राज नियम

आदि की ओर ध्यान दिया। अनेक प्रकार के राजनीतिक सुधारों के अतिरिक्त उसने पञ्चाङ्ग में भी सुधार करके १ जनवरी सन् ४५ ई० पू० से ३६५। दिन का वर्ष स्थिर लिया। इसी समय पोम्पी के पुत्रों ने सेना एकत्रित करके स्पेन में फिर विद्रोह किया, किन्तु सीज़र ने इस विद्रोह को भी दबा दिया।

सीज़र का अन्त

४५ ई० पू० में सीज़र अकेला ही कौंसल था। उसने प्रजातंत्र का अन्त कर दिया। प्राचीन काल के सात राजाओं की मूर्तियों के पास अब सीज़र की आठवीं मूर्ति भी खड़ी कर दी गई। इस समय अन्तिम राजा टार्क्विनस सुपर्बस से इतिहास आरम्भ किया गया। किन्तु जिस प्रकार उस राजा को ५१० ई० पू० में ब्रूटस नाम के मनुष्य ने मारा था, उसी प्रकार सीज़र के समय भी एक ब्रूटस था, जो बाहिर से सीज़र से मिला होने पर भी अंदर से उससे घृणा करता था। वह सीज़र के राजाओं जैसे आचरण को पसंद नहीं करता था।

४४ ई० पू० के मार्च मास में सीनेट द्वारा सीज़र को राजा की पदवी दी जाने वाली थी। वह पालकी में बैठ कर घर से आकर सीनेट भवन में बैठा ही था कि सिम्बर नामक एक मनुष्य ने उसे लिखित प्रर्थना पत्र दिया कि उसके भाई को जिसे देशनिकाला हो चुका था—वापिस बुला लिया जावे। सीज़र के कोई ठीक उत्तर न देने पर सिम्बर ने उस पर शस्त्र प्रहार किया और उसी समय एक दूसरे सदस्य ने भी शस्त्र चलाया। सीज़र

की आयु इस समय छप्पन वर्ष की थी। फिर भी उसने रक्षा के लिये संभलने का उद्योग किया। किन्तु आक्रमणकारियों की भारी संख्या और उनमें ब्रूटस को भी देख कर सीज़र को बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि ब्रूटस को वह पुत्र के समान प्यार करता था। सीज़र पर शीघ्र ही चारों ओर से आक्रमण होने लगे, जिससे वह वहीं मर गया। इस प्रकार इस सबसे बड़े महान् सम्राट् का अन्त हुआ।

आगस्टस

सीज़र की मृत्यु के पश्चात् मुख्य शक्ति उसके मित्र जनरल एन्टनी के हाथ में रही, जो कौन्सल भी हो गया गया था। इस समय दूसरा शक्तिमान् व्यक्ति लिपिडस था। इसी समय आक्टेवियस नामक एक तृतीय व्यक्ति भी सम्मुख आया, जो सीज़र की बहिन का नाती था। इसको सीज़र ने अपने जीवन-काल में ही अपना उत्तराधिकारी बना दिया था। इस समय इसकी आयु १६ वर्ष की थी और वह एपिरस में शिक्षा प्राप्त कर रहा था। एन्टनी और लिपिडस के सीज़र के स्थान का उम्मेदवार होने के समाचार सुन कर उसने भी रोम आकर सीज़र के सिंहासन पर अपना अधिकार बताया। किन्तु प्रजातन्त्र दल सिसिरो को कौन्सल बनाना चाहता था। उनका आक्टेवियस की सेना से खुला युद्ध हुआ, जिसमें उन की पराजय हुई। रोम में एक दल अब भी सीज़र का पक्षपाती था। उसने आक्टेवियस को सीज़र का सच्चा उत्तराधिकारी समझ कर उसके कौन्सल होने की घोषणा कर दी। अब एन्टनी और लिपिडस ने भी उससे सन्धि करली। इस सन्धि [illegible] निश्चित हुआ,

कि एन्टनी गॉल में रहे; आक्टेवियस अफ्रीका, सिसिली और सार्डीनिया का मालिक बने; लिपिडस स्पेन का मालिक बने और अगले वर्ष कौन्सल भी हो।

रोम की कमिटिया ने भय के मारे इस प्रबन्ध को स्वीकार कर लिया। अब सीजर के मारने वालों को ढूंढ २ कर मारा जाने लगा। सिसिरो को भी यही दोष लगा कर मार डाला गया।

एन्टनी और आक्टेवियस ने पूर्व की ओर मेसेडोनिया में जाकर ब्रूटस और केसियस की एक लाख से भी अधिक सेना को पराजित करके केसियस को मार डाला। ब्रूटस ने निराश होकर अपने एक दास के हाथों अपनी हत्या करा ली।

अब लिपिडस को केवल अफ्रीका देकर प्रथक् कर दिया गया। एन्टनी को पूर्व की ओर का आधा साम्राज्य देकर स्वयं आक्टेवियस रोम में ही रहा। एन्टनी विजय करता हुआ मिश्र में पहुंचा और वहां की रानी क्लियोपत्रा के प्रेम में पड़ कर उसी के साथ रहने लगा।

इस समय आक्टेवियस की अवस्था २१ वर्ष की थी। सौभाग्य-वश उसको एग्रिया और मेसीनास नामक दो योग्य व्यक्ति मिल गये, जिन्होंने उसको विजयी करने में सदा सहायता दी।

४१ ई० पू० में एन्टनी के भाई और उसकी स्त्री ने रोम में विद्रोह किया। किन्तु जेनेरल एग्रिया ने उनको पराजित कर दिया। इसके पश्चात् एग्रिया ने पोम्पी के पुत्र के नेतृत्व वाले डाकू दल को पराजित करके रोम में फिर अनाज सस्ता किया। ३५ ई० पू० में लिपि-

उस ने रोम पर आक्रमण करने का विचार किया, किन्तु आक्टे-
वियस के स्वयं आगे आने पर उसकी सेना आक्टेवियस से आ मिली
और लिपिडस ने उसके चरणों में गिर कर क्षमा प्रार्थना की।
३१ ई० पू० में आक्टेवियस का एन्टनी से युद्ध हुआ, जो क्लियोपत्रा
से उत्पन्न हुए अपने पुत्र को मीडिया और पार्थिया का राजा
बनाना चाहता था। इस युद्ध में एन्टनी और क्लियोपत्रा दोनों ही
भाग कर मारे गये।

अब आक्टेवियस अकेला ही सम्पूर्ण रोमन साम्राज्य का एक
मात्र अधिकारी था। २७ ई० पू० में उसने 'आगस्टस' (महान्)
की पदवी धारण करके सुधारों में अपना मन लगाया। इस समय
से वह आगस्टस के नाम से ही प्रसिद्ध हुआ। उसने सब प्रकार
की शक्ति अपने हाथ में करके भी अभिमान् प्रदर्शित नहीं किया।
उसने अपने द्वारा सीनेट को शक्ति देकर सम्मान दिया। कमिटिया
के अधिकार बहुत कम कर दिये गये। प्रान्तों के प्रबन्ध के लिये उसने
गवर्नरों का वेतन नियत कर दिया। इस प्रकार पचास वर्ष के लग-
भग राज्य करके यह महान् सम्राट् ईस्वी सन् १४ की १६ वीं
अगस्त (जो मास उसी के नाम पर प्रसिद्ध है) के लगभग ७५
वर्ष की आयु में मरा।

उसके समय में रोम का साम्राज्य बहुत विस्तृत हो गया था।
उसने राइन और डैन्यूब को अपनी उत्तरी सीमा नियत किया था।
उसने जर्मनी को भी अपने आधीन कर लिया था।

उसके समय में साहित्य की उन्नति भी खूब हुई। होरेस और

वर्जिल उसके समय के प्रसिद्ध कवि थे। इस समय लैटिन भाषा राष्ट्रीय भाषा समझी जाने लगी और इस भांति नवीन फ्रेंच, स्पेनिश और इटालियन भाषाओं की उत्पत्ति हुई।

आगस्टस के उत्तराधिकारी

इस प्रकार साम्राज्य-स्थापना से रोम का इतिहास बहुत सरल हो गया। अतः अब हम उसे शीघ्रता पूर्वक समाप्त कर सकते हैं। इस समय प्रान्तों की बहुत उन्नति हुई। आगस्टस के उत्तराधिकारियों में उसके समान योग्यता न थी। अब तक रोम में उत्तराधिकार का कोई नियम न था; परन्तु आगस्टस ने अपने प्रभाव से अपनी तीसरी पत्नी के पहिले पति से उत्पन्न टाइबेरियस नामक पुत्र को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। अतः आगस्टस के पश्चात् वही गद्दी पर बैठा। उसने जर्मन जातियों को एक बार फिर हराया। परन्तु वहां का प्रबन्ध कठिन समझ कर उन्हें अपने राज्य में सम्मिलित नहीं किया।

टाइबेरियस ३७ ईस्वी में मरा। उसके स्थान पर उसके दो सम्बन्धी बैठे—कैलीगुला और क्लाडियस। कैलीगुला निरंकुश और और क्रूर था, उसने सन् ४१ तक राज्य किया। क्लाडियस ने सन् ४१ से ५४ ई० तक राज्य किया। वह विद्वान्, चतुर और परिश्रमी होते हुए भी दुर्बल, विकृत और व्यसनी था। ४४ ई० में उसने ब्रिटेन पर चढ़ाई करके उसके दक्षिण-पूर्वी भाग को अपने साम्राज्य में मिला लिया था।

उसके पश्चात् उसका सौतेला पुत्र नीरो सम्राट् हुआ। यह

क्रूर था। उसने गायक, नर्तक और सारथी के गुण प्राप्त करके रोम की परम्परा को तोड़ कर सबको आश्चर्य में डाल दिया। ६४ ई० में जब रोम में छै दिन तक भयंकर आग लगी रही तो उसने पास के एक पहाड़ पर जाकर बड़ी प्रसन्नता से यह दृश्य देखा और अपने तम्बूरे में मस्त रहा। उसके समय में स्थान २ पर विद्रोह हुए। जर्मनी और स्पेन के प्रान्तीय गवर्नरों ने सन्धि कर ली और स्पेन के गवर्नर गैलन ने अपने को सम्राट् घोषित किया। इन समाचारों को सुन कर सन् ६८ ई० में नीरो ने भी तीस वर्ष की अवस्था में ही आत्महत्या करली।

इस समय साम्राज्य की सेना प्रान्तों में रहती थी और रोम के द्वार पर एक संरक्षक दल रहता था। नीरो की मृत्यु पर उस दल ने रोम पर अधिकार करके दो सम्राटों को अपनी इच्छानुसार गद्दी पर बैठाया और उतारा।

संरक्षक दल के इस भाग्य से प्रान्तीय सेनाओं को उससे ईर्षा हुई। अतः वह भी रोम में आगईं। उनमें बहुत समय तक झगड़ा चलता रहा। पहिले जर्मनी की सेना प्रधान रही, परन्तु सीरिया (शाम) की सेना ने आकर उसे हरा दिया और अपने सेनापति वेस्पेशियन को सम्राट् घोषित कर दिया। इस प्रकार जूलियस सीज़र के घराने का अन्त होकर फ्लेबिया के घराने का राज्य आरम्भ हुआ। वेस्पेशियन ने राज्य में शान्ति स्थापित की। सेना को दबा कर शान्त रखा। उसने सीरिया में यहूदियों को पराजित करके जेरुसलेम को नष्ट कर दिया और वहां के निवासियों को क़त्ल किया।

७८ ई० में उसका पुत्र टाइटस रोम में राजा हुआ। वह दयालु और उदार था। बीसूवियस नामक ज्वालामुखी उसी के समय में प्रकट हुआ था। उसने कुल तीन वर्ष राज्य किया। उसके पश्चात् उसका भाई डोमीशियन सम्राट् हुआ। यह क्रूर, आलसी और दुर्बल था। उसके समय में सब कहीं अशान्ति फैल गई।

एन्टोनाइनों का समय

सन् ९६ में इसके मारे जाने के पश्चात् लगभग एक शताब्दी तक राज्य में सर्वत्र शान्ति और समृद्धि रही। इस समय प्रान्तों में भी शान्ति थी। साहित्य और कला की भी इस समय खूब उन्नति हुई। रोम और बाहर के अजायबघरों में जिन वस्तुओं की सबसे अधिक प्रशंसा की जाती है वह सब इसी समय की हैं।

इस समय पहला सम्राट् नर्वा (९६ - ९८ ई०) हुआ। यह दयावान् और शन्ति प्रिय था। इसने कोई औरस पुत्र न होने के कारण ट्रैजन को अपना उत्तराधिकारी बनाया। ट्रैजन बड़ा धर्मात्मा और शासन कार्य में निपुण था। उसने अनेक उत्तम कार्य किये। इसके समय में रोमन सेनाओं ने फिर इटली से बाहर वीरता दिखलाई। सन् १०१ ई० में उसने पारडेसिया (वर्तमान रूमानिया) को जीत कर उसे रोमन साम्राज्य में मिलाया। फिर उसने आगे बढ़ कर पार्थीय जातियों को हरा कर मेसोपोटामिया, अर्मीनिया और बैबीलोन को भी अपने राज्य में सम्मिलित किया। यहीं वह दो वर्ष बाद ११७ ई० में मर गया।

ट्रैजन के पश्चात हैड्रियन गद्दी पर बैठा। वह इस समय का

सबसे प्रसिद्ध और प्रधान सम्राट् समझा जाता है। उसने रोम के विस्तार को बढ़ाने के स्थान पर शासन में दृढ़ता और सुधार करना अधिक उचित समझा। राज्य को शत्रुओं से बचाने के लिये उसने ब्रिटेन में एक दीवार बनवानी आरम्भ की, जिसे आगे के सम्राटों ने पूरा किया। उसने साइप्रस और फिलिस्तीन में एक यहूदी विद्रोह को दबाया। प्रबन्ध मे खटका देख कर उसने मेसोपोटामिया और अर्मीनिया प्रान्तों के शासन को छोड़ दिया।

सन् १३८ ई० में उसकी मृत्यु होने पर उसका चुना हुआ पुत्र एन्टोनाइनस पायस सम्राट् हुआ। उसने २३ वर्ष तक राज्य किया। उसने राज्य में बहुत सुधार किये और अपने समय में सेना के रक्त की एक बूंद भी न गिरने दी।

उसके पश्चात् उसके चुने हुये पुत्र मार्कस आरेलियस ने १६ वर्ष राज्य किया। उसके समय में रोम की समृद्धि और शान्ति घट चली। वह विद्या प्रेमी था, किन्तु उसे जर्मन जातियों से युद्ध के कारण समय न मिला। १८० ई० में वह भयंकर प्लेग से मर गया। उसके साथ ही अच्छे सम्राटों की समाप्ति हो गई। रोम के अच्छे दिन फिर न लौटे।

इस समय तक सरदारों की शक्ति बिल्कुल घट गई थी। वह सम्राट् के केवल सेवक ही रह गये थे। इस समय साम्राज्य के लगभग सभी नगरों में म्यूनिसपैलिटियां थीं। किसानों की दशा इस समय खराब होने लगी थी। इस समय जनता की श्रद्धा भिन्न-भिन्न धर्मों पर होने लगी थी। मिश्र के बहुत से देवता

इटली में पूजे जाने लगे थे। इनमें प्रधान मित्र अथवा सूर्य थे। यह वही देवता हैं जिन्हें प्राचीन आर्य लोग पूजते थे। ईसाई धर्म का प्रभाव भी इस समय अधिक होता जाता था, किन्तु रोम के सम्राट् ईसाई गिर्जों के विरोधी थे।

रोमन साम्राज्य का पतन

मार्कस के पश्चात् उसका पुत्र कमोडस सन् १८० ई० में सम्राट् हुआ। यह निरंकुश और व्यसनी था तथा तमाशों और कुश्ती को बहुत पसंद करता था। उसकी क्रूरता तथा उसके मंत्री के अत्याचारों से समस्त प्रजा तथा सेना अप्रसन्न थी। अतः वह सन् १९२ ई० में एक षड्यन्त्र द्वारा मार डाला गया।

अब सीनेट ने एक मनुष्य पर्टीनेक्स को सम्राट् बनाया। इस समय इस पद के लिये सेनाओं में झगड़ा हुआ। निदान पेनानिया की सेना ने अपने सेनापति सेफ्टीमियस सेवेरस को सम्राट् बनाया, जिसने १९३ से २११ तक शासन किया। अब प्रधानशक्ति फिर सेना के हाथ में आ गई।

उसके बाद उसका पुत्र केरेकुला सम्राट् हुआ। यह क्रूर और अयोग्य था। उसने सदा सैनिकों को ही प्रसन्न रखने का उद्योग किया। उसने रोमन साम्राज्य के सब निवासियों के दासों को छोड़ कर उन्हें नागरिकता के अधिकार दे दिये।

इस समय प्रान्तीय सेनाओं में प्रतिद्वन्द्विता आरंभ हो गई। २१८ ई० में शाम की सेनाओं ने रोम में आकर अपने सेनापति

एलागा वालस को सम्राट् बनाया। यह चार वर्ष राज्य करके रोम के सैनिक विद्रोह में मारा गया।

अब सैनिकों ने उसके चचेरे भाई अलेक्ज़ेंडर सेवेरस को सम्राट् बनाया, जिसने सन् २३५ तक राज्य किया। यह सीधा साधा ईमानदार और विद्या प्रेमी था। सैनिकों ने उसे भी षड्-यंत्र रचकर मार डाला।

अब साम्राज्य एक दम निर्बल हो गया। शासन में पूर्ण अव्य-वस्था थी। सीमाओं पर बबरों और जर्मनों ने आक्रमण किये। गाल को फ्रेंच लोगों ने जीत कर उसका नाम फ्रांस रक्खा। गोथ लोग भी आक्रमण कर रहे थे। फ़ारसियों ने भी आक्रमण करके एक रोमन सम्राट् वेलेरियन को क़ैद कर लिया और सन् २६० में उसे अपने यहां ले गये। कहते हैं कि फ़ारिस का राजा उसे बेड़ी डाल कर सब जगह अपने साथ ले जाता था और उसके ऊपर पैर रख कर अपने घोड़े से उतरा करता था। जब वह मरा तो उसकी खाल में भूसा भरवा कर उसे फ़ारिस के एक मन्दिर में रखवा दिया।

पांच वर्ष तक अव्यवस्था रहने के बाद क्लाडियस ने उसको सम्राट् पद पाकर सम्भाला। उसने गोथों को पराजित करके रोम से निकाल दिया। परन्तु वह २७० ई० में प्लेग से मर गया। उसके पश्चात् सम्राट् औरेलियन ने गोथों को डेसिया प्रान्त देकर डैन्यूब नदी को फिर रोमन साम्राज्य की सीमा बनाया। उसने जर्मनों को हराकर ब्रिटेन को फिर आधीन किया और राज्य को सगंठित किया।

किन्तु सन् २७५ ई० में सैनिकों ने उसे मार डाला। अब देश में दस वर्ष तक फिर अव्यवस्था रही। अन्त में सन् २८४ में डैन्यूब की सेनाओं ने अपने सरदार डायोक्लेशियन को सम्राट् बनाया।

साम्राज्य का पुनरुत्थान

उसने आशा के विपरीत साम्राज्य की एक दम काया पलट कर दी। उसने सेनाओं को वश में करके सीमाओं की रक्षा की। प्रान्तों का प्रबन्ध उसके समय में अच्छा हो गया। उसने ईसाई-यों के साथ बड़ी कठोरता का व्यवहार किया। सन् ३०५ में वह सीज़र कान्स्टैन्टाइन को राज्य देकर आराम करने के लिये अपने पद से प्रथक् हो गया। इसके आठ वर्ष के पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई।

कान्स्टैन्टाइन

३०६ में सीज़र कान्स्टंन्टाइन के मरने पर सेना ने सर्वसम्मति से उसके पुत्र कान्स्टैन्टाइन को सम्राट् बनाया। उसने ३१२ ई० में ऐल्प्स पार करके उत्तरी इटली पर विजय प्राप्त की। दस वर्ष के पश्चात् उसने थ्रेस में पूर्वी भाग के सम्राट् लिमिनियस को हरा कर वहां भी अधिकार कर लिया और समस्त रोमन साम्राज्य को फिर एक मनुष्य के आधीन किया। यह सम्राट् बड़ा बुद्धि-मान्, दूरदर्शी और राजनीतिज्ञ था। वह साम्राज्य की राजधानी को रोम से हटा कर थ्रेस के एक बैजन्टायम नगर में ले आया। बैजन्टायम अब सम्राट् के नाम पर कांस्टैन्टीनोपल अथवा कुस्तु-न्तुनिया कहा जाने लगा, जो वर्तमान् टर्की का एक प्रसिद्ध नगर

और भूतपूर्व राजधानी है। राजधानी यहां लाने से साम्राज्य को बड़ा लाभ हुआ। कुछ दिन बाद कांस्टैन्टाइन ने ईसाई धर्म ग्रहण करके उसके राजधर्म होने की घोषणा कर दी।

राजधानी तथा धर्म-परिवर्तन से रोम का महत्त्व बिल्कुल नष्ट हो गया। अब वह राजनीतिक तथा धार्मिक क्षेत्र में पहिले के समान अगुआ नहीं रहा। अब वहां का प्रधान अधिकारी गिरजाघर का एक बिशप था।

सन् ३३७ ई० में इस सम्राट् की मृत्यु होने पर महलों में अनेक षड्यन्त्र चलते रहे और युद्ध तथा रक्तपात भी हुए।

पश्चिमी रोमन साम्राज्य

राजधानी बदलने के साथ ही साथ इटली का भाग्य भी अस्त हो गया। अब के साम्राज्य को वह अपना साम्राज्य कहने का गर्व नहीं कर सकता था। अब वह उसमें एक परतंत्र देश के समान था, जिस पर किसी विदेशी नगर से शासन किया जा रहा था। राज-धर्म हो जाने से इटली में ईसाई धर्म की शीघ्रता पूर्वक उन्नति होती गई। कान्स्टैन्टाइन के कुछ पीढ़ी बाद सन ३५५ ई० में जूलियन और सन् ३७९ में थीयोडीसियस सम्राट् हुआ। उसके समय में सन् ३९४ में सम्राट् की उपस्थिति में सीनेट में यह बहस हुई कि नगर का रक्षक प्राचीन देवता जूपीटर को माना जावे अथवा ईसा को। सीनेट ने ईसा के पक्ष में मत दिया और तुरन्त ही यह निर्णय कानून बना कर कार्यान्वित कर दिया गया। अब प्राचीन धर्म के हवन के लिये मृत्यु-दण्ड नियत

किया गया। और प्राचीन देवताओं की पूजा बन्द कर दी गई। ३९५ में अपनी मृत्यु से कुछ पूर्व थियोडोसियस ने यह व्यवस्था करदी कि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र आर्केडियस कान्स्टैन्टिनोपल में रहता हुआ आधे पूर्वी भाग पर राज्य करे तथा दूसरा पुत्र होनोरियस पश्चिमी भाग पर राज्य करे। उसकी राजधानी इटली का प्रसिद्ध नगर मिलन निश्चित की गई। इस भांति अब रोमन साम्राज्य के व्यवहारिक रूप से दो भाग हो गए।

किन्तु होनोरियस की अवस्था उस समय केवल दस वर्ष की ही थी। उसके समय में एलरिक नामक एक गोथ सरदार ने रोम को बहुत बुरी तरह कई २ बार पराजित किया। ४१० में रोम को तीसरी बार पराजित करके एलिरक दक्षिण इटली में चला गया, जहां वह एक रोगवश मर गया। एलरिक के बाद गोथों का राजा अटाल्फस हुआ। उसने सम्राट् थियोडोसियस की पुत्री से विवाह किया। उसने स्पेन और गाल के बीच में एक और साम्राज्य स्थापित किया, जो लगभग तीन सौ वर्ष चला।

४२९ ई० में बन्डाल नामकी बर्बर जाति ने रोम के अधिकार से अफ्रीका को छीन लिया। ४५१ और ४५२ ई० में इटली को हूण सरदार एटिला से युद्ध करना पड़ा। इस समय रोमन सेनापति एटियस ने बड़ी वीरता दिखाई, किन्तु उसको सम्राट् वेलेन्टाइनियन ने ४५४ ई० में मरवा डाला। इस प्रसिद्ध सेनापति के मरने के बाद अफ्रीका के बंडालों ने एक बड़ी सेना ले कर रोम

पर चढ़ाई की । उन्हों ने रोमन सेना को हरा कर रोम को बहुत बुरी तरह लूटा । इससे रोम के सब खजाने कार्थेज पहुंच गये ।

इसके पश्चात २१ वर्ष तक इटली में रोमन सम्राटों का केवल नाम ही बना रहा । अब भी रेवेना नामक स्थान में बैठा हुआ एक व्यक्ति अपने को रोमन सम्राट् कहता और दरबार भी करता रहा । परन्तु इस समय असली शक्ति एक बर्बर सरदार ओरेस्टस के हाथ में थी , जिसने अपने पुत्र को सम्राट् घोषित कर दिया था । अन्त में ओडोकर के नेतृत्व में सैनिकों ने विद्रोह किया, जिसमें ओरेस्टस मारा गया । इस समय उसका पुत्र गद्दी छोड़ कर भाग गया और ओडोकर स्वयं प्रधान हुआ । परन्तु ओडोकर ने सम्राट् कहलाना पसंद नहीं किया । उसने सम्राट् के ताज, पोशाक, आदि चिन्हों को कान्स्टैन्टीनोपल भेज कर कहला दिया कि इटली को सम्राट् की आवश्यकता नहीं है । इस समय से इस पश्चिम भाग पर भी नाम मात्र के लिये पूर्वी भाग का अधिकार हो गया, जिसमें वास्तविक शक्ति ओडोकर के हाथ में ही रही ।

पूर्वी रोमन साम्राज्य (४७६–८०० ई०)

ओडोकर की सेना में अधिक संख्या जर्मन लोगों की थी । उसने इटली में सन् ४७६ से ४९३ तक १७ वर्ष तक राज्य किया । उसके समय में इटली की बहुत उन्नति हुई । ४८६ में पूर्वी गोथों के सरदार थियोडेरिकन ने इटली पर आक्रमण किया । परन्तु चार वर्ष तक युद्ध करने के पश्चात् उसने ओडोकर से सन्धि

करली, जिसके अनुसार इटली को दोनों ने बांट लिया। परन्तु शीघ्र ही थियोडोरिक ने ओडोकर को धोके से मरवा कर समस्त इटली पर अधिकार कर लिया। उसने बड़े २ पदों पर फिर रोमनों को नियत किया। उसके समय में इटली में शान्ति और समृद्धि खूब रही।

५२६ ई० में उसकी मृत्यु होने पर इटली का राज्य उसके वंशजों के हाथ में २७ वर्ष तक और रहा। परन्तु ५५३ ई० में पूर्वी रोमन साम्राज्य के सम्राट् जस्टिनियन के सरदारों ने आक्रमण करके इटली को पूर्वी साम्राज्य में मिला लिया। इसके दस वर्ष के पश्चात् एक दूसरी बर्बर जाति लम्बार्ड ने जस्टिनियन की सेनाओं को हराकर इटली पर फिर अधिकार कर लिया। फिर भी रेवेना, सिसली, कार्सिका, सार्डीनिया तथा इटली के कुछ स्थान पूर्वीय रोमन सम्राट् के ही आधीन रहे। लम्बार्डों का प्रधान केन्द्र उत्तर इटली रहा और यहीं पेविया नामक एक स्थान को उन्होंने अपनी राजधानी बनाया। टस्कनी, मध्य इटली, ट्रेण्ट, वेनीवण्टो आदि के सरदार नाम मात्र को पेविया के राजा के आधीन थे; परन्तु वास्तव में स्वतन्त्र थे। पहिले इनका भी मत भिन्न था, परन्तु धीरे २ यह कट्टर पन्थी कैथोलिक हो गये। अतः पोप गेगरी प्रथम ने उनके राजा के सिर पर एक मुकुट रखा, जिसमें ईसा के पवित्र क्रास की भी एक कील थी। धीरे २ यह लोग इटली वालों में ही घुल मिल गये। इटली का उत्तरी भाग अब भी इसी जाति के नाम पर लम्बार्डी कहलाता है।

ईसाई धर्म और पोप

ईसा मसीह के जीवन काल में उसके बारह शिष्य प्रधान थे। इन्होंने ईसा के पश्चात् प्रचार किया और अनेक स्थानों पर गिर्जे बनाये। ऐसा एक गिर्जा रोम में तथा एक कुस्तुन्तुनिया में भी बना। इन दोनों गिर्जों के स्वतन्त्र धार्मिक सिद्धान्त थे। किन्तु आधार दोनों का ईसा मसीह की शिक्षा थी। कहा जाता है कि रोम के गिर्जे को ईसा के शिष्य पीटर ने बनाया था। इस गिर्जे का वह पचीस वर्ष तक महंत रहा। अन्त में ६७ ई० में उसे धर्म के लिये नीरो के हाथ प्राण देने पड़े।

रोम के पतन के बहुत समय पहिले ही वहाँ एक धार्मिक रियासत स्थापित हो गई थी, जिसे नीरो, जूलियन आदि सम्राटों ने दबाने का प्रयत्न किया था। इनमें धार्मिक अधिकारियों के कई विभाग थे। यथा—डीकन, पादरी, बिशप आदि। बिशप बड़े अधिकारी थे। उनके भी चार विभाग थे—ग्राम बिशप, नगर बिशप, प्रान्त बिशप (अथवा आर्क विशप) और सब से बड़े पेट्रियार्क। चतुर्थ शताब्दी में ऐसे पांच पेट्रियार्क थे—रोम, कुस्तुन्तुनिया, अलेक्जेन्ड्रिया, अन्त्योक और जेरूसलेम में। किन्तु इनमें पीटर द्वारा स्थापित होने से रोम के पेट्रियार्क अथवा आर्क बिशप सबसे प्रधान गिने जाते थे और वही बाद को पोप कहलाये।

रोम से राजधानी हट जाने पर वहां का प्रधान अधिकारी बिशप ही रह गया। अब तक रोम समस्त यूरोप पर राजनीतिक

शासन करता था। किन्तु अब उसने धार्मिक शासन करना आरम्भ किया। क्रमशः रोम के बिशपों का प्रभाव बहुत बढ़ गया और समस्त यूरोप उनका आश्रित हो गया।

पश्चिमी साम्राज्य का पतन होने पर सम्राट् का स्थान भी रोम के बिशपों को ही (जो उस समय पोप कहलाते थे) मिल गया। बर्बर जातियों और इटली निवासियों में झगड़े होने पर इनका न्याय भी यही करते थे। आक्रान्ता लोग पोप की आज्ञा को प्रायः मानते थे। इस प्रकार उनका प्रभाव बहुत बढ़ गया। पादरियों के उपदेश के कारण दूर-दूर के मनुष्य रोम की यात्रा को आने लगे और गिर्जे में यथाशक्ति भेंट चढ़ाने लगे। बाद में पोप का प्रभाव इतना बढ़ गया कि उसकी एक आज्ञा में ही बड़े २ राज-मुकुट हिल जाते थे। पोप ने लैटिन भाषा को धार्मिक भाषा बनाया था। किन्तु यूरोपीय जनता में से लैटिन भाषा का दसवीं शताब्दी के आरम्भ में ही लोप हो गया और उसके स्थान पर फ्रेंच, स्पेनिश, इटालीय आदि भाषाएं बोली जाने लगीं। अतएव पांचवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक शिक्षा केवल पादरियों में ही थी। साधारण जनता लिखना भी नहीं जानती थी। सम्राट् शार्लमैन महान् को तो अपना नाम भी लिखना न आता था।

आरम्भ में पोप की राजनीतिक शक्ति को कम मान दिया जाता था। यहां तक कि ७५६ में पोप स्टीफन द्वितीय को लम्बार्ड लोगों के कष्ट से उद्धार पाने के लिए शार्लमैन के पूर्वज पिपिन से सहायता लेनी पड़ी थी। पिपिन ने लम्बार्डों को पराजित करके

पोप को बहुत सा भूमि भाग दे दिया। वास्तव में पोप की भौतिक शक्ति का आरम्भ इसी समय से हुआ।

पवित्र रोमन साम्राज्य

सन् ७६८ में पिपिन के मरने पर उसका कनिष्ठ पुत्र चार्ल्स कुछ झगड़े के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी बना। उसके समय में लम्बार्डों ने पोप पर फिर आक्रमण किया। अतः चार्ल्स ने वहां पहुंच कर लम्बार्डी के राजा को पदच्युत करके उसके मुकट को— जिसे लगभग दो सौ वर्ष पूर्व पोप ग्रेगरी ने लम्बार्ड राजा को दिया था, अपने सिरपर धारण किया। इसी समय से उसका नाम चार्ल्स मेन (चार्ल्स महान्) अथवा 'शार्लमैन' पड़ गया। इसके पश्चात् शार्लमैन ने अनेक देशों को जीता।

कुछ वर्षों के पश्चात् पोप लियो तृतीय को फिर शत्रुओं ने घेर लिया। अतः चार्ल्स महान् को फिर उसकी सहायता करनी पड़ी। अब पोप ने उसके अहसानों से दब कर सन् ८०० ई० को बड़े दिन के अवसर पर—जब चार्ल्स रोम में सन्त पीटर के गिर्जे में झुका हुआ प्रार्थना कर रहा था—लियो तृतीय ने आकर एक स्वर्ण मुकुट उसके सिर पर धर दिया और उसे सम्राट् घोषित किया। चार्ल्स महान् की जय जयकारों से समस्त गिरजा गूंज उठा। अब से यह साम्राज्य 'पवित्र रोमन सम्राज्य' कहलाया। उसके राज्य में आज कल के फ्रांस, जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम, स्वीजलैंण्ड तथा इटली आदि देश सम्मिलित थे। उसके पश्चात् उसके पुत्र लुई (धर्मात्मा) ने सन ८१४ से ८४० तक राज्य किया। लुई के

पश्चात् उसका साम्राज्य सन् ८४३ में वर्डून की सन्धि से उसके तीन पुत्रों ने आपस में बांट लिया। इसके अनुसार सब से छोटे पुत्र चार्ल्स को रोन नदी के पश्चिम का भाग तथा राइन और रोन नदी के बीच का देश—जो उत्तरी सागर से भूमध्य सागर तक फैला हुआ था तथा जिसमें इस समय के हालैण्ड, बेल्जियम, राइन का पश्चिमी भाग, स्वीज़रलैण्ड तथा आधा इटली आदि देश हैं—दिया गया। सम्राट् की पदवी लुई के दूसरे पुत्र लोथेयर को दी गई। बड़े पुत्र लुई को राइन नदी के पूर्व का भाग दिया गया, जिससे बाद में फ्रांस की उत्पत्ति हुई।

किन्तु चार्ल्स अपने राज्य के शक्तिमान् ड्यूकों को न दबा सका। उसके वंश से एक शताब्दी के भीतर ही राज्य निकल गया और सरदारों ने सेक्सनी के ड्यूक हेनरी को राजा बनाया। हेनरी की मृत्यु पर उसका पुत्र ओटो प्रथम ९३६ ई० में राजा हुआ। इस समय इटली में बड़ी अशान्ति थी। मागयार, सेरेसिन आदि लगातार आक्रमण कर रहे थे। पोप की दशा बड़ी बुरी थी। वैरंगर नामक एक सरदार वहां पर बड़ा प्रबल हो गया था। वह एडीलेड नाम की एक सुन्दर राजकुमारी से विवाह करना चाहता था, जो उसको न चाहती थी। ओटो ने ९५१ में इटली पहुंच कर वैरंगर को पराजित किया और एडीलेड से विवाह किया। फिर उसने पेविया में राजतिलक कराके 'इटली का राजा' की पदवी धारण की। इसके पश्चात् उसने अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की। ९६२ ई० में शार्लमैन के समान उसने भी रोम में जाकर पोप के

हाथ से राजतिलक कराया और सम्राट् की पदवी धारण की। इस समय से यह नियम हो गया कि जर्मन सरदार जिसको अपना राजा चुनें वही इटली का राजा हो और वही पोप से अभिषिक्त होकर सम्राट् की पदवी धारण करे। वास्तव में उस समय से यह साम्राज्य 'पवित्र रोमन साम्रज्य' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ओटो राज्य में अनेक सुधार करके सन् ६७३ ई० में मर गया। ओटो के पश्चात् क्रमशः ओटो द्वितीय और ओटो तृतीय सम्राट् हुए। ओटो तृतीय सन् १००२ ई० में मर गया। उसके समय में 'नार्थमैन' अथवा डेन लोगों के आक्रमण उत्तर से हुए। धीरे २ यह लोग नारमण्डी, नेपल्स, गॉल, इटली और इंगलैण्ड आदि में बस गए।

ओटो तृतीय के पश्चात् हेनरी द्वितीय, कोनरुड द्वितीय और हेनरी तृतीय ने अपनी शक्ति बढ़ा कर राज्य तथा धर्म में कई सुधार किये। हेनरी तृतीय के पुत्र हेनरी चतुर्थ का पालन दो बिशपों ने किया था। वह सन् १०५६ में सम्राट् हुआ। यह पोप ग्रेगरी सातवें (१०७३-८५) का समकालीन था। यह दोनों ही स्वभाव से महत्वाकांक्षी थे। दोनों ही अपने २ पद को एक दूसरे से बड़ा बतलाते थे। अतः दोनों में झगड़ा होगया। पोप ने हेनरी चतुर्थ को धर्म बहिष्कृत कर दिया। हेनरी पहिले तो इस आज्ञा को सुन कर हंसने लगा, किन्तु बहिष्कार होने के कारण उसको शीघ्र ही पोप के सामने आत्म समर्पण करना पड़ा। तीन दिन तक स्त्री, बालकों समेत सर्दी में खुले मैदान में पड़े रहने पर

हेनरी की पोप से भेंट हुई। पोप ने अपनी बहिष्कार आज्ञा को वापिस ले लिया। हेनरी इस अपमान को कभी न भूला। उसने अपनी स्थिति ठीक करके एक सेना लेकर फिर रोम पर आक्रमण किया और ग्रेगरी को घेर कर देश से बाहिर निकाल दिया, जहां वह सन १०८५ ई० में मर गया।

उसके बाद सन् ११०६ में हेनरी पंचम सम्राट् हुआ। पोप से इसकी भी शत्रुता चलती रही। अन्त में दोनों ने थक कर ११२२ में वर्म्स स्थान पर सन्धि करली।

११३८ ई० में हेनरी के वंश का साम्राज्य होहेनस्टाफन वंश के हाथ में चला आया और ११५२ में फ्रेडरिक बारबरोसा (लाल डाढ़ी वाला) जर्मनी का सम्राट् हुआ। इस समय इटली के दक्षिण में नार्मन लोगों की शक्ति बहुत बढ़ रही थी। पहिले तो यह पोप के विरोधी थे, किन्तु बाद में सम्राट् के भय से इन्होंने पोप से मित्रता करली।

इसी समय इटली के नगरों में अनेक संघ बन गये थे। व्यापार के कारण उनकी और भी वृद्धि हुई। इस प्रकार जिनोआ, पीसा, फ्लोरेन्स, मिलन और वेनिस सुन्दर और समृद्ध नगर बन गये थे, जो अपना २ प्रबन्ध स्वयं ही करते थे। रोम में भी एक ऐसी स्वतंत्र संस्था थी, जो पोप के अधिकार को न मानती थी। परन्तु सम्राट् ऐसे धनवान् नगरों को छोड़ना न चाहता था। अतः उसने वहां की सड़कों और पुलों पर तथा सैनिक प्रबन्ध और मैजिस्ट्रेट नियत करने का भी अपना ही अधिकार बताया।

इस कारण ये नगर भी उससे रुष्ट होकर पोप की ओर झुकने लगे। ११५८ ई० में उसने इटली जाकर मिलन पर अधिकार कर लिया और एक सभा बुलाकर अपने सब अधिकार उससे स्वीकार करा लिये। लम्बार्डी के कई नगरों ने इसका विरोध किया। उसने आक्रमण कर विद्रोहियों को दबाया; परन्तु तीन वर्ष बाद उनके पुनः विद्रोह करने पर उसने उनको दबा कर मिलन को नष्ट कर दिया।

११५६ ई० में पोप के पद के लिये दो उम्मेदवार खड़े हुए। अलेक्जेंडर तृतीय और विक्टर चतुर्थ। अलेक्जेंडर साम्राज्य का शत्रु था, अतः सम्राट् ने विक्टर का पक्ष लिया। अलेक्जेंडर ने उत्तर इटली के असंतुष्ट लोगों से मित्रता कर ली और इन नगरों ने भी आपस के भेद भाव छोड़ कर एक लम्बार्ड संघ बना लिया। ११६५ ई० में सम्राट् इटली आया और लम्बार्ड संघ की सेनाओं को हरा कर रोम में घुस गया। परन्तु प्लेग फैल जाने के कारण उसे लौटना पड़ा।

दस वर्ष बाद सम्राट् फिर इटली आया। किन्तु इस बार वह लम्बार्ड संघ की सेनाओं से हार गया। अस्तु, उसको भी सन् ११७७ ई० में वेनिस के गिर्जे में पोप अलेक्जेंडर से क्षमा प्रार्थना करनी पड़ी। यह सम्राट् का पोप के सामने दूसरा अपमान था। इसके पश्चात् इंगलैण्ड के राजा हेनरी द्वितीय को भी पोप के द्वारा अपमानित होकर नंगी पीठ पर चाबुक खाने पड़े थे। इसी भांति फ्रांस के फिलिप आगस्टस और इंगलैण्ड के राजा जॉन को भी अपमानित होना पड़ा।

इस समय इटली के दक्षिण तथा सिसली में नार्मनों का शक्तिशाली राज्य था। फ्रेडेरिक ने वहां के राजा की पुत्री कान्स्टेन्स से अपने पुत्र हेनरी षष्ठ का विवाह किया। इस प्रकार जर्मनी, नेपल्स और सिसली का यह मेल पोप को पसन्द न आया। वह हेनरी को—जो पिता के मरने पर ११९० में सम्राट् हो गया था—दोनों स्थानों से हटाना चाहता था।

११९७ ई० में हेनरी अपने एक बालक फ्रेडेरिक को छोड़ कर मर गया। पोप ने पहिले तो उसका विरोध किया, किन्तु बाद में उसको सम्राट् स्वीकार कर लिया। सम्राट् फ्रेडेरिक द्वितीय बहुत युद्धों के पश्चात् १२१४ ई० में पूर्ण स्वतन्त्र और शक्तिमान् होगया।

इस समय पोपों की विलासप्रियता बढ़ रही थी। उनके राजनीतिक कार्यों का भी जनता पर बुरा प्रभाव पड़ता था। अतः अब चारों ओर से सुधार-सुधार की ही ध्वनि सुनाई देती थी। इटली के सन्त फ्रांसिस ने सच्चे साधुओं का एक नवीन पन्थ चलाया, जिससे पोप की लोकप्रियता कुछ बढ़ गई।

फ्रेडेरिक द्वितीय बहुत योग्य व्यक्ति था। वह विद्वान था और दक्षिण इटली की भाषा में कविता भी करता था। नेपल्स में उसने एक विश्वविद्यालय बनाया। इटली में उसने एक वैद्यक विद्यालय खोला और बहुत से जंगली जानवरों का संग्रह किया। इस समय ईसाइयों और मुसलमानों में धर्म युद्ध चल रहे थे। पोप उसको युद्ध में भेजना चाहता था, किन्तु वह इटली में ही

रहना चाहता था। अन्त में पोप ग्रेगरी नवम ने उसको धर्म बहिष्कृत कर दिया। अन्त में वह इसी दशा में १२३८ ई० में पूर्व की ओर गया। वहां उसने अपने सम्बन्ध के कारण ईसाइयों को अधिक अधिकार दिला दिये और जेरुसेलम के राजा की पदवी धारण की (यद्यपि धर्म बहिष्कृत होने के कारण उसको सिर पर स्वयं ही मुकुट रखना पड़ा)। लौटने पर उसने पोप की सेना को पराजित किया। १२३० में पोप ने उससे सन्धि करके उसके विरुद्ध बहिष्कार की आज्ञा को रद कर दिया। १२३७ ई० में इटली के कुछ संघों से सम्राट् का युद्ध हुआ, जिसमें संघों को पराजित होना पड़ा। किन्तु इस समय संघों की हिमायत पर पोप ने सम्राट् को फिर धर्म बहिष्कृत कर दिया। इसके थोड़े दिन बाद ग्रेगरी नवम मर गया। अगले पोप इन्नोसेंट चतुर्थ ने भी ग्रेगरी की नीति ही कायम रक्खी। फ्रेडेरिक १२४७ ई० में इटली के परमा स्थान पर लड़कर हार गया और तीन वर्ष बाद इस झगड़े को अनिश्चित छोड़कर मर गया। उसकी मृत्यु के चार वर्ष बाद ही राज्य के दो भाग हो गये।

१२६१ ई० में एक फ्रांसीसी अर्बन चतुर्थ पोप हुआ। वह होहेनस्टाफन वंश को शक्तिमान् करना चाहता था। उसने फ्रांस के राजा लुई सन्त के भाई अंडाउ के चार्ल्स को सिसली का राजा बनाया, जिसने १२६६ ई० में फ्रेडरिक द्वितीय के निर्बल उत्तराधिकारी को हराकर और मार कर नेपल्स पर भी अधिकार कर लिया। मृत राजा का कानसेडिनो नामक पुत्र १२६८ ई० में

नेपल्स के बाज़ार में खुले मैदान मार डाला गया। यह इस वंश का अन्तिम सम्राट् था। परन्तु १२८२ ई० में सिसली वालों ने विद्रोह करके बहुत से फ्रांसीसियों को मार डाला; और स्पेन के एक पूर्वी प्रान्त एरेगान के राजकुमार को अपना राजा बनाया। इटली के नगरों ने भी—जो अब तक रोम का साथ देते थे—जर्मन सम्राटों की शक्ति नष्ट हो जाने से पोप का साथ देने की आवश्यकता न समझी। अतएव इस समय पोप अत्यन्त निर्बल हो गया।

सन् १३०० ई० के पश्चात् पोप बोनीफेस आठवें का फ्रांस के राजा फिलिप चतुर्थ से झगड़ा हुआ। फिलिप ने पोप को पकड़वा कर कैद कर लिया। उसके उत्तराधिकारी पोप क्लेमेंट पंचम ने तो फ्रांस के राजा का प्रभुत्व स्वीकार करके फ्रांस की भूमि में एविगनान स्थान में रहना आरम्भ कर दिया। इस घटना से पोपों के हाथ से शक्ति और प्रभाव दोनों ही जाते रहे।

इटली में पोप की अनुपस्थिति के कारण छोटे २ अनेक राजा स्वतंत्र हो गए।

रिनासेन्स अथवा साहित्यिक जागृति

चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दियों में इटली में प्राचीन यूरोपीय साहित्य, विद्या और कलाओं के प्रति विशेष उत्साह प्रगट हुआ; जिसने अपने प्रभाव के कारण यूरोप में एक नया युग उपस्थित कर दिया।

इस समय देश २ में ग्रन्थ लिखे जाने लगे। इटली में दान्ते ने

वहां की प्रचलित भाषा में कई पुस्तकें लिखीं। प्रत्येक देश में वहां की स्थानीय भाषाओं में राष्ट्रीय वीरों के चरित्र लिखे गये; जिससे राष्ट्रीय साहित्य की वृद्धि हुई और भिन्न २ भाषाओं का भी विकास हुआ। दान्ते के पश्चात् पीट्रार्क (१३०४ से १३७४) ने विद्या का अच्छा प्रचार किया। इस समय यूनानी और लैटिन भाषाओं के लिये रुचि बढ़ने लगी। क्रमशः पोपों ने भी इस में भाग लिया और रोम प्राचीन शिक्षा का केन्द्र बन गया। इस समय साहित्य और दर्शन शास्त्र के साथ २ गृहनिर्माण शिल्प और चित्रकला की भी खूब उन्नति हुई। इस आन्दोलन के कारण ही यूरोप में बुद्धिवाद (Rationalism) की उत्पत्ति हुई, जिससे इतिहास, पुरातत्त्व विज्ञान और तुलनात्मक समालोचना का आरंभ हुआ। इसी कारण आगे जाकर 'धर्म संशोधन' (Reformation) का कार्य संभव हो सका।

इटली के विभाग

इस समय धन, व्यापार और कलाओं के कारण इटली का स्थान महत्त्वपूर्ण होने पर भी उसके पतन के कई कारण उपस्थित थे। उस समय इटली एक राष्ट्र न था। उस समय वहां अनेक रियासतों में से पांच रियासतों—मिलन, वेनिस, फ्लोरस, नेपुल्स तथा पोप की रियासतों—ने औरों को दबा कर अधिक सत्ता प्राप्त कर ली थी।

१. मिलन—मिलन पहिले रोमन साम्राज्य की एक जागीर थी। सन् १४५० में यहां स्फोर्जी वंश का राज्य हुआ, जिसमें सबसे

चतुर तथा राजनीतिज्ञ फ्रांसेस्को था। उसका पुत्र निर्बल तथा दुराचारी होने के कारण मार डाला गया। उसका पुत्र बालक था—अतः उसका भाई लोडानिको (राजकुमार का चचा) संरक्षक बनाया गया। उसने स्वयं राजा बनने की इच्छा से सम्राट् और फ्रांस से सहायता मांगी, जिससे आगे चलकर स्पेन और फ्रांस में झगड़ा हुआ। उसने निर्दय होते हुए भी राज्य अच्छी तरह किया।

२. वेनिस—यहां प्रजातंत्र राज्य था। परन्तु प्रधान शक्ति यहां धनी व्यापारियों के हाथ में थी, जो प्रायः अच्छे राजनीतिज्ञ होते थे। तुर्कों की बढ़ती हुई शक्ति के सामने वेनिस को उनसे सन्धि करनी पड़ी।

३. फ्लोरेंस—यहां भी प्रजातंत्र था, परन्तु वास्तविक शक्ति मेडिसी वंश के अधीन थी। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध तथा बलवान शासक लोरेन्जों (१४६९—९२) हुआ। उसकी मृत्यु से बहुत हानि पहुंची। उसके बाद यहां की दशा फिर बिगड़ गई। इसी समय एक उपदेशक सेवनरोला ने वहां राष्ट्रीय भाव जगाने का प्रयत्न किया। फ्रांस के राजा आठवें चार्ल्स के विरुद्ध सेनाओं का संचालन और नेतृत्व उसी ने किया था। चार वर्ष तक राज करने के पश्चात् वह १४९८ में हरा कर जीवित ही जला दिया गया। अब वहां विद्रोह होकर मेडिसी वंश की फिर प्रधानता हुई।

४. नेपुल्स—पहिले नेपुल्स और सिसली मिले हुए थे। परन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में एरेगोन के एलफेंजों ने दोनों को अपने भाई

और पुत्र में बांटकर प्रथक् २ कर दिया। परन्तु उसके पुत्र की क्रूरता के कारण वहां के सरदारों ने फ्रांस से सहायता मांगी। अन्त में वह स्पेन में मिला लिया गया तथा यूट्रैक्ट की सन्धि तक उसी में रहा।

५. **पोपों का राज्य**—यह राज्य मध्य इटली में समुद्र के इस किनारे से उस किनारे तक था। पोप उसको बराबर बढ़ाते जाते थे।

इटली के लिये फ्रांस और स्पेन में कलह

इटली को इस प्रकार विभक्त तथा निर्बल देख कर तीन राष्ट्र उसकी ओर आंखे लगाये थे—स्पेन, फ्रांस और तुर्की।

फ्रांस और स्पेन तुर्की पर चढ़ाई करने के बहाने से इटली की ओर को चले। नेपुल्स को निर्बल देखकर उसे दबाने के लिये वेनिस ने फ्रांस से सहायता मांगी। मिलन में लोडोविको ने भी अपने भतीजे से राज्य लेने के लिये फ्रांस से सहायता मांगी। अतएव फ्रांस का राजा चार्ल्स आठवां सन् १४९४ में मिलन आया, जहां उसका अच्छा स्वागत किया गया। फ्लोरेंस उसका सामना न कर सका। पोप महाराज तो झट शरण में आ गये। उन्होंने कई गांव देकर चार्ल्स से सन्धि कर ली। नेपुल्स का राजा भी राज छोड़ कर भाग गया। इस प्रकार चार्ल्स बिना किसी झगड़े के ही इटली का राजा बन गया। फ्रांस को बढ़ती हुई शक्ति देख कर स्पेन के फर्डीनेन्ड, सम्राट् मेग्ज़िमिलियन तथा पोप ने मिल कर पार्टी बनाई। यह देखकर चार्ल्स चुपचाप फ्रांस को लौट गया। इटली में उसका अधिकार न रहा।

शीघ्रही फ्रांस और स्पेन में इटली के अधिकारके लिये युद्ध छिड़ गया, जो अनेक दावपेंच और उतार चढ़ाव के साथ रुक २ कर १५५६ तक चलता रहा। अन्त से मिलन और नेपुल्स स्पेन के ही पास रहे।

चार्ल्स पंचम के सिंहासन छोड़ने पर उसका पुत्र फिलिप द्वितीय सन् १५५६ में स्पेन की गद्दी पर बैठा। मिलन, नेपुल्स, नीदरलैण्ड और अमेरिका भी उसी के अधिकार में रहे। फ्रांस का राजा हेनरी द्वितीय फिलिप को इटली तथा नीदरलैण्ड से निकालना चाहता था। परन्तु फिलिप ने फ्रांस वालों को हरा कर मिलन और नेपुल्स ले लिये। इस प्रकार दोनों का इटली के लिये युद्ध बन्द हो गया। इसके पश्चात् एक शताब्दी तक इटली की ऐसी ही दशा रही।

यूट्रैक्ट की सन्धि

सतरहवीं शताब्दी के अन्त में स्पेन के राजा चार्ल्स द्वितीय के अत्यन्त वृद्ध होने पर भी कोई सन्तान न होने से उत्तराधिकार के प्रश्न पर यूरोप में दो दल बन गए। इस समय स्पेन फ्रांस के राजा लुई चौदहवें के पुत्र के हाथ में जाने वाला था। अतः इंगलैण्ड, हालैण्ड तथा मुख्य जर्मन राज्यों ने उसके विरुद्ध एक गुट बनाया।

सन् १७०१ में इटली में युद्ध आरम्भ हो गया। इन झगड़ों के कारण सन् १७१३ में यूट्रैक्ट की प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण सन्धि हुई, जिससे मिलन, नेपुल्स और स्पेनिश नीदरलैण्ड

स्पेन से आस्ट्रिया के सम्राट् चार्ल्स छटवें को दिलवा दिये गये। सेवाय के ड्यूक को सिसली का द्वीप तथा राजा का पद मिला। इसके अतिरिक्त यूरोप के राज्यों में इस सन्धि के कारण और भी कई परिवर्तन हुए।

एक्सला-शापेल की सन्धि

सन् १७४० में चार्ल्स छटवें की मृत्यु हो गई। उसकी उत्तराधिकारिणी उसकी पुत्री मेरिया थेरेसा हुई। उसका जर्मनी के फ्रेडेरिक महान् से उत्तराधिकार के प्रश्न पर कई बार युद्ध हुआ। अन्त में सन् १७४८ में सबने एक्सला-शापेल स्थान पर सन्धि कर ली, जिसके अनुसार मेरिया आस्ट्रिया की रानी मानी गई। उसका पति सम्राट् हुआ, साइलेशिया फ्रेडेरिक को मिला और सार्डीनिया को सेवाय, नाइस और लम्बार्डी का कुछ भाग मिला, जिससे इटली में उसकी शक्ति बढ़ गई।

नेपोलियन बोनापार्ट

कुछ समय तक इसी प्रकार की दशा में रहने के पश्चात् अठारहवीं शताब्दी के अन्त में इटली को नेपोलियन बोनापार्ट की सेनाओं से पददलित होना पड़ा। इस समय इटली का एक बड़ा भाग आस्ट्रिया के सम्राट् के पास था। अत: नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर इटली के मार्ग से चढ़ाई की। उसने ट्यूरिन पहुंच कर अपने से दूनी आस्ट्रियन तथा सार्डीनियन सेना को हरा कर सेवाय और नाइस पर अधिकार कर लिया। एक स्थान पर तो उसने पांच सेनाओं को एक साथ पराजित किया। इससे भयभीत

होकर सम्राट् फ्रांसिस द्वितीय ने सन् १७९७ में केम्पो फ़ोर्मियो स्थान पर सन्धि करली, जिसके अनुसार बेल्जियम तथा राइन नदी का कुछ भाग फ्रांस को मिला और लिगुरियन (जेनोआ) तथा सिजल्याइन (लम्बार्डी) के दो प्रजातन्त्र राज्य फ्रांस के संरक्षण में स्थापित कर दिये गये। परन्तु नेपोलियन के मिश्र जाने पर शत्रु सेना ने फ्रांसीसी सेना को इटली से हरा कर भगा दिया।

९ नवम्बर १७९९ को फ्रांस का प्रधान कौन्सल बनने पर नेपोलियन ने जर्मनी तथा आस्ट्रिया से फिर युद्ध आरम्भ कर दिया। अन्त में सन् १८०१ में लुनविली की सन्धि के अनुसार केम्पो फ़ोर्मियो के सन्धि पत्र के समान फिर आचरण किया गया। वेनेशिया का कुछ भाग तथा मोडेना आदि मिला कर सिजल्याइन प्रजातन्त्र और बढ़ाया गया।

सन् १८०५ में नेपोलियन का आस्ट्रिया से फिर युद्ध हुआ। अब प्रेसवर्ग की सन्धि के अनुसार वेनिस आस्ट्रिया से लेकर इटली में मिलाया गया। फिर उसने सिजल्याइन प्रजातन्त्र को तोड़ कर इटली राज्य स्थापित किया और स्वयं उसका राजा बन गया। इस घटना से कई शताब्दी के परतन्त्र बने हुए इटली में भी राष्ट्रीय भावों का संचार होने लगा। वास्तव में इटली की स्वतन्त्रता का इतिहास भी यहीं से आरम्भ होता है।

विएना कांग्रेस

नेपोलियन के पतन के पश्चात् विएना कांग्रेस के द्वारा सन् १८१५ में सभी यूरोपीय राज्यों की सीमा फिर निश्चित की गई।

इसके अनुसार इटली के दक्षिण में सार्डीनिया में पुराने राज्यवंश को स्थापित कर जेनोआ (पिडमांट) और सेवाय भी उसी को दे दिये गये। यह आगे दिखलाया जावेगा कि यह सार्डीनिया का राजा ही आगे चल कर इटली का राजा बन गया।

उत्तरी और मध्य इटली में आस्ट्रिया की प्रधानता रखी गई, जिससे इटली में राष्ट्रीयता का उदय हुआ और अनेक षड्यन्त्रों तथा युद्धों के द्वारा आस्ट्रिया का विरोध किया जाने लगा। इटली में आस्ट्रिया को लम्बार्डी (Lombardy), वेनेशिया (Venetia), ट्रिएस्टे (Triesti) और डलमाशिया (Dalmatia) दे दिये गए। फ्लोरेंस की गद्दी पर एक आस्ट्रिया के राजकुमार को और पारमा (Parma) की गद्दी पर एक आस्ट्रियन राजकुमारी को बिठला कर नेपुल्स फर्डिनेंड चतुर्थ को दे दिया गया। इससे आस्ट्रिया के शासन में पैंतालीस लाख प्रजा और आगई तथा उसका शासन लगभग समस्त इटली पर हो गया। इस समय इटली में दस राज्य स्थापित किये गये। किन्तु इनमें एक सार्डीनिया के राजा को छोड़ कर शेष सब आस्ट्रिया के हाथ की कठपुतली थे।

आस्ट्रिया के विरुद्ध आन्दोलन

सन् १८१५ से १८४८ तक आस्ट्रिया ने इटली निवासियों पर बड़े २ अत्याचार किये। अत: जनता में विद्रोह के भाव फैलने लगे। सब से पहले सन् १८२१ में देश भक्त कानफैलोनीटी ने मिलन नगर में इटली के देश भक्तों की एक सभा स्थापित की, जिससे उसको आजन्म कारावास का दण्ड दिया गया। तौभी

नेपुल्स और पिडमाण्ट तथा अन्य कई स्थानों पर भी कुछ समय तक क्रान्तिकारियों की विजय रही। किन्तु आस्ट्रिया की सेनाओं ने इस विद्रोह को बड़ी क्रूरता से दबा कर राजा फर्डिनेण्ड चतुर्थ को फिर नेपुल्स की गद्दी पर बैठाया।

चार्ल्स एलबर्ट और स्वातन्त्र्य युद्ध का प्रथम अध्याय

सन् १८३१ में चार्ल्स फ़िलीक्स के सार्डियन सिंहासन पर पिडमांट में उसका चचेरा भाई चार्ल्स एलबर्ट बैठा। इस समय इटली में जेनोआ के एक डाक्टर का पुत्र देशभक्त *मत्सीनी (Mazzini) अपने उपदेश की आग लगा देने के कारण देशनिर्वासित होकर फ्रांस के मारसेल्स (Marselilea) नामक स्थान मे था। मत्सीनी राजतन्त्र के विरुद्ध प्रजातन्त्रवादी था। सन् १८३१ में उसने मारसेल्स में इटली के नवयुवकों की एक सभा बनाई। किन्तु सन् १८३२ में उसको फ्रांस से भी निकाल दिया गया और सन् १८३३ में वह स्वीजर्लैंड चला गया। किन्तु यहां भी सरकार के विरोधी होने से उसको इंगलैण्ड में जाकर शरण लेनी पड़ी।

इस समय गुप्त सभाओं में एक 'कारबरनारी' नामक सभा बहुत प्रसिद्ध थी। सन् १८४८ में फ्रांस की राज्यक्रांति का प्रभाव समस्त यूरोप के समान इटली पर भी पड़ा। इस समय यूरोप में स्वतन्त्रता की लहर विशेष रूप से उठ रही थी। फलतः १८४७ में लम्बार्डी और १८४८ मे सिसली में विद्रोह हुआ। नेपुल्स, पिडमांन्ट, टस्कनी आदि प्रत्येक स्थान पर प्रजा अपने २

*इसका उच्चारण हिन्दी वाले गलती से मैजिनी किया करते हैं।

राजाओं के विरुद्ध होगई तथा उसने उन्हें शासन में सुधार करने को विवश किया। मिलन में आस्ट्रिया के विरुद्ध एक विद्रोह हुआ। इस समय समस्त इटली में स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन किया जा रहा था। किन्तु इस समय सब से बड़ी कठिनता यह थी कि वहां कई दल थे और सबके कार्य-क्रम अलग २ थे।

इन दलों में तीन दल प्रधान थे। एक दल इटली की सब रियासतों का एक संघ पोप की अध्यक्षता में बनाना चाहता था। दूसरा सार्डीनिया (पिडमांट) के राजा के नेतृत्व में इटली में एक वैध शासन स्थापित करना चाहता था। तीसरा दल प्रजातन्त्र का पक्षपाती था, जिसका नेता मत्सीनी था। मत्सीनी ने पोप को भगाकर सन् १८४८ में रोम में एक प्रजातन्त्र की स्थापना कर भी ली। किन्तु यह प्रजातन्त्र आस्ट्रिया के विरुद्ध अपनी रक्षा न कर सका।

सन् १८४८ की क्रान्ति से आस्ट्रिया के प्रधान मन्त्री मेटरनिक का पतन हुआ। इससे उत्साहित होकर मिलन और वेनिस के लोगों ने आस्ट्रिया की सेना को हरा कर वहां प्रजातन्त्र की घोषणा कर दी। पिडमान्ट के राजा चार्ल्स एलबर्ट तथा अन्य कुछ राजाओं ने भी उन्हें बहुत सहायता दी। किन्तु पोप ने आस्ट्रिया के कैथोलिक होने के कारण उसके विरुद्ध युद्ध करना धर्म विरुद्ध ठहराया। अब धीरे २ सब रियासतें चार्ल्स ऐलबर्ट से प्रथक् हो गईं और आस्ट्रियन सेना ने उसको २३ मार्च १८४९ को नोवारा स्थान पर हरा दिया। उस पराजय से इटली की सब आशाएं धूल

में मिल गई। चार्ल्स एलबर्ट अपने पुत्र विक्टर एमानुएल द्वितीय को राज्य देकर देश से बाहिर चला गया और इटली की स्थिति फिर पूर्ववत् हो गई। अब विक्टर एमानुएल ट्यूरिन में सार्डीनिया तथा पिडमांट की गद्दी पर बैठा।

सन् १८५२ में सार्डीनिया का प्रधान मन्त्री एक चतुर राजनीतिज्ञ काउन्ट कावूर बना।

कावूर और स्वातन्त्र्य युद्ध का द्वितीय अध्याय

कावूर को मत्सीनी के उपायों पर विश्वास नहीं था। वह स्वतन्त्रा के लिये विदेशियों की सहायता को आवश्यक समझता था। सन् १८५४-५५ के क्रीमियन युद्ध में कावूर ने रूस के विरुद्ध इंगलैण्ड और फ्रांस का साथ देकर यूरोप की प्रधान शक्तियों की सहानुभूति प्राप्त की। अतएव १८५६ की पेरिस की कांफ्रेंस में आस्ट्रिया के विरोध करते रहने पर भी कावूर इटली की ओर से प्रतिनिधि रूप में बुलाया गया। वहां उसने इटली में आस्ट्रिया के शासन की बड़ी कड़ी आलोचना की। इससे फ्रांस के सम्राट् नेपोलियन तृतीय ने जुलाई १८५८ में सेवाय प्रान्त लेने की शर्त पर इटली को सहायता देने का वचन दिया। अतएव अब कावूर ने भी सेना बढ़ाना आरंभ किया।

इस समय राजा विक्टर एमानुएल द्वितीय का इटली में केवल चार असम्बद्ध प्रदेशों पर ही अधिकार था। इनमें केवल जेनोआ (जो कुछ दिन पूर्व ही प्रजातंत्र बन चुका था) ही इटली की ख्याति के अनुरूप था। सेवाय यद्यपि राजा का मूल निवास

स्थान था, किन्तु वह ऐल्प्स पर्वत में फ्रांस की ओर होने से भाषा और भावों में फ्रांसीसी प्रान्त बना हुआ था। पिडमांट भी ऐल्पस् में होने के कारण बहुत बिछड़ा हुआ प्रदेश था। सार्डीनिया का द्वीप मलेरिया तथा बर्बरता पूर्ण था। अतएव ट्यूरिन राज्य में केवल जेनोआ ही एक प्रतापी प्रान्त था।

इटली की सैन्यवृद्धि आस्ट्रिया को बहुत बुरी लगी। अतएव अप्रैल १८५९ में आस्ट्रिया ने पिडमाण्ट पर आक्रमण करके युद्ध आरंभ कर दिया। फ्रांस और सार्डीनिया की सेना ने आस्ट्रिया की सेना को हरा कर ११ जुलाई १८५९ को लम्बार्डी पर अधिकार कर लिया। किन्तु इसी समय नेपोलियन तृतीय ने अकस्मात युद्ध रोक कर जुलाई में विला फ्रैंका स्थान पर आस्ट्रियनों से सन्धि कर ली, जिसके अनुसार लम्बार्डी विक्टर एमानुएल को दिलवा दिया गया, वेनेशिया आस्ट्रिया के पास रहने दिया गया तथा सेवाय और नाइस को फ्रांस ने ले लिया। यद्यपि यह ऐक्य की प्रथम सीढ़ी थी परन्तु इस सन्धि से इटली वाले बड़े निराश हुए। कावूर ने राजा से इस सन्धिपत्र को स्वीकार न करने का अनुरोध किया। किन्तु राजा के न मानने पर उसने क्रुद्ध हो कर अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

इसी समय टस्कनी, पारमा, मोडेना और रोमेना की रियासतों ने अपने २ राजाओं की इच्छा के विरुद्ध स्वयं ही सार्डीनिया में सम्मिलित होने की इच्छा प्रगट की। सन् १८६० में ट्यूरिन स्थान पर उनकी सम्मिलित पार्लमेन्ट की बैठक हुई। यह ऐक्य की दूसरी सीढ़ी थी।

गारीबाल्डी

२० जनवरी १८६० को कावूर फिर प्रधान मंत्री बन गया। उसने देश सेवा में गारीबाल्डी को दीक्षित किया।

इसी वर्ष इटली के दक्षिण सिसली द्वीप ने विद्रोह करके वहां के बोर्बन राजवंश का अन्त कर दिया। देशभक्त वीर सैनिक गारीबाल्डी अपनी लाल कमीज की वर्दी की एक सहस्र सेना लेकर ११ मई को वहां पहुंचा। वह अपने को पिडमांट का सैनिक कहता था और इटली तथा विक्टर एमानुएल की ही जय बोलता था। उसने एक मास के भीतर ही वहां की बीस सहस्र सेना को हरा दिया। उस द्वीप को सार्डीनिया में मिलाने की घोषणा करके वह नेपुल्स आया, जहां का राजा उसके आने का समाचार पाकर पहिले ही भाग गया था। वहां भी गारीबाल्डी का स्वागत किया गया।

कावूर ने समझ लिया कि इटली की स्वतंत्रा के नेतृत्व ग्रहण करने का यही उपयुक्त समय है। गारीबाल्डी अब रोम की ओर बढ़ रहा था। कावूर ने विक्टर एमानुएल को सेना लेकर पोप के राज्य में भेजा, जहां उसने अंब्रिया तथा मार्चेस प्रान्तों को मिला कर गारीबाल्डी के कार्य को पूरा।किया। ट्यूरिन में गारीबाल्डी ने भी राजा के पहुंचने पर अपनी सब शक्ति उसके हाथ में सौंप दी। इस समय ट्यूरिन में इन राज्यों की जनता का २१ अक्टूबर १८६० को मत लिया गया। इन्होंने कावूर के पक्ष और

इटालियन स्वतन्त्रता के चार निर्माता

राजा विक्टर एमानुएले द्वितीय

काउंट कावूर

जूज़ेप्पे गारीबाल्डी
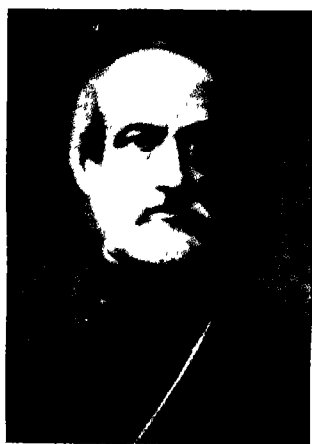
मत्सीनी (मैज़ीनी)

मत्सीनी के विपक्ष में मत दिया। गारीबाल्डी बिना कुछ पुरस्कार स्वीकार किये पृथक् हो अपने गांव को चला गया।

इटली का राजा विक्टर एमानुएल द्वितीय

(१८६२-१८४६-१८७८ ई०)

अब एनुमाएल को 'इटली के राजा' की पदवी मिली। इसके कुछ दिन बाद ही सन् १८६१ में कावूर की मृत्यु हो गई।

इस समय प्रायः समस्त इटली एक हो गया था। अब उसमें केवल दो बातों की कमी थी। वेनेशिया अभी तक आस्ट्रिया के के पास था तथा रोम में फ्रांसीसी सेना की सहायता से पोप का अधिकार था। अप्रैल १८६६ में आस्ट्रिया तथा प्रशा में युद्ध हुआ। इटली ने प्रशा का साथ दिया। यद्यपि इस युद्ध में इटली की सेना हार गई, परन्तु प्रशा ने सडोवा स्थान पर आस्ट्रिया को पूर्णतया हरा दिया; जिससे वेनेशिया इटली को मिल गया।

सन् १८७० में फ्रांस और प्रशा में युद्ध हुआ। इसमें फ्रांस को अपनी रोमस्थित सेना की आवश्यकता पड़ी। उसके हटते ही एमानुएल ने रोम पर अधिकार कर लिया और उसे संयुक्त इटली की राजधानी बनाया।

इस प्रकार मत्सीनी की नैतिक शक्ति तथा राष्ट्रीय भावों की जागृति, गारीबाल्डी की तलवार, कावूर की कार्यपटुता तथा राजनीतिक चतुरता और राजा एमानुएल की सुबुद्धि से इटली क स्वतंत्रता तथा एकता का पुराना स्वप्न १८७० में पूर्ण हुआ।

इटली का शासन विधान

यद्यपि सन् १८६० तक इटली की राजनैतिक एकता पूर्ण हो चुकी थी, किन्तु उसकी जनता में एकता नहीं हुई थी। शासन-विधान तो उसकी सब रियासतों का पृथक् २ था। केवल पिडमांट में पार्लमेंट प्रणाली पर शासन किया जाता था। सन् १८६१ में पिडमांट के शासन-विधान को ही कुछ परिवर्तन के साथ सारे इटली का विधान मान लिया गया। पार्लमेंट की दो सभाएं बनाई गईं—एक सीनेट, दूसरी चैम्बर आफ़ डेपुटीज़। मंत्रियों को चैम्बर के प्रति उत्तरदायी बनाया गया। नये कानूनों को दोनों सभाओं की सम्मति से बनाना निश्चित किया गया। पहिले ट्यूरिन को राजधानी बनाया गया, फिर १८६५ में फ्लोरेंस और अन्त में १८७१ से रोम को राजधानी बना दिया गया। राज्य को प्रथम ५९ तथा बाद में ६९ जिलों में विभाजित कर दिया गया। मताधिकार को भी वहां धीरे २ बढ़ाया गया। सन् १९१२ में तो वहां सब बालिगों को कुछ पाबन्दी के साथ मताधिकार दिया गया।

पोप की व्यवस्था

अब पोप के साथ राजनीतिक सम्बन्ध का प्रश्न शेष था। पार्लमेंट ने १३ मई १८७१ को राज्य और चर्च (धर्म) के सम्बन्ध में पोप की गारंटियों का कानून पास किया। इस कानून के अनुसार पोप को कैथोलिक संसार पर शासन करने की सुविधा देकर पूर्ण स्वतंत्रा दी गई। उसके ऊपर आक्रमण का दण्ड राजा के ऊपर आक्रमण के समान रखा गया। पोप भी राजा के

ही समान दरबार करते हैं। दूसरे राज्यों से वह सीधा पत्र व्यवहार कर सकते हैं। उनके अपने डाकखाने और तार घर पृथक् तथा स्वतंत्र हैं। इसके अतिरिक्त वैटीकन, लैटेरैन, कैस्टल गौडोल्फो और उनके बगीचों में पूर्णतया पोप का ही राज्य है। वहां कोई इटैलियन अफ़सर अपने अफ़सरी रूप में प्रवेश नहीं कर सकता, क्यों कि वहां इटली का कानून न चल कर पोप का ही कानून चलता है। पोप को उसके राज्य की क्षतिपूर्ति के रूप में इटली की सरकार प्रतिवर्ष ३२२५००० फ्रैंक देती है; किन्तु पोप उसको स्वीकार करने को कभी तैयार नहीं होते, क्यों कि वह अपने को वैटीकन का क़ैदी समझते हैं और सन् १८७० के पश्चात् कभी भी रोम में नहीं निकलते। क्यों कि ऐसा करने से उनको दूसरे राज्य को देख कर उसको स्वीकार करना पड़ेगा।

अन्य पोप

विक्टर एमानुएल द्वितीय का ६ जनवरी १८७८ ई० को देहान्त होने के थोड़े दिन पीछे ही पोप पायस नवें का भी देहान्त हो गया। इस पोप और बादशाह एमानुएल द्वितीय को एक ही स्थान पर गाड़ा गया। उसके पश्चात् ता० २० जनवरी सन् १८७८ को लियो तेरहवां अड़सठ वर्ष की अवस्था में पोप बनाया गया। उसके पश्चात् २० जुलाई सन् १९०३ को कार्डिनल सार्टो पायस दसवें के नाम से पोप बनाया गया। उसके पश्चात् ३ सितम्बर १६१४ को महायुद्ध के आरम्भ होने पर बोलोगना के आर्कबिशप को बेनिडिक्ट पन्द्रहवें के नाम से पोप बनाया गया। उसका

देहान्त होने पर ६ फर्वरी सन् १९२२ को मिलन के आर्कबिशप कार्डिनल रैटी को पायस ग्यारहवें के नाम से पोप बनाया गया। वर्तमान पोप आप ही हैं।

आर्थिक कठिनाई

राज्य की दूसरी कठिनाई आर्थिक थी। इस समय शासन को केन्द्रित करने के कारण सब राज्यों के ऋण के उत्तरदायित्व को भी लेना पड़ा। किन्तु मंत्रियों ने सब प्रबन्ध इतनी सुन्दरता से किया कि सन् १८७९ में ही व्यय से आय अधिक हो गई।

राजा हम्बर्ट प्रथम (१८७८-१९००)

९ जनवरी सन् १९७८ को राजा विक्टर एमानुएल द्वितीय का देहान्त होने पर उसका पुत्र हम्बर्ट प्रथम (Humburt I) चौंतीस वर्ष की अवस्था में राजा हुआ।

इटली के उपनिवेश

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में जिस समय अन्य यूरोपीय शक्तियां अफ्रीका में हाथ पैर फैला रही थीं, इटली को भी उपनिवेशों के लेने की इच्छा हुई। उसने अपनी सीमा के पास टयूनिस को लेना चाहा, किन्तु यहां फ्रांस ने १८८१ में दखल कर लिया। अत: १८८५ में उसने लाल सागर के पास कुछ स्थान पर और विशेषकर मसावा (Massawa) बन्दर पर अधिकार कर लिया। इस के परिणामस्वरूप दो वर्ष पश्चात १८८७ में उसका ऐबीसीनिया के शासक से युद्ध हो गया। इस युद्ध को

आरम्भ करने वाले मन्त्री—डेप्रेटिस (Depretis) का उसी वर्ष देहान्त हो गया। उसके पश्चात् क्रिप्सी (Cripsı) मंत्री हुआ। उसको उपनिवेशों के लेने की बड़ी चिन्ता थी। उसने अमरीका में खूब हाथ पैर जमाये। अनेक सरदारों को एक दूसरे के विरुद्ध करके उसने लाल सागर के पास पूर्वीय अफ्रीका में एक उपनिवेश बना कर उसका नाम एरेट्रिया रखा। इसी समय सुमालीलैंड को इटली का संरक्षित राज्य बनाया गया।

किन्तु इन सब कार्यों में बहुत धन खर्च हो जाने से क्रिप्सी को अनेक कर बढ़ाने पड़े। इसका परिणाम यह हुआ कि जनता में असन्तोष फैल गया। १८८९ में तो ट्यूरिन, मिलन, रोम और अपूलिया के दक्षिणी प्रांतों में विद्रोह भी हो गये। अन्त में १८९१ में क्रिप्सी के मन्त्रिमण्डल का पतन हुआ। किन्तु उसका उत्तराधिकारी और भी अयोग्य प्रमाणित हुआ। अतः १८९३ में क्रिप्सी फिर मन्त्री हुआ और उसने १८९६ तक निरंकुशता से राज्य किया। क्रिप्सी को जनता के असन्तोष की अपेक्षा उपनिवेशों की ही अधिक चिन्ता थी। पूर्वीय अफ्रीका में और हाथ पैर फैलाने के कारण उसका ऐबीसीनिया के शासक मेनेलिक के साथ फिर युद्ध हो गया। सन १८९६ में १४ सहस्र इटालिन सेना ने ८० सहस्र ऐबीसीनियन सेना से युद्ध किया, जिसमें ६ सहस्र इटालियन सेना मारी गई। इटली की इस पराजय से क्रिप्सी को तुरन्त त्यागपत्र देना पड़ा। उसके पश्चात मार्किस डी रूडीनी प्रधान मन्त्री हुआ। उसने शांति की नीति बर्ती। उसने अफ्रीका में और हाथ

पैर न फैलाने का वचन देकर मेनेलिक से अपने कैदी छुड़ा लिए। किन्तु जैसा कि आगे दिखलाया जावेगा इटली इस अपमान को न भूला और सन् १९३६ ई० में उसने इसका भयंकर बदला लेकर ऐबीसीनिया को पूरे तौर से अपने राज्य में मिला लिया।

रूडीनी देश मे शान्ति स्थापित करने का यत्न कर ही रहा था कि १८९८ में इटली के कई भागों में फिर विद्रोह हो गया। मिलन का विद्रोह तो अत्यन्त भयंकर था। इन सब विद्रोहों का कारण जनता की निर्धनता और अधिक कर-भार था। किन्तु तौभी इनको अत्यन्त कठोरता से दबा दिया गया।

राजा विक्टर एमानुएल तृतीय (सन् १९०० से)

इसी समय ब्रेस्की नामक एक अराजक संयुक्त राज्य अमरीका के न्यू जर्सी (NewJersey) नाम के राज्य के पैटर्सन (Paterson) नामक नगर में रहता था। वह वहां से राजनीतिक हत्या के उद्देश्य से चल कर इटली आया। उसने २९ जुलाई सन् १९०० को राजा हम्बर्ट प्रथम की हत्या कर दी। अतः उसके पश्चात् उसका पुत्र राजा विक्टर एमानुएल तृतीय इकत्तीस वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा।

आपका जन्म सन् १८६९ ई० की ११ नवम्बर को और विवाह अक्तूबर १८९६ मे मांटीनीग्रो की प्रिंसेस एलेन के साथ हुआ था। आपका आरम्भिक जीवन सेना में व्यतीत हुआ था।

आपकी शिक्षा बड़ी अच्छी हुई थी। अतएव आपने शीघ्र ही प्रजा हित के अनेक कार्य करके प्रजा के मन को मोह लिया। आप

इटली के वर्तमान सम्राट्

विक्टोरिओ एमानुएले तृतीय

सरकार के कामों की पूर्ण देख रेख करने वाले, परिश्रमी और वीर थे। आपके शासन से प्रजा में अमनचैन छा गया। इस समय अनेक करों को घटा कर भी राज्य के अर्थ पर नियन्त्रण किया गया।

इस समय यूरोप के अन्य देशों के समान इटली का व्यापार भी बढ़ रहा था। खानों का काम तो वहां इतना बढ़ गया था कि जहाज़ और रेलों के निर्माण के लिए इटली को बाहिर से कुछ भी नहीं मंगाना पड़ता था। रेशम, रुई तथा औषधियों का व्यापार भी बढ़ा और इटली के बड़े-बड़े व्यापारी जहाज़ सब देशों में जाने लगे।

इटली में यद्यपि कोयले और लोहे की खानों का लगभग अभाव है किन्तु वहां पानी के झरनों की कमी नहीं है। आपने इन झरनों से बहुत सी बिजली बना २ कर अपने कारखानों को चलाना आरम्भ किया। इस विषय में इटली अब भी बराबर उन्नति ही करता चला जाता है।

इस समय इटली की जन संख्या भी बढ़ी। सन् १८७० की अढाई करोड़ जन संख्या १९१४ में बढ़ कर साढ़े तीन करोड़ हो गई, जिससे बहुत से इटालियनों को अपने देश में कम स्थान मिलने के कारण अमरीका आदि देशों में जाकर बसना पड़ा। यही कारण था कि इटली की भी उपनिवेशों की इच्छा बराबर बढ़ती गई और आगे जाकर उसको सन् १९११-१२ में लीबिया युद्ध, १९१४-१८ तक महायुद्ध और १९३५-३६ में ऐबीसीनिया युद्ध

करने पड़े। यद्यपि इटली के शासन में मुसोलिनी ही सर्वेसर्वा है तौ भी इटली के राजा (आज कल सम्राट्) को उनकी नियुक्ति का अधिकार है। यह अवश्य है कि सम्राट् को मुसोलिनी को हटाने का अधिकार नहीं है।

यूरोप के राजाओं में राजा विटोरिओ एमानुअल तृतीय सब से प्राचीन हैं। सन् ३७ की २९ जुलाई को उनको गद्दी पर बैठे हुए पूरे ३७ वर्ष हो चुके। उनके दो निर्णय उनके जीवन की विशेषता समझे जाते हैं। सन् १९१५ में उन्होंने ज्योलीटी को प्रधान मन्त्रित्व से प्रथक् किया, जिससे इटली ने गत महायुद्ध में भाग लिया। फिर सन् १९२२ में उन्होंने मुसोलिनी की रोम पर चढ़ाई को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया। वह उत्साही, मृदु, सुशिक्षित, और अत्यन्त बुद्धिमान् हैं। उनका वार्षिक वेतन १ करोड़ १२ लाख ५० हजार लीरा अथवा लगभग दो लाख पौंड है। मुसोलिनी से उनके सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं।

इटली के परराष्ट्र सम्बन्ध

इस समय इटली ने यूरोप में अच्छी उन्नति करली थी। अब उसकी गणना यूरोप की प्रधान शक्तियों मे की जाने लगी थी। अतएव उसकी सहायता के विचार से प्रथम जर्मनी और आस्ट्रिया ने उसकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया। सन् १८८२ में इन तीनों ने एक सन्धि करके त्रिगुट (Triple Alliance) बनाया और प्रतिज्ञा की—कि यदि इस गुट में किसी पर कोई अन्य राज्य आक्रमण करेगा तो शेष दो उसकी सहायता करेंगे।

इटली के इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान को फ्रांस भी देख रहा था। उसको इटली का जर्मनी के पक्ष में मिल जाना भयप्रद जान पड़ा। फलतः उसने भी मित्रता का प्रयत्न किया और सन् १६०० में उसकी मित्रता इटली से एक सन्धि द्वारा हो भी गई। किन्तु जर्मनी की चतुरता के कारण इटली ने बाद में फ्रांस का साथ छोड़ ही दिया।

सन् १६१२ में उसने एक और सन्धि द्वारा उपरोक्त त्रिराष्ट्र सन्धि के ऊपर फिर मोहर लगाई। किन्तु जब महायुद्ध आरंभ करने पर आस्ट्रिया ने उससे युद्ध में सम्मिलित होने को कहा तो उसने यह कह कर अगूंठा दिखा दिया कि "सन्धि के अनुसार हम तभी सहायता दे सकते थे, यदि तुम पर आक्रमण होता। किन्तु इस समय तो तुम सर्विया पर आक्रमण कर रहे हो।"

१६१५ में तो इटली के मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध घोषणा करने से यह त्रिगुट बिल्कुल ही समाप्त हो गया।

लीबिया युद्ध

इस समय यूरोप के अन्य राज्य अफ्रीका में अपना प्रसार करते जाते थे। उत्तरी अफ्रीका इटली के समीप था, अतएव इटली ने भी अब उसकी राजनीतिक घटनाओं को ध्यान पूर्वक देखना आरंभ किया। इस समय फ्रांस ऐल्जीरिया और ट्यूनिस को ले चुका था। इंगलैण्ड की मित्रता के कारण उसका मोरोक्को में भी बहुत कुछ हाथ था। मिश्र प्रायः इंगलैण्ड के हाथ में आ ही गया था। अब केवल ट्रिपोली (लीबिया) मात्र ही बचा था

ट्रिपोली उस समय टर्की का करद राज्य था। किन्तु इस समय टर्की अत्यन्त निर्बल पड़ रहा था, जिससे उसके करद राज्य उससे इस प्रकार पृथक् हो रहे थे, जिस प्रकार सूखे वृक्ष से पत्ते झड़ जाते हैं। कुछ वर्षों से इटली ने भी ट्रिपोली से व्यापार करके उस पर बहुत कुछ अधिकार कर लिया था। उसको केवल नियमित रूप में अपने अधिकार में करना शेष था।

सन् १९०८ में टर्की में एक क्रान्ति हुई जिससे ट्रिपोली में नये २ तुर्की अफ़सर आ गए। यह लोग इटली वालों से घृणा करते थे, जिससे इटली के व्यापारियों, बैंकरों और इंजीनीयरों के मार्ग में पग २ पर रोड़ा अटकाया जाने लगा। इटली वालों के विरुद्ध जर्मन प्रोफ़ेसरों के साथ वहां पर्याप्त पक्षपात किया जाता था।

यह बात इटली को बहुत बुरी लगी। उसने सितम्बर १९११ में टर्की के सुलतान को एक चेतावनी भेजी और ६ अक्टूबर १९११ को टर्की के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। यह युद्ध कई माह तक चला। यद्यपि इटली ने समुद्री किनारे के प्रदेशों को अपने अधिकार में कर लिया, किन्तु तुर्क लोगों ने आन्तरिक भाग के निवासियों को इटली के विरुद्ध भड़का दिया, जिससे वहां सफलता न मिल सकी। अब इटली ने थोड़े परिश्रम से रोड्स (Rhodes), डोडेकैनीज़ द्वीप समूह (Dodacanese Archipelago) और ट्रिपोली के समुद्री नगरों पर कब्ज़ा कर लिया। इस युद्ध में जनवरी १९१२ में फ्रांसीसी जहाज़ मैनोबा और कार्थेज

ने इटली के विरुद्ध टर्की को सहायता दी थी। इस समय टर्की के प्रान्तों की दशा ऐसी पेचीदा थी कि उसको उनके निकल जाने का भय था, जिससे टर्की इटली का मुकाबिला न कर सका और १८ अक्तूबर १६१२ को उसे लोसान (Laussane) में इटली के साथ सन्धि करनी पड़ी। ट्रिपोली इटली को दे दिया गया, जो बाद में लीबिया कहा जाने लगा। सन्धि की अन्य शर्तों के पूर्ण होने तक रोड्स तथा कुछ अन्य द्वीप भी इटली के ही अधिकार में दिये गये। इसके पश्चात् १९१२ में इटली ने जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ त्रिगुट मैत्री की अवधि को सन् १९२० तक के लिये और बढ़ा लिया।

महायुद्ध

यूरोपीय महा युद्ध के दूसरे वर्ष में २२ मई सन् १९१५ को इटली ने भी आस्ट्रिया के विरुद्ध मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध घोषणा कर दी। इटली की ओर दो वर्ष तक कई युद्ध हुए, जिनमें इटली ने आस्ट्रिया से बहुत सी भूमि छीन ली। सन् १९१६ तक इटली ने आस्ट्रिया को अच्छी तरह पराजित कर दिया। इस समय आस्ट्रिया ने अपनी सेनाएं इटली से हटा कर उत्तर में रूस के मुकाबले पर भेजीं।

किन्तु सन् १६१७ में रूस के युद्ध से पृथक् हो जाने पर इटली पर आफ़त आ गई। इस समय जर्मनी ने अपनी बहुत से सेना पूर्व की ओर इटली के मुकाबले को भेजदी, जिसके वेग को इटली वाले न रोक सके। अब दो वर्ष के कठोर परिश्रम से जीता हुआ

सभी कुछ इटली के हाथ से निकल गया। जर्मनी ने वेनेशिया पर भी अधिकार कर लिया। यह सब अक्तूबर और नवम्बर १९१७ में हुआ। जर्मनी ने इटली की चार सहस्र वर्ग मील भूमि पर अधिकार करके उसके दो लाख मनुष्यों को क़ैद कर लिया। किन्तु सन् १९१८ में जर्मनी के पराजित होने से इटली की सब क्षति पूरी हो गई।

वरसाई की सन्धि

जर्मनी का भाग्य वरसाई की सन्धि में बन्द किया गया था। इंगलैण्ड के प्रधान मन्त्री मिस्टर लायडजार्ज, अमेरिका के प्रेसीडेंट विल्सन, फ्रांस के प्रधान मन्त्री क्लेमेन्शू और इटली के सिन्योर आरलैण्डो इस सन्धि के विधाता थे। इस समय यह चारों 'चतुर चौकड़ी' के नाम से प्रसिद्ध थे। इस युद्ध के कारण फ्रांस और इंगलैण्ड को बड़ा भारी लाभ हुआ। जापान भी नफ़े में ही रहा। किन्तु इटली का स्थान वरसाई की सन्धि के विधाताओं में होने पर भी वह केवल अपनी क्षतिपूर्ति ही कर सका, उससे लाभ नहीं उठा सका। यहां तक कि इस युद्ध के कारण इटली पर इंगलैण्ड का ५७ करोड़ पौंड ऋण हो गया, जिसमें से उसने जनवरी १९२६ के समझौते के अनुसार प्रति वर्ष ४० लाख पौंड देना स्वीकृत किया था।

यद्यपि युद्ध के पूर्व लन्दन की गुप्त सन्धि के अनुसार इटली को उसके पूर्व का डलमाशिया का किनारा तथा एशिया माइनर के कुछ बन्दरगाह दे दिये गये थे और इसी कारण इटली महा-

युद्ध में सम्मिलित हुआ था, किन्तु वरसाई की सन्धि से उसको ट्रेण्टिनो, ट्रीएस्टे और टायरोल आदि स्थान ही मिल पाये।

मुसोलिनी की विजय

इटली की सरकार के निर्बल होने से वहां की पार्लमेण्ट में सदा षड्यन्त्र चला करते थे। अतः जनता के ऐसे राज्य से ऊब जाने के कारण वहां एक नये सुदृढ़ दल का जन्म हुआ, जिसका नाम फासिस्ट दल है। यह दल अपने साहसी नेता सिन्योर मुसोलिनी की अध्यक्षता में रोम पर अधिकार करने चला। किन्तु इटली के राजा ने २७ अक्तूबर १९२२ को उनके रोम में प्रवेश करने पर उस दल का स्वागत करके अपना सिंहासन बचा लिया और उस दल के नेता सिन्योर मुसोलिनी को मंत्री मंडल बनाने का निमन्त्रण दे दिया। मुसोलिनी ने तारीख २९ अक्तूबर १९२२ को अपना मन्त्री मण्डल बनाया। तब से मुसोलिनी ही वास्तव में इटली का विधाता है और राजा को मन्त्री मण्डल के प्रत्येक आदेश को उसी प्रकार मानना पड़ता है जिस प्रकार इंगलैण्ड का राजा वहां के मन्त्री मण्डल के आदेश को पार्लमेंट के नाम पर मानता है। इटली का राजा मुसोलिनी और ग्रैण्ड कौंसिल के निर्णय को मानता है। इस ग्रन्थ के अगले पृष्ठों में इन्हीं मुसोलिनी का चरित्र दिया जावेगा।

द्वितीय अध्याय

मुसोलिनी का आरम्भिक जीवन

मुसोलिनी जर्मन राष्ट्रपति हिटलर के समान देश के सीमा-प्रान्त का निवासी न होकर विशुद्ध इटालियन है। उसका जन्म इटली के उत्तर-पूर्वी ज़िले प्रेदापिओ (Predappio) के समीप वैरानो डी कोस्ता (Varano di Costa) नामक ग्राम में २९ जुलाई सन् १८८३ को रविवार के दिन दो पहर दो बजे हुआ था। यह गांव एक छोटी सी पहाड़ी पर है। इसके मकान प्रायः पत्थर के ही बने हुये हैं। प्रेदापिओ ज़िले का स्थान इतिहास में महत्व पूर्ण है। तेरहवीं शताब्दी में इसने साहित्यिक जागृति में प्रमुख भाग लेने वाले अनेक परिवारों को जन्म दिया था। यहां की पृथ्वी में गंधक का अंश अधिक है। अंगूर इस प्रान्त में अत्यधिक मात्रा में होता है, जिससे यह अत्यन्त स्वादिष्ट और सुगन्धित मदिरा के लिये भी प्रसिद्ध हो गया है। इस ज़िले में स्थान २ पर अब भी अनेक प्राचीन खण्डहर देखने में आते हैं।

उसके पूर्वज

मुसोलिनी का जन्म एक सच्चरित्र कुल में हुआ था। पादरियों के कागज़ों से इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि उसके पूर्व पुरुष खेती से अपना जीवन निर्वाह किया करते और अत्यन्त सम्मान पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इस सम्बन्ध में जांच करने से पता लगा है कि मुसोलिनी परिवार तेरहवीं शताब्दी में बोलोइञा (Bologna) में अत्यन्त प्रसिद्ध था। सन् १२७० में ज्योवान्नी मुसोलिनी (Giovanni Mussolini) उस वीर तथा आक्रमणशील जाति का सरदार था। उसको बोलोइञा के शासनकार्य में एक फुलचिएरी पाओलूची डे कल्बोली (Fulcieri Paolucci de Calboli) नामक वीर सहायता दिया करता था। यह व्यक्ति भी प्रेदापिओ का ही निवासी था। उसका वंश आज भी अच्छा प्रतिष्ठित है।

बोलोइञा के दुर्भाग्यवश उसके सरदारों में फूट पड़ गई, जिससे पारस्परिक लड़ाई झगड़ों से तंग आकर मुसोलिनी परिवार वहां से आरजेलातो (Argelato) को चला गया। वहां से वह आस-पास के प्रान्तों में फैल गया। उस समय उनको बड़े २ कठिन दिनों का सामना करना पड़ा। सतरहवीं शताब्दी में उनके विषय में कुछ सुनने में नहीं आता। अठारहवीं शताब्दी में एक मुसोलिनी लन्दन में था। इटली वासी विदेशों में अपनी प्रतिभा दिखलाने में कभी त्रुटि नहीं करते। लन्दन के मुसोलिनी ने कुछ गीतों के गायन योग्य स्वर बनाये थे, संभवत: उसी के गुणों के

उत्तराधिकार स्वरूप हमारे चरित्रनायक बेनीटो मुसोलिनी भी बेले (वाएलिन) के ऐसे प्रेमी हैं कि अपने हाथ मे बेले को लेकर वह आज भारी से भारी चिन्ता को भी भूल जाते हैं।

इसके पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दी में इस परिवार का अच्छा परिचय मिलता है। बेनीटो मुसोलिनी के अपने पितामह राष्ट्रीय रक्षक सेना (National guard) में लेफ्टिनेण्ट थे।

बेनीटो मुसोलिनी का पिता एक लुहार था। वह अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट था। उसकी भुजाएं बलवान्, लम्बी तथा मांसल थीं। उसके पड़ौसी उसको ऐलेसैन्ड्रो (Alessandro) कहा करते थे। उसके हृदय और मस्तिष्क में सदा समाजवादी (Socialist) सिद्धांत ही चक्कर लगाया करते थे। समाजवाद के साथ उसकी पूरी सहानुभूति थी। सायंकाल के समय अपने मित्रों के साथ समाजवाद के ऊपर वाद-विवाद करते समय उसकी आंख चमकने लगती थीं। अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में उसको अधिक रुचि थी। इटली में सामाजिक जागृति का कार्य करने वालों के साथ भी उसका घनिष्ट सम्बन्ध था।

इटली में मुसोलिनी परिवार के कुछ विशेष चिह्न भी हैं। बोलोइन्या में एक मुहल्ले (Street) का नाम मुसोलिनी मुहल्ला है। उनके नाम का एक स्तम्भ तथा तालाब भी है। पुराने सैनिक कागजों में एक मुसोलिनी कोट का भी उल्लेख है। इसका नमूना अत्यन्त आनन्द दायक तथा शानदार था। इसमें पीले रंग के अक्षर के ऊपर वीरता, साहस और शक्ति की छै काली मूर्तियां थीं।

बाल्यावस्था

मुसोलिनी का बाल्यकाल कुछ विशेषता पूर्ण नहीं था। न तो वह बहुत अच्छा और न तेज़ ही था; न वह इतना शैतान ही था कि अपने शैतान साथियों का सर्दार बन जाता। यह अवश्य है कि उसके जीवन में दृढ़चित्तता उस समय भी थी। वह जिस कार्य के करने का निश्चय कर लेता था उसको पूरा करके ही छोड़ता था।

मुसोलिनी के पिता का स्वभाव अच्छा था। वह हंसमुख और तेजस्वी था। उसके स्थिर नेत्र उसके दृढ़व्रती होने का परिचय देते थे। उसका मकान पत्थर का था। उसकी दीवार की दरारों में स्थान २ पर घास उग आई थी। उसके मकान के पास एक छोटा सा नाला था और थोड़ी ही दूर पर एक छोटी सी नदी थी। यद्यपि इन दोनों में ही जल कम रहता था, किन्तु वर्षा होने पर उनमें इतना अधिक जल आ जाता था कि उनके इतरा कर चलने को देख कर बालक मुसोलिनी के हृदय को अतिशय आनन्द हुआ करता था। मुसोलिनी ने अपना क्रीड़ा स्थल पहली पहल इन्हीं को बनाया था। मुसोलिनी के भाई का नाम आरनोल्डो था, बाद में वह मुसोलिनी के प्रसिद्ध पत्र 'पोपोलो डीटैलिया' (Popolo d' Italia) का प्रकाशक बन गया था। बालक मुसोलिनी अपने भाई आरनोल्डो सहित पानी को रोकने के लिये बांध बनाने का यत्न किया करता था। पक्षियों के घोंसला बनाने की ऋतु में वह उनके घोंसलों, अण्डों और बच्चों को ढूंढा

करता था। किन्तु वह उनको नष्ट कभी नहीं करता था। वह आजकल के समान ही उनकी रक्षा करने का यत्न किया करता था।

मुसोलिनी की माता का नाम रोज़ा (Rosa) था। उसका सब से अधिक प्रेम उसी के साथ था। वह शान्त कोमल और बलिष्ठ थी। वह अपने बच्चों को लालन पालन करने के अतिरिक्त आरम्भिक शिक्षा भी देती थी। मुसोलिनी के हृदय में अपनी माता के लिये अपार श्रद्धा थी। उसकी अप्रसन्नता से उसे बड़ा भय लगता था। अपनी उछल कूद, शैतानी अथवा चंचलता को छिपाने के लिये वह प्राय: अपनी दादी और यहां तक कि पड़ौसियों तक से सहायता ले लिया करता था, क्योंकि वह माता के क्रोध के कारणस्वरूप होने वाले मुसोलिनी के आकस्मिक भय को जानते थे। मुसोलिनी की माता एक विद्यालय में अध्यापिका थी।

उसमें अन्य महा पुरुषों की माताओं के समान अलौकिक गुण थे। परन्तु मुसोलिनी के भावी जीवन के निर्माण में उसका हिटलर की माता के समान बड़ा भारी हाथ नहीं था। कमाल अतातुर्क की माता के साथ यूनानियों ने दुर्व्यवहार किया था। उसके एक वर्ष पश्चात् ही कमाल ने यूनानियों को समुद्र में पराजय दी थी। किन्तु मुसोलिनी के जीवन में इस प्रकार माता को छुड़ाने की विचित्र घटनाएं भी नहीं हैं।

शिक्षा काल

मुसोलिनी को वर्णमाला का ज्ञान खेल २ में ही करा दिया गया। उसके पश्चात उसकी स्कूल जाने की इच्छा हुई। वह अपने गांव से दो मील प्रेदापिश्रो के स्कूल में जाने लगा। उसमें—मुसोलिनी के पिता का एक मैरैनी (Marani) नामक मित्र शिक्षा दिया करता था। मुसोलिनी उस स्कूल में इधर उधर घूमता था।तो उसको अजनबी समझ कर वहां के लड़कों को बुरा लगा करता था। वह मुसोलिनी पर ढेले फेंका करते थे। मुसोलिनी भी उनका उत्तर ढेलों से ही दिया करता था, किन्तु उनकी अधिक संख्या अधिक होने के कारण मुसोलिनी प्राय: पिट जाया करता था। किन्तु मुसोलिनी को उस लड़ाई झगड़े में भी आनन्द आया करता था। मुसोलिनी के साहस के चिन्ह उसके शरीर पर बन जाया करते थे। किन्तु वह अपनी माता को उस सबका ज्ञान न होने देने के लिये अपने ज़ख्मों को छिपा लिया करता था। भोजन के समय उसको हाथ फैला कर रोटी मांगने में इस कारण भय हुआ करता था कि कहीं उसकी माता उसकी छोटी सी कलाई के ज़ख्मों को देख न पावे।

क़िन्तु कुछ दिनों के पश्चात् यह काण्ड समाप्त हो गया। कल के शत्रु मित्र बन गये और मुसोलिनी उनके साथ खेल कूद कर अपने समय को आनन्द पूर्वक व्यतीत करने लगा। बाल्यावस्था के उन सुखद दिवसों की स्मृति मुसोलिनी के हृदय पटल

पर आज भी उसी प्रकार अंकित हैं, कुछ वर्ष पूर्व प्रेदापिओ नगर के बर्फ की चट्टानों के कारण नष्ट हो जाने से मुसोलिनी ने नया प्रेदापिओ नगर बसा कर उस नगर के प्रति अपने बाल प्रेम को प्रदर्शित किया था। नया प्रेदापिओ नगर बड़ी शीघ्रता पूर्वक उन्नति कर रहा है। उसके मुख्य द्वार पर अंकित किया हुआ फासिस्टवाद का चिन्ह मुसोलिनी के दृढ़ निश्चय की सूचनाा दे रहा है।

छोटी पाठशाला को पास करने के पश्चात् मुसोलिनी को फ़एंसा (Faenza) नामक नगर के एक स्कूल में भेजा गया। यह नगर पन्द्रहवीं शताब्दी में मिट्टी के बर्तनों के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध था। इस स्कूल में मुसोलिनी को छात्रावास में ही रहना पड़ता था। इस स्कूल का प्रबन्ध सालेज़ियानी (Salesiani) पादरियों के हाथ में था। मुसोलिनी ने यहां विनयानुशासन कीं उपयोगी शिक्षा प्राप्त की। वह अध्ययन करता, चैन करता और निश्चिन्ता से खूब सोया करता था। वह दिन छिपते ही सो जाता और खूब दिन चढ़े उठा करता था।

इस समय मुसोलिनी को आस पास के फ़ोर्ली (Forli) और रवेन्ना (Ravenna) नामक नगरों में यात्रा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ, जिससे उसका अनुभव बराबर बढ़ता गया। रवेन्ना से वह एक बत्तक लेता आया, जिसको वह अपने भाई आरनोल्डो सहित पालतू बनाने का यत्न किया करता था।

मुसोलिनी का पिता उसकी शिक्षा का विशेष ध्यान रखता

था। मुसोलिनी भी बाल्यावस्था को क्रमशः पार करते हुए अपनी भावनाओं से पिता के हृदय के अधिकाधिक निकटतर होता जाता था। इस समय उसने मशीनों की ओर ध्यान देना आरंभ किया। एञ्जिन के कार्य से उसे विशेष अनुराग था। अपने पिता की दूकान में शारीरिक श्रम करने में भी उसे आनन्द आता था।

मुसोलिनी अभी पन्द्रह-सोलह वर्ष का ही था कि उसका इस प्रकार का शारीरिक श्रम उसके माता पिता को अखरने लगा। उनको इस बालक के अन्दर कुछ विलक्षण प्रतिभा दिखलाई देती थी। मुसोलिनी की माता को उसके भविष्य के सम्बन्ध में कुछ अधिक आशा थी। किन्तु मुसोलिनी को इन सब बातों की कोई चिन्ता न थी। उसको न तो अधिक विद्या प्राप्त करने का उत्साह था और न वह अध्यापक ही बनना चाहता था। किन्तु उसको माता पिता की इच्छा के कारण फ़ार्लिम्पोपोली (Forlimpo poli) के नार्मल स्कूल में जाना ही पड़ा।

इस स्कूल का प्रबन्ध वालफ्रेडो कारदूची (Vaelfredo Carducci) के हाथ में था। यह महाशय प्रसिद्ध लेखक जोज़ुए कारदूची (Giosue Carducci) के भाई थे। इस स्कूल में मुसोलिनी ने छैः वर्ष तक पुस्तकों, स्याही और कागज़ों से माथापच्ची की। यद्यपि वह परिश्रमी नहीं था, किन्तु छैः वर्ष के पश्चात् उसको अध्यापकी का सर्टिफिकेट मिल ही गया।

अध्यापकी

अत्यन्त परिश्रम और भाग दौड़ के पश्चात् उसको ग्वलटिएरी (Gualtieri) में अध्यापकी का एक स्थान मिल ही गया। इस समय उसको ६ लीरा अथवा लगभग ३२ रुपया मासिक वेतन मिलता था। इस स्कूल में मुसोलिनी ने एक वर्ष तक कार्य किया।

इस समय मुसोलिनी के हृदय में यौवन की उद्दाम तरंगें हिलोरें मारने लगी थीं। स्कूल का जीवन उसे नीरस प्रतीत होने लगा और एक प्रकार के परिवर्तन की उसके हृदय में इच्छा उत्पन्न होने लगी। वर्ष के अन्त में स्कूल के बन्द होने पर अपने गांव जाने को उसका हृदय किसी प्रकार भी नहीं होता था। वहां उसे प्रेम का निश्चय था, किन्तु उस परिमित प्रेम में उसे सन्तोष नहीं था। उसका विशाल हृदय विश्व से सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था। किन्तु इस परिस्थिति का उसके ग्राम में नितान्त अभाव था। इस समय वह अपने को अच्छी तरह पहचानने लगा था। उसे रह रह कर अपने भविष्य का ध्यान आता था। अतएव उसने इन सब परिस्थतियों से बच निकलना ही उचित समझा।

किन्तु बाहिर जाने के लिये धन की आवश्यकता होती है, जिसका उसके पास एक दम अभाव था। हाँ, साहस उसके पास अपरिमित मात्रा में था। अन्त में उसने विदेश जाने का ही निश्चय किया।

स्वीज़र्लैंड का प्रवास काल

उसने उन्नीस वर्ष की अवस्था में सन् १९०२ में सीमा का पार कर स्वीज़लैण्ड में प्रवेश किया। यहां आकर उसको जो कष्ट झेलने पड़े उनका वर्णन लेखनी से नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार हिटलर ने अपने यौवन के आरम्भ में आस्ट्रिया की राजधानी विएना में कष्ट झेले थे उसी प्रकार मुसोलिनी को भी शारीरिक, आर्थिक और मानसिक सभी प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ा। यद्यपि कहने के लिये वह सभी कष्ट थे, किन्तु इटली के लिये वह अभ्युदय थे; क्यों कि इन कष्टों के कारण ही मुसोलिनी के आत्मा का इतना विकास हुआ कि आगे चल कर वह इटली का भाग्य विधाता बन गया।

मुसोलिनी ने इस जीवन में मनुष्य तथा राजनीतिज्ञ के रूप में प्रवेश किया। उसके अन्तरतम मित्र अन्तःकरण ने उसको मार्गप्रदर्शन करना आरंभ किया। इस जीवन की कठिनाइयों ने उसको कठोर बना दिया। उन्हों ने ही उसको जीवन व्यतीत करने का ढंग सिखलाया।

वास्तव में यदि उस समय मुसोलिनी को लम्बे चौड़े वेतन वाला कोई सरकारी पद मिल जाता तो यह इटली तथा उसके लिये बड़े दुर्भाग्य का विषय होता, क्यों कि उस दशा में इटली के इतिहास को वर्तमान रूप कभी न मिलता।

बर्ट्रण्ड रसेल ने लिखा है कि यदि जर्मन सेनापति लेनिन को बंद गाड़ी में छिपा कर जर्मनी में से निकाल कर रूस न पहुं-

चाता तो रूस में क्रान्ति न होती, यदि ट्राट्स्की क्रोध के वशीभूत होकर लेनिन के अंत्येष्टि संस्कार में सम्मिलित होने से निषेध न कर देता तो सोवियट रूस में पंचवर्षीय योजना सम्भवतः कभी न बनाई जाती, यदि आस्ट्रियन पार्लमेंट की वोट के आड़े समय में एक समाजवादी सदस्य स्नानागार में न चला जाता तो डालफस वहां का चैंसलर न बनता, उसी प्रकार यदि मुसोलिनी इस समय स्वीजर्लैंण्ड न जाता तो आज इटली की दशा किसी और प्रकार की ही होती।

मुसोलिनी का स्वीजर्लैंण्ड का प्रवास काल अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ था। यद्यपि उसमें अधिक समय नहीं लगा तौ भी उस जीवन की अपनी विशेषता थी। मुसोलिनी ने उसमें अत्यन्त कठोर परिश्रम किया।

इस समय मुसोलिनी को भी हिटलर के समान प्रायः राज (मिस्तरी) का काम करना पड़ा और कई मकान बनाने पड़े। कभी २ उसको इटली भाषा से फ्रेंच भाषा और फ्रेंच भाषा से इटली की भाषा में अनुवाद करने का काम भी मिल जाया करता था। इस समय उसको जो कुछ भी श्रम का कार्य मिलता था वह कर लेता था और इतने पर भी मित्रों के साथ आमोद प्रमोद में समय व्यतीत करता था।

जान गुन्थर ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि उस समय मैडेम ऐञ्जेलिक बलबानव नाम की एक रूसी महिला स्वीजर्लैंण्ड में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रही थी। मुसोलिनी के जीवन पर

इस महिला का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। वह मुसोलिनी की प्रत्येक प्रकार से देख, भाल करती और उसको शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का भोजन दिया करती थी। उसने मुसोलिनी की भेंट लेनिन से भी कराई थी।

अब मुसोलिनी ने राजनीतिक कार्य में भी भाग लेना आरंभ कर दिया था। वह प्रवासी इटली वासियों और देशनिर्वासितों के कष्टों को दूर करने में जी जान से जुट गया। इस राजनीति से उसने कभी एक पैसा भी नहीं कमाया। वास्तव में राजनीति से धनोपार्जन करने की भावना ही मनुष्य के व्यक्तित्व तथा देश दोनों के ही पतन का कारण होती है।

मुसोलिनी ने इस समय समाज विज्ञान का भी अध्ययन कर डाला। उस समय लोसान (Lausanne) में एक परेटो (Pareto) नामक विद्वान् अर्थशास्त्र पर व्याख्यान माला दे रहा था। मुसोलिनी इन व्याख्यानों को अत्यन्त उत्सुकता पूर्वक सुना करता था। इस अध्ययन में उसको वास्तविक आनन्द का अनुभव होता था। इन व्याख्यानों में भाग लेने के अतिरिक्त वह सार्वजनिक सभाओं में भी भाग लेकर राजनीतिक विषयों पर व्याख्यान दिया करता था। उसके व्याख्यान क्रमशः उग्रतर होने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वीजर्लैण्ड की सरकार ने उसको जेल में डाल दिया। जेल से निकलने पर भी उसका जेनेवा और लोसान दो ज़िलों में प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। इस समय तक विश्वविद्यालय की व्याख्यान माला समाप्त हो चुकी थी। मुसोलिनी को

विवश होकर उस स्थान को छोड़ना ही पड़ा। लोसान में तो वह उसके पश्चात् केवल सन् १९२२ में इटली के प्रधान मंत्री के रूप में ही आ सका। वह इटली और स्वीज़रलैंण्ड में कुल मिला कर ग्यारह बार गिरफ्तार किया गया।

सैनिक शिक्षा

अब उसके लिये स्वीज़रलैंण्ड में रहना असम्भव हो गया। इस समय उसको घर की याद भी सताने लगी थी। इसके अतिरिक्त अनिवार्य सैनिक शिक्षा से भी बराबर बुलावे आ रहे थे। लाचार वह इक्कीस वर्ष की अवस्था में सन् १९०४ में वापिस इटली आया, जहां उसने दस वर्ष तक अत्यन्त उग्र समाजवादी का जीवन व्यतीत किया। इटली में उसका उसके सम्बन्धियों, मित्रों और परिचितों ने अच्छा स्वागत किया। अब उसने सेना में नाम लिखा लिया। उसको ऐतिहासिक नगर वेरोना (Verona) की बेरसालिएरी सेना (Bersaglieri Regiment) में रखा गया। बेरसालिएरी सैनिक अपने टोप में हरे पंख लगाया करते थे। वह अपनी शीघ्र गति, नियमानुशासन और उत्साह के लिये प्रसिद्ध थे।

मुसोलिनी ने इस जीवन में अधिक आनन्द अनुभव किया। इच्छा पूर्वक आधीनता ग्रहण करना मुसोलिनी के स्वभाव के अनुकूल था। मुसोलिनी अत्यन्त चंचल, उग्रस्वभाव वाला, मौलिक और क्रान्तिकारी समझा जाता था। यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि ऐसे व्यक्ति के विषय में भी उसके कप्तान, मेजर और कर्नल सभी को उसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करनी

पड़ती थी। मुसोलिनी को वास्तव में अपने भावों के अनुकूल आचरण प्रदर्शित करने का यही अवसर मिला था।

मुसोलिनी को वेरोना नगर, उसकी जनता, उसके कल्पित युद्ध, उसकी कार्य प्रणाली और आक्रमण तथा रक्षा के अभ्यास सभी से प्रेम था। यद्यपि वह एक सामान्य सैनिक था, किन्तु वह अपने सभी अधिकारियों के आचरण और उनकी योग्यता की मन ही मन में जांच किया करता था। वास्तव में इटली के प्रत्येक सैनिक की यह प्रकृति होती है। इस प्रकार उसको सैनिक अधिकारियों के कार्य और उत्तरदायित्व का ज्ञान स्वयं ही हो गया।

मुसोलिनी एक बड़ा उत्तम सैनिक था। सम्भव था कि वह अफसरी के काम को भी सीखता; किन्तु जिस भाग्य ने उसको उसके पिता की लुहार की दुकान से अध्यापकी में, अध्यपकी से विदेशवास में और विदेशवास से विनयानुशासन में पटक दिया उसीने यह निर्णय किया कि मुसोलिनी नियमित रूप से सैनिक ही नहीं बना रह सकता।

माता की मृत्यु

एक दिन उसके कप्तान ने उसको अकेले में लेजा कर उसके पिता का तार दिया। उसकी माता मृत्यु शय्या पर थी। उसको शोक के वेग की बाढ़ को हृदय में थामे हुए सेना से छुट्टी लेनी पड़ी। सबसे पहिली गाड़ी पकड़ कर वह घर पहुंचा। उसकी माता मृत्यु के मुख में थी। वह मुसोलिनी को देख कर केवल मुस्करा

भर ही सकी और उसी समय उसका प्राण पखेरू उड़ गया। अब मुसोलिनी के धैर्य ने भी अपने बांध को तोड़ दिया। वह कई दिन तक शोक सागर में डूबा रहा।

अन्त में उसको शोक को सम्भाल कर सेना में जाकर सैनिक सेवा के अवशिष्ट समय को पूरा करना पड़ा। इसके पश्चात् उस का जीवन फिर अनिश्चय के गर्त में डुबकियां खाने लगा।

सम्पादन क्षेत्र में

वह फिर अध्यापक बन कर ओफेलिआ (Opeglia) को चला गया। इस बार वह एक मिडिल स्कूल का अध्यापक बना। कुछ समय के पश्चात् वह 'पोपोलो' (Popolo) नामक पत्र के प्रधान सम्पादक चीज़रे बतिस्ती (Cesare Battisti) के साथ चला गया। बतिस्ती बड़ा भारी देश भक्त वीर था। उसने देश के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी। युद्ध में उसको शत्रु आस्ट्रिया वालों ने पर्याप्त दण्ड दिया। उस समय वह ट्रेंटो (Trento) प्रांत को आस्ट्रिया के जुवे से निकाल कर स्वतन्त्र करने का आन्दोलन कर रहा था। वह समाजवादी था।

एक दिन मुसोलिनी ने उक्त पत्र में एक लेख लिख कर बतलाया कि आस्ट्रिया की सीमा अला (Ala) नामके उस छोटे से नगर पर नहीं है, जो पुराने इटली और आस्ट्रिया की सीमा पर था। इस पर आस्ट्रिया सरकार ने उसको आस्ट्रिया से निकाल दिया। मुसोलिनी निर्वासन का अभ्यासी सा हो गया था। अब

उसको फिर इधर उधर चक्कर काटने पड़े। अन्त में वह फिर फोर्ली (Forli) को ही चला गया

अब उसको संपादन कला का चस्का लग गया था। फोर्ली में उसको सन् १९०९ में एक स्थानीय समाजवादी पत्र को संपादन करने का अवसर भी मिल गया। इस पत्र का नाम 'ला लोटी डी क्लासी, (वर्गयुद्ध) था। उस समय मुसोलिनी का विश्वास था कि इटालियन जनता को निर्धनता केवल सशस्त्र क्रांति से ही दूर की जा सकती थी। इस पत्र के द्वारा मुसोलिनी इटली भर के सोशि-एलिस्टों और क्रांतिकारियों में प्रसिद्ध हो गया।

अवन्ती नामक पत्र की डाइरेक्टरी

इस समय उसने इसी सिद्धान्त का प्रचार करना आरम्भ किया। अब जनता के भावों को विकसित करने, उनमें विचार करने और कार्य करने की आग भरने का समय आगया था। इस समय उसको क्रान्तिकारी समाजवादी दल का प्रधान नेता बना दिया गया। इसके कुछ समय के पश्चात ही गत महायुद्ध के आरम्भ होने से दो वर्ष पूर्व सन् १९१२ में रेजिओ ऐमीलिआ (Reggio Emilia) में समाजवादियों की कांग्रेस हुई। इसमें मुसोलिनी को 'अवन्ती' (Avanti) नामक पत्र का डाइरेक्टर बना दिया गया। उस समय समाजवादियों का यही एक मात्र दैनिक पत्र था। यह मिलन (Milan) नगर से प्रकाशित होता था। इस समय मुसोलिनी की अवस्था उनतीस वर्ष की थी।

पिता की मृत्यु

अपने इस नये कार्य को संभालने से कुछ समय पूर्व ही उसके पिता की मृत्यु हो गई। मुसोलिनी का पिता दृढ़ विचार वाला, बुद्धिमान् और उदार था। उसने अपने जीवन के चालीस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीयता के आन्दोलन में व्यतीत किये थे। अपने इन विचारों के कारण उसको जेल भी जाना पड़ा था। उसके राजनीतिक कार्य की उसके प्रान्त रोमाइग्ना (Romogna) में खूब धूम थी। वह अनेक कठिनाइयां भोग कर भी बराबर राजनीतिक कार्य करता रहा, यहां तक कि इस कार्य में ही उसकी सम्पत्ति भो समाप्त हो गई।। मृत्यु के समय तो उसकी निर्धनता और भी अधिक हो गई थी।

मृत्यु के कुछ समय पूर्व उसका यह विचार हो चला था कि पूंजीवाद पर राजनीतिक क्रांति के द्वारा विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, वरन उस पर विजय प्राप्त करने का एक मात्र उपाय जनता के चरित्र बल को बढ़ाना और उसमें पारस्परिक भाईचारे के व्यवहार को दृढ़ करना था। मृत्यु के समय उसकी अवस्था सत्तावन वर्ष की थी।

पिता की मृत्यु के कारण इस परिवार का पारवारिक बन्धन टूट गया, जिससे सब भाई बहिन प्रथक् २ होकर कार्यक्षेत्र में जुट गये।

पिता की मृत्यु के पश्चात् मुसोलिनी 'अवन्ती' का संचालन करने लगा। उसका भाई आरनोल्डो औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने

लगा और उस की बहिन ऐडवीजे (Edvige) रोमइञा प्रांत के प्रेमिल्क्वौरे (Premilcuore) नामक छोटे से स्थान में अपने पति के साथ रहने को चली गई।

अब मुसोलिनी जी जान से 'अवन्ती' के प्रचार में ही जुट गया। उसका एक मात्र उद्देश्य अवन्ती की ग्राहकसंख्या, उसके प्रभाव तथा सम्मान को बढ़ाना था। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ मास के अन्दर ही 'अवन्ती' की ग्राहक संख्या एक लाख हो गई।

इस समय मुसोलिनी का अपने दल में प्रधान स्थान था; तौ भी वह दलबन्दी का उपासक नहीं था। उसने जनता में दलबन्दी का प्रचार न कर सदा ही बलिदान, त्याग, पसीना तथा रक्त बहाने का आदर्श उपस्थित किया।

उसकी पत्नी

मुसोलिनी की पत्नी दोन्ना रखेले ग्वीदी (Donna Rachele Guidi) अत्यन्त मृदु स्वभाव वाली, बुद्धिमती तथा पति-परायणा महिला है। जीवन के प्रत्येक उतार चढ़ाव में वह अत्यन्त शान्ति और सन्तोष के साथ मुसोलिनी का अनुगमन करती रही है। मुसोलिनी की कन्या एडा (Edda) इस समय घर के आनन्द का एक मात्र कारण थी। अत: अनेक प्रकार की विघ्न बाधाओं के होते हुए भी इस परिवार को किसी बात की विशेष चिन्ता न होती थी। रखेले से मुसोलिनी के इस समय पांच सन्तान हैं।

लीबिया युद्ध और मुसोलिनी

सन् १९१२ में इटली और टर्की का युद्ध हुआ। इस युद्ध की घोषणा ६ अक्तूबर १९११ को की गई थी। इसमें इटली ने उसके उत्तर अफ्रीका के प्रांत *लीबिया (ट्रिपोली) को अपने राज्य में मिला लिया। मुसोलिनी सोशिएलिस्ट होने के कारण इस युद्ध का विरोधी था। उसने अपने पत्र 'अवन्ती' में इस युद्ध का विरोध करने के अतिरिक्त फ़ोर्ली में युद्ध का प्रतिवाद करने के लिये हड़ताल कराई; जिससे उसको पांच माह जेल में रहना पड़ा। इस युद्ध में इटली को विजय तो मिल गई, किन्तु यह विजय बड़ी महंगी थी। इस से उसको धन और जन दोनों की ही अपरिमित हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध के कारण जनता पर निर्धनता के साथ २ अनेक प्रकार की आपत्तियां आई। जिनके कारण देश में अनेक सार्व-जनिक समस्याए उत्पन्न हो गईं। इटली वासियों के जीवन में इस समय एक विशेष प्रकार की अशान्ति देखने में आती थी। राजनीतिक बुद्धि का तो सर्वसाधारण में इतना दिवाला पिट गया था कि प्रति सप्ताह एक विद्रोह हो जाया करता था। केवल ज्यो-लीटी (Giolitti) के ही मंत्रिकाल में तैंतिस विद्रोह देश में हुए थे। इन विद्रोहों में अनेक हताहत होते थे, जिससे सभी के हृदय पर आघात होता था। दैनिक कुलियों, पो घाटी के किसानों और दक्षिण के निवासियों सभी में विद्रोह और दंगे होते थे।

---

*देखो पृष्ठ ६९

इस समय इटली के प्रान्तों में एक दूसरे से प्रथक् हो जाने तक का आन्दोलन होने लगा था। जनता में ऐसी अशांति के होते हुए भी राजनीतिक दलों में अधिकार के लिए बराबर प्रतिस्पर्द्धा होती रहती थी।

किन्तु मुसोलिनी इस प्रकार की क्रांति का विरोधी था। वह कहता था कि यह क्रांति नहीं वरन धांधली अथवा अराजकता है। उसकी सम्मति में अधिकारों को इस प्रकार की क्रांति से नहीं, वरन् आत्मत्याग और रक्त के बलिदान से प्राप्त किया जा सकता था। किन्तु इस समय इस प्रकार के विचार वाला कोई नेता नहीं था। इटली की दशा बराबर बिगड़ती ही गई। यहां तक कि सन् १९१४ भी आ पहुंचा।

तृतीय अध्याय

महायुद्ध

महायुद्ध का आरम्भ—जैसा कि अनेक राजनीतिज्ञों का विचार है महायुद्ध एकदम अचानक ही नहीं हो गया। महायुद्ध होने के पूरे लक्षण यूरोप के राजनीतिक क्षेत्र में उपस्थित थे। इसका सूत्रपात १९०५ के रूस जापान युद्ध से हुआ था। १९११ का लीबिया युद्ध भी इसी की तयारी था। इसके पश्चात् १९१२ तथा १९१३ के दो बाल्कन युद्धों ने तो यूरोप के राजनीतिज्ञों के ध्यान को पूरी ओर से ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया। सरांश यह है कि उस समय सारे यूरोप के ऊपर युद्ध के बादल मंडला रहे थे। उस समय सारा यूरोप बारूदखाना बना हुआ था। आवश्यकता थी कहीं से चिंगारी लग जाने की। सो वह सर्विया में लग ही गई।

२८ जून सन् १९१४ ई० को सर्विया के सीमान्त प्रदेश बोस्निया (आधुनिक यूगोस्लैविया के एक भाग) की राजधानी सेरायेवो (Serajevo) नामक नगर में आस्ट्रिया के युवराज आर्कड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड की हत्या हो गई। इससे क्रुद्ध होकर आस्ट्रिया ने सर्विया के सम्मुख क्षतिपूर्ति रूप में ऐसी २ कठोर शर्तें उपस्थित कीं, जिनका पूरा होना असम्भवप्राय था। निदान २८ जुलाई १९१४ ई० को आस्ट्रिया ने सर्विया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। सर्विया की रूस के साथ इस प्रकार की सन्धि थी कि सर्विया के ऊपर आक्रमण होने की दशा में रूस उसकी रक्षा करे। अतः आस्ट्रिया के युद्ध घोषणा करने पर रूस उसकी रक्षा को आगे बढ़ा। रूस के आगे बढ़ने के कारण जर्मनी की सीमा युद्ध क्षेत्र बनती थी। अतः १ अगस्त को जर्मनी ने भी रूस के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। रूस की सर्विया के अतिरिक्त फ्रांस के साथ भी सहायता करने की सन्धि थी। अतः फ्रांस के युद्ध में भाग लेने की निश्चित संभावना से जर्मनी ने तटस्थ राज्य बेल्जियम में से उस पर हमला किया, जिससे ४ अगस्त को ग्रेट-ब्रिटेन ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसके पश्चात् १२ अगस्त को बरतनिया ने आस्ट्रिया के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा कर दी। २३ अगस्त को जापान ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। ५ नवम्बर को टर्की भी जर्मनी और आस्ट्रिया की ओर से युद्ध में आ कूदा। इस प्रकार आस्ट्रिया और सर्विया के युद्ध ने क्रमशः महायुद्ध का रूप धारण कर लिया।

इटली की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति

यह बतलाया जा चुका है कि इस समय मुसालिनी 'अवन्ती' नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय सोशिएलिस्ट दैनिक पत्र का सम्पादक था। सेरायेवो की दुर्घटना सुनते ही उसने अपनी राजनीतिक बुद्धिमत्ता से यूरोप के महायुद्ध की दलबन्दियों को एक दम भांप लिया। वह समझ गया कि यह दुर्घटना बारूदखाने में लगी हुई चिंगारी है। यद्यपि इस घटना से यूरोप के सभी राजनीतिज्ञ चिंतित हो उठे, किन्तु इटली पर इस घटना का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। उसको केवल उससे आगे के समाचार को जान लेने भर की उत्सुकता थी।

फ्रांसिस फर्डिनेंड जर्मनी के समान इटली का भी शत्रु था। वह इटली वालों को कुछ भी न गिनता था। इटलीवासियों के कष्ट की उसको लेश मात्र भी चिन्ता न थी। उनको तो वह केवल आस्ट्रिया के जुवे के नीचे देख कर अपने पुराने अधिकार को बनाये रखना चाहता था। साथ ही वह पोप की राजनीतिक सत्ता को भी फिर दृढ़ करना चाहता था। अतएव उसकी मृत्यु से इटली वासियों को लेशमात्र भी दुःख नहीं हुआ।

यद्यपि पोप तथा अन्य शान्तिप्रिय राष्ट्रों ने युद्ध को रोकने का पर्याप्त प्रयत्न किया, किन्तु महायुद्ध १ अगस्त १९१४ को आरम्भ हो ही गया।

इटली ने इस घटना से कुछ वर्ष पूर्व ही त्रिराष्ट्र गुट को दोबारा स्वीकार किया था। किन्तु उसका इस गुट में इस प्रकार

सम्मिलित होना बिना सम्मान के विवाह करने के समान था। अतएव उसको युद्ध में सम्मिलित होने की कोई उत्सुकता नहीं थी। वास्तव में उस सन्धि के अनुसार युद्ध करने के लिए इटली उसी अवस्था में बाध्य था यदि गुट के किसी सदस्य पर कोई अन्य राष्ट्र आक्रमण करता। किन्तु यहां तो आस्ट्रिया स्वयं ही सर्विया पर आक्रमण कर रहा था।

मुसोलिनी का समाजवादियों से सम्बन्ध-विच्छेद

युद्ध आरम्भ होने पर जर्मनी ने इटली को अपने पक्ष में लाने अथवा कम से कम तटस्थ रहने की प्रेरणा करने के लिये इटली के जनमत पर प्रभाव डालना आरम्भ किया। किन्तु मुसोलिनी को यह अच्छा न लगा। उस समय उसका सम्बन्ध सोशिएलिस्ट पार्टी से था। इटली के सोशिएलिस्टों का अधिकांश इटली को तटस्थ रखना चाहता था। उनमें से कुछ जर्मनी के पक्षपाती भी थे। किन्तु मुसोलिनी को यह दोनों ही बातें पसन्द न थीं। उसकी दृष्टि में आस्ट्रिया की ओर से युद्ध करना उसके जुवे को इटली पर और दृढ़ करना था। अतएव उसने इस विचार का विरोध किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसको 'अवन्ती' पत्र को छोड़ना पड़ा और अन्त में वह सोशिएलिस्ट पार्टी से भी प्रथक् कर दिया गया। २८ जुलाई १९१४ को महायुद्ध आरम्भ होने के दिन से ६० दिन के अन्दर २ ही मुसोलिनी का सम्बन्ध अवन्ती और सोशिएलिस्ट पार्टी दोनों से ही टूट गया।

मुसोलिनी का नया पत्र

मुसोलिनी अब स्वतन्त्र हो गया था। किन्तु उसको अपने सिद्धान्त का प्रचार करने की अत्यन्त आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। 'अवन्ती' की सम्पादकी छूट जाने से अब उसे एक ऐसे पत्र की आवश्यकता प्रतीत हुई, जिसकी नीति पूर्णतया उसके आधीन हो। मुसोलिनी ने अपने कुछ अनुयायी मित्रों को एकत्रित किया और एक युद्ध समिति (War Council) बनाई। कुछ मित्रों ने इस पार्टी के लिये मिलन नगर में एक कमरे का प्रबन्ध कर दिया। वहां पास ही एक प्रेस भी था। उसका मालिक मुसोलिनी के पत्र को बहुत कम लागत पर छापने को तयार हो गया। अन्त में तारीख १५ नवम्बर १९१४ को मुसोलिनी के पत्र पोपोली डीटैलिआ (Popolo d' Italia) का प्रथम अंक निकला। वास्तव में यह सामग्री ही वर्तमान फासिस्ट पार्टी की आधार शिला थी। मुसोलिनी के यह मित्र पार्टी के आरम्भिक सदस्य और उसका पत्र पार्टी के सिद्धान्तों का प्रचारक था। मुसोलिनी का यह सद्योजात शिशुपत्र शीघ्र ही बड़ा बलवान हो गया। इटली का प्रधान मन्त्री मुसोलिनी उसका अब भी डायरेक्टर है। मुसोलिनी ने इसके द्वारा सन् १९१४ से १९२२ तक प्रचार किया। उसकी वर्तमान उन्नति का श्रेय इसी पत्र को है।

इटली की तत्कालीन पार्लमेंट की महायुद्ध के सम्बन्ध में नीति

इस समय इटली की पार्लमेंट (चैम्बर आफ़ डेपुटीज़) में ज्योलीटी (Giolliti) का बोलबाला था। वह वहां का प्रधान मन्त्री था। इस मन्त्रिमण्डल में सलाण्ड्रा भी था। इसमें बैरन सोनिनो परराष्ट्र सचिव था। सोनिनो और सलण्ड्रा दोनों ने पवित्र स्वार्थ की नीति को अपनाया हुआ था। वह मित्र राष्ट्रों और जर्मनी दोनों से बातचीत कर रहे थे। वह वास्तव में ही इटली की सहायता का सौदा कर रहे थे कि जो इटली को अधिक दे उसी की ओर से युद्ध किया जावे। इस प्रकार सलाण्ड्रा की बातचीत दोनों दलों से जारी थी।

इस समय चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ अत्यन्त निर्बल था। उसमें छै दल थे, जिनमे से किसी का भी बहुमत न था। दो तीन मिलकर मन्त्रिमण्डल चला रहे थे। उदार और अनुदार दोनों ही दल युद्ध में भाग लेने के पक्षपाती थे। किन्तु वह निश्चय न कर सके थे कि युद्ध किस पक्ष की ओर से किया जावे। ज्योलीटी जर्मनी की ओर से युद्ध में भाग लेना चाहता था और उसके लिए उसने जर्मन प्रधानमन्त्री से बातचीत करनी आरम्भ भी कर दी थी। चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ उसके हाथ की कठपुतली था। जो लोग मित्र राष्ट्रों के पक्ष में थे, वह खुलकर कुछ न कह सकते थे। उधर रोमन कैथोलिक और सोशिएलिस्ट (समाजवादी) लोग युद्ध के विरोधी थे। उन्होंने चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ में केवल तटस्थ

नीति ही न रख कर देश में युद्ध विरोधी प्रचार भी आरम्भ कर दिया था, जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है। राष्ट्रवादी (Nationalists), लोकतन्त्रवादी (Democrats) तथा भविष्यवादी (Futurists) युद्ध के पक्ष में थे। वह मित्र-राष्ट्रों का समर्थन करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने देश में चुपचाप प्रचार कार्य भी आरम्भ कर दिया था।

इस प्रकार दलों की डांवाडोल परिस्थिति के कारण मन्त्रि-मण्डल निष्पक्ष हो गया। किन्तु ज्योलिटी जर्मनी से लेन देन के आधार पर सौदा पटाता ही रहा। इधर जर्मनी भी चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ के अन्दर और बाहर अपने पक्ष में प्रचार कर रहा था।

किन्तु लोकमत जर्मनी के पक्ष में न था। उसका प्रथम कारण तो यह था कि इटली का सनातन शत्रु—आस्ट्रिया जर्मनी के साथ था, जिसके कब्ज़े में इटली का उत्तरीय तथा पूर्वीय सीमान्त प्रदेश अभी तक चला आता था। यह बात चाहे इटालियन राज-नीतिज्ञों को न खटकती हो, किन्तु जनता अभी भी आस्ट्रिया के अत्या-चारों और धूर्तता को न भूली थी। दूसरा कारण यह था कि इटली का बाजार सस्ते जर्मन सामानों से भरा हुआ था। जर्मनी के कारण इटली का वाणिज्य व्यवसाय अपनी अन्तिम श्वास ले रहा था। जनता इसे समझती थी और इसका प्रतीकार करना चाहती थी। अतएव ज्योलिटी की जर्मन लोगों के साथ समझौते की नीति इटलीवासियों को पसंद न थी।

मुसोलिनी की नीति

इस समय मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध के पक्ष में पहले-पहल मुसोलिनी ने ही विचार प्रगट किये थे। यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि इसी बात से रुष्ट होकर समाजवादी दल ने उसको अपने दल से प्रथक् कर दिया था। मुसोलिनी ने यह कहते हुये अपना त्याग पत्र दिया था, "आज आप मुझ पर विश्वासघात का दोष लगाकर मुझे इटली के सार्वजनिक क्षेत्र से निकाल रहे हैं। बहुत अच्छा, मैं शान्ति पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपने विचारों को प्रगट करता रहूँगा और कुछ ही वर्षों में इटली का जन-समूह मेरी हर्षध्वनि करता हुआ मेरा अनुकरण करेगा; जब कि आप में न तो कुछ बोलने की शक्ति शेष रहेगी और न आपका कोई अनुसरण ही करेगा।"

आज संसार जानता है कि समय ने मुसोलिनी की भविष्य वाणी को अक्षरशः सत्य कर दिखलाया। 'पोपोलो डीटैलिया' में प्रकाशित हुए मुसोलिनी के प्रथम लेख ने ही इटली के लोक-मत को बहुत कुछ बदल दिया। वहां फ्रांस और इंग्लैण्ड की ओर से युद्ध करने का आन्दोलन होने लगा।

मुसोलिनी की सहायता उसके फासिस्ट मित्र कर रहे थे। उनमें क्रांतिकर भावनाएं कूट २ कर भरी हुई थीं। उनको इटली की ओर से महायुद्ध में हस्तक्षेप करने में विलम्ब सह्य नहीं था। वह लोग प्रायः विश्वविद्यालयों के नवयुवक तथा उन समाजवादियों में से थे, जिनकी कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों पर से श्रद्धा उठ चुकी थी।

महायुद्ध में इटालियन स्वयं सेवक

इटली के युद्ध में भाग न लेने पर भी इन लोगों ने मुसोलिनी के सहयोग से एक स्वयंसेवक दल तैयार करके उसे युद्ध करने के लिए फ्रांस भेजा। इटली के लिये उत्तरी सिसली और नेपुल्स को विजय करने वाले प्रसिद्ध राष्ट्रीय वीर गारीबाल्डी के भतीजे और रैसीउनोटी गारीबाल्डी के दो पुत्र—ब्रूनो और कास्टैण्टे अरगोन (Argonne) के युद्ध में मारे भी गये। इन दोनों वीरों का अन्त्येष्टि संस्कार रोम में अत्यन्त समारोह पूर्वक किया गया, जिसका प्रभाव इटली भर में हुआ। इटली के लाल कुर्ती वाले वीरों ने अपने बलिदान से एक बार इटली के नाम को फिर अमर कर दिया।

मित्रराष्ट्रों के पक्ष में प्रचार

इस समय भूमध्य सागर के पिछले झगड़ों तथा लीबिया युद्ध में फ्रांस के विरोध को भी एक दम भुला दिया गया।

उसी समय इटली के सुन्दर सुहावने प्रदेश में गौरवगुण गान करने तथा उसकी वीरदावली गाने वाला प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि दनुनसियो क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ। यह अपनी लेखनी को थोड़े समय के लिये विश्राम देकर सार्वजनिक रंगमंच की ओर बढ़ा। उसकी वाणी में अग्नि थी। उसने किसी की चिन्ता न करके खुले शब्दों में इटली सरकार की दुरंगी नीति की आलोचना करनी आरम्भ करदी। उसने जनता से इटली की सुप्त नैतिक वृत्ति को जाग्रत

करने की अपील की। उसने ५ मई सन् १९१५ को जिनोआ के पास क्वार्टो डे माइले नामक स्थान पर एक अत्यन्त ओजस्वी भाषण दिया। उसने मित्रराष्ट्रों का समर्थन किया। क्वार्टो डे माइले वही स्थान है, जहां से गारीबाल्डी ने अपने सहस्रों वीर सैनिकों के साथ सिसली पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान किया था।

इस समय देश में नवजीवन का संचार हो गया था। ज्योलिटी का विरोध डट कर किया जाने लगा था। इटली के राजा ने भी विधान के अनुसार क़ैसर के व्यक्तिगत प्रतिनिधि को टका सा जवाब दे दिया था।

मिलन, रोम, पैडुआ, जेनोआ और नेपुल्स के आन्दोलन की गति को देख कर इटली के राजा हिज़ मैजेस्टी विक्टर एमानुएल तृतीय ने प्रधानमन्त्री ज्योलिटी से अस्तीफ़ा ले लिया। इसके पश्चात् उन्होंने सलाण्ड्रा से नया मन्त्रिमंडल बनाने को कहा। मुसोलिनी और उसके दल ने इस घटना को अपनी विजय का श्रीगणेश समझा।

नया मन्त्रिमण्डल युद्ध का पक्षपाती था। अतएव ज्योलिटी के करे कराये पर पूरी तौर से पानी फिर गया।

लन्दन सन्धि

सन् १९१५ के आरम्भ से ही लन्दन में मित्रराष्ट्रों और इटली के बीच समझौते की बातचीत आरम्भ हो गई थी। बहुत सोच-विचार के पश्चात् मित्रराष्ट्रों और इटली के बीच वह प्रसिद्ध सन्धिपत्र लिखा गया, जो लन्दन सन्धि (London Pact)

के नाम से प्रसिद्ध है। इस सन्धिपत्र पर ता० २६ अप्रैल १९१५ को इटली, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और रूस ने हस्ताक्षर किये थे। इस सन्धि के अनुसार इटली ने मित्रराष्ट्रों की ओर से महायुद्ध में अपनी पूरी शक्ति लगा देने का वचन दिया। इसके बदले में उस को वचन दिया गया कि उसको ट्रेनिटो का जिला, ब्रेनर घाटी (Brenner Pass) तक का दक्षिणी टाइरोल (Tyrol), ट्रिएस्टे (Trieste), गोरीज़िया (Gorizia) और ग्रैडिस्का (Gradisca) के देश, ग्वारनेरो (Guarnero) तक का सम्पूर्ण इस्ट्रिआ (Istria) वोलोस्का (Vcolcsca) तथा इस्ट्रियन द्वीपसमूह सहित, अपनी वर्तमान सीमाओं सहित डलमशिया प्राँत, एड्रियाटिक समुद्र के बहुत से द्वीप (लीसा सहित), वैलोना (Valona), डोडेकैनीज़ (Dodecanese) तथा दक्षिण पश्चिमी एशिया माइनर देने का वचन दिया गया था। इटली को हल्की शर्तों पर पांच करोड़ पौण्ड ऋण देने का वचन भी दिया गया था। इसमें इटली ने यह भी स्वीकार किया था कि फ्यूम (Fuime) सहित एक बड़ा इलाका क्रोटिआ, सर्विया और मांटिनिग्रो को दे दिया जावेगा।

इटली का महायुद्ध में भाग

इस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् इटली ने २४ मई १९१५ को आस्ट्रिया के विरुद्ध और २१ अगस्त को टर्की के विरुद्ध युद्ध घोषणा करदी। बल्गेरिया के विरुद्ध भी उसके कुछ सप्ताह पश्चात् ही युद्ध घोषणा करदी गई। किन्तु जर्मनी के विरुद्ध इटली ने २७ अगस्त १९१६ तक कोई युद्ध घोषणा नहीं की। इटली के

इतिहास में यह बड़ी आश्चर्य की बात है कि बिना चैम्बर आफ-डेपुटीज़ की आज्ञा के ही युद्ध घोषणा कर दी गई।

इन घोषणाओं से मुसोलिनी और उसके दल वालों को अत्यन्त हर्ष हुआ। इस छोटे से ग्रन्थ में महायुद्ध की सम्पूर्ण घटनाओं का विवरण नहीं दिया जा सकता और न इटली की सेनाओं द्वारा किये हुए सब युद्धों का वर्णन ही किया जा सकता है; क्यों कि जिस विषय पर संसार की समस्त भाषाओं में पन्द्रह सहस्र पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हों, उसका वर्णन इस छोटे से ग्रन्थ में किस प्रकार किया जा सकता है।

इटली की सेनाओं में तो युद्ध करने का उत्साह पहिले ही भरा हुआ था। वह युद्ध की आज्ञा सुनते ही एक दम अपने पुराने शत्रु आस्ट्रिया पर चढ़ दौड़ीं। यद्यपि युद्ध में इटली के भाग लेने से मित्रराष्ट्रों को बड़ा लाभ था, किन्तु सर्विया इससे बहुत भयभीत हुआ; क्यों कि वह पहिले से ही एक विशाल सर्विया राज्य की (जो अब यूगोस्लैविया के रूप में बन चुका है) कामना कर रहा था। सर्विया तो इटली को डलमाशिया आदि देने के बजाय उन पर आस्ट्रिया का प्रभुत्व ही अधिक पसन्द करता, किन्तु इस समय वह लाचार था।

इटली की सेनाओं ने इटली-आस्ट्रियन सीमा पर ईजोंसो (Isonzo) को अपना युद्धक्षेत्र बनाया। इटली की सेनाओं न इस मोर्चे पर इतने वेग से आक्रमण किया कि ता० २ जून १९१५ को आस्ट्रिया की सेनाओं को बुरी तरह से पराजित होना पड़ा।

आस्ट्रिया इस पराजय से बुरी तरह खीज गया। उसने जून और जुलाई १९१५ में इस मोर्चे पर २२१ बैटालियन भेज कर कारसो (Carso) की पहाड़ी पर मोर्चा जमाया। इटली की सेनाओं ने ६ जून से २२ जून तक शत्रु सेना पर ४१ आक्रमण और २३ जून से ७ जुलाई १९१५ तक ८६ भयंकर आक्रमण किये। इस युद्ध के कारण आस्ट्रिया को अपने रूसी मोर्चे की सेनाओं को कम करके इटली लाना पड़ा। इन युद्धों के लिये आस्ट्रिया को अपनी छै डिविजनें रूसी मोर्चे से और आठ सर्विया के मोर्चे से हटा कर इटली के मोर्चे पर लानी पड़ीं। इसी समय इटली ने टर्की तथा १८ अक्तूबर को बल्गेरिया के विरुद्ध भी युद्ध घोषणा करदी।

सर्विया के युद्ध न करने और शत्रु सेनाओं के ईजोंसो मोर्चे पर ज़मे होने पर भी इटली की सेनाओं ने अक्तूबर १६१५ में तृतीय युद्ध आरम्भ कर दिया। यह युद्ध ऐल्प्स की पहाड़ियों में था। इसमें मुसोलिनी भी सैनिक वेष में उपस्थित था। इसी युद्ध में इटली की सेनाओं ने ८०० व्यक्तियों की हानि उठा कर भी सात बार आक्रमण किया। इसका परिणाम यह हुआ कि आस्ट्रिया की थर्ड हानवेड रेजीमेंट के ३१ अक्तूबर को एक सहस्र सैनिक धराशायी हो गए और नं० २० हंगेरियन सेना तो इतनी थक गई कि उसको वहां से पूरी तौर से बदल देना पड़ा।

ईजोंसो का चौथा युद्ध १० नवम्बर से २ दिसम्बर तक हुआ। इस युद्ध में इटली की सेना ने सैबोटिनो (Sabotino) पर १५ बार,

पोडगोटा पर ४० बार और ओस्लैविया पर ३० बार आक्रमण किया।

कार्सो (Carso) का युद्ध भी कम भयानक नहीं था। उसमें नं० १७ आस्ट्रियन डिविज़न के १५ अक्तूबर से १५ नवम्बर १९१५ तक २५० अफ़सर और ११४०० सैनिक मारे गये। १७ नवम्बर को तो पूरी तयारी होने पर भी उस सेना में कुल साढ़े सात सहस्र सैनिक बचे थे।

जनवरी १९१६ में फ्रांस के वर्दून नामक स्थान पर बड़ा भारी आक्रमण किया गया, जिससे फ्रेंच सेनापति मार्शल जाफ़र को इटालियन सेनापति जेनेरल कैडोरना से और सहायता मंगानी पड़ी। मार्च में इटली ने सैन माइकेल प्रदेश में आक्रमण किया। इटली की सेनाओं ने ११ मार्च से १५ मार्च तक भयंकर युद्ध किया, जिसमें आस्ट्रिया के साढ़े तीन सहस्र सैनिक मारे गये। सन् १९१६ में आस्ट्रिया को बड़ी भारी हानि उठानी पड़ी। इटली ने सभी मोर्चों पर ऐसी वीरता का परिचय दिया, जिसकी उससे आशा नहीं की जा सकती थी। सन् १६ में ही इटली ने गोरीज़िया नामक आस्ट्रियन प्रान्त को विजय किया। इस युद्ध के लिये जैनेरल कैडोरना ने अपने युद्ध विद्या में कुशल तीन लाख इटालियन सैनिकों को ट्रेंटाइन मोर्चे से हटा कर ईज़ोंसो के मोर्चे पर डटा दिया, और आस्ट्रिया के गोरीज़िया (Gorizia) प्रान्त को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। इस घटना से शत्रु सेना में ऐसा आतंक छा गया कि उसको अपनी कई डिविज़नों को पूर्वी मोर्चे से

हटा कर वहां जर्मन सेना भेजनी पड़ी। इसके अतिरिक्त इसका प्रभाव सारे युद्ध पर ही बहुत बुरा पड़ा। इस विजय के कारण इटली का सम्मान बहुत अधिक बढ़ गया। इन युद्धों को ईजोंसो का सातवां, आठवां और नौवां युद्ध कहा जाता है।

कुछ माह के पश्चात् मई जून सन् १९१७ में ईजोंसो का दसवां युद्ध आरम्भ हुआ। यह युद्ध तोलमिनो (Tolmino) से समुद्र की लाइन तक हुआ।

इस बार इटली की सेनाएं ट्रिएस्टे (Tieste) में प्रवेश करना चाहती थीं। उन्होंने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये २४, २५ और २६ मई को रात और दिन बराबर युद्ध किया। कार्सो प्लैटो पर तो अत्यन्त भयंकर युद्ध हुआ।

इधर नदी पार मांटे कुक (Monte kuk) पर बड़ा भारी युद्ध हो रहा था। जो पर्वतीय प्रदेश दो वर्ष तक अदम्य सिद्ध हुआ था उसका अब पतन होने वाला था। इटली की तोपों ने कुछ घंटों में ही आस्ट्रिया के तारों और उसकी खाइयों को नष्ट कर दिया। इसके पश्चात् पैदल सेना ने आक्रमण किया। वह उस ढलुवां पहाड़ी पर सीधे चढ़ी चली गई। चोटी पर पहुंचने पर भयंकर मार काट हुई। इस समय पैदल पलटन और तोप-खाने सभी युद्ध कर रहे थे। अन्त में शान्ति होने पर वहां पूरी शान्ति छा गई और शत्रु को पीठ दिखानी पड़ी।

इधर तो इटली के मोर्चे पर मित्रराष्ट्रों को विजय पर विजय मिलती जाती थी। किन्तु उधर रूसी मोर्चे पर शत्रु निर्बल पड़ते

जाते थे; क्यों कि आस्ट्रिया हंगैरी की सारी सेना उस मोर्चे को छोड़ कर इटली की ओर आ रही थी।

कुछ सप्ताह के पश्चात् ७ अगस्त से ईजोंसो का ग्यारहवां युद्ध आरंभ हुआ। इसमें शत्रु का व्यूह भेद कर बाइनसित्सा (Bainsizza) के सारे प्लैटो (ऊंची चोरस भूमि) पर कब्जा कर लिया गया। इस बार आस्ट्रिया-हंगैरी की सेनाएं बहुत निराश हो गईं और उनकी सहायता के लिये जर्मन सेनाओं को बुलाया गया।

अब ईजोंसो के बारहवें युद्ध के लिये बहुत सी जर्मन सेना मैदान में आ गई; क्यों कि इस समय रूस में क्रान्ति हो कर १५ सितम्बर १९१७ को वहां प्रजातन्त्र की घोषणा की जा चुकी थी। इससे मित्रराष्ट्रों को बड़ी भारी हानि और शत्रु पक्ष को बड़ा लाभ हुआ। जर्मनी अपने रूसी मोर्चे से निश्चिन्त हो गया और युद्ध का प्रधान मोर्चा इटली का सीमान्त कापोरेटो (Caporetto) बन गया। यद्यपि इटली की थकी हुई सेनाएं आस्ट्रिया और जर्मनी की संयुक्त सेनाओं के वेग को न सम्भाल सकीं, किन्तु उन्होंने तौभी २४ अक्तूबर से १० नवम्बर तक बड़ी वीरता से युद्ध किया। बाइनसित्सा प्लैटो पर सैकिंड इटालिन सेना ने अपनी एक २ इंच भूमि की बड़ी वीरता से रक्षा की; किन्तु २४ अक्तूबर से उसको बुरी तरह पीछे हटना पड़ा। इसके पश्चात् थर्ड इटालियन सेना को भी पीठ दिखानी पड़ी। गलियों और सड़कों की अत्यन्त भयंकर मारकाट के पश्चात् तारीख २८ अक्तूबर को गोरीज़िया

का पतन हुआ। सायंकाल होते २ शत्रु ने पोडगोरा (Podgora) को भी फिर ले लिया। इस युद्ध में शत्रु को २३०० बन्दूकें और दो लाख कैदी मिले। किन्तु सेला नदी के किनारे पर तारीख ६ नवम्बर तक भी इटालियन पीछे नहीं हटे। ७ नवम्बर को आस्ट्रिया की सेना ने लाइवेंजा नदी के किनारे आक्रमण किया। किन्तु इटली की सेनाएं सभी घाटों पर मजबूती से मोर्चे-बन्दी की हुई थीं। उन्होंने किसी घाट पर भी शत्रु को पार न उतरने दिया। पर्वतों पर भी इटालियनों ने अनेक स्थानों पर मज़-बूत मोर्चेबन्दी की हुई थी। टालमेत्सो (Tolmezzo) के दक्षिण में इटालियन ३६ वीं डिविज़न के अफ़सर की आधीनता में कुछ सेना ने आस्ट्रिया की पहाड़ी सेनाओं और जर्मनी की ऐल्प्स पर्वत की सेनाओं के आक्रमणों को कई दिन तक रोके रखा। केवल ७ नवम्बर को इटली के तोपखाने ने आग उगलनी बंद की। बड़े भयंकर युद्ध के पश्चात् उन कुछ सहस्र इटालियन वीरों ने शस्त्र रख दिये। इस पराजय का इटली भर में बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।

यद्यपि सन् १९१७ में मित्रराष्ट्रों को अनेक पराजय स्वीकार करनी पड़ीं, किन्तु इस वर्ष के अन्त तक उनको संयुक्त राज्य अमरीका की भी पूरी सहायता मिल गई।

जर्मनी की सब ओर युद्ध करने की नीति से तारीख़ ३ फ़र्वरी १९१७ को ही संयुक्त राज्य अमरीका ने उससे राज-नीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था। १२ मार्च को जिस

दिन रूस में क्रान्ति हुई थी, उसी दिन अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन ने अमरीके का व्यापारिक जहाजों को भी सशस्त्र करने की घोषणा की थी। इसके पश्चात् अमरीका की दोनों सभाओं से महायुद्ध में सम्मिलित होने की स्वीकृति मांगी गई। इस प्रस्ताव को ता० ५ अप्रैल १९१७ को अमरीकन सीनेट ने ६ के विरुद्ध ८१ वोटों से और प्रतिनिधि सभा (House of Representative) ने ५० के विरुद्ध ३७३ वोटों से स्वीकार करके महायुद्ध में भाग लेने का निश्चय किया। इसके परिणाम स्वरूप २६ जून को अमरीकन सेना का पहला दस्ता फ्रांस में आया। किन्तु अभी तक अमरीका का युद्ध जर्मनी के विरुद्ध ही था, जिससे इटली की सेनाओं को कोई लाभ नहीं पहुंचा। ७ दिसम्बर को संयुक्त राज्य अमरीका ने आस्ट्रिया-हंगरी के साथ भी युद्ध करने की घोषणा कर दी। इस प्रकार अब सभी मोर्चों पर फिर अत्यन्त भयानक युद्ध होने लगा।

सन् १९१८ मित्रराष्ट्रों की विजय का वर्ष था।

इटली की सेनाओं ने जनवरी १९१८ मे ही बड़ी भारी वीरता का परिचय दिया। अप्रैल मे दो इटालियन डिविजनों को फ्रांस में युद्ध करने को भेजा गया। इन सेनाओं ने बड़ी भारी वीरता का परिचय दिया।

जून के मध्य में अब का सब से भंयकर युद्ध हुआ। इसको पिआवे का युद्ध कहते हैं। इसमें आस्ट्रिया-हंगैरी की ५४ डिविजनें मुकाबले पर थीं। इटली के लिये यह युद्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण

था, क्योंकि पिआवे नदी की रक्षा पर ही वेनिस, वेरोना और वाइसेंज़ा की रक्षा निर्भर थी। इस मौके पर फ्रांस और इंगलैण्ड की सेनाएं भी इटली की सहायता को आगई। अतः इधर ५० इटालियन डिविज़न, तीन ब्रिटिश और दो फ्रेंच डिविज़नें हो गईं। इस युद्ध का प्रबन्ध आस्ट्रिया सम्राट् ने स्वयं किया था। किन्तु आट्रिस्या को इस युद्ध में भी मुंहकी खानी पड़ी। सम्राट् निराश होकर विएना को लौट गया। २२ जून को आस्ट्रिया-हंगैरी की सेनाओं को वापिस आने की आज्ञा दी गई। इस युद्ध में आस्ट्रिया-हंगैरी के अफ़सरों में ७७३ मरे, २६८४ ज़ख्मी हुए और ५२४ खोएगए। उसके सैनिकों में १७४७४ मरे, ८८५३९ ज़ख्मी हुए और ३९०४८ खोए गए। इस प्रकार इस युद्ध में शत्रु पक्ष को कुल १४६०४२ मनुष्यों की हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध में इटली के अफ़सरों में ४१६ मरे, १३४३ घायल हुए और ११५३ खोए गए। उसके सैनिकों में ७५८५ मरे, २७६१३ घायल हुये और ४६५०४ खोए गए। इस प्रकार इटली को कुल २४६१४ मनुष्यों की हानि उठानी पड़ी। ब्रिटिश सेना के अफ़सरों में २६ मरे, ८४ घायल हुए और ११ खोए गए। उनके सैनिकों में २४४ मरे, १०४० घायल हुए और ३५४ खोए गए। फ्रांस के अफ़सरों में ४ मरे और १८ घायल हुए। उसके सैनिकों में ६२ मरे, ४६३ घायल हुए और १५ खोए गए। इस प्रकार सिद्ध है कि पिआवे (Paive) का युद्ध इतिहास के सब से बड़े युद्धों में से था। इस पराजय

से जर्मनी और हिडनेबर्ग को बड़ी निराशा हुई। उनका आस्ट्रिया पर से भरोसा जाता रहा। इस युद्ध से आस्ट्रिया का प्रभाव इटली के ऊपर से पूरा उठ गया।

२५ अक्टूबर १६१८ को इटली और इंगलैण्ड की सेनाओं ने पिआवे (Paive) नदी को पार करके आस्ट्रिया को पूरी तौर से इटली में से निकाल दिया। इस बार विटोरिओ वेनेटो (Vittorio Veneto) में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ।

आस्ट्रिया और हंगैरी की सेनाओं ने २४, २५, २६, २७ और २८ अक्तूबर को अपनी रक्षा बड़ी वीरता से की। २४ से २८ तारीख तक एसोलोन पर्टिका और सोलारोला घाटियों में चार दिन तक बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। जर्मन सेनापति के शब्दों में इस युद्ध से केवल आस्ट्रिया की ही पराजय नहीं हुई, वरन् सारा युद्ध ही समाप्त हो गया और आस्ट्रिया स्वयं भी नष्ट हो गया। इस युद्ध से जर्मनी भी बरबाद हो गया और उसका पतनकाल समीप आ गया। इस युद्ध में इटली को ३४ सहस्र, इंगलैण्ड को १५०० और फ्रांस को ५०० मनुष्यों की हानि उठानी पड़ी। युद्ध में शत्रु के पीठ दिखाने पर २९ अक्तूबर को इटली की सेनाओं ने बड़े वेग से आगे बढ़ कर सब मोर्चों पर अपना अधिकार कर लिया।

इटली की इस विजय से मित्रराष्ट्र शीतकाल का पांचवां वर्ष खाइयों में व्यतीत करने से बच गए और जर्मनी को शीघ्र ही शस्त्र डालने को विवश होना पड़ा। इस प्रकार मित्रराष्ट्रों

को विजय दिलाने में इटली का प्रमुख हाथ था। इटालियनों के इस युद्ध की उनके शत्रु आस्ट्रियन सेनापतियों ने भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी।

आस्ट्रिया पर इस युद्ध का ऐसा भयंकर प्रभाव पड़ा कि उसकी रीढ़ की हड्डी ही टूट गई और उसने पराजय के चार दिन के अन्दर ही तारीख ४ नवम्बर १९१८ को आत्म-समर्पण करके युद्ध बन्द कर दिया। इस प्रकार आस्ट्रिया द्वारा वर्षों तक पीड़ा पाए हुए इटली ने उससे अपना बदला ब्याज समेत चुका लिया।

चतुर्थ अध्याय

महायुद्ध में मुसोलिनी

महायुद्ध की घोषणा से मुसोलिनी को अपार हर्ष हुआ। उसको इस समय वास्तव में विजय मिली थी। अब उसकी नसों में युद्ध में भाग लेने के उत्साह में नवीन रक्त का संचार होने लगा। इसके अतिरिक्त वह अपने देशवासियों को दिखलाना चाहता था कि राजनीतिज्ञता केवल अखबारों के कालम काले करने और व्याख्यान मंचों पर व्याख्यान झाड़ने में ही नहीं, वरन् युद्ध भूमि में अपना शौर्य दिखलाने में भी है। मुसोलिनी ने युद्ध आरम्भ होते ही उसमें भर्ती होने का प्रार्थनापत्र भेजा, किन्तु उस को प्रतीक्षा करने को कहा गया। अन्त में इटली के युद्ध आरम्भ करने के तीन माह बाद तारीख १ सितम्बर १९१५ को उसको भी बुलावा आ गया। उसको पहिले तो लम्बार्ड जिले में ब्रेशिया (Brescia) स्थान पर भेजा गया, किन्तु फिर उसको शीघ्र ही भीषण

युद्धस्थल में ऐल्पस् पर्वत पर भेज दिया गया। यहां उसको कई मास तक पहाड़ी खाइयों में जीवन की कठिन परीक्षाएं देनी पड़ीं। यहां प्रथम मास में ही शीत, वर्षा, कीचड़ और भूख के कष्ट भोगने पड़े। किन्तु इन कष्टों से भी मुसोलिनी का युद्ध के लिये उत्साह कम न हुआ। उसको इटली के युद्ध में भाग लेने का अब भी गर्व था।

मुसोलिनी की वीरता

आरंभ में मुसोलिनी को प्रधान कार्यालय का लेखक बनाये जाने को कहा गया। किन्तु उसने लेखक बनने से इन्कार कर दिया। उसके हृदय में तो लोथों पर पांव धर २ कर युद्ध करने की उमंगे आ रही थीं। अन्त में सेनाधिकारियों को उसकी इच्छा पूरी करनी ही पड़ी। युद्धस्थल में उसने बड़ी भारी वीरता का परिचय दिया। उसकी वीरता की प्रशंसा उसके सभी अधिकारी किया करते थे। वह कुछ माह में ही कारपोरैल (Corporal) बना दिया गया।

अब उसको एक सप्ताह के लिये सैनिक पदाधिकार की शिक्षा के लिये भेजा गया, इसके पश्चात् वह फिर खाइयों में भेज दिया गया, जहां उसको कई माह तक रहना पड़ा। यहां अत्यन्त परिश्रम करने के कारण उसको टाइफाएड (Typhoid) ज्वर हो गया, जिससे उसको सिविडेल (Cividale) के सैनिक अस्पताल में भेज दिया गया। ज्वर दूर होने पर उसको स्वास्थ्यलाभ के लिये कुछ समय को फेरैरा (Ferrara) भेज दिया गया। इसके

पश्चात् उसको ऐल्पस् पर्वत के ऊपर फिर तोपों और अग्नि वर्षा के बीच मृत्युके दृश्य में भेज दिया गया।

मुसोलिनी सेक्शन १४४ में था। अब इस सेना को कार्सो (Carso) पर आक्रमण करने की आज्ञा दी गई। मुसोलिनी को हाथ से बम के गोले फेंकने वालों में रखा गया। वह बड़ा भीषण दृश्य था। प्रत्येक क्षण मृत्यु सामने खड़ी दिखलाई देती थी। कई २ बार वह लोग शत्रु से केवल पच्चीस तीस गज़ के फासले पर खड़े होकर ही युद्ध करते थे।

कुछ समय कष्ट भोगने के पश्चात् मुसोलिनी खाइयों के कष्टकर जीवन का अभ्यासी हो गया। अपने पत्र 'पोपोलो डीटैलिया' को वह यहां भी बड़ी उत्सुकता पूर्वक पढ़ा करता था। वह इस पत्र को यह कह कर कुछ अपने विश्वासी मित्रों के हाथ में दे आया था कि युद्ध का समर्थन अन्तिम क्षण तक किया जावे। इस विषय में अनेक बार उसने अपने मित्रों को युद्धस्थल से भी लिखा। किन्तु उसने युद्धस्थल के अपने सब भावों को पत्रों में कभी नहीं लिखा, क्यों कि वह अपने को एक आज्ञाकारी सैनिक समझता था। खाइयों में सैनिकों और अफसरों की मनोवृत्ति का अध्ययन करने में उसे बड़ा आनन्द आता था।

सैनिकों के प्रति उसके हृदय में अत्यन्त सम्मान था। युद्ध के अनेक सैनिक इटली के युद्ध में सम्मिलित होने का हृदय से समर्थन नहीं करते थे। तौ भी वह अपने अफसरों की प्रत्येक आज्ञा का पालन प्राणपन से करते थे। उनमें से अनेक अफ़सर

कालेजों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी थे। नवीन इटली के शौर्य को प्रकट करते हुए मुसोलिनी को वह बड़े अच्छे जान पड़ते थे।

इटली में युद्ध विरोधी आन्दोलन

युद्धस्थल में इतना अधिक कार्य होने पर भी रोम के राजनीतिक क्षेत्र में अब भी अशांति बनी हुई थी। पार्लियामेंटरी दल अपने पुराने स्वभाव के छोड़ने को अब भी तयार नहीं थे। युद्ध विरोधी लोग अब भी पूरे वेग के साथ आन्दोलन कर रहे थे। वह लोग सुगमता से हार मानने वाले नहीं थे। वह सेनाओं को पूरे वेग से युद्ध करने देना भी नहीं चाहते थे। सैनिकों के उत्साह को मन्द करने के लिए अनेक साधन काम में लाये जा रहे थे।

किन्तु सैनिक लोग किसी आन्दोलन की चिन्ता किये बिना बराबर वीरता पूर्वक युद्ध किये जाते थे। उन्होंने बड़ा भारी साहस दिखला कर सन् १९१६ में ईज़ोंसो के युद्ध में ऐल्प्स् की दुर्गम पहाड़ियों में विजय प्राप्त की। इस युद्ध में मुसोलिनी ने फिर अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया।

इन सब युद्धों में मुसोलिनी अपने समाचार बराबर 'पोपोलो डीटैलिया'को भेजता रहता था, जिससे शान्ति की पुकार करने वाले युद्ध विरोधी समाजवादी यह न समझ लें कि मुसोलिनी युद्ध के भय से कहीं मुंह छिपाये पड़ा है। वह युद्ध आरम्भ होने के कुछ समय के पश्चात् ही अपनी बरसालिएरी (Bersaglieri) नामक सेना का मैजर कारपोरैल बना दिया गया। इस पद पर वह फर्वरी १९१७ तक कार्य करते हुए बराबर वीरता दिखलाता

रहा। समय २ पर वह अपने पत्र में युद्ध में दृढ़ बने रहने के लेख भी दिया करता था। उसको अन्त में पूर्ण विजय की पूरी आशा थी। इस प्रकार उसको युद्धस्थल में अग्नि वर्षा से और देश में युद्ध विरोधियों के साथ लेख वर्षा से युद्ध करना पड़ रहा था।

मुसोलिनी का घायल हो कर अस्पताल में आना

२२ फर्वरी १९१७ को मुसोलिनी के साथियों की खाई में एक उनका ही बम का गोला फट गया। उस समय उस खाई में मुसोलिनी सहित बीस सैनिक थे। वह सब के सब धूल और धुवें से भर गये। धातु के टुकड़ों ने उनके शरीर को छिन्न भिन्न कर डाला। उनमें से चार तो तुरन्त ही मर गए और शेष भयानक रूप से घायल हुए।

मुसोलिनी को शत्रु की खाइयों से कुछ मील की दूरी पर रौंशी (Ronchi) के अस्पताल में भेज दिया गया। डाक्टर पाइकाग्नोनी (Piccagnoni) तथा अन्य डाक्टरों ने उसकी अत्यन्त उत्साह पूर्वक चिकित्सा की। मुसोलिनी के घाव संगीन थे। उसके शरीर में से बम के ४४ टुकड़े निकाले गए। केवल मांस ही नहीं कटा था, कई एक हड्डियां भी टूट गई थीं। शरीर में बड़े ज़ोर की पीड़ा हो रही थी। एक माह में उसके सत्ताईस आपेरेशन किये गए। उसने दो के अतिरिक्त शेष सभी को बिना नशा सूंघे हुए करा लिया।

मुसोलिनी इस अस्पताल में बीमार पड़ा था कि भयंकर बम उस अस्पताल पर भी आकर पड़ा, जिससे रौंशी के उस अस्पताल

का मध्यभाग टुकड़े २ हो गया। अस्पताल के सभी रोगी अस्पताल से रक्षा के स्थान पर चले गए, किन्तु मुसोलिनी की दशा इतनी ख़राब थी कि वह उठाने योग्य भी नहीं था। उस समय उसको उस अरक्षित दशा में ही शत्रु की तोपों की आग के नीचे कई दिन तक रहना पड़ा। किन्तु शीघ्र ही उसके घाव भरने लगे और उसको चैन पड़ने लगा।

मुसोलिनी को बुलाने के तार पर तार आ रहे थे। एक बार तो स्वयं इटली के राजा ने ही उसको बुलाया। कुछ माह के पश्चात् वह मिलन (Milan) नगर के एक सैनिक अस्पताल में पहुंचा दिया गया। माह अगस्त में वह लाठियों के सहारे चलने योग्य हो गया। इस दशा में उसको कई माह तक चलना पड़ा।

मुसोलिनी का प्रचार युद्ध

अब वह अपने समाचार पत्र के कार्यालय में आकर युद्ध करने लगा। रूसी सेना के युद्धस्थल से हट जाने के कारण युद्ध का वेग इटली के मोर्चे पर अधिक हो गया था, जिससे इटली की सेनाओं को पीछे हटना पड़ा था। इटली की इस पराजय से युद्ध विरोधियों के आन्दोलन को अच्छी सहायता मिली। समाजवादी यह आन्दोलन कर रहे थे कि "सैनिकों को खाइयों में से वापिस बुला लो"। इसी समय अक्तूबर १९१७ में कापोरेटो (Caporetto) में इटली की सेनाओं की भारी पराजय हुई।

इस समय देश के ऊपर भारी संकट आया हुआ हुआ था। किन्तु समाजवादी लोग अब भी युद्धस्थल छोड़ देने की रट लगाए

हुए थे। उनको यह ध्यान नहीं था कि इस दशा में पराजय स्वीकार करने से देश को शत्रुओं के हाथों सौंपना पड़ेगा। मुसोलिनी ने इस आन्दोलन का प्रबल विरोध करना आरंभ किया। उसने अपने पत्र द्वारा केन्द्रीय सरकार से इन आन्दोलनों का कठोरता से दमन करने की मांग उपस्थित की। उसने स्वयंसेवक सेना का संगठन करने, उत्तरी इटली में सैनिक शासन की घोषणा करने, सोशिएलिस्ट समाचार पत्रों का दमन करने और सैनिकों की योग्य चिकित्सा करने की जोरदार मांग सरकार के सम्मुख उपस्थित की। इस मांग का अच्छा प्रभाव पड़ा और सरकार अपनी दब्बू नीति को छोड़ती हुई दिखलाई देने लगी।

युद्ध विरोधी आन्दोलन का भयंकर रूप

किन्तु समाजवादी लोग भी इस हद तक पहुंच गए थे कि सैनिकों को सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करने की प्रेरणा करने लगे। सरकार भी विवश थी। यदि वह समाजवादियों का विरोध करती तो आन्दोलन खड़ा होने का भय था और समर्थन करने से न केवल मित्रराष्ट्रों के साथ विश्वासघात होता, वरन् इटली की राष्ट्रीयता की रक्षा भी न की जा सकती थी।

युद्धवादी इस समय फिर देश की सहायता के लिये कमर कस कर खड़े हो गए। उन लोगों ने समाजवादियों के विरुद्ध प्रचार आरम्भ कर दिया। उनकी बातों का उत्तर अखबारों, व्याख्यानों तथा कहीं कहीं लड़ाइयों तक से दिया जाने लगा। इस समय समाजवादियों और युद्धवादियों में इतने युद्ध हुए

कि उनकी तालिका देना कठिन है। युद्धवादी एक ओर तो समाजवादियों के प्रचार कार्य का मुंहतोड़ उत्तर देते थे, दूसरी ओर वह सरकार को युद्धसामग्री तथा सेना के संगठन में सहायता देते और जनता की मनोवृत्ति को युद्ध के पक्ष में करने का उद्योग करते थे।

किन्तु जब सन् १९१७ में इटली में बोल्शेविकों की सफलता का समाचार पहुंचा तो अवस्था बहुत ही भयानक हो गई।

सेनाओं में युद्धविरोधी आन्दोलन

इटालियन समाजवादियों ने रूसी राज्यक्रान्ति का स्वागत किया। वह श्रमिकों द्वारा उसी प्रकार की राज्यक्रान्ति इटली में कराने के उद्देश्य में दुगने उत्साह से प्रयत्न करने में लग गये। वह श्रमिकों तथा कृषकों को रूसी राज्यक्रान्ति के नाम पर उभारने लगे। वह श्रमिकों और कृषकों को बतलाते थे कि उनकी यह पहिली विजय है और वह दिन दूर नहीं है जब समस्त संसार में श्रमिकों का लाल झण्डा फहराता मिलेगा और पूंजीपति लोग या तो अपमानित किये जावेंगे अथवा उनको केवल जीवन के भरण पोषण योग्य सामग्री देकर उनसे उनका शेष धन छीन लिया जावेगा। उन्होंने सैनिक शिविरों तथा सीमान्त प्रदेश पर लड़ती हुई सेना की खाइयों को युद्धविरोधी साहित्य से भर कर सैनिकों का आह्वान किया कि वह भी इटली में रूस के समान क्रान्ति करें। किन्तु युद्धवादी भी उनका डट कर विरोध करते रहे।

समाजवादियों और युद्धवादियों में चक्के चलते, एक दूसरे पर आक्रमण होता और प्रायः गोली भी चल जाती थी। आये दिन गलियों और सड़कों पर दंगा होता, किन्तु न तो पुलिस ही कुछ हस्तक्षेप करती और न सरकार ही। सरकारी अधिकारियों ने उदासीनता की नीति ग्रहण कर ली थी। कभी २ दंगे इतना उग्र रूप धारण कर लेते थे कि शीघ्र ही ग्रहयुद्ध फूट निकलने की आशंका हो जाती थी। किन्तु यह स्थिति किसी प्रकार टलती ही गई।

इटली की विजय

इस प्रकार शीत ऋतु और सन् १९१७ निकल गया। सन् १९१८ की वसन्त ऋतु में पिआवे नदी के ऊपर भीषण मोर्चा लगा। इटालियन सैनिक प्राणों की बाजी लगा कर युद्ध करने लगे। जून में शत्रुओं के आक्रमण और भी भीषण होने लगे। पिआवे नदी के किनारे कई माह तक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध की गणना संसार के सब से बड़े युद्धों में की जाती है। अन्त में जैसा कि पीछे लिखा जा चुका है २५ अक्तूबर को आस्ट्रिया-हंगैरी की ऐसी पराजय हुई कि इतिहास में उनका मान चित्र ही बदल गया। इटली की सेना ने शत्रुओं को भगा कर पिआवे नदी को पार कर ट्रिएस्टे (Trieste) पर पड़ाव डाला और ट्रेण्टो (Trento) पर अधिकार कर लिया।

इस विजय से सारे इटली में आनन्द छा गया। यह विजय सारी इटालियन जाति की विजय थी। इस बार एक सहस्र

वर्ष के पश्चात् इटली ने फिर अभिमान से अपने मस्तक को ऊंचा करके अपनी वीरता का परिचय संसार को दिया था। इस युद्ध से उसने भावी योरोप में अपने लिये सम्मानपूर्ण स्थान बना लिया था। दान्ते के चौदहवीं शताब्दी के स्वप्न के अनुसार ट्रेण्टो और ट्रिएस्टे अब इटली के भाग बन कर उसकी स्वाभाविक सीमा बन गये थे। इस समय सारे इटली में विजय उत्सव मनाया गया। गिर्जाघरों में घण्टे बजा कर हर्ष मनाया गया। युद्ध के सैनिक, युद्ध की विधवाएं और युद्ध के अनाथ तो हर्ष के मारे फूले न समाते थे। इस समय ट्रेण्टो और ट्रिएस्टे जीत लिये गए थे। फ्यूम भी आधा जीत लिया गया था और डलमाशिया का भाग्य उसके भाग्य के साथ बंधा हुआ था।

इस युद्ध में इटली के लगभग साढे बावन लाख सैनिकों ने युद्ध किया और उसको निम्नलिखित हानि उठानी पड़ी—

मृत	६, ५०,०००
अंगभंग	४, ५०,३००
घायल	१० लाख

यह निश्चय है कि बिना इटली के महायुद्ध में सफलता मिलनी असम्भव थी। यदि इटली शत्रुओं को कार्सो (Carso) पर न रोक लेता तो फ्रांस का मान चित्र आज कुछ और ही होता।

इस महायुद्ध में दोनों पक्ष की ओर से अपने २ वंश के

सब से अधिक शक्तिशाली ८० लाख नवयुवक मारे गए थे। इससे कहीं अधिक नवयुवक अंग भंग आदि कारणों से सदा के लिये अपाहिज तथा असमर्थ हो गए थे और इतनी ही संख्या में भूख, कष्ट और रोग के कारण मर चुके थे। गिल्बर्ट मरे (Gilbert Murray) के अनुसार तो इस युद्ध के कारण अढ़ाई करोड़ व्यक्ति मरे थे। इस युद्ध के कारण विजयी और विजित सभी को संसार भर में अपार हानि उठानी पड़ी। इसी के कारण भारतवर्ष में भी इंफ्लुएँजा (युद्ध ज्वर) फैल गया, जिससे ६० लाख मनुष्य मर गए।

पांचवां अध्याय

महायुद्ध के बाद इटली की राजनीतिक दशा

युद्ध से लौटे हुए सैनिकों का अपमान—लौटते हुए विजयी सैनिक युद्धस्थल से बड़ी २ कल्पनाएं लेकर आ रहे थे। वह सोचते थे कि देश में जाने पर जनता उनका स्वागत प्राचीन रोमनों के समान करेगी तथा उनके अभिनन्दन में अनेक प्रकार के उत्सव होंगे। किन्तु यहां तो और ही दशा थी। यद्यपि भविष्यवादियों और राष्ट्रवादियों ने उनके सम्मान में स्वागत का प्रबन्ध किया था, किन्तु समाजवादी उनका पूर्ण बहिष्कार करने पर तुले हुए थे। समाजवादी उनका स्वागत देशद्रोही, खूनी, हत्यारे, लुटेरे और डाकू आदि सम्बोधनों से करने लगे। उनके ऊपर भीषण दोषारोपण किया गया कि युद्ध में भाग लेकर उन्होंने ऐसा गुरुतर अपराध किया है, जिसका प्रायश्चित उनके बहिष्कार तथा इटली में रूसी राज्यक्रान्ति के समान राज्यक्रान्ति करने से ही हो सकता था।

समाजवादी लोग युद्ध से लौटे हुए सैनिकों को पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों का साधन कह कर उन पर व्यङ्ग्य की बौछार करते थे। वह जिधर से निकल जाते, उन पर सड़े अण्डे, बदबूदार शराब, चक्के और जूठे तथा गले फल आदि फेंके जाते थे। कुछ बोलने का साहस करते ही उन पर लाठियों से प्रहार किया जाता था। उस समय पिस्तौलें निकल आतीं, और सङ्गीनें चमक उठती थीं। समाजवादियों और युद्ध वादियों में भयंकर संघर्ष की सम्भावना अधिकाधिक होती जाती थी।

इस घटना का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। सैनिकों का मस्तक लज्जा से झुक गया। वह विजेता नहीं, किन्तु हत्यारे और चोर कह कर पुकारे जाते थे। समाजवादियों द्वारा उनका सामाजिक बहिष्कार किया जा रहा था। मुसोलिनी यद्यपि आरम्भ से ही इनसे अनेक प्रकार के मोर्चे ले रहा था, किन्तु इस समय उसने भविष्यवादियों और राष्ट्रवादियों का संगठन करके अपने सैनिक भाइयों को इस बुरी गति से बचाने का यत्न किया। तथापि कुछ समय के लिये तो उसका प्रयत्न भी नक़ारख़ाने मे तूती की आवाज़ के जैसा ही प्रमाणित हुआ।

समाजवादियों का क्रान्तिकर आन्दोलन

समाजवादियों ने सारे देश में अपने संगठन का जाल फैला दिया। प्रत्येक नगर, उपनगर तथा प्रान्त में सभा-समितियां स्थापित की गईं। सब में यही भावना कूट २ कर भरी गई कि इटली में बहुत शीघ्र राज्यक्रान्ति होने वाली है। जनता के

उदासीन हृदयों में उत्साह एवं जीवन का संचार हो उठा। वह लोग क्रान्ति का स्वप्न देखने लगे। प्रचलित शासन के विरुद्ध नारे लगने लगे। इटली के लिये यह समय बड़ा भयानक था। उसने अपने प्रारम्भिक जीवन के इतिहास से इस समय तक ऐसे बड़े उपद्रव का सामना नहीं किया था।

युद्ध के बाद मन्दी, सरकारी ऋण और बेकारी की समस्या इतनी जटिल हो गई थी कि समाजवादियों को सरकार के विरुद्ध प्रचार करने में और भी सुभीता होने लगा। जनता समाजवादियों का अनुकरण इस लिए कर रही थी कि शायद देश तथा उनका सुधार समाजवादियों द्वारा ही हो।

मिलन की समाजवादी म्यूनिसिपैलिटी से एक विशेष मिशन विएना के भाइयों (?) की सहायता के लिये भेजा गया। ट्रिएस्टे में समाजवादी पिटोनी (Pittoni) ने उस नगर के पुनः संगठन का कार्य आरम्भ किया, जिससे उसको इटली राज्य में न मिलाया जा सके। समाजवादी लोग युद्ध का कोई लाभ इटली को नहीं पहुंचने देना चाहते थे।

इसी समय सरकार ने सैनिकों की पल्टनों को तोड़ना आरम्भ किया। उसके इस कार्य से परिस्थिति और भी जटिल हो गई। सरकार ने आर्थिक स्थिति के सुधार के लिये फौजी विभाग को तोड़ा था, किन्तु बेकार सैनिक भी सरकार के शत्रु बन गए। वह विरोधी पक्ष से मिल कर सरकार के ही नाश का उपाय सोचने लगे और समाजवादी दल में सम्मिलित हो गए।

अनेक आवारे बदमाश तथा सरकारी कर्मचारियों से व्यक्तिगत द्वेष रखनेवाले भी समाजवादी दल में सम्मिलित हो गए। इस प्रकार यह दल बहुत ही हिंसात्मक निकम्मा, किन्तु मजबूत हो गया। निर्वाचन मे इस दल को आशातीत सफलता मिली। किन्तु बिना विचारशील नेता के वह अपनी शक्ति का उपयोग न कर सका।

ऐसी दशा में तारीख २६ फर्वरी १९१९ को मिलन नगर में समाजवादियों का एक बड़ा भारी जलूस निकाला गया। जलूस क्या था! महिलाओं, बच्चों, रूसियों, जर्मनों और आस्ट्रियनों का तूफ़ान था। इस जुलूस ने कई सभाएं कीं। जुलूसवाले युद्ध से भाग जाने वालों को क्षमा देने और भूमि के बटवारे के नारे लगा रहे थे।

इस जुलूस के सड़कों में आने पर मध्य श्रेणि वालों, दूकानदारों और होटलवालों ने शीघ्रता से अपने २ दरवाज़ों और खिड़कियों को बन्द कर लिया। इसी समय उनके इटली का एक राष्ट्रीय झण्डा देखने में आया। उन्होंने उसको फ़ौरन उतार लिया। एक अध्यापिका से यह दृश्य न देखा गया। वह तुरन्त ही उसको बचाने के लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगा कर भीड़ के सामने जा पहुंची। बाद में इस स्त्री को इस वीरतापूर्ण कार्य के लिये स्वर्ण पदक दिया गया।

उस समय मुसोलिनी का पत्र 'पोपोलो डीटैलिया' इसी प्रकार के वादविवादों से भरा रहता था। उसके द्वार पर प्रति

दिन युद्ध होता था । अतएव दंगा न होने देने के लिये इस सड़क की रक्षा सदा ही पुलिस या पल्टन किया करती थी। इस के कार्यकर्ता लोग जब बाहिर निकलते थे तो उनकी भी रक्षा की जाती थी। इस पत्र के ऊपर सेन्सर भी बिठला दिया गया था। मुसोलिनी ने अगले दिन के पत्र में इस जुलूस की बड़ी कड़ी आलोचना करते हुए युद्ध में प्राण देने वालों की प्रशंसा की। उसने घोषणा की कि इस प्रकार के सब कार्यों का विरोध करके युद्ध से वापिस आए हुओं के सम्मान की रक्षा की जावेगी ।

इसी समय पेरिस में जर्मनी और मित्रराष्ट्रों में सन्धि की वार्ता हो रही थी। देश की आन्तरिक परिस्थिति के बेकाबू होने से इटालियन प्रतिनिधिमंडल भी वहां अपने पक्ष का दृढ़ता से उपस्थित करने का साहस न कर सकता था।

फासिस्टों की प्रथम सभा

मुसोलिनी को इस दशा से बड़ी चिन्ता हुई। उसने इसका डट कर विरोध करने का पूर्ण निश्चय कर लिया। २३ मार्च १६१९ को मिलन में उसने आन्दोलन द्वारा युद्ध करने का फ़ासिस्ट कार्यक्रम प्रकाशित किया।

इटली के युद्ध-प्रेमी फ़ासिस्टों की पहिली सभा मिलन नगर के एक हाल में तारीख २३ मार्च १९१८ को हुई। यह स्थान वहां के व्यापारियों तथा दुकानदारों द्वारा दिया गया था। हाल में सभा करने की स्वीकृति बड़ी कठिनता से मिली।

'पोपोलो डीटैलिया' में इस सभा के लिये खूब प्रचार किया

गया था। तो भी उपस्थिति बहुत कम थी। दो दिन के बाद-विवाद के पश्चात् चव्वन व्यक्तियों ने फ़ासिस्ट कार्यक्रम पर हस्ताक्षर करके उन सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करने की सहायता देने का वचन दिया। इन लोगों में पुराने युद्धवादी, निकाले हुए सैनिक अफ़सर तथा आर्डीटो (Arditi) नामक स्वयंसेवक थे। आर्डीटी स्वयंसेवक युद्ध में बहुत अधिक सहायता ही नहीं दिया करते थे, वरन् वह आगे बढ़ कर बड़ी वीरता से युद्ध भी किया करते थे। वह लोग हाथों में बम और दांतों में छुरे लेकर मृत्यु की चिन्ता न करते हुए युद्ध के गीत गाते हुए भयानक से भयानक युद्ध में कूद पड़ते थे। इस आर्डीटी ऐसोसिएशन ने कई बार मुसोलिनी को अपना सरदार बनाया। यह दल महायुद्ध के समय में ही बन गया था। मुसोलिनी अब भी आर्डीटी ऐसोसिएशन का सभापति है।

इस आरम्भिक सभा में भाग लेने वालों के हृदय में सच्ची लगन थी। वह कुछ भी मूल्य देकर विजय की रक्षा, मृतकों की पवित्र स्मृति की स्थापना और घायलों तथा सैनिकों का सम्मान करना चाहते थे। इस सभा ने तीन प्रस्ताव पास किये।

प्रथम प्रस्ताव से युद्ध में भाग लेने तथा हानि उठाने वालों को बधाई दी गई।

द्वितीय प्रस्ताव द्वारा इटली को हानि पहुंचाने वाले किसी भी साम्राज्यवादी देश का विरोध करने का निश्चय करके इटली की स्वाभाविक सीमा ऐल्प्स् पर्वत तथा ऐड्रियाटिक समुद्र को बतला

कर फ्यूम (Fiume) और डलमाशिया को अपने अधिकार में करने का अधिकार सुरक्षित रखा गया।

तृतीय प्रस्ताव नवीन फासिस्ट दल के संगठन के सम्बन्ध में था। प्रत्येक बड़े नगर में 'पौपोलो डीटैलिया' के सम्वाददाता को दल के संगठन करने का अधिकार दिया गया। आरम्भिक व्यय मुसोलिनी ने 'पोपोलो डीटैलिया' के सीमित कोष से देने का वचन दिया। समस्त कार्य की देख रेख के लिये एक केन्द्रीय समिति बनादी गई।

उस समय इस मीटिंग को कोई महत्व नहीं दिया गया। यह किसी को भी विश्वास न था कि किसी समय यही मीटिंग इटली में 'नवराष्ट्रनिर्माण' के कार्य को पूर्ण करने का कारण बनेगी।

देश की दशा उस समय बड़ी खराब थी। राजनीतिक दंगे, झगड़े और हड़ताल इटली के प्रत्येक नगर की विशेषता बन गई थीं।

पेरिस की सन्धिवार्ता

इस समय आरलैंडो (Orlando) कौंसिल का सभापति था। वह इटली की ओर से वरसाई में शांति का वार्तालाप करके राष्ट्रसंघ की रूप रेखा में योग दे चुका था। किन्तु देश की आंतरिक स्थिति अच्छी न होने तथा फ्रेंच भाषा न जानने के कारण वहां वह इटली के स्वार्थों की रक्षा न कर सका। अन्त में वह वहां से निराश होकर चला आया और देश की आंतरिक दशा को सुधारने का यत्न करने लगा। यद्यपि आरलैण्डो के साथ बैरन एस.

वार्साई की सन्धि के विधाता

आरलैण्डो, लायड जार्ज, क्लेमेंशो, राष्ट्रपति विल्सन.

सोनिनो (Baron S. Sonnino) भी था, किन्तु विल्सन की नीति इटली के विषय में निश्चित न होने से वरसाई में कुछ भी न हो सका। अन्त में २३ अप्रैल को इटली का प्रतिनिधि-मण्डल पेरिस से वापिस आ गया। ५ मई को यह लोग द्विविधा में पड़े हुए फिर वापिस चले गए। जून में चैम्बर आफ डेपूटीज़ के एक प्रस्ताव से आरलैण्डो के मंत्रीमण्डल का पतन हुआ। इसी बीच में जून में फ्रांसीसी मल्लाहों और इटली के सैनिकों में भारी झगड़ा हो गया।

आरलैंड के पश्चात् नीती (Nitti) का मन्त्रीमण्डल बना। किन्तु यह आरलैण्डो के मन्त्रीमण्डल से भी बुरा था। नीती समाजवादियों को प्रसन्न रखना चाहता था। उसने सार्वजनिक क्षमा प्रदान करके उनको संतुष्ट कर दिया। वह भावी इटालियन प्रजातन्त्र का सभापति बनने का स्वप्न देखा करता था। उस ने रोटी के मूल्य को निश्चित करने की आज्ञा राजा के हस्ताक्षरों से निकलवाई। इसके पश्चात् दूसरे ही दिन उसने उस आज्ञा को वापिस लेकर राजा के हस्ताक्षरों से ही दूसरी आज्ञा निकाली। इस समय चैम्बर में समाजवादियों का बोल बाला था। अतः वह नीती को जिस प्रकार चाहते नचाते थे।

वरसाई की सन्धि

२८ जून १९१९ को वरसाई के दर्पणों के हाल में सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हो गए। इटली की ओर से उस पर निम्न लिखित तीन व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किये थे—

बैरन एस. सोनिनो, डेपुटी,

मार्किस जी. इम्पीरिएली, इटली के राजा के लन्दन राजदूत।
और मिस्टर एस. क्रेप्सी।

यद्यपि इस सन्धि के द्वारा इंगलैंड, फ्रांस और जापान आदि अनेक राष्ट्रों की मनोकामनाएं पूरी हो गई थीं, किन्तु इससे इटली की आशाओं पर एक दम पानी फिर गया। इस सन्धिपत्र को देखते ही इटली के राष्ट्रवादियों की आंखें एक दम चढ़ गईं। युद्ध में जीता हुआ इटली इस सन्धि के द्वारा राजनीतिक बाजी हार गया। सन् १६१५के लन्दन पैक्ट द्वारा किये हुए वायदे एक दम कोने में पड़े रह गये। डलमाशिया और फ़्यूम कुछ भी न मिले। डलमाशिया में केवल उसकी राजधानी ज़ारा (Zara) को देकर ही टाल दिया गया। उपनिवेशों के सम्बन्ध में तो इटली की बात भी न पूछी गई। यद्यपि नीती (Nitti) ने इटली की जनता को इस सन्धि के लाभ बताने का बहुत प्रयत्न किया, किन्तु उसकी किसी ने न सुनी। सारे देश में असन्तोष छा गया।

४ नवम्बर १९१८ को इटली और आस्ट्रिया में जो अस्थायी सन्धि हुई थी, उसके अनुसार आस्ट्रिया ने अपनी सेना केवल इटली से ही नहीं, वरन् उन सब प्रदेशों से भी हटा लिया था, जो लन्दन सन्धि के अनुसार इटली को मिलने वाले थे। इस प्रकार इटली का बोज़ेन (Bozen) और ट्रेंट (Trent) सहित दक्षिणी टाइरोल (Tyrol), गोरीज़िआ (Gorizia), ट्रिएस्टे,

नागराई की मस्जिद

इस्ट्रिया, जारा और लूसिन सहित ऐड्रियाटिक समुद्र के अन्य द्वीपों पर उसी समय अधिकार हो गया था। किन्तु वरसाई की सन्धि परिषद् में इटली ने फ्यूम पर भी अपना दावा प्रगट किया। फ्यूम के प्रश्न पर बड़ा भारी झगड़ा मचा और कांग्रेस के भंग होने की नौबत आगई, क्योंकि फ्यूम के ऊपर इटली से भी अधिक नवीन यूगोस्लैविया राज्य की दृष्टि थी। यूगोस्लैविया के अतिरिक्त एक और बड़ी बाधा थी। अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन अपनी स्वर्णनिर्मित १४ शर्तों का राग अलाप रहे थे। सन् १९१५ की लन्दन सन्धि के तो वह एक दम विरोधी थे।

फ्यूम के प्रश्न ने वरसाई की सन्धि वार्ता को और भी जटिल बना दिया। भौगोलिक रूप से यूगोस्लैविया के लिये फ्यूम के अतिरिक्त और कोई अच्छा बन्दर नहीं था; किन्तु फ्यूम की आधे से अधिक जनसंख्या इटालियन है। इटली ने लन्दन पैक्ट के अनुसार फ्यूम को लेने पर इस कारण जोर नहीं दिया कि उसको आशा थी कि फ्यूम को आत्म-निर्णय का अधिकार तो दिया ही जावेगा। उस समय जनमत इटली के पक्ष में होगा। किन्तु यूगोस्लैविया ने इस विषय पर अपनी पूरी शक्ति लगा दी। इटली और यूगोस्लैविया में पूर्वी ऐड्रियाटिक के प्रश्न को लेकर सन्धि परिषद् में खूब झगड़ा रहा। यह झगड़ा सन्धि परिषद् के बहुत बाद तक भी चलता रहा।

फ्यूम के कठिन प्रश्न को मुसोलिनी सन् १९२४ तक न सुलझा सका। सन् १९२४ में रोम की सन्धि द्वारा कुछ इलाके

सहित फ्यूम इटली को दे दिया गया। किन्तु इसके आस पास के प्रदेश को इटली और यूगोस्लैविया ने आपस में बांट लिया। इससे पूर्व रैपेलो (Rapallo) की सन्धि द्वारा १२ नवम्बर सन् १६२० में ज़ारा (Zara) और उसके पास के नगर तथा चेर्सो, लूसिन, लैगोस्टा और पेलैगोनी के द्वीप इटली को, तथा लाइसा (Lissa) और शेष द्वीपों सहित डलमाशिया यूगोस्लैविया को दिये जा चुके थे।

रैपैलो सन्धि के ऊपर २ फरवरी सन् १९२१ को आचरण किया गया। इसके अनुसार इटली को ३३०० वर्ग मील भूमि और उसके लगभग ९ लाख १० हज़ार निवासी मिल गए।

सेंट जर्मेन की सन्धि

मित्रराष्ट्रों की जर्मनी के साथ सन्धि को वरसाई की सन्धि और आस्ट्रिया के साथ की हुई सन्धि को सेंट जर्मेन की सन्धि कहा जाता है। इस सन्धि के द्वारा इटली को ब्रेनर घाटी के दक्षिण का कुल टाइरोल प्रदेश साढ़े छैः लाख जनसंख्या सहित मिल गया। इस प्रकार उसको यूरोप में कुल ७३०० वर्ग मील भूमि और १६ लाख निवासी मिल गए।

वरसाई की सन्धि के अनुसार पचास सहस्र जनसंख्या तथा आठ वर्ग मील क्षेत्रफल के फ़्यूम नगर को राष्ट्रसंघ के आधीन एक स्वतन्त्र राज्य बना दिया गया।

दनुनसियो की फ़्यूम पर चढ़ाई

राष्ट्रीय कवि दनुनसियो (D' Annunzio) तो इस समाचार से एक दम जल भुन गया। उसने सरस्वती की पूजा को त्याग कर

पुनः दुर्गा का आह्वान किया। उसने अपने को विद्रोही घोषित किया। उसने सरकार को ललकारा कि यदि उसमें शक्ति हो तो उसे रोक ले। उसने इटालियन जाति तथा देश के मान और गौरव के नाम पर फिर सैनिकों और युवकों का आह्वान किया। उसने घोषित किया कि वह डलमारिया और फ्यूम पर चाहे जैसे भी हो इटली के राष्ट्रीय झण्डे को अवश्य फहरावेगा।

इस सैनिक कवि के आह्वान पर उत्साही युवक और सैनिक एक दम दौड़ पड़े। काली कमीज़ और हथियार धारण करके स्वयं सेवकों का दल दनुनसिओ के नेतृत्व में फ्यूम पर चढ़ दौड़ा। मित्रराष्ट्र अवाक् रह गए। इटली भी भौचक्का हो गया। दनुनसिओ ने ११ सितम्बर १९१६ को मुसोलिनी को एक पत्र द्वारा सूचित किया कि वह अगले दिन १२ सितम्बर को फ़्यूम पर आक्रमण करने वाला है। मुसोलिनी इस पत्र को पाकर प्रसन्नता से उछल पड़ा। उसने अपने पत्र पोपोलो डीटैलिया द्वारा देश से दनुनसिओ की सहायता करने की अपील की; क्योंकि इस समय फासिस्ट दल अपनी बाल्यावस्था में था और उसमें वस्तुतः कुछ कर सकने योग्य शक्ति नहीं थी।

इस समय देश में फिर १९१५ जैसा दृश्य उपस्थित था। दनुनसिओ को धन और जन की पर्याप्त सहायता पहुंची। संसार भर के प्रवासी इटालियनों तक ने उसकी सहायता को बहुत सा धन भेजा। फ्यूम के इटालियन नागरिक भी अपनी शक्ति भर सहा-

यता करते थे। नगर के द्वार पर बड़ा भयानक युद्ध हुआ। इसमें कवि ने अद्भुत वीरता दिखलाई।

इस समय प्रधान मन्त्री नीती ने इस कार्य का महान् विरोध किया। उसने साम्यवादियों तथा युद्धविरोधियों से दनुनसिओ के विरुद्ध सड़कों में प्रदर्शन करने को कहा। उसने यूगोस्लैविया के मन्त्री की सम्मति के अनुसार पर्याप्त दमन किया, किन्तु कुछ वीर नवयुवकों के सामने उसकी एक न चली। उसने फ्यूम के आक्रमण का विरोध प्रत्येक संभव उपाय से किया। सैनिकों को भगोड़ा घोषित किया गया। नगर पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस समय पार्लमेंट विसर्जित कर दी गई और नये निर्वाचन के लिए १६ नवम्बर १६१६ का दिन नियत किया गया।

सन् १६१६ का निर्वाचन

इस समय सब दल अपना २ प्रचार करने लगे। मुसोलिनी ने एक निर्वाचन कमैटी बना कर संगठित रूप से काम करना आरम्भ किया। इस समय फासिस्ट पार्टी के सिद्धान्तों का निर्वाचकों में व्यापक प्रचार करके उन्हें फासिस्ट पार्टी को वोट देने के लिए कहा गया। किन्तु यह सब होने पर भी ता०१६ के निर्वाचन में फासिस्ट पार्टी को नाम मात्र की सफलता भी न मिली। स्वयं मुसोलिनी तक को पर्याप्त वोट न मिले। निर्वाचन में उनके केवल तीस सदस्य सफल हो सके। समाजवादी पत्रों ने इस घटना को मुसोलिनी की राजनीतिक मृत्यु कहा।

इतना ही नहीं उन्होंने मुसोलिनी के शव का नियमित जुलूस निकाल दिया। उस जुलूस में जलते हुये लैंप भी थे।

इस निर्वाचन में समाजवादियों को १५३, पापुलर या कैथोलिक पार्टी को १०१ तथा फासिस्टों अथवा युद्धवादियों को कुल तीस स्थान मिले। समाजवादियों का कार्यक्रम रूस की तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय के समान क्रान्तिकारी था। वह पूरी तौर से मार्क्स के कार्यक्रम पर चलते थे। उनका उद्देश्य पूंजीवाद को पूर्णतया नष्ट करना और रूस के जैसे प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना करना था। कैथोलिक लोग यद्यपि सामान्य रूप से समाजवादियों के विरोधी थे, किन्तु उनका सिद्धान्त तथा कार्यक्रम भी समाजवादियों से ही मिलता जुलता था। यह सभी उग्रवादी थे। पार्लमेंट के शेष सदस्यों में इतने अधिक दल थे कि वह मिल कर कोई संगठित आन्दोलन न कर सकते थे। यह निश्चय था कि इस प्रकार की निर्बल पार्लमेंट का मन्त्रीमण्डल भी निर्बल ही होता।

मुसोलिनी की गिरफ़्तारी

समाजवादियों ने अब प्रत्येक विभाग पर स्वयं कब्ज़ा करने की तैयारी की। उन्होंने मिलन की एक तीस सहस्र व्यक्तियों की सभा में म्यूनीसिपल भवन पर लाल झण्डा लगाने की मांग उपस्थित की। उस समय सबकी एक सी ही दशा थी। केवल कुछ मुट्ठी भर फासिस्ट, आर्डीटी और फ़्यूम वाले निष्फल विरोध कर रहे थे। उसी समय एक बम फेंका गया, जिससे कुछ मरे और कुछ घायल हुए। इसका दोष मुसोलिनी पर लगाया गया और एक

डेपूडेशन के द्वारा उसको गिरफ़्तार करने की मांग मिलन के गवर्नर से की गई। मुसोलिनी को एक दिन हवालात में रख कर छोड़ दिया गया।

निर्वाचन की इस दुर्घटना से फासिस्टों का केन्द्रीय दल भी टूट गया था। उनमें से अनेक गिरफ़्तार हुए और अनेक भय के मारे गुप्त रूप से रहने लगे। धीरे २ परिस्थिति संभल गई। मुसोलिनी अपने पत्र पोपोलो डीटैलिया को चलाने लगा।

समाजवादियों की इस विजय से उदारदल वाले और राष्ट्रवादी (Democrats) लोग बिल्कुल नष्ट हो गए। मुसोलिनी के पत्र के ग्राहक बहुत कम हो गये। उस पर प्रतिदिन सेंसर बिठलाया जाता था। किन्तु इन आपत्तियों को सह कर भी मुसोलिनी उसको निकालता ही रहा। इधर दनुनसिओ (D' Annunzio)अभी तक फ़्यूम में ही डटा हुआ था। समाजवादियों का व्यवहार मुसोलिनी के साथ इतना बुरा था कि एक दिन ता डाकखाने के एक समाजवादी क्लर्क ने उसको न जानने का बहाना बना कर मनीआर्डर देने के लिये बहुत हैरान किया।

समाजवादी लोग निर्वाचन के परिणाम से फूले न समाते थे। अतएव जब इटली के राजा इस इकीसवीं पार्लमेंट के उद्घाटन का भाषण देने के लिये आये तो उन्होंने ज़बर्दस्त प्रदर्शन किया। राजा के भाषण में भी कोई विशेष बात न थी। फ्यूम का तो उसमें उल्लेख तक न था।

उस पार्लमेंट के प्रथम तीन माह में ही नीती के मंत्रीमण्डल का तीन बार पतन हुआ। वह मरता था और फिर जी उठता था।

मुसोलिनी द्वारा फ़ासिज़्म का प्रचार

दनुनसिओ अब भी आर्थिक प्रतिबन्ध का मुकाबला कर रहा था। इस समय मुसोलिनी ने बचे खुचे फासिस्टों को सगठित किया। बड़ी कठिनता से फ्लोरेंस में एक सभा की गई, किन्तु इस सभा में भी बड़ी २ बाधाएं पहुंचाइ गईं। इस सभा के होने के पूर्व मुसोलिनी हवाई जहाज़ में बैठ कर फ्यूम गया हुआ था। यहां उसकी दनुनसिओ से खूब जी भर कर बातें हुईं। फ्यूम से वह गाड़ी में बैठ कर सीधा फ्लोरेंस आया। यहां उसको उस सभा का सभापति पद ग्रहण करना था। यह सभा बड़ी सफल हुई। इसके अंत में सब लोग फासिस्ट भाव धारण करके घर गये।

यहां से मुसोलिनी मोटर में बैठकर रोमोइना (Romogna) के लिये चला। इस समय उसके मोटर को महायुद्ध का प्रसिद्ध उड़ाका गुइडो पैंकैनी (Guido Pancani) चला रहा था। उसी मोटर में पैंकैनी का बहनोई गेंस्टन गैलवनी (Ganstone-Galvani) और बोलोइना के रेल्वे कारखाने के लीएड्रो आरपीनैटी (Leandro Arpinati) भी थे। मुसोलिनी मार्ग में फ़एंज़ा (Faenza) नामक स्थान पर रुक कर कुछ अपने मित्रों से मिला। इसके पश्चात् जब वह आगे चले तो मोटर पूरी रफ्तार से छोड़ दी गई। इस समय मोटर एक रेल्वे दर्वाज़े से बड़े

ज़ोर से टकरा गई। इस दुर्घटना से उसके सभी यात्री खिलौने के समान उछल २ कर दूर जा गिरे। इनमें मुसोलिनी को चोट नहीं लगी। आरपीनैटी को भी कम चोट लगी थी। किन्तु शेष दो के बड़ी भारी चोट आई। बड़ी कठिनता से सहायता मिल सकी। घायलों को मोटर में डालकर उसे बैल गाड़ी में बांध कर फ़ाएंज़ा के अस्पताल मे लाया गया। रोगियों को यथा शक्ति सहायता देकर मुसोलिनी बोलाइआ (Bologna) चला गया।

निर्वाचन के पश्चात् राजनीतिक दलों ने मुसोलिनी से समझौता करना चाहा; किन्तु उसने साफ इन्कार कर दिया। इस घटना से उसके समीपवर्ती भी उससे कुछ अप्रसन्न हो गए। यहां तक कि उसके दो उपसंपादकों तक ने उससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। इस समय मुसोलिनी के व्यक्तिगत छिद्र खोजे जाने लगे। सैनिकों और पुलिस को रिश्वत दे दे कर उसके पीछे लगाया गया। कुछ गुप्तचर भी छोड़े गए। किन्तु इन सबका कुछ परिणाम न हुआ। मुसोलिनी का चरित्र अत्यन्त निर्मल तथा शुद्ध था। उसमें दोष न मिल सका।

सन् १९२० के आरम्भ में इटली की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति बहुत पेंचीली थी। एक ओर तो पेरिस में अब भी राजनीतिक दांव-पेंच चल रहे थे। उधर डलमाशिया के घाव से अब भी रक्त बह रहा था और उस पर भी दनुनसिओ फ्यूम में था। यद्यपि समाजवादियों को विजय मिल गई थी, किन्तु वह प्रतिदिन अपनी

अयोग्यता का प्रमाण देते जाते थे। मन्त्रीमण्डल बड़ी बुरी तरह से अपने अस्तित्व को बनाए हुए था।

हड़तालों का तांता

जनवरी में एक रेलवे हड़ताल की सम्भावना दिखलाई देने लगी। इसके पश्चात् एक सप्ताह तक डाकखाने और टेलीफ़ोन के कर्मचारियों ने हड़ताल की। इससे केवल नागरिकों के कार्यों में ही बाधा न पड़ी, वरन् राज्य का पत्रव्यवहार भी रुक गया। समाजवादी पत्र अवन्ती (जिसका मुसोलिनी भी कभी सम्पादक था) ने डाकख़ाने, तार और टेलीफ़ोन को आधुनिक भोग-विलास बतलाया। वास्तव में हड़तालों का उद्देश्य धीरे २ इटली में सोवियट शासन की स्थापना करना था। मुसोलिनी ने अपने १५ जनवरी १९२० के लेख में इसका तीव्र विरोध किया। उसने लिखा कि पेरिस में शान्ति के वार्तालाप के समय हड़ताल कदापि नहीं की जानी चाहिये थी। कम-से-कम नीती के पेरिस से वापिस आने के लिए दो सप्ताह तो ठहरना था।

यद्यपि २१ तारीख को डाकख़ानों और तारघरों की हड़ताल खुल गई, किन्तु कर्मचारियों ने तारीख १६ से हड़ताल कर दी। यह हड़ताल बिल्कुल व्यर्थ थी।

इस समय विरोध बहुत अधिक बढ़ गया था। जनता के अनेक व्यक्तियों ने हड़ताल का विरोध किया। कुछ समाजवादी भी इससे भयभीत थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि उनका हड़ताली नेताओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। मुसोलिनी ने ता० २१ जनवरी

के पोपोलो डीटैलिया में कुछ समाजवादियों के इस कार्य को असामयिक बतलाया।

नीती का मन्त्रीमण्डल

रेलवे की हड़ताल २६ जनवरी तक रही। इस बीच में समझौते की बराबर बातचीत होती रही। इस समय यह निश्चय किया गया कि फ़्यूम के पीड़ित निवासियों को मिलन लाया जावे। आर्थिक प्रतिबन्ध के कारण वह बड़ा भारी कष्ट पा रहे थे। फ़ासिस्ट लोगों की इस अपील पर सारे देश में प्रसन्नता प्रगट की गई। इन लोगों का प्रत्येक स्टेशन पर स्वागत किया गया।

इसी समय पेरिस में अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन फ़्यूम और ज़ारा को स्वतंत्र नगर बनाकर उसको राष्ट्रसंघ की आधीनता में लाने का उद्योग कर रहे थे, किन्तु नीती ने इस अवसर पर तारीख ७ फर्वरी को चैम्बर के अपने भाषण में स्लैव लोगों के साथ इस प्रश्न पर समवेदना प्रगट की।

मुसोलिनी ने अगले दिन अपने पत्र में इस भाषण की बड़ी कड़ी अलोचना की। उसमें पेरिस के वार्तालाप का संक्षिप्त इतिहास देकर अन्त में यह लिखा गया था—

"तथ्य यह है कि नीती फिर वापिस जाने की तयारी कर रहा है। पेरिस वह अपना कमीज़ देने जाया करता है। हमारा कैजोइया (दनुनसिओ उसका घृणा पूर्वक यही नाम लिया करता था) अड़ियल यूगोस्लैविया वालों के सामने रोने, झींकने और त्याग करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता। उसके

भाषण का सारा ढंग कमीना और अत्यन्त नीच है। नीती जैसा नीच मंत्री पराजित जर्मनी अथवा आस्ट्रिया में भी कभी नहीं हुआ। यदि वहां कोई ऐसा होता तो एक कदम भी न चल पाता। वह भगोड़ों और स्वयं ही चोट खाने वालों का एक ऐसा मन्त्री है, जिसको किसी भी मूल्य पर केवल शान्ति चाहिये।

..........क्या यूगोस्लैविया की मित्रता का यही मूल्य दिया जावेगा? ....आदि आदि"

उस समय सरकार की घरेलू और विदेशी नीति के सम्बन्ध में खूब टीका टिप्पणी हो रही थी। मुसोलिनी तो उस पर अत्यन्त कठोर टिप्पणी किया करता था। उदार पत्र भी मंत्री-मण्डल की इस नीति के विरोधी थे। केवल 'अवन्ती' उसका पक्षपाती था।

हड़तालियों की पुलिस, सैनिकों और नागरिकों के साथ आए दिन मुठभेड़ होती रहती थी। कभी २ तो पार्लमेंट में भी घूंसे चल जाते थे।

कुछ माह में ही तीन मंत्रीमण्डल बदले। किन्तु नीती बराबर प्रधानमन्त्री बना रहा। राष्ट्र का सामाजिक जीवन प्रतिदिन बिगड़ता जाता था। उसको ठीक करने वाला कोई न था।

फ़ासिस्टवाद का आदर्शवाद (Idealism) से सदा युद्ध होता रहता था। नीती का तो सारा क्रोध मुसोलिनी पर ही उतरता था। उसके दल वाले सदा ही मुसोलिनी पर उबलते रहते थे। एक दिन तो मिलन के एक होटल में लगभग एकसौ

समाजवादियों ने मुसोलिनी को पहचान कर घेर लिया। वह उसको पीटना चाहते थे। भीड़ बराबर बढ़ती गई। किन्तु मुसोलिनी को दृढ़ देख कर किसी को भी उस पर हाथ छोड़ने का साहस न हुआ। मुसोलिनी तो सस्ता ही छूट जाता था, किन्तु अन्य फ़ासिस्टों को बुरी तरह पीटा जाता, उन पर चाकुओं से आक्रमण किया जाता और अनेकों को तो बड़े २ कष्ट देकर स्वर्गलोक का मार्ग भी बतला दिया जाता था।

इसी समय गत युद्ध के सेनापति जनरल डिआज़ (General Diaz) और नीती में झगड़ा आरम्भ हो गया। लन्दन सन्धि की शर्तों के पूरा न होने से देश भर में आन्दोलन छा गया। रोम में यह सम्भावना दिखलाई देने लगी कि ऐड्रियाटिक समुद्र के सब किनारे यूगोस्लैविया को दे दिये जावेंगे। विद्यार्थी, प्रोफ़ेसर, श्रमिक, नागरिक और प्रतिनिधि लोग मंत्रीमंडल से इसका विरोध करने का अनुरोध कर रहे थे। डलमाशिया को लेने के लिये इटली के सभी वर्गों की ओर से अपील निकाली गई। इटली के महायुद्ध में भाग लेने के वर्ष-दिन के अवसर पर २२ मई १९२० को इन लोगों ने बड़ा भारी प्रदर्शन किया।

किन्तु इसी समय एक दुर्घटना हो गई। नीती की आज्ञा से पुलिस ने इन प्रदर्शकारियों पर गोली चला दी, जिससे कई एक मरे और लगभग पचास घायल हुए। रोम में यह अभी तक की सबसे बड़ी दुर्घटना थी। इतने से भी संतुष्ट न होकर

नीती ने २४ मई को रोम में रहने वाले सभी डलमाशिया तथा फ्थूम वालों को उनकी स्त्रियों सहित गिरफ्तार करवा लिया। इस से जनता पर इतना आतंक छा गया कि बहुत कम को इसका विरोध करने का साहस हुआ। चैम्बर में भी इसका विरोध करने का कुछ परिणाम न हुआ। मुसोलिनी ने इस दुर्घटना की अपने पत्र में बड़े तीव्र शब्दों में निन्दा की। उसने इस विषय पर सार्वजनिक घृणा प्रदर्शित करने का अनुरोध किया।

मुसोलिनी के लेख का सिनेट पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इसपर जेनेरल डिआज़ (General Diaz) ने सिनेट में इस विषय पर घृणा प्रदर्शित करने का प्रस्ताव उपस्थित किया। इस प्रस्ताव पर ६४ सीनेटरों के हस्ताक्षर थे, जिनमें सिनेट के चार उपसभापति भी थे।

प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया और नीती के मंत्रीमण्डल का तीसरी बार पतन हुआ।

ज्योलिटी का मंत्रीमंडल

नीती के पश्चात् मई १९२० में ज्योलिटी फिर प्रधान-मंत्री बनाया गया। वह इटली के महायुद्ध में भाग लेने का विरोधी था। उसके विषय में यह समझा जाता था कि मन्त्रीपद को उसने पेशा ही बना लिया है। उसके प्रधानमंत्री बनाये जाने को सरकार का दिवालियापन समझा गया।

ज्योलिटी के समय देश की आंतरिक अवस्था और भी खराब हो गई। इस समय रोम के रेलवे कर्मचारियों ने हड़ताल करदी।

उनका साथ बिजली के कर्मचारियों ने भी दिया। उन्हों ने बिजली भी देना बन्द करके नगर को पूर्णतया अंधकारमय बना दिया।

इन लोगों की सहानुभूति स्वरूप अन्य कई नगरों में भी हड़तालें हो गईं। यद्यपि इस समय इटली की जनता महान् कष्ट में थी, तौ भी विरोध करने का साहस किसी में न था। केवल मुसोलिनी नकारखाने में तूती आवाज के समान विरोध करता रहता था। विरोध करने वालों को सरकार की ओर से दण्ड दिया जाता था।

ज्योलिटी के मंत्रीमण्डल को आर्थिक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। वह युद्धकालीन लाभ को जब्त करके समाजवादियों को प्रसन्न कर रहा था।

रैपैलो की संधि

वरसाई की सन्धि से इटली और यूगोस्लैविया दोनों ही असन्तुष्ट थे। अतः उस सन्धि के हो जाने पर उन दोनों ने वार्तालाप करना आरम्भ किया। यह वार्तालाप बहुत समय तक चलता रहा। इसमें भी कई बार खींचातानी, कई बार शांति और कई बार समझौते की बातें हुईं। अन्त में १२ नवम्बर सन् १९२० को रैपैलो नामक स्थान में सन्धिपत्र पर यूगोस्लेविया और इटली के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये। इटली की ओर से इस पर प्रधानमंत्री ज्योलिटी और परराष्ट्रमन्त्री काउंट स्फोर्जा (Sforza) ने हस्ताक्षर किये थे। इस सन्धि के अनुसार जारा (Zara) और उनके आसपास के नगर तथा चेर्सो,

लूसिन, लैगोस्टा और पैनेगोनी के द्वीप इटली को दिये गए। लाइसा (Lissa) तथा शेष द्वीपों सहित डलमाशिया यूगोस्लैविया को दिया गया। इस सन्धि के अनुसार इटली को ३३०० वर्ग मील भूमि और लगभग ९ लाख १० हजार निवासी मिल गए। इस सन्धि पर २ फर्वरी सन् १९२० को आचरण किया गया।

अल्बेनिया का प्रश्न

इसी समय अल्बेनिया के प्रश्न का भी इटली के विपक्ष में निर्णय हुआ। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही इटली अल्बेनिया में अपना प्रभाव जमाने का यत्न कर रहा था, क्योंकि यह देश भी एड्रियाटिक समुद्र के किनारे पर है। सन् १९०८ में इटलीवालों ने उसके वेलोना (Valona) नामक नगर में बड़ा भारी अस्पताल खोला। सन् १९१३ में वहां एक स्वतंत्र अस्थायी सरकार बन भी गई, किन्तु यह सरकार महायुद्ध की प्रथम चोट मे ही सन् १९१४ में नष्ट हो गई। सन्१९१४ से यहां इटली की सेना भी रहने लगी। इटली वालों ने वहां अच्छा नगर बसा कर बड़ी २ सड़कें बनाईं। इस नगर मे अस्पताल भी बनाए गए। सन् १९१६ में सर्विया की सेनाओं ने युद्ध से भाग कर यहीं आराम पाया था। महायुद्ध आरम्भ होने पर अल्बेनिया पर कई पड़ोसी राज्यों की गृद्ध-दृष्टि पड़ी। आस्ट्रिया की सेनाओं ने इसके एक बड़े भाग को रौंद डाला। सर्विया, इटली और यूनान इस में अपनी सेनाएं भेज कर किसी प्रकार इसकी रक्षा करते रहे। इटली के तो यहां सहस्रों सैनिक काम आये और बहुत सा धन व्यय हुआ। अतएव इटली

यह आशा लगाए हुए था कि सन्धि के समय या तो अल्बेनिया उसको मिल जावेगा, अथवा उस पर उसका प्रभाव तो अवश्य ही बना रहने दिया जावेगा। जून १९१७ में इटली ने अपने संरक्षण में अल्बेनिया की स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। अगले वर्ष आस्ट्रिया के पराजित होने से इस देश के बहुत बड़े भाग पर इटली का अधिकार हो गया। शेष भाग पर सर्विया तथा अन्य राज्यों का कब्जा रहा।

किन्तु इस बीच में अल्बेनियन लोग भी स्वतन्त्रता के लिये बराबर प्रयत्न कर रहे थे। इटली से एक राष्ट्रीय अस्थायी सरकार बनाने की अनुमति पाकर वह फिर पूर्ण स्वतन्त्र होने का यत्न कर रहे थे। सन् १९१९ में पेरिस की सन्धिपरिषद् में अल्बेनिया का प्रश्न भी उसके प्रतिनिधि द्वारा उपस्थित किया गया। राष्ट्रपति विल्सन इस देश को विभक्त नहीं करना चाहते थे। इधर इटली को इस देश के ऊपर राष्ट्रसंघ द्वारा नियन्त्रण(Mandate) मिल जाने की आशा थी। किन्तु कुछ इटालियन अफ़सरों ने वहां के मूलनिवासियों के साथ कठोरता का व्यवहार किया। इस समय एक समझौता हुआ, जिसके द्वारा अल्बेनिया का कुछ भाग यूनान और यूगोस्लैविया को दिया जाने को था। इस पर इटली में बहुत असन्तोष छा गया।

इस बार अल्बेनिया वालों ने इटली के विरुद्ध विद्रोह किया। इस समय एक तो यहां इटली की सेना कम कर ही दी गई थी, फिर मलेरिया के कारण तो वह और भी निर्बल हो गई थी; अन्त

में इटली की सेनाओं को भगा कर वेलोना नगर में बन्द कर दिया गया। जून १९२० में इस नगर पर भी आक्रमण किया गया, किन्तु इटली की सेनाओं ने इस आक्रमण का बड़ा सफलतापूर्वक मुकाबला किया। इसी समय इटली के समाजवादियों ने युद्ध बंद करने का आन्दोलन किया।

ज्योलिटी इसी समय प्राधानमन्त्री बना था। उसने युद्ध को बन्द करने का निश्चय किया। परिणामस्वरूप अल्बेनिया और इटली में सन् १९२० में तीराना (Tirana) की सन्धि हुई, जिसके अनुसार इटली ने अल्बेनिया की पूर्ण स्वतन्त्रता को स्वीकार करके वहां से अपनी सेनाओं को वापिस बुला लिया। सेनाओं ने सितम्बर १९२० में हटना आरंभ किया। इस समय वेलोना भी खाली कर दिया गया। इटली ने अपने पास केवल सैसेनो (Saseno) बन्दर को रहने दिया। इस प्रकार ज्योलिटी मन्त्री-मण्डल में यह मामला भी इटली के विपक्ष में ही हुआ।

इटली और टर्की

इसके अतिरिक्त एक और क्षेत्र में भी इटली को निराशा का सामना करना पड़ा। वह अपना पैर डोडेकैनीज़ द्वीप के सामने एशिया माइनर में भी जमाना चाहता था। मित्रराष्ट्रों से महायुद्ध में उसका यह तय था कि दक्षिण पश्चिमी ऐनातोलिया उसके भाग में आवेगा, किन्तु सन्धि के समय इस विषय में उसकी कुछ भी न सुनी गई। बाद में ज्योलिटी ने सन् १९२० में सेवर्स (Sevres) की निर्बल सन्धि पर हस्ताक्षर करके इस

विषय में सभी करे कराये पर पानी फेर दिया, इसी समय टर्की में मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने राष्ट्रीय तुर्क आन्दोलन को बड़े जोर शोर से उठा कर यूनान को पराजित किया। इसके पश्चात् सन् १९२३ में टर्की की यूरोपीय राष्ट्रों से फिर सन्धि हुई, जिसमें उसकी निर्बाध स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया गया।

फ़ासिस्टों का फिर संगठित होना

देश की आन्तरिक तथा परराष्ट्रीय नीति में मन्त्रीमण्डल की पूर्वोक्त प्रकार की निर्बलता का अनुभव करके मुसोलिनी ने अपने मित्र फासिस्टों तथा पत्र पोपोलो डीटैलिया को नये सिरे से संगठित करना आरम्भ किया। रूस के जादू से उसको पूरा भय था। वह लेनिन के नाम के चमत्कार को देख चुका था। अतः उसको अपने दल की उसके प्रभाव से पूर्णतया रक्षा करनी थी। इसी समय मुसोलिनी के कुछ साथी रूस से लौट कर आये। उन्होंने रूस के अकाल का वर्णन करके बतलाया कि रूस के आन्दोलन की कल्पना निरी मृग-तृष्णा है। इस घटना से इटली वालों की आंखें खुलीं और फ़ासिस्ट आन्दोलन ज़ोर पकड़ने लगा।

उस समय इटली के हवाई जहाज़ों की दशा बहुत बुरी थी। एक जहाज़ी दुर्घटना का उदाहरण देकर ज्योलिटी ने इस विषय के वादविवाद तक को बन्द कर दिया था। इसी समय मुसोलिनी के मन में भी इस विद्या को जानने की इच्छा हुई। उसने बहुत शीघ्र हवाई जहाज़ का चलाना सीख लिया।

समाजवादियों का कारखानों पर अधिकार

रेलों की हड़तालों का ऊपर वर्णन किया जा चुका है। कुछ दिनों के पश्चात् हड़ताली स्वयं ही काम पर वापिस आ गए। अब उन्होंने लाल झंडे लेकर प्रदर्शन करने का यत्न किया। इस समय तक जनता इनसे काफो चिढ़ गई थी। उसने इन प्रदर्शनकारियों पर आक्रमण किया। इस आक्रमण में कुछ फ़ासिस्ट भी थे। इन्होंने मुख्य २ समाजवादी पत्रों के दफ़्तरों पर आक्रमण करके उनको तोड़-फोड़ डाला और कई समाजवादी नेताओं को पीट दिया।

सितम्बर १६२० में धातु के कारखानों के श्रमिकों ने अनेक कारख़ानों पर कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने कारख़ाने के मालिकों से उनके अधिकार को छुड़ाने का यत्न किया। धीरे २ यह आन्दोलन कपड़े की मिलों और औषधि के कारख़ानों में भी फैल गया। इस समय 'लाल रक्षकों' का संगठन किया गया और क्रान्तिकारी अदालतें बनाई गई। कारख़ाने में घुसने वाले बाहिरी व्यक्ति को इस समय गोली मार दी जाती थी। साम्यवादियों के इस सारे कार्य में अधिकारियों ने बिल्कुल बाधा न दी। मज़दूरों ने कारख़ानों पर तो कब्ज़ा कर लिया, किन्तु वह बिना मैनेजरों के न तो कच्चा माल पा सके और न कारख़ानों को ही चला सके। अब कारख़ाने केवल शैतानियत के अखाड़े मात्र ही रह गये। इस समय झगड़े बढ़ते जाते थे और परिस्थिति बराबर बिगड़ती जाती थी। कहीं २ तो मज़दूरों के नेताओं ने तिजोरियों को तोड़ २ कर

जो कुछ उनके अन्दर था सब निकाल लिया। इस समय अनेक दंगे हुए, जिनमें अनेक हत्यायें भी हुईं और 'लाल दल' वालों ने अपने नाम को ठीक २ चरितार्थ कर दिया। ज्योलिटी इस सब दृश्य को शान्त भाव से देखता रहा। परिस्थिति को अधिक बिगड़ते देख कर उसने कुछ करने के इरादे से ट्यूरिन में अपने पास कारखानेदारों और मजदूरों दोनों को ही बुलवाया। उसने एक इकरारनामा लिखवा कर उसको दबाव डाल कर कारख़ानेदारों से स्वीकार कराया। उस समय जाकर मजदूरों ने कारख़ानों में से कई सप्ताह के पश्चात् अपना बिस्तर उठाया। कारखानों के खाली होने पर काम फिर आरम्भ कर दिया गया, किन्तु इस अपमानरक तथा ख़र्चीले उपाय से कारख़ानों को लाभ कुछ न हुआ❀।

किसानों का ज़मींदारियों पर अधिकार

इसी बीच में इटली के विभिन्न भागों के किसानों ने भी क्रान्ति की। उन्होंने बड़ी २ ज़मींदारियों को छीन लिया। कुछ ज़मींदारों को तो जान से ही मार डाला गया और अनेक बरबाद कर दिए गए। इस आन्दोलन का गर्म दल अथवा कैथोलिक पार्टी ने समर्थन किया। किन्तु इस क्षेत्र में इतनी अधिक गड़बड़ी होने पर भी व्यापारिक सफ़लता के लिये उद्योग न किया जा सका। ❀

❀Europe since 1815 by Charles Downer Hazen Pages 1033, 1034

कारख़ानों का साम्यवादी संगठन

मज़दूरों ने उत्पत्ति के साधनों पर इस प्रकार अधिकार करके मालिकों, मैनेजरों और मुडों को प्रथक् कर दिया। इसके पश्चात् ट्रेडमार्कों और कारखानों के चिह्नों को हटाकर छतों और द्वारों पर लाल झण्डे के साथ २ सोवियट के चिह्न दरांती और हथौड़े लगाए गए। प्रत्येक कारख़ाने में समाजवादी-साम्यवादी उप-नियमों के अनुसार एक कमैटी बनाई गई। इस आन्दोलन का विरोध करने वालों को टेलीफ़ोन द्वारा ऐसा न करने की चेतावनी दे दी गई।

साम्यवादियों के अत्याचार

कारखानों पर कब्ज़ा करने के साथ २ निर्दयतापूर्ण कार्य भी किये गए। पिएडमांट की पुरानी राजधानी ट्यूरिन में 'रक्त न्याया-लयों' का बड़ा ज़ोर था। वहां मैरियो सोंज़िनी नामक एक देश-भक्त फ़ासिस्ट को पकड़ कर रक्त न्यायालय में पेश किया गया। उसको गोली से डरा कर खाई में फेंक दिया गया। फिर उसको न्यारिये की भट्टी में डाला गया, किन्तु भट्टी उस समय काफी उष्ण नहीं थी। अतएव फिर उसको प्राण निकलने तक पीटा गया। इस प्रकार के अत्याचारों से स्त्रियां तक नहीं बच पाती थीं। इस प्रकार के अत्याचार इटली के अनेक नगरों में किये गए।

विदेशों में इटली की साख उठती जा रही थी। आर्थिक पतन अधिकाधिक होता जाता था। छापेखानों से नोट पर नोट निकाले जा रहे थे। देश भर में इस आर्थिक नीति की समालोचना की

आ रही थी। मुसोलिनी भी उसकी तीव्र आलोचना कर रहा था।

इसके थोड़े समय बाद ४ नवम्बर १९२० को इटली का विजयदिवस था। इस अवसर पर सारे देश में हर्ष छा गया। रोम और मिलन में देशभक्तों ने बड़ा भारी प्रदर्शन किया। किन्तु यह सब अस्थायी था।

बोलोइञा में भयंकर संघर्ष

बोलोइञा (Bologna) समाजवादियों का प्रधान केन्द्र था। उन्होंने यहां अपनी सरकार कायम कर ली थी। २१ नवम्बर को वह इसके लिये व्यापक रूप में उत्सव मनाने को थे। नगर के टाउनहाल तथा अन्य मकानों पर लाल झण्डे लगा दिये गए। इस समय इटली के अन्य नगरों को भी इस उत्सव की सूचना देने के लिये अनेक कबूतरों को छोड़ देने की योजना की गई थी। किन्तु यहां आरपीनैटी (Arpinati) के नेतृत्व में थोड़े से फ़ासिस्ट भी थे। नगर पूर्णतया समाजवादियों के हाथ में था। वह यहां सोवियट विधान को चलाना चाहते थे। एक बड़ी भारी सभा बुलाई गई, जिसमें फासिस्ट भी आए।

फ़ासिस्टों ने इसका पूर्ण विरोध करने निश्चय कर लिया था। उन्होंने इश्तहार लगा २ कर स्त्रियों और बच्चों को सभा में न जाकर घरों में ही रहने का आदेश दे दिया था। नगर में दंगा होने के सारे चिन्ह प्रगट हो गए थे।

तीस फ़ासिस्टों को सैनिक ढंग से सड़कों में निकलते देखकर समाजवादी घबरा गए। वह तितर बितर हो कर हल्ला गुल्ला

मचाने लगे। अनेक लोग डर कर टाउनहाल में जा घुसे। उन को नगर पर आक्रमण किये जाने का भय होने लगा। वह बाहिर के प्रत्येक व्यक्ति को फ़ासिस्ट समझ रहे थे। अतएव उन्होंने भीड़ के ऊपर एक बम फेंका।

किन्तु यह बम समाजवादियों की ओर ही भूल से फेंका गया। इससे सब कहीं भय छा गया। लोग अपने समाजवादी टिकटों को फाड़ २ कर भागने लगे। उधर हाल के अन्दर ही फ़ासिस्टों के धोखे में समाजवादियों के ऊपर बम चलाये जा रहे थे। उधर हाल के निकलने के मार्ग पर हाल में ही गोली की आवाज़ सुनाई दी; जिसमें कौंसिल के कई सदस्य मर गए।

इसी प्रकार की घटना फेरेरा (Ferara) नामक नगर में भी हुई। यहां तीन फ़ासिस्ट मारे गए और अनेक घायल हुए।

मिलन में फ़ासिस्टों की सभा

इन घटनाओं से मुसोलिनी ने देश के सभी भागों से प्रधान २ फ़ासिस्टों को मिलन बुलाया। यद्यपि इन आने वालों की संख्या अधिक नहीं थी, किन्तु वह सभी दृढ़ निश्चय और दृढ़-प्रतिज्ञा वाले थे। मुसोलिनी ने उनसे कहा कि सफलता केवल समाचार पत्रों से ही नहीं हो सकती। ईंट का जवाब पत्थरों से देना होगा। अन्त में समाजवादियों का दृढ़ता के साथ मुक़ाबला करने का निश्चय किया गया।

छटा अध्याय

फ़ासिज़्म का अभ्युदय काल

इस समय इटली की दशा बहुत बुरी थी। राष्ट्रीय ऐक्य का तो वहां नाम तक न था।

जनता इस समय समाजवादियों के दंगों से ऊब उठी थी। उसने अब आत्मरक्षा के लिये संगठित होना आरम्भ किया। वह लोग बड़ी संख्या में फ़ासिस्टों के झण्डे के नीचे आने लगे। अनेक विद्यार्थी भी विश्वविद्यालयों को छोड़ २ कर फ़ासिस्ट दल में आ मिले।

फ़्यूम के प्रश्न पर दनुनुसियो से समझौता

इस बीच में मुसोलिनी फ़्यूम की ओर से भी उदासीन नहीं था। फ़्यूम-युद्ध के प्रथम दिन से ही वह दनुनसिओ के हृदय से साथ था। उसके पास कवि के प्रेम पूर्ण पत्र सदा ही आते रहते थे। इस बात का प्रमाण कवि के १४ सितम्बर

१९१६ के पत्र से मिलता है। यह पत्र उसने समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिये भेजा था। उसने लिखा था।

''प्रिय मुसोलिनी

'शीघ्रता में कुछ ही पंक्तियां लिख रहा हूं। इस समय मुझे घंटों काम करना पड़ता है। यहां तक कि हाथ और आंखें दोनों दुखने लगती हैं। मैं अपने वीर सहयोगी—अपने ही पुत्र गैब्राइलीनो के हाथ यह लेख भेज रहा हूं। यदि समझो तो इसमें स्वयं ही आवश्यक संशोधन कर लेना। युद्ध का यह सबसे प्रथम कार्य है। इसको मैं अन्त तक अपने ढंग पर पूरा करूंगा। यदि सेंसर इस पत्र में साहस पूर्वक हस्तक्षेप करे तो कृपया पत्र को छाप कर निकाले हुये शब्दों के स्थान को खाली छोड़ देना। इसके पश्चात् हम अपने कर्तव्य पर विचार करेंगे।

'मैं आपको फिर पत्र लिखूंगा। मैं स्वयं ही आऊंगा। मैं आपकी लगन और उस सहायता की सराहना करता हूं, जो आपने सुन्दर मार्गप्रदर्शन करके पहुंचाई है। मेरा आलिङ्गन स्वीकार करें।

भवदीय

गैब्रील दनुनसिओ

जुलाई से दिसम्बर तक फ़्यूम की दशा अधिकाधिक बिगड़ती गई। इधर तो दनुनसिओ मोर्चे पर दृढ़ता से अड़ा हुआ था, उधर ज्योलिटी रैपेलो सन्धि के ऊपर

वास्तव में आचरण करना चाहता था। अन्त में उसने नगर का घेरा डालना आरम्भ किया। उसने नगर को सैनिक आक्रमण से लेने का निश्चय किया। इस समय बड़े दिन की छुट्टियों के कारण समाचार पत्रों की भी छुट्टी थी। अब इटली के ही एक नगर के विरुद्ध इटली वालों को भेजा गया। इस युद्ध में दनुनसिओ के अनेक सैनिक खेत रहे। इस घटना से सारे इटली में क्रोध छा गया।

इसके पश्चात ज्योलिटी ने इस घटना पर बहुत पश्चात्ताप प्रगट किया। फलस्वरूप फिर समझौता हुआ। फ़्यूम का शासन करने के लिये वहीं के नागरिकों की एक कमेटी बना दी गई। फलतः दनुन्सिओ ने फ़्यूम को छोड़ दिया। उसका फ़्यूम पर १६ माह तक निर्बाध अधिकार रहा। अब यह आवश्यक था कि उसका भाग्य उसके ही नागरिकों के के हाथ में सौंप दिया जाता।

फ़ासिस्टों का नवीन सङ्गठन

इस समय तक फासिस्टों के संगठन का कार्य भी बहुत कुछ आगे बढ़ चुका था। समाजवादियों से युद्ध करने के लिये उनको बिलकुल सनिक ढंग पर संगठित करके वर्गों (Squads) और श्रेणियों (Units) में विभक्त कर दिया गया था। विनयानुशासन उसकी मुख्य विशेषता रखी गई थी।

यद्यपि यह लोग अत्यन्त उग्र और युद्ध प्रिय थे। किन्तु गारीबाल्डी के सैनिकों के समान वह सभी राजभक्त थे। वह

सब एक केन्द्रीय समिति के नियन्त्रण में थे और यह समिति मुसोलिनी की आज्ञा के अनुसार कार्य करती थी। अनेक विद्यार्थी स्कूलों और विश्वविद्यालयों को छोड़ कर इनमें सम्मिलित हो गए थे। राष्ट्र की रक्षा के लिये वह सब अपने प्राणों की बाज़ी लगा देने को तयार थे। यह सब काली कमीज़ें पहिनते थे।

इस समय की लिबरल डेमोक्रैटिक सरकार ने इस आन्दोलन के मार्ग में बड़ी २ कठिनाइयां उत्पन्न कीं। उन पर रायल गार्ड के द्वारा बड़े बड़े अत्याचार कराये जाते थे। उनको जेल में बन्द करके बहुत समय तक बिना मुकदमे के ही रख कर उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये जाते थे। किन्तु अत्याचारों से उनकी निर्भीकता बढ़ती ही जाती थी। अपने नेता—मुसोलिनी—में उनका अगाध प्रेम और श्रद्धा थी। वह मरते समय भी अपनी काले कमीज़ को ही मांग कर अपनी मातृभूमि और नेता का स्मरण करते थे।

इस समय इटली के युवक उत्साह से भर गए थे। उनके चेहरे से पुरुषत्व झलक रहा था। समाजवादी तो उनकी शकल देख कर ही भयभीत हो जाते थे। उस समय सब कहीं युद्ध का ही राग—जागृति ही जागृति दिखलाई देती थी।

फ़ासिस्टों का शक्तिसंचय

समाजवादियों के साथ युद्धों में असंख्य फ़ासिस्ट मर जाते थे। लोगों के उत्साह को देख कर जनता में भी उत्साह भरता

जाता था। मध्य श्रेणि वाले इस समय अपने अधिकारों और सम्पत्ति के लिये चिन्तित थे। वह फ़ासिस्टों के उद्भव को परमात्मा की विशेष कृपा समझ कर तुरन्त उनके झण्डे के नीचे आगए। अनेक समझदार श्रमिक, किसान, छोटे २ जमींदार तथा भूतपूर्व सैनिक और सेनाधिकारी भी फ़ासिस्टों में आ मिले। समाजवादियों के अत्याचारों से अनेक समझदार समाजवादी भी उकता गए थे। अथवा यह कहना चाहिये कि जो उदार विचार के समाजवादी थे वह सभी साम्यवादियों तथा उग्रवादियों के कार्यों से घृणा करके फ़ासिस्ट दल में सम्मिलित हो गए। अब फ़ासिस्टों ने आग का जवाब आग से, दांत का दांत से और पत्थर का पत्थर से देने का यत्न किया। फ़ासिस्टों का संगठन प्राय: प्रत्येक नगर में हो गया। बोलोइन्या की ऊपर लिखी हुई दुर्घटना से वहां की जनता ने सारी बोल्शेविक प्रणाली को उलट दिया। फ़ासिस्टों ने साम्यवादियों के प्रधान केन्द्र को जला दिया। समाजवादियों अथवा साम्यवादियों ने इटली के अनेक कम्यूनों (Communes) की सरकार पर अधिकार कर लिया था। अब वह उस पद से काम लेकर फ़ासिस्टों का दमन करने लगे। डाके, रिश्वत और दबाव देकर पैसा लेने का बाज़ार सरे आम गर्म था। फ़ासिस्टों ने पहिले स्थानीय स्वेच्छाचारिता के उन घोंसलों को उजाड़ने का निश्चय किया। उस समय साम्यवादियों और फासिस्टों में बराबर दंगे होते थे। कई बार तो इनमें दोनों ओर से अनेक

हताहत होते थे। सन् १९२० इटली के लिये वास्तव में ही बड़ा दु:खदायी वर्ष था।*

फासिस्टों का संगठन बड़ा उत्तम था। उन्होंने गांव से लेकर प्रान्त तक सारे इटली का संगठन कर डाला। सब समितियां केन्द्रीय सभा के नियन्त्रण में काम करती थीं। सब सदस्यों को अपने काम के लिये समितियों के सम्मुख उत्तरदायी होना पड़ता था। न तो कोई सदस्य और न समिति ही अपने मन से कोई कार्य करने के लिये स्वतन्त्र थी। सदस्यों और समितियों पर इतना कड़ा नियन्त्रण रखा गया था कि फ़ासिस्ट लोग अपने ठोस और शक्तिशाली संगठन के लिये प्रसिद्ध हो गए।

किन्तु फ़ासिस्ट लोग बदला लेने के लिये इतने क्रोध में भर कर आक्रमण करते थे कि वह अपने नेता मुसोलिनी तक की रुकने की आज्ञा का पालन बड़े दु:खी होकर करते थे। उनका अपने साथियों की धोखे से की हुई हत्या बहुत स्मरण रहती थी।

इस समय कावूर, गारीबाल्डी और मत्सीनी के प्रयत्नों से बना हुआ राष्ट्र नष्टप्राय हो रहा था। ज्योलीटी इस समय नितान्त अकर्मण्य बना हुआ था।

सन् १९२१ में मुसोलिनी का सरकार की सहायता से विरोधियों के साथ एक राजनीतिक समझौता हुआ। इस विषय में

*Europe Since 1815, by Charles Downer Hazen.

समाजवादियों और उदार दलों (लिबरलों) में बड़ा भारी मत-भेद हो गया। इसके अतिरिक्त समझौते पर समाजवादियों ने ही हस्ताक्षर किये थे, न कि साम्यवादियों ने। अतएव साम्यवादियों ने अपने युद्ध को जारी रखा। उनको समाजवादी स्वयं भी सहायता देते जाते थे। समझौता करना बिल्कुल व्यर्थ गया। समाजवाद ने इटली के सामाजिक जीवन को नष्ट कर दिया। इस समय युद्ध फिर नये सिरे से आरंभ कर दिया गया। सन् १९२१ में दुबारा आरंभ किया हुआ यह युद्ध अन्तिम सफलता प्राप्त होने तक चलता ही रहा।

अब फिर बड़ा भीषण युद्ध हो चला। आरंभ में पो घाटी (Po Valley) में बड़ा भारी दंगा हुआ। रोम में समाजवादी फ़ासिस्टों के अन्त्येष्टि संस्कार के जुलूस पर भी गोली चलाने को तयार हो गए। उस समय लेगहार्न (Leghorn) में समाजवादियों की बड़ी भारी कांग्रेस हुई, जिसमें साम्यवादी दल अधिक बलिष्ट हो गया।

फ़ासिस्टों का कार्यक्रम

इस के कुछ ही समय के पश्चात् ट्रिएस्टे में फ़ासिस्टों की एक बड़ी भारी सभा हुई। इसका सभापति गिउण्टा (Giunta) नामक एक फ़ासिस्ट था। यह इटालियन चैम्बर का सदस्य भी था। इस सभा में मुसोलिनी ने फ़ासिज़्म के सिद्धान्तों पर भाषण दिया। इस सभा में मुसोलिनी ने फ़्यूम का भाग्य-निर्णय करने वाली

रैपैलो सन्धि को रद्द करने की मांग की। इस सभा में मुसोलिनी ने सन् १९२१ के लिये निम्न लिखित कार्यक्रम उपस्थित किया—

"प्रथम, उन राजनीतिक सन्धियों पर इटली के हित की दृष्टि से फिर विचार कराया जावे, जिनके ऊपर आचरण करना कठिन है अथवा जिनके कारण नये युद्ध का भय हो।

द्वितीय, फ्यूम-का आर्थिक नियंत्रण इटली के हाथ में रहे और डलमाशिया निवासी इटालियनों की सुरक्षा का प्रबन्ध कराया जावे।

तृतीय, देश की उत्पादक शक्तियों की उन्नति करके धीरे २ पश्चिम की धनी सरकारों से सम्बन्ध कम किया जावे।

चतुर्थ, एक बार फिर आस्ट्रिया, जर्मनी, बल्गेरिया, टर्की और हंगैरी के साथ सम्बन्ध बनाया जावे। किन्तु इसमें इटली की प्रतिष्ठा को हानि न पहुंचे और अपनी दक्षिण तथा उत्तर की सीमाएं सुरक्षित रहें।

पञ्चम, पूर्व के दूर और समीप के सब देशों से घनिष्ठता बढ़ाई जावे, चाहे उसपर सोवियट रूस का ही शासन क्यों न हो।

षष्ठ, औपनिवेशिक नीति में इटली के अधिकारों और आवश्यकता को बार बार प्रगट किया जावे।

सप्तम, अपने सभी राजनीतिज्ञ प्रतिनिधियों का उनको विश्वविद्यालय की विशेष शिक्षा देकर विशेष सुधार किया जावे।

अष्टम, भूमध्य सागर (Mediterranean Sea) और और ऐटलांटिक महासागर में आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थाओं तथा विनियम द्वारा उपनिवेश बनाए जावें।"

मुसोलिनी अपने इस राजनीतिक कार्यक्रम के द्वारा रोम को फिर एक बार पश्चिमी यूरोप का मार्गप्रदर्शक बनाना चाहता था।

इसके पश्चात् मिलन नगर की लम्बार्डी के फ़ासिस्टों की सभा में मुसोलिनी ने फ़ासिस्टों को युद्ध के सम्बन्ध में नियम बतलाए।

इस प्रकार यह लोग बल तथा विधान दोनों से ही शक्ति प्राप्त करने में लग गये।

फ़ासिस्टों का साम्यवादियों से मुकाबला

समाजवादियों और साम्यवादियों में यद्यपि पर्याप्त अंतर था, किन्तु फ़ासिस्टों का मुकाबला दोनों ही मिलकर करते थे। साम्य-वादी लोग विधान की लेशमात्र भी चिन्ता नहीं करते थे। वह फ़ासिस्टों को बुरी तरह से मारते थे, फिर वह चाहे बच्चे ही क्यो न हों।

यह दशा इटली के सभी प्रान्तों में थी। समाजवादी लोग फ़ासिस्टों पर चुन २ कर प्रहार करते थे, जिससे अनेकों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता था।

मिलन नगर में २३ मार्च १९२१ को साम्यवादियों ने डायना थियेटर में बम का धड़ाका किया, जिससे बीस शान्त नागरिक तुरंत मर गये और पचास के अंग भंग हो गए। इस पर फ़ासिस्टों को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने उनके पत्र 'अवन्ती' के कार्यालय पर धावा करके उसे जला दिया। वह श्रमिकों के कार्यालय पर भी आक्रमण करने वाले थे कि एक सेना के दस्ते ने उनको रोक दिया।

क्रोधी फ़ासिस्टों ने ग्राम ग्राम और नगर नगर में समाजवादियों और साम्यवादियों से बदले लिये। २६ मार्च को मुसोलिनी ने मिलन नगर में फ़ासिस्टों का बड़ा भारी प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन से विरोधियों के छक्के छूट गये। मुसोलिनी को इस समय बहुत अधिक काम करना पड़ता था। उसको फ़ासिस्टों के संचालन के अतिरिक्त पोपोलो डीटैलिया को भी सम्पादन करना पड़ता था। इस समय मुसोलिनी हवाई जहाज़ को चलाने का फिर अभ्यास करने लगा था। किन्तु एक बार एक दुर्घटनावश वह ऊपर से गिर पड़ा, जिससे उसके बहुत अधिक चोट आई। डाक्टरों की सुश्रूषा से वह इस आपत्ति से भी शीघ्र ही पार हो गया।

इस के बाद उसके शत्रुओं ने कई बार उसके प्राण लेने का यत्न किया, किन्तु इटली के सौभाग्यवश वह सदा ही चमत्कारिक ढंग से बच जाता। हत्यारे उसके मुख को देख कर ही भयभीत हो जाते और स्वयं ही अपनी राम कहानी सुना देते थे।

सन् १६२१ का निर्वाचन

देश की इस प्रकार की परिस्थिति से मन्त्रीमण्डल का आसन भी डोलने लगा था। ज्योलिटी ने पार्लमेंट का दलों की संख्या के अनुसार विभाग करने के लिए पार्लमेंट को भंग कर दिया। नये निर्वाचन १९२१ में रखे गए।

इस समय फिर सब पार्टियों ने अपना २ प्रचार करना आरंभ किया। इस समय फ़ासिस्ट पार्टी सबसे अधिक बलवान् थी। समाजवादी और साम्यवादी भी प्रथक् २ होकर निर्वाचन के

लिए प्रचार कर रहे थे। पापुलर पार्टी निर्वाचन को धार्मिक आधार पर लड़ रही थी।

इस समय मुसोलिनी ने देश का दौरा करना आरम्भ किया। अप्रैल के आरम्भ में बोलोइञा में उसका बड़ा भारी स्वागत हुआ। वहां से वह फ़ेरैरा आदि अनेक स्थानों में गया। इस कार्य में एक माह लग गया।

निर्वाचन का परिणाम बहुत आशाजनक रहा। मुसोलिनी को सन् १६१९ के चार सहस्र वोट की अपेक्षा इस बार एक लाख ७८ हजार वोट मिले थे। इस बार उसकी पार्टी को चैम्बर में ३५ स्थान मिले।

मुसोलिनी अब पार्लमेंट के कार्य में बड़े उत्साह पूर्वक भाग लेने लगा। चैम्बर में उसने कई भाषण दिये। २१ जून के भाषण में तो उसने ज्योलिटी की परराष्ट्रनीति की बड़ी कड़ी आलोचना की। उसके इस व्याख्यान की देश भर में प्रशंसा की गई।

बोनोमी का मंत्रीमंडल

अनेक राजनीतिक उतार चढ़ाव के पश्चात् ज्योलिटी के मन्त्रीमण्डल का जून १९२१ में ही पतन हो गया। अब उसके स्थान पर बोनोमी (Bonomi) प्रधानमन्त्री हुआ। वह समाजवादी होते हुए भी फ़ासिस्टों के साथ सन्धि करना चाहता था। किन्तु इस सन्धि चर्चा के बीच में ही सर्जेना (Sarzana) में एक दंगा हो गया, जिसमें कम से कम अठारह फ़ासिस्ट काट डाले गए। इस पर फ़ासिस्टों को भी क्रोध में आकर भयंकर रूप

से बदला लेना पड़ा। अन्त में सेना ने आकर उन पर गोली चलाई, जिससे दस फ़ासिस्ट मरे और कई घायल हुए।

मुसोलिनी तलवार चलाने में बड़ा कुशल है। यूरोप में यह प्रथा है कि यदि दो व्यक्तियों में अधिक झगड़ा बढ़कर मानापमान का प्रश्न उपस्थित होता है तो उनमें से एक दूसरे को द्वन्द्व-युद्ध करने का निमन्त्रण देता है। इस युद्ध को वह डुएल (Duel) कहते हैं। मुसोलिनी को इस पार्लमेंट में दो डुएल करने पड़े, किन्तु उसकी दोनों में ही जीत हुई। घाव तो उसके शरीर पर एक भी नहीं आया।

रोम की सन् २१ की फ़ासिस्ट कांग्रेस

नवम्बर १९२१ में उसने रोम में ही फ़ासिस्टों की एक कांग्रेस बुलाई। इसमें फ़ासिस्टों के संगठन को अधिक बलिष्ट किया गया। इस कांग्रेस में इटली भर के फ़ासिस्ट आये थे। इसमें नवीन संगठन के अतिरिक्त नवीन कार्यक्रम भी बनाया गया। इस समय भी रोम में कुछ फ़ासिस्ट मारे गए। इसके पश्चात फ़ासिस्टों ने सैनिक ढंग पर रोम में भी प्रदर्शन किया। उनकी बढ़ी हुई शक्ति को देख कर सब के होश दंग रह गए।

देश की आर्थिक दुरवस्था

सन् १९२१ के अन्त में 'बैंका इटैलिआना डी सौंको' नामक बैंक की परिस्थिति बिगड़ती दिखलाई देने लगी। इटली के श्रमिक अपने रुपये को प्रायः इसी बैंक में रखते थे। अतएव इस बैंक की दशा का प्रभाव सारे देश पर पड़ा। अब सारे राज-

नीतिज्ञों का ध्यान इटली की आर्थिक दशा पर गया। मुसोलिनी ने तो अभी तक युद्ध के अतिरिक्त आर्थिक विषयों की ओर कभी भी ध्यान नहीं दिया था। उसको अब इस बात का अध्ययन करने पर पता चला कि महायुद्ध के पश्चात् देश की दशा कितनी बिगड़ गई थी। जांच करने पर उसको और भी अनेक बैंकों और फ़र्मों की बिगड़ी हुई दशा का पता चला।

देश की इस नाज़ुक परिस्थिति के अवसर पर सरकार भी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। उसने—जैसा कि ऐसी परिस्थितियों में प्राय: किया जाता है—अधिक नोट छापना आरम्भ किया, किन्तु, इससे परिस्थिति और भी ख़राब हो गई।

मुसोलिनी का फ्रांस की कांफ्रेन्स में भाग

जनवरी १९२२ में दक्षिणी फ्रांस में एक अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेन्स हुई। मुसोलिनी ने इसमें अपने पत्र के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित होने का निश्चय किया; क्योंकि यहां उसको अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के अध्ययन का अच्छा अवसर मिलना था। उसने आवश्यक व्यय के लिए दस सहस्र *लीरा (Lira) एकत्रित किए। उसका भाई आरनैल्डो उस रक़म को लेकर एक बैंक में फ्रांस के सिक्के लेने गया तो उसको केवल ५२०० फ्रैंक ×(Franc) ही मिले। इस घटना से मुसोलिनी को विदित हुआ कि इटली के सिक्के की दर गिर कर फ्रांस के सिक्के की अपेक्षा आधी हो गई थी। यह बात गम्भीर थी। इससे उसे पता चला कि वास्तव में इटली

---

*इटली का सिक्का × फ्रांस का सिक्का

दिवालिया बनता जा रहा है। अब उसने यह निश्चय कर लिया कि फासिज्म की शक्ति से इस परिस्थिति को बदलना होगा।

मुसोलिनी ने इस कांफ्रेंस में फ्रांस के प्रधानमंत्री मोशिये ब्रियांद आदि अनेक प्रमुख राजनीतिज्ञों से भेंट की। इस कांफ्रेंस के परिणामस्वरूप मो० ब्रियांद के मंत्रीमण्डल ने चैम्बर के वोट की प्रतीक्षा किये बिना ही अस्तीफा दे दिया। मुसोलिनी ने इस घटना पर ता० १४ जनवरी १९२२ को अपने पत्र में टिप्पणी करते हुए इटली को विशेश रूप से साधान रहने की चेतावनी दी।

किन्तु इस पूरे समय भर फासिस्टों और विरोधी शक्तियों में बराबर भीषण संघर्ष चलता रहा। यहां तक कि पिस्टोरिया के एक संघर्ष में दनुनसिओ के साथ फ्यूम में युद्ध करने वाला लेफ्टिनेंट फ्रेडेरिको फ्लोरियो भी मारा गया। इस घटना से सारे फासिस्टों में भारी शोक छा गया। मुसोलिनी ने इस दुर्घटना पर एक विशेष लेख लिखा।

फैक्टा का मन्त्रीमंडल

फर्वरी १९२२ में बोनोमी के मन्त्रीमण्डल का पतन हुआ। अब राजा विक्टर एमानुएल तृतीय ने अनेक राजनीतिज्ञों से परामर्श किया। उन्होंने मुसोलिनी को भी अपने राजमहल में दो बार बुलाया। इस समय इटली के राजनीतिक क्षेत्र में प्रधान मन्त्रित्व के लिए तीन नाम आ रहे थे—आरलैंडो, डे. निकोला और बोनोमी। ज्योलिटी का नाम भी लिया गया, किन्तु कैथोलिक दल उसका विरोधी था। अन्त में बहुत कुछ सोच विचार

के पश्चात् फ़ैक्टा (Facta) को ही प्रधान मन्त्री बनाया गया, किन्तु वह ज्योलिटी का ही अनुयायी था। अन्त में वह बोनोमी से भी अधिक निर्बल प्रमाणित हुआ।

फ़ासिस्टों और साम्यवादियों में भयंकर संघर्ष

इस पूरे समय भर फ़ासिस्ट और साम्यवादी एक दूसरे से बराबर लड़ते रहे। इस समय तो संघर्ष और भी प्रबल हो गया। फ़ासिस्टों की संख्या और शक्ति बराबर बढ़ती ही जाती थी। २४ मई १९२२ को युद्ध का स्मृति-दिवस होने के कारण फ़ासिस्टों ने इटली भर में परेड (Parade) करके उत्सव मनाया। रोम की परेड में साम्यवादियों ने गोली चला दी, जिससे एक फ़ासिस्ट मारा गया और चौबीस घायल हुए। इस घटना ने अग्नि में घृताहुति का काम किया। फ़ासिस्टों ने बड़े वेग से साम्य-वादियों पर आक्रमण किया। सड़कों में रक्त ही रक्त दिखाई देने लगा। सब कहीं के फ़ासिस्ट इस समाचार को सुन कर अधीर हो गये। उन्होंने क्रोधित होकर तार और टेलीफोन के सम्बन्ध काट दिए। उन्होंने प्रत्येक गांव पर दख़ल करने के लिए वहां के समाजवादी अथवा साम्यवादी मेयरों (Mayors) को अस्तीफ़े देने को विवश किया। उनके अस्तीफा न देने पर गावों पर बम फेंके गये अथवा आग लगादी गई। उस समय देश में घरेलू युद्ध की सम्भावना दिखलाई देने लगी थी।

फ़ासिस्ट विरोधियों ने भी इस घटना का सामना करने की पूरी तयारी की। उन्होंने सार्वजनिक हड़ताल की घोषणा करदी।

किन्तु फ़ैक्टा की सरकार अब भी हाथ-पर-हाथ धरे ही बैठी रही। मुसोलिनी से यह सहन न हो सका। उसने सब फ़ासिस्टों को युद्ध के लिए एक दम तयार होने की आज्ञा दी। फ़ासिस्ट लोग तो आज्ञा की प्रतीक्षा में थे ही। वह बिजली के समान शीघ्र गति से एक दम एकत्रित हो गये।

इस घटना से हड़ताल उसी दिन खुल गई।

एक ओर तो मुसोलिनी के फ़ासिस्ट सैनिक सड़कों, मुहल्लों, खेतों और कारखानों की रक्षा कर रहे थे, उधर पार्लमेंट में बजट पेश होने वाला था। उसमें कई लाख रुपये का घाटा था।

मुसोलिनी को इस घटना पर बड़ा रोष आया। उसने ता० १९ जुलाई १९२२ को पार्लमेंट में बजट की तीव्र समालोचना करते हुए घोषणा की कि वह फैक्टा के पक्ष से फ़ासिस्ट वोटों को वापिस लेता है। उसने फ़ैक्टा को सम्बोधन करते हुए उसकी ख़ूब भर्त्सना की।

इसके परिणाम स्वरूप फैक्टा के मन्त्रीमण्डल का उसी दिन पतन हो गया।

अब फिर नये प्रधानमन्त्री की आवश्यकता पड़ी। फिर आरलैंडो, बोनोमी, फ़ैक्टा और ज्योलिटी के ही नाम लिये जाने लगे। बहुत वादविवाद के पश्चात् पापुलर पार्टी के प्रतिनिधि मेडा (Mada) को प्रधानमंत्री बनाने का निमंत्रण दिया गया।

फ़ासिस्ट स्वयंसेवकों द्वारा राष्ट्ररक्षा का कार्य

जिस समय पार्लमेंट में नया मन्त्रीमण्डल बनाने के प्रश्न पर विचार हो रहा था इटली में बड़ी विषम परिस्थिति हो गई। इस समय मज़दूर संघ (Labour Confederation), समाजवादियों के पार्लमेन्टरी दल, लोकतन्त्र दल (Democratic groups) और प्रजातन्त्र दल (Republicans) ने एक प्रबल विरोधी दल बना कर इटली भर में हड़ताल करने की घोषणा की। यह हड़तालें पूर्णतया फ़ासिस्ट विरोधी थीं। इनका उद्देश्य फ़ासिज्म के आंतक से जनता की रक्षा करना बतलाया गया था।

मुसोलिनी ने इसका मुक़ाबला करने के लिये फिर फ़ासिस्टों को युद्ध के लिये एकत्रित होने (General Mobilization) की आज्ञा दी। फासिस्ट कौंसिल को स्थायी रूप से बैठने की आज्ञा दी गई। फ़ासिस्ट कारीगरों से कारख़ाने चलवाए जाने लगे। आक्रमण करने वालों का मुक़ाबला किया गया। मिलन के फ़ासिस्टों ने विरोधियों के पत्र 'अवन्ती' पर आक्रमण करके उसके दफ़्तर को जला दिया।

इस समय फ़ासिस्टों ने उन कल कारख़ानों पर पहरा बैठा दिया; जहां हड़ताल, तालेबन्दी अथवा समाजवादियों के आक्रमण का भय था। जो कारख़ाने समाजवादियों के आतंक के कारण बन्द हो गए थे, उनको उन्होंने अपने संरक्षण में खुला किया। फ़ासिस्टों के इस कार्य से उनकी समस्त देश पर

धाक बैठ गई। उनके इस कार्य से लाखों बेकार श्रमिकों को कार्य मिल गया। फ़ासिस्टों के इस कार्य से पूंजीपति लोग भी फ़ासिस्टों की धन से सहायता करने लगे।

फ़ासिस्टों ने एक कार्य से तो सरकार तक का समर्थन प्राप्त कर लिया। वह था सरकारी इमारतों, रेलों और ट्रामवे का रक्षण। समाजवादी लोग रेलगाड़ियों को गिरा देने, डाकख़ानों में काम करनेवालों पर आक्रमण करने और चीज़ों के नष्ट भ्रष्ट करने ही में अपनी क्रान्ति की सफलता समझते थे। वह ट्रामवे के शीशे तोड़ देते थे। उनके सामने पटरियों पर बड़े २ पत्थर रख कर उनको गिरा देते थे। सरकारी इमारतों, स्थानीय संस्थाओं तथा कचहरियों पर आक्रमण होने तथा उनके फूंके जाने का भय तो सदा ही बना रहता था। सरकारी कर्मचारियों के कार्यालयों में घुस जाना और उन्हें पीट देना तो मामूली बात हो गई थी। फासिस्टों ने इस सबके विरुद्ध अपने स्वयं-सेवकों को रेलवे स्टेशनों तथा पटरियों पर नियुक्त कर दिया। ट्रामवे की रक्षा का भी इसी प्रकार प्रबन्ध किया गया। कचहरियों, डाकख़ानों तथा अन्य सरकारी भवनों के चारों ओर सशस्त्र फ़ासिस्ट सैनिक स्वयंसेवकों का पहरा लगा दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकारी कर्मचारी तथा सरकार में भी भीतर ही भीतर फासिस्टों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होने लगी।

केवल मिलन नगर में ही तीन युवक फ़ासिस्ट मारे गये। इन

में से दो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे। घायल तो अनेक बालक हुए।

इस समय फासिस्टों ने वास्तविक शक्ति का परिचय दिया। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि कल के इटली पर केवल शक्ति से ही नहीं, वरन् दृढ़ निश्चय, बुद्धि, आचरण और निस्वार्थ देशभक्ति के कारण शासन करने योग्य वही हैं।

विरोधी पराजित हो गये, घबरा गये और अन्त में चुप हो गए। फ़ासिज्म की निर्बाध शक्ति को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाने लगा। अब समाजवादी पत्र भी फ़ासिज्म को एक वास्तविक शक्ति मान कर यह प्रस्ताव करने लगे कि मंत्रीमण्डल में उनको भी स्थान मिलना चाहिये। मंत्रीमण्डल की आपत्ति अभी समाप्त नहीं हुई थी। राजा ने फिर मुसोलिनी को बुलाया। मुसोलिनी की आरलैंडो से भी कई बार भेंट हुई। फ़ैक्टा ने भी मुसोलिनी के पास अपना आदमी भेज कर मालूम कराया कि वह किन शर्तों पर उसके मन्त्रीमण्डल में स्थान ले सकता है। मुसोलिनी ने कहला दिया कि केवल सभी महत्वपूर्ण पदों को लेकर।

मुसोलिनी से मंत्रीमण्डल में स्थान लेने का बहुत आग्रह किया गया। किन्तु वह अपने आलोचना करने के अधिकार से वंचित होना नहीं चाहता था। अन्त में फ़ैक्टा का मंत्रीमण्डल ही बना रहा।

इस समय मुसोलिनी ने ५ अक्तूबर को मिलन नगर के अपने एक भाषण में कहा—

"इटली में इस समय दो सरकार हैं—एक कल्पित, जिसको फैक्टा चला रहा है; दूसरी वास्तविक, जिसको फ़ासिस्ट चला रहे हैं। इनमें से कल्पित वास्तविक के सामने कभी नहीं टिक सकती।"

नेपुल्स में फ़ासिस्ट कांग्रेस

मुसोलिनी ने इस मन्त्रीमण्डल का पूर्ण विरोध करने का निश्चय कर लिया। उसने नेपुल्स (Naples) नगर में फ़ासिस्टों की एक कांग्रेस की। इसमें ४० सहस्र फ़ासिस्ट एकत्रित हुए। इन सब के हृदय में मुसोलिनी के लिए अपार श्रद्धा थी। मुसोलिनी ने इस में भाषण देते हुए कहा, 'या तो देश की सरकार शांति से फ़ासिस्टों को देदी जावे, अन्यथा मैं यह शपथ करता हूं कि हम उसको बल पूर्वक ले लेंगे।" मुसोलिनी ने यह भी घोषित किया कि वह राजा और उनके वंश की रक्षा करेंगे।

इस प्रकार अढ़ाई वर्ष के प्रचार और कठिन परिश्रम के द्वारा फ़ासिस्टों ने देश को प्रमाणित कर कर दिया कि वह देश का शासनसूत्र संभालने योग्य हैं। पूंजीपतियों के कारखानों तथा सरकारी इमारतों और रेलवे का रक्षण कर वह अपनी शक्ति और योग्यता का काफ़ी परिचय दे चुके थे। देश उन्हें सच्चा समझता था। वह समाजवादियों के समान केवल लम्बी चौड़ी योजना बनाना और सुखस्वप्न देखना न चाहते थे। यद्यपि चैम्बर में उनके सदस्यों की संख्या केवल ३५ थी, किन्तु उन लोगों ने वहां भी अपने रचनात्मक कार्य एवं योग्यता का परिचय देकर प्रमा-

णित कर दिया था कि जिस प्रकार वह बाहिर शक्तिशाली और योग्य प्रमाणित हुए हैं, उसी प्रकार वह सरकार को अपने हाथ में लेने पर देश का नियन्त्रण तथा शासन सुचारु रूप से कर सकेंगे।

फ़ासिस्टों का राष्ट्रीय विभागों पर अधिकार

नेपुल्स की इस सभा के पश्चात् फ़ासिस्ट लोग अपने क्रियात्मक कार्यों में जी जान से लग गए। रेल, डाकखानों तथा ट्रामवे पर अब तक तो वह केवल पहरा ही देते थे, किन्तु अब उन्होंने उन पर अपना अधिकार भी स्थापित कर लिया। रेलवे आदि उनके नियन्त्रण में चलने लगीं। डाकखाने उनकी आज्ञानुसार खुलने और बन्द होने लगे।

सरकार को यह भली प्रकार प्रगट हो गया कि सरकारी दफ़्तरों, पुलिस के थानों, रेलवे और डाकखाने आदि पर अधिकार करने में कर्मचारियों की ओर से किसी प्रकार की भी बाधा उपस्थित नहीं की गई थी। इसके विरुद्ध वे लोग प्रसन्नतापूर्वक फ़ासिस्टों की मांगों को स्वीकार कर उनके नियन्त्रण मे काम करने में गर्व का अनुभव कर रहे थे।

स्वायत्त विभाग के मन्त्री ने साफ कह दिया था कि फ़ासिस्टों की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना सरकार के बूते के बाहिर है। सेना और पुलिस पूर्णतया फ़ासिस्टों के पक्ष में है। उनको यदि फ़ासिस्टों पर हाथ उठाने की आज्ञा दी जावेगी तो हमारी आज्ञा का पालन न होकर उलटे हमारी ही खिल्ली उड़ जावेगी। इस समय उनकी

बढ़ती हुई शक्ति को रोकने का प्रयत्न करना केवल अपनी मूर्खता प्रमाणित करना होगा। हां, उसका फल यह होगा कि सरकार की बची खुची साख भी उखड़ जावेगी।

मुसोलिनी की रोम पर आक्रमण की तयारी

१६ अक्तूबर को मुसोलिनी ने मिलन में फ़ासिस्ट अफ़सरों को बुलाया। उसने फ़ासिस्टों का सैनिक संगठन प्राचीन रोमन सम्राटों के ढंग पर किया। उसने फ़ासिस्टों की सेना के अनेक विभाग किये। नेताओं के साथ परामर्श करके उसने एक शब्द, एक वर्दी और एक संकेत निश्चित किया। उसको इटली भर में शत्रु और मित्र का ज्ञान था। वह टाइरीनियन समुद्र (Tyrrhenian Sea) में से अम्ब्रिया (Umbria) होकर रोम पर आक्रमण करने योग्य हो गया था। दक्षिण से पुगली (Pughe) और नेपुल्स नगर के फ़ासिस्टों की सेना उसकी सेना से मिल सकती थी। बाधा केवल एक ऐंकोना (Ancona) की थी। मार्ग में केवल वही विरोधी था। मुसोलिनी ने आरपिनैटी (Arpinati) तथा दूसरे सेनापतियों को आज्ञा दी कि ऐंकोना से समाजवादियों तथा साम्यवादियों का नामनिशान मिटा दिया जावे। उस नगर पर क्रांतिकारियों का अधिकार था। अतएव ऐंकोना पर बिल्कुल सैनिक ढंग से चढ़ाई की गई। इस युद्ध में अनेक मरे तथा अनेक घायल हुए। वहां की फ़ासिस्टविरोधी शक्तियों को पूर्णतया नष्ट कर दिया गया और फ़ासिज्म के शत्रु केवल रोम में ही शेष रह गए।

अब लगभग सारे इटली पर फ़ासिस्टों का अधिकार हो गया था। फ़ासिस्ट लोग अपनी सफलता से प्रसन्न थे। वह अब जाकर स्वतन्त्रता से श्वास ले सके थे। फ़ासिज़म की प्रबल लहर अब सारे इटली में बढ़ रही थी। अब बड़े २ अध्ययनशील, बड़े २ समालोचक, बड़े २ राजनीतिज्ञ तथा बड़े २ ऐतिहासिक भी मुसोलिनी के इस विजयोन्मुख आन्दोलन की ओर जिज्ञासा की दृष्टि से देख रहे थे।

इस समय मुसोलिनी रोम पर आक्रमण करने की तयारी में लगा हुआ था। व्यक्तिगत लाभ, बड़े से बड़े लालच और कीर्ति की इच्छा भी उसको अपने निश्चय से डिगाने में समर्थ नहीं थी। मुसोलिनी को इस समय व्यक्तित्व का लेशमात्र भी ध्यान नहीं था। उसको सारे राष्ट्र का ध्यान था। वह इस समय इटली की कीर्ति तथा समृद्धि के लिये उस पर फासिस्ट शासन देखना चाहता था। 'पोपोलो डीटैलिया' रोम पर किये जाने वाले इस आक्रमण की तयारी का केन्द्र बना हुआ था। मुसोलिनी ने चढ़ाई के सब उपाय तथा प्रस्ताव ठीक कर लिये। सब तयारी हो चुकने पर उसने अन्तिम आज्ञाएं दीं। अब फ़ासिस्टों ने इसकी तयारी के लिये अपने विरोधियों पर चढ़ाई करना आरम्भ किया। ट्रेंटो, ऐंकोना और बोलज़ैनों को इसी प्रकार युद्ध द्वारा विजय किया गया।

इस समय मुसोलिनी फ़ासिस्टों की योग्यता और उनके दृढ़-निश्चय की परीक्षा करना चाहता था। अतएव उसने इटली के भिन्न २ भागों में चार महत्वपूर्ण भाषण दिये। इन भाषणों में उसने

अपनी भावी नीति का दिग्दर्शन किया । उसने फ़ासिस्टवाद के उद्देश्य की व्याख्या की ।

इस प्रकार की फासिस्ट सभाएं उदाइन (Udine), उत्तरी इटली, पो घाटी, मिलन, नेपुल्स और दक्षिणी इटली में हुई ।

मुसोलिनी ने इन सब सभाओं में स्वयं भाग लिया । वह प्रत्येक जिले की दशा से स्वयं परिचित होना चाहता था। जहां २ वह गया, उसका विजयी और रक्षक के रूप में स्वागत किया गया। इन सभी स्थानों से उसको पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ ।

अब उसने रोम की चढ़ाई के लिये केन्द्रीय दल की बैठक बुलाई । उस समय उसने कहा था कि "इस समय उदारवाद का सूर्य अस्त हो रहा है और फ़ासिस्टवाद नये—इटली—का सूर्य उदय हो रहा है ।

सातवां अध्याय

रोम की विजय

अब प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर रोम पर चढ़ाई करने का समय आ गया था।

मुसोलिनी ने प्रांतों की दशा की ठीक २ जांच पड़ताल करके, काली कमीज वाले भिन्न २ अफ़सरों की रिपोर्ट सुन कर, कार्य करने की प्रणाली को ठीक कर और उसको पूरा करने के दृढ़ निश्चय से फ़्लोरेंस में फ़ासिस्टों को एकत्रित होने की आज्ञा दी। मुसोलिनी की इस आज्ञा को सुन कर फ्लोरेंस में ६५,००० फ़ासिस्ट एकत्रित हो गये। इस समय प्रधान फ़ासिस्ट सरदारों में माइकेल बिआन्ची (Michel Bianchi), डे बोनो (De Bono), इटैलो बाल्बो (Italo Balbo), जूरिआती (Giuriati) तथा अन्य अनेक अफ़सर थे।

मुसोलिनी इस समय सभी प्रकार की सम्भावनाओं के ऊपर विचार कर रहा था। यद्यपि उसके हाथ में देश की सब से बड़ी शक्ति थी, तौ भी उसको सैनिक दृष्टिकोण के अतिरिक्त इस कार्य पर राजनीतिक दृष्टिकोण से भी विचार करना था। उसको यह भी विचार करना था कि यदि मंत्रीमण्डल ने अपनी प्रधान सेना द्वारा फ़ासिस्टों का दमन कर दिया, अथवा उनके उपाय में ही विघ्न आ गया तो क्या परिणाम होगा? उसने सारी कार्यप्रणाली तथा एतत्सम्बन्धी ऊंच नीच के ऊपर अपने साथियों के साथ अच्छी तरह परामर्श किया।

नेपुल्स की दूसरी कांग्रेस

इसके पश्चात् नेपुल्स में फ़ासिस्टों की दूसरी बड़ी कांग्रेस हुई। इस कांग्रेस का विनयानुशासन देखने ही योग्य था। इस काग्रेस में व्याख्यान भी बहुत सुन्दर २ हुए। इस में यह निश्चय किया गया कि फ़ासिस्ट सेनाएं गुप्त रूप से एकत्रित हों। यह निश्चय किया गया कि एक निश्चित समय पर इटली भर के फ़ासिस्ट दस्ते अपने २ कार्य को आरम्भ करदें। उनको मुख्य महत्वपूर्ण केन्द्रों—नगरों, डाकखानों, ज़िलाधीशों के दफ़्तरों, पुलिस कोतवालियों और उनके प्रधान कार्यालयों, रेलवे स्टेशनों और पलटन की बारकों पर अधिकार करना था।

यह तय किया गया कि फ़ासिस्टों के दस्ते प्रधान फ़ासिस्ट अफ़सरों की अध्यक्षता में टाइरीनियन समुद्र के मार्ग से रोम की ओर बढ़ें। रोमाइना, मार्चे और अब्रूज़ी जिलों के फासिस्टों को

एड्रियाटिक समुद्र के मार्ग से रोम पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी गई। इस के लिए ऐंकाना से समाजवादी और साम्यवादी तत्वों को पहिले ही दूर कर दिया गया था। फ्लोरेंस में एकत्रित हुई फ़ासिस्ट सेनाओं को मध्य इटली से रोम पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी गई। इनके साथ कैरैडोना (Caıadonna) की अध्यक्षता में फ़ासिस्ट रिसाला भी था।

यह निश्चय किया गया कि चढ़ाई का कार्य आरंभ करते ही अधिकारी तथा सैनिक सभी सेना के कठिन नियमों का पालन करें।

मुख्य आक्रमण की तयारी

इस सारे प्रबन्ध के राजनीतिक अधिकार चार सेनापतियों की एक युद्ध समिति को सौंप दिये गये। उक्त चार सेनापति यह थे—

जेनेरल डे बोनो, जेनेरल डे वेची (De Vecchi), जेनेरल इटैलो बाल्वो और जेनेरल माइकेल बिआनची। इन का सभापति तथा नेता (Duce) मुसोलिनी को बनाया गया। यह चारों व्यक्ति अपने कार्य के लिये उसी के प्रति उत्तरदायी थे। इस उत्तरदायित्व के लिये मुसोलिनी ने न केवल फासिस्टों के, वरन् इटली के प्रति भक्त बने रहने की प्रतिज्ञा की थी।

मुख्य वासस्थान के लिये अम्ब्रिया (Umbria) की राजधानी पेरूगिया (Perugia) को चुना गया, क्यों कि वहां से देश के सारे भाग में अनेक सड़कें जाती थीं और वहां से रोम पहुंचना भी

बहुत सुगम था। वहां यह भी सुविधा थी कि यदि इस चढ़ाई में फ़ासिस्टों को सफलता न मिली तो ऐपेनाइन पर्वतमाला को पार करके वहां से पो घाटी में जाकर आत्मरक्षा की जा सकती थी। उस स्थान को इतिहास में सदा ही प्रत्येक परिस्थिति की कुंजी समझा जाता रहा है। वहां वह अत्यंत निर्भयतापूर्वक रह सकते थे। अब उन्होंने पहरे का संकेत निश्चित किया और प्रत्येक कार्य की विस्तृत विधि को तयार किया। यह निश्चित किया गया कि प्रत्येक बात की सूचना मुसोलिनी को पोपोलो डीटैलिया के दफ्तर में दी जावे। विश्वासी फ़ासिस्ट गुप्तचरों का जाल सारे देश में मकड़ी के जाले के समान फैला हुआ था। मुसोलिनी दिन भर आज्ञाएं प्रचारित करता रहा। उसने उस घोषणापत्र को लिखा, जो चढ़ाई के समय देशवासियों को सम्बोधित किया जाना था। विश्वासी गुप्तचरों द्वारा इस बात का विश्वास मिल गया था कि सेना—जब तक कि कोई अनिवार्य परिस्थिति ही न आजावे—इस सारे कार्य में पूर्णतया तटस्थ रहेगी। इस समय डे बोनो और बाल्बो पेरूगिया की छावनी का संचालन करने के लिये वहां चले गए।

नेपुल्स की कांग्रेस से मुसोलिनी मिलन (Milan) गया। इस बार वह अन्य अनेक तयारियों के लिये अपने अनेक मित्रों से मिला। वह इस सारी तयारी को गुप्त रूप से कर रहा था। इस के अतिरिक्त इस समय वह प्रत्येक समय विरोधियों के गुप्तचरों से भी घिरा रहता था। अतएव उनकी दृष्टि से बचने के लिये वह

प्रगट रूप में तटस्थ के समान निश्चिंत जैसा बना रहता था। सांयकाल के समय वह थियेटरों में जाया करता था। वह अपने पत्र के सम्पादन तथा प्रबन्ध में अत्यधिक व्यस्त रहने का नाटक किया करता था।

फ़ासिस्ट पार्टी का घोषणापत्र

अब उसने सब तयारी का संदेश पाकर अचानक ही अपने पत्र पोपोलो डीटैलिया द्वारा इटली की जनता के लिये मिलन से ही अपने घोषणापत्र को प्रकाशित किया। इस घोषणापत्र को प्रथक् छपवा कर उसका इटली के सभी पत्रों के सम्वाददाताओं के द्वारा भी प्रचार किया गया। इस घोषणापत्र पर युद्ध समिति के हस्ताक्षर थे।

उक्त घोषणापत्र यह था—

"फ़ासिस्टों तथा इटली वासियों!

"निश्चय किये हुए युद्ध का समय आ पहुंचा। चार वर्ष पूर्व राष्ट्रीय सेना बड़ी भारी विजय प्राप्त करके भी आज कल के दिनों में ही विजय से हाथ धो बैठी थी। आज काली कमीज़ वालों की सेना उस खोई हुई विजय पर फिर अधिकार करने जा रही है। वह रोम जाकर उस राजधानी के सम्मान के प्रताप को विजय द्वारा फिर वृद्धिंगत करेगी। इस समय फ़ासिस्टों की प्रधान और गौण सेनाओं को युद्ध के लिये एकत्रित होने की आज्ञा दी जाती है। अब फ़ासिज़्म के जंगी कानून को जारी किया जाता है। नेता (ड्यूस) की आज्ञा से दल के सभी सैनिक, राजनीतिक तथा

शासन सम्बन्धी कार्य गुप्त युद्धसमिति के सुपुर्द किये जाते हैं। इस समिति को डिक्टेटरी के अधिकार होंगे।

"इस युद्ध में राष्ट्र की सेना, संरक्षित सेना और गार्ड भाग न लें। फ़ासिस्टवाद विटोरिया वेनेटो की सेना को मिले हुए सबसे बड़े सम्मान को फिर नया करने चला है। इसके अतिरिक्त फासिज़्म की चढ़ाई पुलिस के भी विरुद्ध नहीं, वरन् उस कायर तथा दुर्बल राजनीतिक वर्ग के विरुद्ध है जो चार वर्ष के लम्बे अर्से में भी राष्ट्र को कोई सरकार न दे सका। उत्पादक वर्ग को यह जान लेना चाहिये कि फ़ासिज़्म उस नियम और विनयानुशासन के अतिरिक्त राष्ट्र पर और कुछ लादना नहीं चाहता, जो उन्नति तथा समृद्धि का कारण हो। खेतों, कारख़ानों, रेलों तथा दफ़्तरों में काम करने वालों को फ़ासिस्ट सरकार से भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। उनके योग्य अधिकारों की सदा ही रक्षा की जावेगी। हम अपने निशस्त्र विरोधियों के साथ भी उदारता से काम लेंगे।

"फ़ासिज़्म इटली के जीवन को सीमित करने और उसके सिर पर बोझा बनने वाली आपत्तियों को दूर करने के लिये अपनी तलवार म्यान से खेंचता है। हम परमात्मा तथा अपने ५ लाख मृतकों की साक्षी से कहते हैं कि हमको केवल एक कारण ही प्रेरित करता है—हमारे अन्दर केवल एक भाव ही जाग्रत है कि हमारे देश का महत्व बढ़े और उसकी रक्षा हो।

"सारा इटली फ़ासिस्टवाद के रंग में रंग जावे।

"अपनी आत्मा और भावों को रोमनों के समान विशाल कर लो! हम निश्चय से विजय प्राप्त करेंगे। यह दृढ़ निश्चय है।

"इटली चिरजीवी हो! फ़ासिस्टवाद चिरजीवी हो!

"गुप्त युद्धसमिति"

जनता की क्रान्ति-भावना

इस घोषणा का प्रभाव इटली की सारी जनता पर पड़ा। रात को ही क्रेमोना (Cremona), ऐलेसैण्ड्री (Alessandri) और बोलोइञा में दंगा होने और गोले बारूद के कारखानों तथा फ़ौजी बारकों पर हमला होने के समाचार मिले। उस समय सारे देश में क्रान्ति की लहर बह गई। भिन्न २ नगरों से आने वाले दंगों के समाचारों से जनता की क्रान्ति की भावना और भी प्रबल हो गई।

इस समय लिबरलों ने कुछ विरोध प्रगट नहीं किया। वह सब भय के मारे अपने २ घरों में छिप गए। वह इस समय की विषम परिस्थिति को भांप गए। इस समय फ़ासिज्म की विजय का सबको निश्चय था। वायु में उसी की सनसनाहट थी। धूप में उसी की गर्मी थी। वर्षा में उसी का शब्द था। यहां तक कि पृथ्वी भी उसी को पी रही थी।

मुसोलिनी के कार्यालय पर युद्ध

अब मुसोलिनी ने भी अपनी काली कमीज़ को पहिना। उसने अपने पत्र पोपोलो डीटैलिया की रक्षा का पूरा प्रबन्ध किया।

इस समय रायल गार्ड (Royal Guards) की भयंकर सेनाएं नगर की रक्षा कर रही थीं। उनके क़दमों का स्वर सारे नगर में गूंज रहा था।

देश में सार्वजनिक काम बहुत कम हो गए थे। डाकख़ानों और बारकों पर फ़ासिस्टों के आक्रमण के कारण कहीं २ गोली चलने की आवाज़ भी आ रही थी, जिससे यह प्रगट हो रहा था कि भयंकर युद्ध शीघ्र ही खुल कर होने वाला है।

मुसोलिनी ने अपने पत्र के कार्यालय में आक्रमण से रक्षा करने के सभी साधन जुटा लिये थे। उसको पता था कि यदि सरकार अपनी शक्ति का परिचय देना चाहेगी तो पहिले वह सीधा पोपोलो डीटैलिया के कार्यालय पर ही आक्रमण करेगी। वास्तव में २७ अक्तूबर को प्रातःकाल ही मुसोलिनी ने उठ कर अपने दफ़्तर को चारों ओर मशीनगनों से घिरा हुआ पाया। शीघ्र ही दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। मुसोलिनी अपनी बन्दूक भर कर दरवाज़े की रक्षा के लिये नीचे आया। पड़ौसियों ने दर्वाज़ों और खिड़कियों को घेर लिया था। वह रक्षा की प्रार्थना कर रहे थे।

इस समय कई गोलियां मुसोलिनी के कान पर से निकल गईं।

रायल गार्ड के एक मैजर (Major) ने सन्धि का प्रस्ताव करके मुसोलिनी से बात करने की इच्छा प्रगट की। थोड़े से वार्तालाप के पश्चात् मुसोलिनी इस बात पर सहमत हो गया कि रायल-

गार्ड एक फर्लाङ्ग दूर चली जावे और मशीनगनों को सड़क के बीच में से लाकर सड़क के मोड़ पर लगभग आधा फर्लाङ्ग दूर रखा जावे। इस प्रकार की अस्थायी सन्धि के साथ ता० २८ अक्तूबर १९२२ का दिन आरम्भ हुआ।

सन्धि का निष्फल अनुरोध

रात्रि के समय मुसोलिनी के पास चैम्बर के डिप्टी लोग, सीनेट के सीनेटर, मिलन के राजनीतिज्ञ तथा अन्य अनेक ख्यातनामा राजनीतिज्ञ 'पोपोलो डीटैलिया' के कार्यालय में आए। उन्होंने मुसोलिनी से आन्तरिक युद्ध का भय दिखला कर युद्ध से विराम होने का अनुरोध किया। उन्होंने प्रस्ताव किया कि सरकार के साथ अस्थायी सन्धि कर ली जावे, जिससे मंत्रीमण्डल की आपत्ति दूर होकर देश में शान्ति स्थापित हो।

मुसोलिनी उनकी अज्ञानता पर मुस्करा पड़ा। उसने उनसे कहा, "महानुभावों! मन्त्रीमण्डल की आपत्ति अथवा मन्त्रीमंडल बदलने का लेशमात्र भी प्रश्न नहीं है। मेरे कार्य का उद्देश्य कुछ अधिक विस्तृत तथा गम्भीर है। तीन वर्ष से हम छोटे २ युद्धों और विनाश की आग में जल रहे हैं। इस बार मैं पूर्ण विजय प्राप्त करने से पूर्व तलवार म्यान नहीं करूंगा। यह समय केवल सर-कार की कार्य प्रणाली मात्र ही बदलने का नहीं, वरन् सारे देश का जीवन बदल देने का है। पार्लेयामेंट में दलों के युद्ध का प्रश्न नहीं, वरन् हम यह जानना चाहते हैं कि इटालियन स्वतन्त्र नाग-रिकों का जीवन व्यतीत करने योग्य हैं, अथवा उनको

स्वयं अपने मामलों में भी, अपनी निर्बलता तथा विदेशी राष्ट्रों के प्रभाव का शिकार बने रहना है ? युद्ध की घोषणा तो कर दी गई, अब तो वह समाप्त होकर ही रहेगा । आप इस पत्र व्यवहार को देखिये। युद्ध की आग इटली भर में जल रही है। नवयुवकों ने शस्त्र धारण कर लिये हैं। मुझे उस प्रकार का नेता समझा जाता है जो सदा आगे ही चला करता है, पीछे नहीं। मैं इटली के नवयुवकों के इस आश्चर्यजनक पुनरुत्थान के पृष्ठ को समझौते से गंदा नहीं करूंगा। मैं आपको बतला देना चाहता हूं कि यह अन्तिम अध्याय है। मैं अपने देश की परम्परा को पूर्ण करूंगा। मैं समझौते में प्राणत्याग नहीं कर सकता।"

इसके पश्चात् मुसोलिनी ने उनको वह पत्र दिखलाया, जो उसी दिन प्रातःकाल सेनापति गैब्रील दनुनसिओ ने भेजा था। मुसोलिनी ने फ़्यूम के इस उद्धारकर्त्ता अपने पुराने मित्र को अपने नये विचारों का सन्देश दिया था। उसने यह संदेश अपने विश्वासी जेनेरलों के हाथ भेजा था। दनुनसिओ ने उस पत्र के उत्तर में उससे युद्ध में बराबर डटे रहने का अनुरोध किया था।

अन्त में मुसोलिनी ने कहा।

"यदि मैं बिल्कुल अकेला भी रह जाऊंगा तो भी युद्ध को तब तक बन्द न करूंगा जब तक मैं अपने उद्देश्य में निश्चित सफलता प्राप्त न कर लूं।"

वह लोग मुसोलिनी के उत्तर से लाचार होकर चले गए।

मंत्रामण्डल की घोषणा

प्रधानमन्त्री फैक्टा भी इन बातों से अनभिज्ञ नहीं था। समझौते का इस अन्तिम किरण के भी अस्त होने से उस पर विपत्ति का महान् पर्वत आ पड़ा। इस आपत्ति के समय उसके पास कोई सम्मति देने वाला नहीं था। चैम्बर भी बन्द था। अतएव वह किंकर्तव्यविमूढ़ होकर यही सोच रहा था कि 'अब क्या करूं ?' 'किसके पास जाऊँ ?'

अन्त में उसने अपने मन्त्रीमण्डल से परामर्श करके देश-वासियों के नाम निम्नलिखित घोषणा पत्र निकाला।

"इस समय इटली के कुछ प्रान्तों में राजविद्रोह के लक्षण दिखलाई पड़ रहे हैं। वह राजविद्रोह इस प्रकार का है कि उससे राज्य के साधारण कार्य में बाधा आवेगी और देश पर महान् संकट छा जावेगा।

"सरकार ने सभी को शान्त रखने के विचार से इस विषम परिस्थिति का शान्तिपूर्ण हल निकालने के लिये समझौता करने का अधिक से अधिक यत्न किया। अब इस क्रान्तिकर प्रयत्न का मुकाबला करते हुए सरकार का कर्तव्य है कि वह किसी भी साधन से, किसी भी मूल्य पर सार्वजनिक शान्ति की रक्षा करे। चाहे उसे अस्तीफा ही क्यों न देना पड़े, वह नागरिकों तथा स्वतन्त्र वैध संस्थाओं की रक्षा करके अपने कर्तव्य को पूर्ण करेगी।

"इस बीच में नागरिकों को पूर्णतया शान्त रहते हुये सार्व-

जनिक रक्षा के उपायों में—जिनको सरकार बरत रही है—विश्वास रखना चाहिये।

"इटली चिरजीवी हो! राजा चिरजीवी हो।

हस्ताक्षर

फैक्टा, स्चैंजर, अमेंडोला, टैडी, अलेसिओ, बर्टोन, पैराटोर, सोलेरी, डे विटो, ऐनाइल, रीसिओ, बर्टोनी, रोसी, डेलो स्वार्वा, फुल्सी, लूसियानी।

इटली के राजा का मंत्रीमंडल से मतभेद

अन्य मन्त्रियों ने परिस्थिति की विषमता का अनुभव करके फैक्टा को पूरे अधिकार दे दिये थे। फ़ैक्टा भी रोम के अपने अनेक मित्रों से परामर्श कर रहा था। इसके परिणामस्वरूप उसने जंगी कानून (मार्शल ला) की घोषणा करने का यत्न किया, किन्तु बुद्धिमान् राजा ने इस घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया।

सम्राट् समझते थे कि काली कमीज वालों की क्रान्ति तीन साल के आन्दोलन तथा युद्ध का परिणाम थी। वह समझते थे कि शान्ति केवल एक दल की विजय से ही हो सकती थी।

सम्राट् की श्रद्धा केवल अत्यन्त वैध उपायों में ही थी। अतः उन्होंने फैक्टा से कह दिया कि वह केवल वैध उपायों से ही काम ले।

इस समय एक और घटना भी हो गई। मन्त्रीमण्डल के पक्ष में पार्लमेंट में एक राष्ट्रीय दल (National Party) था। यद्यपि वह बहुत कुछ फ़ासिस्टों जैसा था, किन्तु वह उस प्रकार के युद्ध को

पसन्द नहीं करता था। इस दल ने दूतों के द्वारा कुछ विचित्र दावे पेश किये।

राष्ट्रीय दल ने यह कहा कि इस समय परिस्थिति अत्यन्त नाजुक है। उनकी ओर से उनके प्रतिनिधि सलाण्ड्रा ने अपने आप को उत्तरदायित्व वहन करने के लिए उपस्थित किया। इस कार्य को फ़ासिस्टों की सहायता ही समझा गया। किन्तु मुसोलिनी ने इसका भी विरोध किया। वह किसी भी प्रकार का समझौता करना नहीं चाहता था। इस समय फासिस्टों के हाथ में शस्त्र थे। वह इस समय राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र बनने का उद्योग कर रहे थे। उनके निश्चित उद्देश्य थे। उनका अपना निराला ही पार्लमेंटरी ढग था। अतएव वह अपनी विजय को इस प्रकार नष्ट होना स्वीकार नहीं कर सकते थे। फ़ासिस्टों और राष्ट्रीय दल को मिलाने का उद्योग करने वालों को भी मुसोलिनी ने यही उत्तर दे दिया। वह किसी प्रकार के समझौते के लिए तयार नहीं था।

फ़ासिस्ट सेनाओं का रोम के फाटक पर पहुंचना

२८ वीं अक्तूबर को पांच सहस्र काली कमीज वाले फ़ासिस्टों ने रोम के लिए कूंच किया। मुसोलिनी ने कहा कि यह कूच राजा, पूंजीपति, सैनिक, कृषक, श्रमिक अथवा पुलिस के विरुद्ध नहीं, वरन् उन लोगों तथा थोड़े से समुदाय और दल के विरुद्ध है, जो इटली को शक्तिशाली और उत्तम गवर्नमेंट बनाने देने में बाधा बना हुआ है। यह कूच उन लोगों के विरुद्ध है, जिन्होंने राजनीति को अपना पेशा बना लिया है।

यह ऊपर कहा जा चुका है कि इस समय फ़ैक्टा ने जंगी कानून की घोषणा करने का प्रयत्न किया, किन्तु राजा ने इस विशेषाधिकार पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया, क्योंकि अवोस्टा के ड्यूक (Duke of Avosta) ने राजा से साफ़ २ कह दिया था कि सेना आज्ञा का पालन न करेगी। मुसोलिनी इस समय बड़े साहस से काम कर रहा था। उसके सब विरोधी घबरा कर बौखला गये थे। अन्त में ता० २६ को उसकी काली कमीज की सेना रोम के फाटक पर आ ही पहुंची। अब उसके सैनिक इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब उनका नेता मिलन से आकर उनको रोम के प्रसिद्ध नगर में प्रवेश करने की आज्ञा देकर उनका नेतृत्व करता है।

मुसोलिनी को मंत्रीमंडल बनाने का निमन्त्रण

ता० २९ अक्तूबर १९२२ को मध्याह्नोत्तर काल में मुसोलिनी को रोम से टेलीफोन किया गया। उससे राजा के ए० डी० सी० जेनेरल सीटैंडीनी ने टेलीफोन पर कहा कि "राजा ने परिस्थिति का अध्ययन करके आपको मन्त्रीमण्डल बनाने का निमन्त्रण दिया है।" मुसोलिनी ने जेनेरल सीटैंडीनी को इस कृपा के लिये धन्यवाद देते हुए उससे अनुरोध किया कि वह इस सन्देश का तार द्वारा भेज दे; क्यों कि टेलीफ़ोन पर कभी २ बड़ी भद्दी चालाकियां हो जाती हैं। पहिले तो जेनेरल सीटैंडिनी ने इस पर आपत्ति की; किन्तु बाद में वह तार भेजने पर सहमत हो गए। इसके कुछ घन्टों के पश्चात् ही मुसोलिनी को निम्न लिखित व्यक्तिगत टेलीग्राम मिला—

"मुसोलिनी, मिलन

श्रीमान् राजा साहिब आपको तुरंत ही रोम बुलाते हैं; क्यों कि वह आपको मंत्रीमण्डल बनाने का उत्तरदायित्व देना चाहते हैं। सम्मान सहित।

"जेनेरल सीटैडीनी"

यद्यपि यह विजय नहीं थी, किन्तु यह बहुत कुछ था। मुसोलिनी ने पहिले फ़ासिस्ट प्रधान कार्यालय को पेरूगिया में इसकी सूचना देकर आज्ञा दी कि काली कमीज़ वाली सेनाएं जहां २ हैं, वहीं ठहरी रहें, आगे या पीछे न हटें। उसने पोपोलो डीटैलिया का विशेष संस्करण निकाल कर इस तार को छाप दिया।

इस समय मुसोलिनी तनिक विक्षिप्त सा हो गया था। वह कई रात से फ़ासिस्ट सेनाओं का प्रबन्ध करने में सो नहीं सका था। इस समय उसके ऊपर बड़ा भारी उत्तरदायित्व आ रहा था। उसने अपने उद्देश्य को पूर्ण करने का निश्चय कर लिया। उसने अपनी सहायता के लिये अपनी पूरी शक्ति को एकत्रित किया। उसने पितरों का नाम लिया और परमात्मा से सहायता करने की प्रार्थना की। उसने अपने सच्चे वीर साथियों को भी बुला लिया।

ता० ३० अक्तूबर को उसने अपने पत्र 'पोपोलो डीटैलिया' को डाइरेक्ट करना छोड़ कर अपना स्थान अपने भाई आरनैल्डो को दे दिया। उसने १ नवम्बर के अंक में इस विषय की घोषणा प्रकाशित कर दी।

मुसोलिनी का रोम पहुंचना।

मुसोलिनी के साथियों ने उसके लिये स्पेशल ट्रेन का प्रबन्ध करना चाहा, किन्तु उसने उनको व्यर्थ व्यय करने से इन्कार कर दिया। मुसोलिनी के जाने का समाचार इटली भर में फैल गया। उसका रास्ते भर प्रत्येक स्टेशन पर बेहद स्वागत किया गया।

अन्त में वह रोम के पास सैंटा मैरीनेला में आ पहुंचा उसकी सेनाएं यहीं पड़ी हुई थीं। पहिले उसने अपनी सेनाओं का निरीक्षण किया। उसने रोम में प्रवेश करने की विधि निश्चित की। इसके पश्चात् उसने अपने आने की सूचना राजमहल में दे दी, जिसे अधिकारी लोग युद्धसमिति से सीधा वार्तालाप कर सकें।

मुसोलिनी की उपस्थिति से फ़ासिस्टों का उत्साह दुगना बढ़ गया। उन लोगों के नेत्रों में विजय के हर्ष का प्रकाश स्पष्ट देखने में आता था।

मुसोलिनी की राजा से भेंट

राजमहल में मुसोलिनी की पहिले से ही प्रतीक्षा की जा रही थी। उसके आने का संवाद पाकर राजा ने स्वयं अपनी मोटर उसके लाने के लिये भेजी। राजा की मोटर देख कर तो फ़ासिस्टों के हर्ष का ठिकाना न रहा। मुसोलिनी के उस मोटर में बैठने पर उन्होंने मोटर को चारों ओर से घेर लिया। फ़ासिस्ट सेनाओं ने

मुसोलिनी को ऐसा घेर रखा था कि मोटर को बड़ी कठिनता से आगे बढ़ाया जा सका। अन्त में मुसोलिनी उसी दिन ३० तारीख को काली कमीज़ पहने हुए रोम में दाखिल हुआ। वह सीधा राजमहल को गया और तुरन्त ही राजा के पास पहुंचाया गया। राजा ने मुसोलिनी से मिलने में किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं की। उसने मुसोलिनी का बड़े प्रेम पूर्वक स्वागत किया। मुसोलिनी ने उनको अपनी सारी योजना बतलाई और यह भी बतलाया कि वह इटली पर किस प्रकार राज्य करना चाहता है। राजा ने इन सब बातों को बड़े हर्ष से स्वीकार कर लिया। इस बीच में भीड़ हर्ष के मारे विजय-उल्लास में शोर मचाती रही। वह राजा का दर्शन करना चाहती थी। अन्त में राजा ने मुसोलिनी को साथ लिये हुए तीन बार बारजे पर आकर जनता को दर्शन दिए। जनता ने भी उनका बड़े हर्ष से स्वागत किया। राजा से बात करके मुसोलिनी सवाय होटल को चला गया। उसने अपने रहने के लिए उस समय वहीं एक कमरा ठीक किया था।

पहिले उसने प्रधान सेनापति से इस आशय का समझौता किया कि फ़ासिस्ट सेना को रोम मे नियमपूर्वक लाकर राजा द्वारा उनका निरीक्षण कराया जावे। इस विषय में मुसोलिनी ने सारी योजना तयार करके आज्ञा दी। राजा के सामने एक लाख काले कमीज वाले फ़ासिस्टों ने नियानुसार परेड की। उन्होंने राजा का फ़ासिस्ट इटली की ओर से अभिनन्दन किया।

मुसोलिनी इस समय विजेता के रूप में रोम में ही था।

जनता ने उसके सम्मान में अनेक प्रदर्शन करने चाहे, किन्तु उसने उन सभी को व्यर्थ कह कर रोक दिया। उसने आज्ञा दे दी कि फ़ासिस्ट प्रधान (उस) की आज्ञा के बिना सेना की एक भी परेड न हो। सैनिक अधिकारियों को भी उसने किसी प्रकार का प्रदर्शन करने की अनुमति नहीं दी; क्यों कि उसकी सम्मति में सेना को सदा ही राजनीति से प्रथक् रहना चाहिये। उसका कार्य केवल सीमाओं तथा ऐतिहासिक अधिकारों की रक्षा करना होना चाहिये।

मुसोलिनी को इस समय मन्त्रीमण्डल का ही निर्माण नहीं करना था, वरन् इटली को नव जीवन प्रदान करना भी था। इस समय उसकी शक्ति इटली में सर्वोपरि थी। इस समय तीन लाख काली कमीज वाले फ़ासिस्ट उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। राजधानी में भी उसके ६० सहस्र सशस्त्र सैनिक उपस्थित थे। रोम के आक्रमण का परिणाम भयंकर से भयंकर हो सकता था। इस समय वह जो चाहता कर सकता था। वह चाहता तो इटली का सर्वेसर्वा (डिक्टेटर) बन सकता था, अथवा केवल फ़ासिस्टों का ही मन्त्रीमण्डल बना सकता था। वास्तव में फ़ासिस्टों की यह क्रान्ति इतिहास में अपने ढंग की अनूठी थी। तीन लाख सैनिकों की इस क्रान्ति में सब कार्य पूर्ण शान्ति से हो गया। रक्त की तो एक बूंद तक न बही।

इस समय पार्लमेंट और राजा दोनों ही मुसोलिनी की ओर उत्सुकता की दृष्टि से देख रहे थे। विदेशों में भी इस संवाद

से बड़ा आश्चर्य प्रगट किया जा रहा था। विदेशी बैंकों को तो अगले समाचार जानने की बड़ी भारी उत्सुकता थी। विनिमय क्षेत्रों की साख केवल अगले समाचार पर ही निर्भर थी।

मुसोलिनी का नवीन मंत्रीमंडल

मुसोलिनी उस समय प्रत्येक कार्य बहुत समझ-बूझ कर करता था। उन दिनों सोच विचार में ही वह कई २ रात तक नहीं सो सका। मुसोलिनी को इस समय सब से बड़ी चिन्ता शान्ति की थी। उसने पहले फ़ैक्टा की रक्षा करने का निश्चय किया। उसने अपने दस विश्वासी वीर फ़ासिस्टों की देख रेख में उसे उसके गांव में पहुंचवा दिया। फ़ासिस्टों को यह आज्ञा दी गई थी कि कोई उसका बाल तक बांका न करे। उसने विरोधियों से बदला न लेने की भी आज्ञा निकाली। उसने कुछ घंटों में ही मन्त्रीमण्डल बना लिया। उसने केवल फ़ासिस्टों का ही पक्षपात न करके अन्य दल वालों को भी मन्त्रीमण्डल में स्थान देकर राष्ट्रीय मन्त्रीमण्डल बनाया। उसको विश्वास था कि इस मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन करने पड़ेंगे, किन्तु इस समय उसने राष्ट्रीय मन्त्रीमण्डल बनाना ही उचित समझा।

नये मंत्रीमण्डल के मन्त्रियों और सहकारी सेक्रेटरियों में १५ फ़ासिस्ट, तीन राष्ट्रीय, तीन उदार (लिबरल), छः लोकशाही पक्ष (पापुलैरी) और तीन सामाजिक प्रजातन्त्रवादी (सोशल-डेमोक्रैट) थे। मुसोलिनी ने इन सब मन्त्रियों से राष्ट्रीय भावना में कार्य करने का वचन ले लिया था।

मुसोलिनी ने अपने पास मन्त्रीमण्डल का प्रधानपद, आंतरिक विभाग और परराष्ट्रविभाग रखे। उसने निम्नलिखित मंत्रीमण्डल बनाया —

१—बेनिटो मुसोलिनी, डिप्टी, कौंसिल का प्रधान, अन्तरिक विभाग और परराष्ट्र विभाग (फ़ासिस्ट)

२—आरमैण्डो डिआज़, सेनापति, युद्ध विभाग।

३—पाओलो थान डी रेवेल, सीनेटर, जल सेनापति—जलसेना विभाग।

४—लुइगी फ़ेडरज़ोनी, डिप्टी, उपनिवेश-विभाग (राष्ट्रीय)

५—ऐल्डो ओवीगलिओ, डिप्टी, न्याय विभाग (फ़ासिस्ट)।

६—ऐल्बर्टो डे स्टेफैनी, डिप्टी, अर्थविभाग (फ़ासिस्ट)।

७—विंसेंज़ो टैंगोरा, डिप्टी, कोष (लोकशाही तत्व)

८—गिओवैनी जेनटाइल, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग (उदार)

९—गैब्रीएलो कारनैज़ा, डिप्टी, पब्लिक वर्क्स (प्रजातन्त्र वादी)।

१०—ज्यूसेपे डे कैपीटैनी, डिप्टी, कृषि विभाग (उदार)।

११—टिओफाइलो रोसी, सीनेटर, व्यापार और उद्योग धन्दे (प्रजातन्त्र वादी)

१२—स्टेफ़ैनो कैवैज़ोनी, डिप्टी, श्रम और सामाजिक सुरक्षा (लोकशाही पक्ष)

१३—गिओवैनी कोलोना डी सेसैरो, डिप्टी, डाक और तार विभाग (सामाजिक प्रजातन्त्रवादी)।

१४—गिओवैनी जूरिआती, डिप्टी, स्वतन्त्र प्रान्त (फ़ासिस्ट)

मुसोलिनी ने निम्नलिखित सहायक मन्त्री बनाए—

प्रधानमंत्री का विभाग—ग्योकोमो ऐसर्बो, डिप्टी (फ़ासिस्ट)।

गृहविभाग—ऐल्डो फ़िंज़ी, डिप्टी (फ़ासिस्ट)।

परराष्ट्र विभाग—अनेस्टो वैसैलो, डिप्टी (लोकशाही पक्ष)।

युद्धविभाग—कार्लो बोनार्डी, डीप्टी (सामाजिक प्रजातंत्र-वादी)।

जलसेना—कोस्टैंज़ो चानो, डिप्टी (फ़ासिस्ट)।

कोष—ऐल्फ़ेडो रोको, डिप्टी (राष्ट्रीय)

सैनिक सहायता—सेसैरे मैरिया डे वेची, डिप्टी (फ़ासिस्ट)।

अर्थविभाग—पिएट्रो लीसिया, डिप्टी (सामाजिक प्रजातंत्रवादी)

उपनिवेश विभाग—गिओवैनी मार्ची, डिप्टी (उदार)।

स्वतंत्र प्रान्त—अम्बर्टो मर्लिन, डिप्टी (लोकशाही पक्ष)।

न्याय विभाग—फुलविओ मिलैनी, डिप्टी (लोकशाही-पक्ष) ।

शिक्षा—डैरिओ लूपी, डिप्टी (फ़ासिस्ट)।

ललित कलाएं —ल्यूगी सिसीलिऐनी, डिप्टी (राष्ट्रीय)।

कृषि विभाग—ओटैविओ कारजीनी, डिप्टी (फ़ासिस्ट)।

पब्लिक वर्क्स—ऐलेसैण्ड्रो सार्डी, डिप्टी (फ़ासिस्ट)

डाक और तार विभाग—माइकेल टर्ज़ोगी, डिप्टी (फ़ासिस्ट)

व्यापार और उद्योग धन्दे—ग्रोंची गिओवैनी, डिप्टी (लोक-शाही पक्ष)

श्रम और सामाजिक सुरक्षा—सिलविओ गाई, डिप्टी (फ़ासिट)

मुसोलिनी का फ़ासिस्ट सेनाओं को विसर्जित करना

मन्त्रीमण्डल के बन जाने पर मुसोलिनी ने युद्ध समिति के हस्ताक्षरों से निम्न लिखित घोषणापत्र निकाला—

'सम्पूर्ण इटली के फ़ासिस्टों !

"हमारे परिश्रम के परिणाम स्वरूप विजय प्राप्त हो गई है। राज्य के आन्तरिक और परराष्ट्र विभागों की राजनीतिक शक्ति हमारे नेता के हाथ में आ गई है। देश की सुरक्षा के लिये मंत्रीमण्डल अन्य दलों के सहयोग से बनाया गया है।

"इटली का फ़ासिस्टवाद बड़ी से बड़ी विजय की कामना करने की बुद्धि रखता है।

"फ़ासिस्टों

"प्रधान युद्ध समिति दल के नियंत्रण के कार्य को फिर अपने हाथ में लेकर आपके साहस और विनयानुशासन का आश्चर्यजनक प्रमाण देने के कारण आपको नमस्कार करती है। आपने अपने देश के भविष्य के लिये अपने गुणों के अनुसार सेवा की है।

"आप इटली के इतिहास में नवीन युग लाने के लिये उसी पूर्ण नियम के साथ सेना से प्रथक् हो जाओ, जिस नियम के अनुसार आप सेना में सम्मिलित हुए थे। अब आप अपने २ घर जाकर अपने २ साधारण कार्यों को संभालो, क्यों कि इटली

को अब अधिक अच्छे दिन देखने के लिये शान्ति से काम करने की आवश्यकता है।

"हमारी अभी २ प्राप्त हुई उत्तम विजय में किसी प्रकार की बाधा न डालना।

"इटली चिरजीवी हो! फ़ासिज़्म चिरजीवी हो।

"युद्धसमिति"।

इसके पश्चात् उसने एक तार दनुनसिओ को अपनी सफलता का भेज कर सभी अधिकारियों को दत्तचित्त होकर अपना २ कार्य करने का सर्कुलर भेजा। उसने १६ नवम्बर १९२२ के दिन चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ का अधिवेशन करना तय किया, जिससे वह उसमें अपनी कार्यप्रणाली को रख सके।

मुसोलिनी की पार्लमेंट को चेतावनी

चैम्बर का यह अधिवेशन अभूतपूर्व था। हाल में तिल धरने की भी जगह न थी। प्रत्येक डिप्टी अपने २ स्थान पर उपस्थित था। समय पर मुसोलिनी ने अपनी घोषणा पढ़ी। घोषणा संक्षिप्त, स्पष्ट और उत्साहवर्द्धक थी। उसमें सब बातें खोल कर समझा दी गई थीं। उसने क्रान्ति के अधिकार की प्रशंसा की। उसने बतलाया कि फ़ासिस्टों के दृढ़ निश्चय के कारण ही क्रान्ति नियम और सहनशीलता की सीमा में की जा सकी है।"

अन्त में उसने कहा—"मैं चाहता तो इस हाल को लाशों से भर सकता था। मैं चाहता तो पार्लमेन्ट को एक दम बन्द कर

देता और केवल फ़ासिस्टों की ही सरकार बना लेता। मैं यह सब कुछ कर सकता था, किन्तु मैंने यह सब कुछ जान बूझ कर नहीं किया।"

फिर उसने अपने सहायकों को धन्यवाद देकर उन इटालियन श्रमिकों के साथ समवेदना प्रगट की, जिन्होंने सब प्रकार से फ़ासिस्ट आन्दोलन की सहायता की थी। मुसोलिनी ने पिछले मन्त्रीमण्डल के समान साधारण कार्यक्रम को उपस्थित नहीं किया, क्योंकि वह कार्यक्रम सदा कागज पर ही लिखा रह जाता था। उसने बतलाया कि वह काम करना चाहता है और उसके लिये व्यर्थ की बातें बनाकर वाक्पटुता प्रगट करनी नहीं चाहता। उसने कहा कि विदेशी नीति के क्षेत्र में वह 'शान और राष्ट्रीय उपयोगिता की नीति' को बर्तेगा। उसने प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाल कर बतला दिया कि फ़ासिज़्म किस प्रकार कार्य करना चाहता है। अन्त में उसने कहा।

"महाशयों!

"आगे आपको फ़ासिस्टों के विस्तृत कार्यक्रम का पता चलेगा। मैं यथाशक्ति चैम्बर की इच्छा के विरुद्ध शासन करना नहीं चाहता; किन्तु चैम्बर को भी अपनी परिस्थिति पर ध्यान रखना चाहिये। उस परिस्थिति के अनुसार ही इसको दो दिन अथवा दो वर्षों में भंग किया जा सकता है। हम पूरी शक्ति चाहते हैं, क्योंकि हम पूरा उत्तरदायित्व वहन करना चाहते हैं। आप अच्छी तरह जानते हैं कि बिना पूर्ण शक्ति के हम एक पैसा भी

नहीं बचा सकते। जो भी डिप्टी, सीनेटर अथवा योग्य नागरिक हमको सहायता देंगे हम उनसे हर्ष पूर्वक सहयोग करेंगे। हम सभी को अपने कठिन कार्य का ध्यान पूर्ण धार्मिक रूप में है। देश हमारा अभिनन्दन कर रहा है और हमारे कार्य के लिये प्रतीक्षा कर रहा है। हम कहेंगे नहीं, वरन् करके दिखलावेंगे। हम यह नियमपूर्वक वचन देते हैं कि हम बजट को ठीक करेंगे। हम उसको संतुलित करेंगे। हमारी विदेशी नीति शान्ति, एवं शान और दृढ़ता की होगी। हम उसको पूरा करके दिखला देंगे। हम राष्ट्र में विनयानुशासन उत्पन्न करना चाहते हैं और उसे कर भी लेंगे। हमारे कल के, आज के और भावी शत्रुओं को यह स्मरण रखना चापिये कि शक्ति हमारे हाथ में बराबर बनी रहेगी। उनको मूर्खों और बच्चों जैसी मिथ्या धारणाएं नहीं बनानी चाहियें।

"हमारी सरकार की विचित्र रचना राष्ट्र का अन्तरात्मा है। उसको सबसे अच्छी और सबसे नई इटालियन सन्तति का समर्थन प्राप्त है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि गत वर्षों में एकता की भावना के लिये बहुत कुछ काम किया गया है। इस समय पितृभूमि उत्तर से दक्षिण तक, महाद्वीप के छोटे २ द्वीपों तक और प्रधान अधिकारी से लेकर भूमध्यसागर और ऐटलांटिक महासागर के उपनिवेशों तक एक सूत्र में बन्धी हुई है। अतएव, महाशयों। राष्ट्र को व्यर्थ की बातें मत सुनाओ। हमको बात न कर देश की समृद्धि और प्रतिष्ठा के लिये शुद्ध हृदय से कार्य करना चाहिये।

"परमात्मा मुझे कठोर परिश्रम से उत्तम परिणाम निकालने में सहायता दे।"

मुसोलिनी के इन शब्दों का सारे हाल पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। उन्होंने ऐसी स्पष्ट बातें कभी नहीं सुनी थीं। उस समय सदस्य लोग अपनी २ दलबन्दी की भावना को भूल कर राष्ट्रसेवा की भावना में रंग गए। उन्होंने मुसोलिनी का पूर्ण समर्थन किया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि यह युवक-इटली के इतिहास का वास्तव में प्रातःकाल था।

आठवां अध्याय

मुसोलिनी की नई सरकार

वाशिंगटन की शान्तिपरिषद्—जिस समय मुसोलिनी ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली तो इटली की बहुत बुरी दशा थी। उसकी अन्तर्राष्ट्रीय साख तो बहुत कुछ उठ गई थी। यद्यपि इटली को वांशिगटन की शांति कान्फ्रेंस से निमन्त्रण मिला था, किन्तु उसका उसमें बहुत ही गौण स्थान था। यह कांग्रेस १२ नवम्बर १९२१ को वांशिगटन में आरंभ हुई थी। इसमें निम्नलिखित नौ राष्ट्रों ने भाग लिया था—

संयुक्तराज्य अमरीका, इंगलैंड, फ्रांस, इटली, जापान, चीन, हालैण्ड, बेल्जियम और पुर्तगाल।

इस कांन्फ्रेंस में भिन्न २ राष्ट्रों की नाविक शक्ति को कम करने पर जोर दिया गया। इसमें १५ दिसम्बर को दस वर्ष के

लिये बड़े जंगी-जहाजों का निम्नलिखित अनुपात तय किया गया—संयुक्तराज्य और इंगलैंड ५, जापान ३, फ्रांस और इटली १.७०; अन्त में इस सन्धि पर मुसोलिनी की सरकार बनने से पहिले ही ता० २६ जनवरी १६२२ को उक्त पांचों देशों के हस्ताक्षर हो गए।

फ्रांस और जर्मनी की इस समय खूब तनी हुई थी। जर्मनी की दशा इस समय बहुत बुरी थी। फ्रांस उसको वरसाई की सन्धि के अनुसार हर्जाना देने को विवश करता जाता था, किन्तु उसकी कमर पूरी तरह से टूट चुकी थी।

इटली की तत्कालीन दशा

इटली की आन्तरिक दशा भी इस समय बहुत बुरी थी। बजट में कई साल से घाटे पर घाटा चला आ रहा था। इस बार तो छै अरब का घाटा था। जनता को केवल अत्यन्त आवश्यक वस्तुएं ही मिलती थीं। उन्नतिशील दल वाले और समाचार-पत्र जनता के प्रत्येक व्यक्ति को समृद्धि के पुराने दिन स्मरण कराते रहते थे। किन्तु इससे कुछ भी लाभ न होकर जनता में अशान्ति ही बढ़ती थी। मुसोलिनी इन सब बातों का अपनी आर्थिक नीति से प्रतिरोध करना चाहता था।

विदेशों में इटली को बिना नियम और विनयानुशासन का ऐसा राष्ट्र समझा जाता था, जो कभी उन्नति नहीं कर सकता। इसी कारण इटली के मित्र राष्ट्र उसकी उपेक्षा करने लगे और उसके शत्रु उससे घृणा करने लगे थे।

इटली की शिक्षा भी नीचे से लेकर विश्वविद्यालयों तक

केवल सिद्धांतों से ही भरी हुई थी। उसमें व्यवहारिकता नहीं थी। वहां की नौकरशाही भी बहुत कुछ उत्तरदायित्व शून्य थी।

इधर फ़ासिस्टों की सेनाएं अभी तक विसर्जित नहीं की गई थीं। सेनाएं पीछे जाकर जर्मनी की तूफ़ानी सेनाओं के समान देश के लिए विपत्ति का कारण बन जाती हैं।

स्थल तथा जल सेना का तो राष्ट्रीय जीवन से लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं था। आकाशी सेना की बहुत ही बुरी दशा थी। उसको तो नई शक्ति देना अत्यन्त कठिन था। यह पीछे बतलाया जा चुका है कि प्रधान मन्त्री नीती ने तो हवाई जहाज़ों का उड़ना एकदम बन्द कर दिया था। उस समय हवाई जहाज़ों को बेच दिया गया था।

इस बीच में रोम में सभी फ़ासिज्म-विरोधी शक्तियां एकत्रित हो गईं। राजनीतिक दल पहिले तो फ़ासिस्ट क्रान्ति को देख कर आश्चर्य चकित हो गए, किन्तु अब वह धीरे २ फिर प्रबल होने लगे। उन्होंने धीरे २ फिर फ़ासिज्म विरोधी आन्दोलन करना आरम्भ किया।

मुसोलिनी के सामने बहुत काम पड़ा था। उसको शासन-कार्य को पुनः संगठित करना था। उसको शिक्षा संस्थाओं और सेना के व्यय को घटाना था। अनेक स्थानों में आवश्यकता से अधिक आदमी शासन प्रबन्ध में लगे हुए थे। उनको भी कम करके सार्वजनिक नौकरियों की दशा को सुधारना था। इधर पुराने राजनीतिक दलों की समालोचना को भी संभालना था।

उसको बाहिर के आक्रमणों को संभालना और अन्दर के प्रबन्ध में फासिस्टों की उन्नति करनी थी। सारांश यह है कि उसके लिये प्रत्येक दिशा में अत्यधिक कार्य था।

इसके अतिरिक्त एक करोड़ प्रवासी इटालियनों की दशा भी उपेक्षा योग्य नहीं थी। उनके साथ संसार भर में घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करके उनकी दशा को सुधारना था।

काम की गुरुता को देखते हुए पहिले उसने अपने सभी व्यक्तिगत कामों को छोड़ा। समाचार पत्रों से तो उसने किसी प्रकार का भी सम्बन्ध न रखा। अब वह पूर्णतया इटली के पुनर्निमाण के कार्य में लग गया। उसने जीवन के सभी आमोद-प्रमोद छोड़ दिये। वह अपने शरीर को ठीक रखने के लिए केवल खेला करता था। अब उसने होटलों अथवा थ्येटरों का जाना भी छोड़ दिया।

पार्लमेंट द्वारा मुसोलिनी का समर्थन

मुसोलिनी ने १६ नवम्बर १९२२ को चैम्बर में दिये हुए अपने भाषण के साथ २ की हुई घोषणा पर जब चैम्बर की राय मांगी तो ११६ के विरुद्ध ३०६ वोट उसके पक्ष में आए।

लगभग डेढ़ माह पश्चात् ता० १ जनवरी १९२४ को उसने पार्लमेंट से डिक्टेटरी की पूरी शक्ति मांगी तो उसने उसको भी बिना कान हिलाये स्वीकार कर लिया।

मुसोलिनी ने पहले सार्वजनिक क्षमा की घोषणा करके अनेक कैदियों को छोड़ा। इससे सारे देश में शान्ति का वायुमण्डल उत्पन्न हो गया।

फासिस्ट मिलिशिया की स्थापना

फ़ासिस्टों का प्रश्न उसके लिये जटिलतर होता जाता था। वह लोग अब शक्ति की चरम सीमा पर पहुंच गए थे। अत:उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। इतने वर्षों तक साथ २ काम करनेवाले अपने अनुयाइयों से खेतों में जाकर काम करने को भी नहीं कहा जा सकता था। इसके अतिरिक्त अभी सब आपत्तियां दूर भी नहीं हुई थीं। अत: उसने इन लोगों की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये एक स्वेच्छा सेना (Voluntary Militia) बनाने का निश्चय किया। वास्तव में मुसोलिनी का यह निश्चय बड़ी भारी राजनीतिक बुद्धिमत्ता का द्योतक था। इससे उसका केवल अधिकार हीं नहीं बढ़ा, वरन् उसके पास एक बड़ी भारी संरक्षित शक्ति भी हो गई। इस मिलिशिया का विशेष वर्णन आगे ग्यारहवें अध्यायमें 'राष्ट्रसंगठन' के वर्णन में किया जावेगा।

फासिस्ट ग्रैंड कौंसिल

इसके अतिरिक्त मुसोलिनी को इस समय एक विशुद्ध राजनीतिक फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल बनाने की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। वह जानता था कि प्रधानमंत्री होने के अतिरिक्त वह उस दल का नेता है, जिसने उसके साथ तीन साल तक इटली की गलियों में खूब युद्ध किया है।

अतएव उसने इस ग्रैण्ड कौंसिल में सब प्रकार के प्रतिनिधियों, मन्त्रियों, विभिन्न सार्वजनिक विचार वालों और विशेषज्ञों को रखा। स्वयं मुसोलिनी इसका सभापति बना। इस फ़ासिस्ट ग्रैंड

कौंसिल ने मुसोलिनी के शासन के प्रथम पाच वर्ष में राष्ट्र-निर्माण का बड़ा भारी कार्य किया।

पुलिस का पुनः संगठन

मुसोलिनी के सामने पुलिस के पुनः संगठन का कार्य भी शेष था। इससे पहिले इटली में तीन प्रकार की पुलिस होती थी। एक सामान्य पुलिस—इसमें राजनीतिक और अदालतों के दो विभाग होते थे; दूसरी रायल कैराबीनियरी अथवा खुफ़िया पुलिस और तीसरी रायल गार्डस्। रायल गार्डस् नीती द्वारा बनाई गई थी। इसमें बरख़ास्त सैनिकों को रखा गया था। इसका स्थान खुफ़िया पुलिस और सामान्य पुलिस के बीच में होता था। मुसोलिनी ने रायल गार्डस् को तुरन्त ही भंग करने का निश्चय किया। इनको भंग करते समय कुछ अशान्ति सी होती देख कर मुसोलिनी ने अफ़सरों को अत्यन्त कठोरता करने के अधिकार दे दिये। निदान छै घण्टों में ही पूरी शान्ति होगई। इन पचास सहस्र मनुष्यों के सशस्त्र दल को भंग करने में चार मरे और पन्द्रह बीस घायल हुए। अनेक अफ़सरों को प्रायः दूसरे २ काम दे दिये गये। सामान्य सिपाही शान्ति से अपने २ घर चले गए।

इटली के फ्री-मैसन लोग पहिले तो फ़ासिस्टा के मित्र थे, किन्तु मुसोलिनी के प्रधानमंत्री बनने पर वह उसके विरोधी हो गए। अतः मुसोलिनी ने फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल की मीटिंग में घोषणा की कि कोई भी फ़ासिस्ट फ्रीमैसन सभा का सदस्य नहीं बन सकता।

अन्य दलों का फ़ासिस्ट दल में मिलना

सन् १९२३ में कुछ वार्तालाप के पश्चात मुसोलिनी ने राष्ट्रीय (नेशनैलिस्ट) लोगों को भी फ़ासिस्टों में सम्मिलित कर लिया। राष्ट्रीय लोग फ़ासिस्टों के काली कमीज़ की अपेक्षा नीला कमीज़ पहिना करते थे। उनके उद्देश्य फ़ासिस्टों से बहुत कुछ मिलते थे। उनका केवल रचनात्मक कार्य में कुछ मतभेद था। अब फ़ासिस्ट शासन में वह भी भेदभाव को भूल कर फ़ासिस्ट दल में सम्मिलित हो गए।

अप्रैल १९२३ में लोकशाही दल (Popular Party) की कांग्रेस ट्यूरिन में हुई। बहुत वाद विवाद के पश्चात् उन्होंने फ़ासिस्टों का विरोध करने का ही निश्चय किया। मुसोलिनी ने अपने लोकशाही दल के मन्त्रियों को निमन्त्रण दिया कि वह उसके दल में आकर फ़ासिस्ट बन जावें। किन्तु उनके इस बात पर तयार न होने पर उनसे अस्तीफ़ा मांग लिया गया। इस प्रकार मन्त्रीमंडल में फ़ासिस्टों की संख्या और भी अधिक हो गई।

मुसोलिनी द्वारा इटली का दौरा

अब मुसोलिनी को यह जानने की इच्छा हुई कि जनता फ़ासिज़्म का कितना स्वागत करती है। उसने इस बात को जानने के लिये देश के प्रधान २ नगरों में स्वयं दौरा किया। वह मिलन, रोमाइन्या, वेनिस, पैडुआ, वाइसेंज़ा, सिसली, सारडीनिया, पेसेंज़ा और फ़्लोरेंस गया। इन सभी स्थानों में

उसका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। उसका स्वागत काली कमीज़ वालों की अपेक्षा साधारण जनता ने भी कम नहीं किया। जनता को अब विश्वास हो गया था कि उसकी एक सरकार है और एक नेता भी है। जनता इस समय वास्तविक स्वतन्त्रता का अनुभव कर रही थी।

सन् १९२४ का निर्वाचन

इस समय फ़ासिस्टों का विरोध फिर बढ़ गया। अनेक राजनीतिक दल उनका विरोध करने लगे। उनके ऊपर लुक छिप कर आक्रमण भी किये जाने लगे। मुसोलिनी ने इस समय आवश्यक कार्य करके पार्लमेंट को विसर्जित कर दिया और निर्वाचन के लिये ६ अप्रैल १९२४ का दिन नियत किया।

इस घटना से सारा विरोध बन्द हो गया। अब सब दल चैम्बर में अधिक से अधिक सफल होने का उद्योग करने लगे। नये निर्वाचन में फ़ासिस्टों को पचास लाख और शेष को बीस लाख वोट मिले। इस बात का सब को प्रमाण मिल गया कि अधिकांश इटली फ़ासिज़्म का समर्थक है। इस विजय के बाद मुसोलिनी का रोम में बड़ा भारी स्वागत किया गया।

समाजवादियों का विरोधी कार्य

सत्ताईसवीं पार्लमेंट २४ मई को पहली पहल खुली। इसमें इटली के राजा ने बड़ा प्रभावशाली भाषण दिया। समाजवादी अब भी मुसोलिनी के विरोधी थे। वह अपना विरोध प्रदर्शित करने के लिए इस सभा में उपस्थित नहीं हुए। ६ जून को

उनकी ओर से पार्लमेंट में फासिस्ट नीति की समालोचना की गई, जिसका मुसोलिनी ने ७ जून को समुचित उत्तर दे दिया। किन्तु समाजवादी किसी भी उत्तर से संतुष्ट नहीं होते थे। उनका युद्ध बराबर चलता रहा। तथापि उनको सदा ही नीचा देखना पड़ा। पार्लमेंट में उनके एक नेता का नाम मैटिओटी था। वह बड़ा भारी धनी और अच्छा वक्ता था। फ़ासिस्टों पर आक्रमण करने में वह कभी नहीं चूकता था। एक समय वह रोम से गायब हो गया। मुसोलिनी ने उसका पता निकालने के लिये रोम की सारी पुलिस लगा दी। अन्त में पता चला कि उसकी दूर के कुछ ऐसे फ़ासिस्टों ने हत्या करदी थी जिनका मुसोलिनी के दल से कोई सम्बन्ध न था। मुसोलिनी ने उनको कठोर स कठोर दण्ड दिलवाया।

किन्तु समाजवादियों को इससे लेशमात्र भी संतोष न हुआ। वह जून से लेकर दिसम्बर १९२४ तक बराबर फ़ासिस्ट विरोधी आन्दोलन करते रहे। इस समय आन्दोलन ने इतना भयंकर रूप धारण कर लिया कि दिसम्बर १९२४ में तो मुसोलिनी के मन्त्री-मण्डल के गिने चुने दिन ही शेष समझे जाने लगे थे। किन्तु मुसोलिनी ने इस पूरे समय भर अपनी शान्ति को भंग न होने दिया। उसने अपने शत्रुओं के साथ भी अन्याय न होने दिया।

समाजवादियों ने हड़तालों का भी प्रयत्न किया। मुसोलिनी ने हड़तालों का प्रबन्ध करने के लिये रोम की सड़कों में पल्टन

को घुमाना आरम्भ किया। सितम्बर १९२४ में मुसोलिनी ने इस प्रकार के कई क्षेत्रों का निरीक्षण किया।

मुसोलिनी ने २५ जनवरी १९२५ को चैम्बर में एक भाषण देकर अपने विरोधियों का मुंह ऐसा बन्द किया कि किसी को भी उत्तर देते न बना। उसने बतलाया कि यदि वह कठोर कार्यवाही करता तो विरोधियों को बोलने तक का अवसर न मिलता। उसने यह भी बतलाया कि इटली की जेलों में अब भी सैकड़ों फ़ासिस्ट हैं। नवम्बर और दिसम्बर में ग्यारह फ़ासिस्ट विरोधियों द्वारा मारे गये। एक का सिर कुचल दिया और एक ७३ वर्ष के बुड्ढे को दीवाल से उठा कर फेंक दिया गया। एक माह में तीन स्थानों पर आग लगाई गई। यहां तक कि एक पल्टन के अफ़सर तक को घायल कर दिया गया। सैनिक तो अनेक घायल कर दिये गये। मुसोलिनी ने पार्लमेंट को बतलाया कि अब ४८ घन्टों के अन्दर २ सारे आंदोलन को समाप्त कर दिया जावेगा।

इसके पश्चात् मुसोलिनी ने ४८ घन्टों के अन्दर ही विरोधियों का मुंह बन्द कर दिया। इस अवसर पर उसके उदार दल वाले मंत्रियों ने अस्तीफे देने चाहे। मुसोलिनी ने उनके स्थान में तीन फ़ासिस्ट मन्त्री नियत कर दिये। जनवरी के अन्त तक विरोधियों का कहीं पता भी न रहा।

अब मुसोलिनी ने राष्ट्रीय विधान के पुनः संगठन की ओर ध्यान दिया। उसने इस विषय के अठारह विशेषज्ञों की एक उपसमिति इस विषय में नियम बनाने के लिये बना दी। इस

कमीशन की शिफारिशों को पार्लमेंट ने बहुत पसन्द किया। इस कमीशन का नाम 'जेन्टाइल कमीशन पड़ा। इसकी सिफ़ारिशों को तुरन्त ही पास करके कानून का रूप दे दिया गया। इन सिफ़ारिशों का वर्णन आगे ग्यारहवें अध्याय में 'कार्पोरेट राज्य' के वर्णन में किया जावेगा।

इसके पश्चात गुप्त समितियों के विरुद्ध नियम बनाया गया, जिससे फ्रीमैसन लोग अधिक विरोध न कर सकें।

मुसोलिनी की बीमारी

फर्वरी १९२५ में मुसोलिनी बीमार हुआ। रोग ने क्रमशः इतना भयंकर रूप धारण कर लिया कि वह चालीस दिन तक घर से बाहिर न निकल सका। इस समय उसके शत्रु उसके अच्छा न होने की आशा से बड़े प्रसन्न हो रहे थे। इधर फासिस्ट लोग भी इस समाचार से बड़े चिंतित थे। वह मुसोलिनी का दर्शन पाने के लिये अधीर हो रहे थे।

अन्त में जब वह मार्च के अन्त में फ़ासिज्म के छटे जन्म दिवस पर पहिली पहल रोम में पैलेज़ो चीगी के बारचे पर दिख-लाई दिया तो फ़ासिस्ट लोगों के हर्ष का ठिकाना न रहा। उसका चेहरा इस समय भी निर्बलता के कारण पीला हो रहा था। चतुर डाक्टरों के उद्योग से वह शीघ्र ही चंगा हो गया।

मुसोलिनी की हत्या के प्रयत्न

इसके पश्चात् उसके प्राण लेने का यत्न किया गया। ज़ानी-बोनी एक समाजवादी था। उसको ज़ेकोस्लोवाकिया के समाज-

वादियों ने छै लाख फ्रैंक का चेक फासिस्ट विरोधी आन्दोलन चलाने के लिए भेजा थे। जानीबोनी ने विजय स्मृति के दिन अपने कार्य को पूरा करने का निश्चय किया। वह पैलैज़ो चीगी के ठीक सामने ड्रैगोनी होटल में छिप गया। मुसोलिनी पैलैज़ो चीगी के बारजे में प्रायः खड़ा होकर सार्वजनिक जुलूस आदि देखा करता था। उसने खुफिया पुलिस की निगाह से बचने के लिए मैजर के वस्त्र पहिन रखे थे। किन्तु भेद छिपा न रह सका और वह अपराध करने के एक घंटा पूर्व अपने साथी जेनेरल कैपेलो सहित पकड़ा गया।

इसके पश्चात् अप्रैल १९२६ में जब मुसोलिनी ने चिकित्सा की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्घाटन किया तो एक पागल जैसी अंग्रेज महिला ने उसकी मोटरकार के पास आकर उस पर गोली चलाई, जिससे उसकी नाक पर कुछ चोट आई। मुसोलिनी बाल २ बच गया। मुसोलिनी ने उसको कोई दण्ड न देकर केवल इटली से बाहिर करवा दिया।

मुसोलिनी की नाक का घाव अच्छी तरह ठीक भी न हो पाया था कि उसके ऊपर एक और आक्रमण किया गया। यह आक्रमण ल्यूसेटी नाम के एक अराजक ने किया था। यह व्यक्ति फासिज्म और मुसोलिनी से अत्यन्त घृणा करता था और इस अपराध के लिए फ्रांस से आया था। वह मुसोलिनी के आने की पोर्टा पिआ के सामने विआ नोमैनटाना में प्रतीक्षा किया करता था। भयानक बम लिए हुए वह रोम में आठ दिन रहा।

उसने पैलेज़ो चीगी को जाते हुए मुसोलिनी की मोटर को पहचान कर उस पर बम फेंका। किन्तु बम मोटर के पिछले कोने से लग कर पृथ्वी पर गिर कर फट गया, जिससे कई निर्दोष व्यक्ति घायल होकर अस्पताल पहुंचाये गए। मुसोलिनी इस बार भी बच गया।

इस व्यक्ति ने गिरफ्तार होने पर भी फ़ासिज्म के प्रति घृणा प्रदर्शित की। मुसोलिनी इस समय अंग्रेज़ी राजदूत से मिलने जा रहा था। वह अत्यन्त शांत भाव मे बातचीत कर ही रहा था कि इस दुर्घटना के कारण सड़क पर शोर मच गया और तब जाकर अंग्रेज़ी राजदूत को इस दुर्घटना का पता चला।

मुसोलिनी के प्राण लेने का एक और प्रयत्न ३१ अक्तूबर १९२६ को बोलोइग्ना में किया गया था।

मुसोलिनी बेलोइग्ना के म्यूनिसिपल मैजिस्ट्रेट आरपीनैटी के पास बैठा था और सारी जनता उसको सलामी देने के लिए पंक्तिबद्ध खड़ी थी कि एक नवयुक अराजक ने भीड़ में से निकल कर उस पर गोली चलाई। यद्यपि इस गोली से मुसोलिनी का कोट जल गया, किन्तु चोट उसके बिल्कुल नहीं आई। नवयुवक अराजक की उत्तेजित भीड़ ने उसी समय ऐसी मरम्मत की कि उसको पूरा फल मिल गया।

मुसोलिनी की दमन नीति

इन घटनाओं से मुसोलिनी का क्रोध बढ़ता जाता था। वह समझ गया कि विरोधियों के इन कार्यों को एक दम समाप्त करने

का यही उपयुक्त अवसर है। यह स्पष्ट था कि उस समय गुप्त सभाओं, विरोधी पत्रों और अन्य राजनीतिक संस्थाओं का उद्देश्य केवल मुसोलिनी के प्राण लेना था; क्यों कि उनका विश्वास था कि मुसोलिनी के बिना फ़ासिज्म जीवित ही नहीं रह सकता। उनके इस उद्देश्य को जनता भी समझती थी। अतः उसने ऐसे अपराधियों को गुरुतर दण्ड देने की मांग की। क्रोधित फ़ासिस्ट सभी षड़यन्त्रकारियों को दण्ड दिलाना चाहते थे।

इस समय बल की नीति को बरतना आवश्यक था। मुसोलिनी ने आंतरिक मन्त्री के कार्य को अपने हाथ में लेकर राष्ट्र की रक्षा करने के कानून बनाए। उसने विरोधी समाचार पत्रों को बंद कर दिया। इस प्रकार के आतंकवादियों को खोज २ कर निकालने के लिए प्रांतीय कमीशन बिठलाए गए। इस कठोर दमन का फल तुरन्त देखने में आया। इस समय इटली की जनता का मत इस विषय में बदल गया है। इस समय वहां बहुत थोड़े व्यक्ति नज़रबन्द हैं। आज्ञा न पालन करने की इच्छा वाले भी बहुत कम हैं। इसके परिणामस्वरूप इटली में थोड़े दिनों में ही पुराने सभी राजनीतिक दल समाप्त हो गए।

मुसोलिनी की परराष्ट्रनीति

कूटनीतिज्ञता आज कल के यूरोप की विशेषता है। यूरोप के प्रायः सभी राज्यों की यह दशा है कि वह कहते कुछ हैं, उनके मन में कुछ और होता है तथा करके वह कुछ और ही दिखलाते हैं। आज कल की राजनीति में इसी को कूटनीति, राजनीति

अथवा पालिसी कहते हैं। किन्तु मुसोलिनी इस नियम का अपवाद है। उसे जो कुछ करना होता है स्पष्ट कह देता है।

'मन मन भाये मुंडी हिलाये' की नीति से उसे घृणा है। यदि उसकी राज्य विस्तार की नीति है तो वह इसको छिपाता नहीं। वह किसी देश के निवासियों का रक्षक होने का स्वांग भर कर उपनिवेशों पर अधिकार नहीं करता, वरन् वह स्पष्ट कहता है कि "छोटा सा इटली देश हमारी बढ़ी हुई जनसंख्या के लिये पर्याप्त नहीं है। इस लिये हमको उपनिवेशों की आवश्यकता भोजन की आवश्यकता से कम नहीं है।"

मुसोलिनी के विधान में इस स्पष्ट नीति से काम न लेने वाले की गुंजायश नहीं है। अपने विरोधियों को तो वह परराष्ट्र विभाग में टिकने ही नहीं देता।

मुसोलिनी के अधिकारारूढ़ होते समय अक्तूबर १९२२ में काउंट स्फोर्ज़ा पेरिस में इटालियन राजदूत था। उसने विनयानुशासन पर कुछ ध्यान न देकर फ्रांस में मुसोलिनी की नीति की आलोचना करना आरंभ कर दिया। इस पर मुसोलिनी ने उसको रोम बुलाकर तुरंत पदच्युत कर दिया। इसी व्यक्ति ने फ्यूम के मामले पर युद्धवादियों के मार्ग में रोड़े अटकाए थे।

सन्धियों पर पुनर्विचार

अपने आधीन कर्मचारियों को ठीक करके मुसोलिनी ने अब उन राजनीतिक समस्याओं की ओर ध्यान दिया, जिन पर इटली का भविष्य निर्भर था। इटली के पिछले मन्त्रीमण्डलों ने उसके मार्ग

में काफ़ी कांटे बिछा दिये थे। उन्होंने अन्य देशों के साथ ऐसी अनेक सन्धियां कर डाली थीं, जो इटली के लिये किसी प्रकार हितकर नहीं थीं।

यूगोस्लैविया के साथ की हुई रैपैलो सन्धि का घाव तो इटली वालों के हृदय में अब भी बना ही हुआ था। मुसोलिनी उस सन्धि पर दोबारा विचार करके उसको सुधारना चाहता था।

उसने १६ नवम्बर १९२२ को चैम्बर के अपने भाषण में इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला था।

नवम्बर १९२२ में मुसोलिनी ने लोसान कांफ्रेंस में फ्रांस के पोएंकारे और ब्रिटेन के लार्ड कर्जन से बराबरी के नाते भेंट की। उसने रोमानिया के परराष्ट्रमन्त्री तथा संयुक्त राज्य अमरीका के रोम स्थित राजदूत के साथ भी बहुत कुछ विचार विनिमय किया।

मुसोलिनी की स्वीजरलैंण्ड की इस यात्रा से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इटली की साख अच्छी हो गई। इसके अतिरिक्त मुसोलिनी से प्रत्यक्ष वार्तालाप करके उसके स्वभाव का सबको पता लग गया।

इसके कुछ समय पश्चात् जब मुसोलिनी लार्ड कर्जन से मिला और इंगलैण्ड गया तो उसका बड़ा भारी स्वागत किया गया और उसके साथ अत्यन्त सम्मान पूर्वक बातचीत की गई।

इस समय मित्रराष्ट्रों का हर्जाने के प्रश्न पर जर्मनी के साथ झगड़ा चल रहा था। मुसोलिनी ने इस विषय पर मिस्टर चाइल्ड (Mr. Child) और रोम के अंग्रेजी राजदूत से वार्तालाप किया। मुसोलिनी ने इस समस्या को सुलझाने के लिये एक उपाय

निकाला। यद्यपि मित्रराष्ट्रों में इस उपाय के सम्बन्ध में काफ़ी रुचि उत्पन्न हो गई थी, किन्तु फ्रांस की रूर प्रदेश पर अधिकार करने की इच्छा के कारण इसके ऊपर अधिक विचार न किया जा सका। यदि इस उपाय में फ्रांस सहयोग देता, तो न केवल हर्जाने का प्रश्न तय हो जाता वरन् संसार भर की आर्थिक समस्या भी हल हो जाती।

नई २ व्यापारिक सन्धियां

मुसोलिनी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर सदा आर्थिक दृष्टि से विचार किया करता है। इसी कारण उसने १९२३ में अनेक देशों के साथ व्यापारिक सन्धियां कीं। फर्वरी १९२३ में उसने ज़ूरिच में स्वीज़र्लैंण्ड के साथ सन्धि की। वाशिंगटन सन्धि को उसने फिर नया बल देकर नौसेना के शस्त्रास्त्रों के कम करने पर ज़ोर दिया। इसके अतिरिक्त उसने जेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, स्पेन और फ्रांस के साथ भी व्यापारिक सन्धियां कीं। सोवियट रूस के साथ पहिले पहल उसी ने व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया।

इसके पश्चात् उसने अपने स्वदेशवासी राजदूतों और कौंसलों के पुन: संगठन की ओर ध्यान दिया।

बजट का नियन्त्रण

यह पहिले बताया जा चुका है कि मुसोलिनी के शासन भार संभालते समय इटली के बजट में इतना घाटा था कि राष्ट्र दिवाले की ओर जा रहा था। इटली के सिक्के का मूल्य विदेशों में गिरने से स्पष्ट था कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में इटली की साख कम हो गई थी।

मुसोलिनी ने बजट को ठीक करने के लिये पहिले व्यर्थ व्यय समझे जाने वाले मदों की कमी करके खर्च को घटाया। फिर उसने टैक्स देरी से देने वालों अथवा रोकने वालों पर कठोरता करके कोष को भरा। उसने शासन के प्रत्येक विभाग में मितव्ययिता से काम लिया। इस कार्य में उसको अनेक कर्मचारियों को प्रथक भी करना पड़ा। इसके अतिरिक्त मुसोलिनी के सामने विदेशी राष्ट्रों का ऋण चुकाने की समस्या भी थी। इस कार्य के लिए उसने डे स्टेफेनी नामक एक फासिस्ट अर्थशास्त्री को नियुक्त किया। यह व्यक्ति खर्च कम करने और आय के नये २ साधन बढ़ाने में बड़ा कुशल था।

मुसोलिनी एक ओर इस प्रकार मितव्ययिता से काम ले रहा था तो दूसरी ओर वह महायुद्ध के अपाहिजों, अनाथों और विधवाओं के प्रति भी अपने कर्तव्य का पालन कर रहा था। उसने पूर्ववर्ती प्रधान मन्त्रियों की इस विषय की उदासीनता की नीति को त्याग कर उन सब के लिये पेंशनें नियत करदीं।

राष्ट्र की आर्थिक दशा को ठीक करने के लिये मुसोलिनी न देश के धनी व्यक्तियों के ऊपर बड़े २ कर लगाये। मुसोलिनी साम्यवादियों के समान न तो व्यक्तिगत सम्पत्ति ही का शत्रु है और न वह धनियों द्वारा निर्धनों का शोषण ही पसन्द करता है। वह दोनों का उपयोग राष्ट्रीय जीवन में अधिक से अधिक करना चाहता है। अपनी इसी नीति के कारण उसने धनियों पर अधिक कर लगाते हुए भी उनको उत्तराधिकार के अधिकार से वंचित नहीं किया।

युद्धऋण की समस्या का हल

इन सब योजनाओं का परिणाम यह हुआ कि उसने सन् १९२४ के अन्त तक न केवल अपने बजट को ही ठीक कर लिया, वरन् सन् १९२५-२६ के आर्थिक वर्ष में उसने सतरह करोड़ की बचत भी कर ली। इससे इटली की साख अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में अधिक हो गई। सन् १९२५ और १९२६ में वाशिंगटन और लन्दन के युद्ध ऋण की समस्या को हल करने में सहायता देकर तो मुसोलिनी ने सभी यूरोपीय राज्यों को आश्चर्य में डाल दिया।

इस समय डे स्टेफैनी के अस्तीफे के कारण मुसोलिनी ने अर्थ विभाग का काम वोल्पी (Volpi) को दिया। इस समय यूरोप के सभी राज्य युद्धऋण को घटाने के लिये संयुक्तराज्य अमरीका और इंगलैंड से अनुरोध कर रहे थे। मुसोलिनी ने भी सन् १९२५ में वोल्पी की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मण्डल वाशिंगटन भेजा। इन लोगों के उद्योग से इस प्रकार का समझौता हो गया कि जिससे अमरीका की जनता भी संतुष्ट हो गई और इटली के अधिकार भी सुरक्षित रहे।

२७ जनवरी १९२६ को युद्धऋण के विषय में इटली का इंगलैंड से भी समझौता हो गया। इस विषय में इटली ने अमरीका तथा इंगलैंड से नई संधियां कीं।

इस समय इटली में वह दृश्य देखने में आया, जो किसी देश के इतिहास में नहीं मिलता। इटली के धनियों ने चन्दा करके

अमरीका के राष्ट्रीय ऋण की पहिली किश्त को स्वयं ही चुका दिया।

इटली के सिक्के की रक्षा

यद्यपि इससे इटली की साख अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में कुछ अच्छी हो गई थी, किन्तु इटली के सिक्के लीरा का भाव अब भी पौंड की अपेक्षा गिरा हुआ ही था। मुसोलिनी ने देश की इस आपत्ति से रक्षा करने के लिये उसके कारणों की खूब जांच बीन करके अगस्त १९२६ में इटली वासियों के सम्मुख पेसेरो नगर में एक भाषण दिया। उसने घोषणा की कि वह इटली के लीरा की प्रत्येक संभव उपाय से रक्षा करेगा। इसके पश्चात् उसने अनेक प्रकार के उपायों से इटली की आर्थिक दशा को ठीक किया। अंत में दिसंबर १९२७ में उसने लीरा का भाव अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार के मुकाबले में ठीक करही लिया।

आज न केवल इटली का, वरन् उनके ग्रामों, कम्यूनों और प्रांतों तक का बजट ठीक २ संतुलित है। उसके आयात निर्यात को लीरा के भाव के कारण लेशमात्र भी हानि उठानी नहीं पड़ती। इस समय इटली बराबर आर्थिक उन्नति के मार्ग पर है। युद्ध-ऋण के विषय में तो आज केवल इटली ही एक ऐसा राष्ट्र है, जिसने अभी तक कभी अपनी किश्तें समय पर देने में आनाकानी नहीं की।

श्रमिकों की दशा

यद्यपि मुसोलिनी साम्यवाद और समाजवाद का शत्रु है किन्तु साथ ही वह श्रमिक वर्ग का मित्र भी है। उसने इटली के उद्योगधन्धों के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम तयार किया है। इसी कारण यह कहा जा सकता है कि सबसे कम साधन होते हुए भी आज इटली की उन्नति की गति अन्य सब यूरोपीय राज्यों से अधिक तेज़ है। मज़दूरों की दशा तो इटली में बहुत ही अच्छी है। वहां उनसे प्रतिदिन आठ घंटे से अधिक काम नहीं लिया जा सकता। वहां प्रत्येक कारखानेदार को प्रत्येक श्रमिक का अनिवार्य रूप से बीमा कराना पड़ता है। स्त्रियों और बच्चों से कारखानों में काम नहीं लिया जा सकता। श्रमिकों को प्रत्येक प्रकार की सहायता दी जाती है। काम के बीच में उनके आराम का प्रबन्ध किया जाता है। वहां प्रत्येक बालिग़ को शिक्षा दी जाती है और प्रत्येक का क्षयरोग का बीमा प्रथक् किया जाता है। उनको वेतन भी जीवन के निर्वाह योग्य पर्याप्त मिलता है। उनका दुर्घटना का बीमा किया जाता है। रोगी होने पर उनको हर्जाना दिया जाता है और उनकी वृद्धावस्था का प्रथक् प्रबन्ध किया जाता है। मुसोलिनी ने इटली के श्रमिकों में इस प्रकार के भाव भर दिये हैं कि वह काम को कष्ट समझ कर नहीं, वरन् आनन्द समझ कर करते हैं। इस प्रकार इटली के श्रमिकों की दशा संसार के किसी भी देश के श्रमिकों से कम अच्छी नहीं है।

इटली भर के श्रमिक मुसोलिनी की इच्छानुसार २१ अप्रैल (रोम के जन्म दिन) को श्रम दिवस (Labour Day) मनाते हैं। मुसोलिनी ने शासन हाथ में लेने के कुछ दिनों के पश्चात् फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल से श्रमिकों के सम्बन्ध में कुछ विशेष नियम बनाए, जिनको श्रमिक अधिकारपत्र (Labour Charter) कहा जाता है। इस अधिकारपत्र में तीस पैरे हैं। इसकी संसार भर में प्रशंशा की गई है। इस श्रमिक अधिकारपत्र के अनुसार श्रमिकों के मैजिस्ट्रेट तक प्रथक् होते है। इसका वर्णन आगे ग्यारहवें अध्याय में किया जावेगा।

मुसोलिनी के इस उद्योग के कारण वहां राष्ट्रीय उत्पत्ति के प्रथक् २ विभागों के प्रथक् २ कारपोरेशन बन गए, जिनका वर्णन आगे किया जावेगा। इन कारपोरेशनों के द्वारा हाथ तथा मस्तिष्क दोनों ही प्रकार के श्रम की रक्षा करके श्रमिकों को सहायता दी जाती है। फ़ासिस्ट राज्य का नागरिक स्वार्थी व्यक्ति न होकर कारपोरेशन की उन्नति में सब प्रकार से सहयोग देता है। फ़ासिस्ट राज्य में नागरिक का महत्व उसकी इक्कीस वर्ष की अवस्था और वोट देने के अधिकार के कारण नहीं, वरन उसके श्रम, विचार और उत्पत्ति के कारण है।

इस कारपोरेटिव संगठन में सभी राष्ट्रीय कार्य होते हैं। इन सबको राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अधिकार मिला हुआ है। यह कारपोरेशन अपने योग्य नागरिकों को अपना प्रतिनिधि चुनते हैं, जिनको फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल डाइरेक्टर बना देती है।

सैनिक सुधार

यह बतलाया जा चुका है कि मुसोलिनी ने युद्धमंत्री जेनेरल आरमैण्डो डिआज़ को बनाया था। ५ जनवरी १९२३ को जेनेरल डिआज़ ने सेना के सुधार का अपना पूरा कार्यक्रम मंत्रीमण्डल के सम्मुख उपस्थित किया।

इसके अनुसार पहले हवाई सेना का फिर नये सिरे से सङ्गठन किया गया। हवाई जहाज़ों के ठहरने के स्टेशन, नये २ एंजिन उड़ाके, कारख़ाने और शिल्पी सभी कुछ नये सिरे से बनाने पड़े। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों के परिश्रम से इटली की हवाई सेना ब्रिटेन, जर्मनी, रूस और फ्रांस के बाद महत्वपूर्ण गिनी जाने लगी।

जलसेना में भी मुसोलिनी ने बहुत सुधार किया।

स्वेच्छा सेना को १६० पल्टनों में बांट कर उसके उपर भी अच्छे २ योग्य अफ़सर नियत किये गये।

इटली की सेना का विस्तृत वर्णन भी इस ग्रन्थ में आगे ग्यारहवें अध्याय में किया जावेगा।

पेंशनें और पादड़ी

पुरानी सरकार की अर्थनीति के कारण बजट में बराबर घाटा रहता था, जिससे पुराने सरकारी कर्मचारियों को बहुत कम पेन्शन दी जाती थी। मुसोलिनी ने राष्ट्रीय बजट को ठीक करके इन लोगों की ओर ध्यान दिया और उनको वृद्धावस्था में भरण पोषण योग्य पर्याप्त पेन्शन दी।

मुसोलिनी ने पादड़ियों के लिये भी वेतन निश्चित कर दिया। इस समय इटली में साठ सहस्र पादड़ी थे। इनके कारण राज्य और धर्म का झगड़ा प्राय: खड़ा हो जाया करता था। किन्तु अब वह राजनीति में लेशमात्र भी हस्तक्षेप न करके इटली की जनता को उसके धार्मिक कार्यों में सहायता दिया करते हैं।

आवागमन के साधन

मुसोलिनी ने देश के आवागमन के साधनों पर भी विशेष ध्यान दिया। उसने सड़क आदि बनाने के लिये प्रथक् २ विभागों की रचना करके दक्षिण में अनेक नई सड़कें बनवाईं। अनेक स्थानों पर उसने नई २ रेल लाइनें और नये २ बन्दरगाह बनवाये। इसके अतिरिक्त उसने डाकखानों, तारघरों और टेली-फोन आदि की दशा में भी बहुत कुछ सुधार किया।

मुसोलिनी ने रोम को भी अधिक से अधिक सुन्दर बनाने में कम उद्योग नहीं किया। उसने उसमें नई २ सड़कें बनवाईं। उसके बन्दरगाह को तो और भी अधिक सुन्दर बना दिया गया।

नौवां अध्याय

राष्ट्रनिर्माता मुसोलिनी और उसका व्यक्तित्व

संसार के अन्दर विशेष गुणयुक्त व्यक्ति ही उन्नति किया करते हैं। मुसोलिनी की इस सार्वतोमुखी उन्नति को देखकर यह प्रायः पूछा जाता है एक निर्बल देश को बलवान बनाने वाला तथा कुछ मुट्ठी भर युद्धप्रिय नवयुवकों को संसार की प्रधानशक्ति बनाने वाला यह व्यक्ति किस प्रकार का है?

मुसोलिनी का व्यक्तित्व

मुसोलिनी के विषय में एक बात निर्विवाद है कि वह जनता का जन्मजात नेता है। वह जनता के मनोविज्ञान को इतना अधिक जानता है कि अपने भाषण से तुरन्त ही उनके हृदय पर अधिकार कर लेता है। मुसोलिनी दीर्घसूत्री नहीं है। वह कठिन से कठिन समस्या का भी शीघ्रता पूर्वक हल निकाल लेता है

और फिर उसके अनुसार तुरन्त ही कार्य कर डालता है। उसके व्यक्तित्व में एक विचित्र आकर्षण है। संगठन और विनयानुशासन की उसमें उच्च कोटि की योग्यता है।

मुसोलिनी बड़ा भारी साहसी है। उसके महायुद्ध के कार्य तथा बाद के जीवन के उसके साहस पूर्ण कार्य इस बात के साक्षी हैं। साहस उसके प्रत्येक कार्य में देखने में आता है। जिस समय इटली में जनता हवाई जहाज़ के नाम से भी डरती थी, उसने स्वयं हवाई जहाज़ चलाना सीखा। यहां तक कि हवाई दुर्घटना में चोट खाने पर भी सीखना न छोड़ा। मोटर चलाने में तो वह इससे भी अधिक साहस का परिचय देता रहा है। मिलन की गलियों मे उसको प्राय: ६५ मील प्रति घन्टे की रफ़्तार से मोटर दौड़ाते हुए देखा गया है। खिलाड़ी भी वह अत्यन्त उच्च कोटि का है। लड़ाका वह लाखों में एक है। उसके हाथ में तलवार होने पर उसका मुकाबला अच्छे २ नहीं कर सकते।

मुसोलिनी कोरा सिद्धान्तवादी ही नहीं है। वह प्रत्येक सिद्धांत को कार्य रूप में भी परिणत किया करता है।

आत्म-विश्वास का तो वह समुद्र है। राष्ट्रीयता उसकी नस २ में भरी हुई है। उसका प्रत्येक विचार और प्रत्येक कार्य केवल राष्ट्रीय होता है। अपने राष्ट्र की उन्नति के अतिरिक्त उसको किसी बात का लोभ नहीं है। उसकी एक मात्र अभिलाषा इटली को महान् राष्ट्र, सम्मानित तथा इतना बलवान देखने की है कि दूसरे राष्ट्र उससे भयभीत हों। वह उसको उसके प्राचीन इतिहास के

योग्य आसन पर बिठला देना चाहता है। वह जो कुछ करता है, व्यक्ति के लिए नहीं, वरन् सारी जनता के लिये करता है।

रोमन साम्राज्य के बाद इटली की जनता की प्रकृति इतनी विद्रोही हो गई थी कि वह कई शताब्दियोंसे किसी नियम और विनयानुशासन में रहना भूल गई थी। मत्सीनी, गारीबाल्डी और कावूर भी इटालियन जनता की उसी प्रवृत्ति के कारण अपने उद्योग में अधिक सफल नहीं हो सके। किन्तु मुसोलिनी को केवल एक लगन है। वह इटली को केवल अपने नये बदले हुए राष्ट्रीय रूप में ही देखना चाहता है। उसने सारे राष्ट्र में राष्ट्रीयता का वह मन्त्र फूंका है कि आज इटली की सारी जनता में राष्ट्रीयता की लहर प्रवाहित हो रही है। जो काम बड़े २ राजनीतिज्ञ कई २ शताब्दियों में न कर सके थे उसको मुसोलिनी ने कुछ वर्षों में ही कर दिखलाया। आज इटली की जनता एक राष्ट्र के नाम पर सुव्यवस्थित रूप से सुसंगठित है। मुसोलिनी ने इटली की सुव्यस्थित जनता को वास्तव में एक राष्ट्र बना डाला है और इसी कारण हमने भी उसको इस ग्रन्थ में 'राष्ट्रनिर्माता' इस नाम से सम्मानित किया है।

एक राज्य का प्रबन्ध करना एक बात है; राज्यपर शासन करने वाले को राजनीतिज्ञ कहते हैं; किन्तु राज्य अथवा राष्ट्र का निर्माण करना बिल्कुल दूसरी बात है। इस प्रकारके व्यक्ति का आसन राजनीतिज्ञों से कहीं ऊंचा होता है। वास्तव में अपनी उसी कुशलता के कारण आज संसार के आधुनिक इतिहास में मुसोलिनी और हिटलर का आसन राजनीतिज्ञों से कहीं ऊपर है।

इतना होने पर भी मुसोलिनी को अपनी योग्यता का अभिमान नहीं है। वह प्रत्येक व्यक्ति के परामर्श को सुन कर उससे लाभ उठाने को तयार रहता है। यहां तक कि वह अपने विरोधियों तक की सम्मति को सुनता है। मुसोलिनी को कूटनीति बिल्कुल पसंद नहीं। वह जो कुछ कहता है साफ़ कहता है। इसी कारण यूरोप के अन्य राजनीतिज्ञ उसको कम पसंद करते हैं; क्योंकि कूटनीति वर्तमान यूरोप की एक बड़ी भारी विशेषता है। उसको यदि उपनिवेशों की आवश्यकता है तो वह उसको स्पष्ट शब्दों में प्रगट करता है। वह ऐबीसीनिया पर वहां के निवासियों का रक्षक बनने का ढोंग दिखला कर अधिकार नहीं करता, वरन् इटालियों की फैलने की इच्छा को पूरी करने के लिये अधिकार करता है। मुसोलिनी अपनी इस नीति को अपने कई व्याख्यानों में स्पष्ट कर चुका है।

जनता की मनोवृत्ति का वह खूब अध्ययन करता है। नवयुवकों से उसे बड़ा प्रेम है। उनका वह पूरा विश्वास करता है। उनके मानसिक, शारीरिक तथा आत्मिक विकास के लिये उसने प्रत्येक प्रकार के साधन जुटाए हैं। उसका विश्वास है कि इटली की सारी जनता उससे प्रेम करती है।

मुसोलिनी विनयानुशासन का पालन बड़ी कठोरता से करता है। इस विषय में वह अपने अनुयाइयों पर भी रियायत नहीं करता।

मुसोलिनी समय की गति को खूब पहिचानता है। परि-

स्थिति के बदल जाने पर वह अपनी कार्य प्रणाली को भी उसी के अनुरूप बदल लेता है।

मुसोलिनी के आचरण में बिल्ली के पंजों के जैसी शिकार तलाश करते समय की मंदगति है। वह बिल्लियों को पसंद भी बहुत करता है। उनकी स्वतन्त्रता, उनकी निर्णयात्मक शक्ति, उनकी न्याय-बुद्धि सभी कुछ उसको पसन्द हैं। उसको शेर और शेरनी भी बहुत पसन्द हैं। वह उनके साथ खेलना बहुत पसन्द करता है। एक बिल्ली जैसी ईरानी शेरनी से उसे विशेष प्रेम है।

मुसोलिनी का व्यक्तित्व बड़ा दुरुह है। वह अत्यन्त गंभीर है। अतएव उसको समझना अत्यंत कठिन है। संभवतः उसको सबसे अधिक उसकी कन्या एडा (Edda) समझती है।

मुसोलिनी की आर्थिक दशा बहुत अच्छी नहीं है। वह बहुत कम वेतन लेता है। उसके बीवी बच्चे भी साधारण रूप में ही रहते हैं।

किन्तु राजनीतिक बुद्धि की उसमें कमी नहीं हैं। वह अपने आधीन कर्मचारियों के काम की भी अचानक जांच कर लेता है।

कार्यशीलता मुसोलिनी के अन्दर लबालब भरी हुई है। वह कभी बेला बजाता है, कभी परिश्रम करता है, कभी खेलता है, कभी विनोद करता है, कभी साहस के काम करता है, कभी पशुओं से खेलता है और कभी सेनाओं को सुन्दर २ संगीत के साथ कर्तव्यपथ में अग्रसर करता है। जल, स्थल और आकाश सभी में उसकी कार्यशीलता का उदाहरण देखने को मिल सकता

है। वह सदा प्रसन्न रहता है। युद्ध भी उसके लिये खेल ही है।

मुसोलिनी को सभी खेल पसन्द हैं। मोटरकार के चलाने का उसको बेहद शौक है। उसकी मोटर चलाने की शीघ्र गति को देख कर तो न केवल उसके साथियों को, वरन् बड़े २ पुराने और अनुभवी ड्राइवरों को भी अश्चर्य होता है। हवाई जहाज़ का भी उसको अच्छा शौक है। जिस समय वह हवाई जहाज़ चलाना सीखता था तो एक बार वह काफी ऊपर से गिर गया था, किन्तु इससे हताश होने के बजाय उसने दुगने उत्साह से हवाई जहाज़ का काम सीखा था। घोड़े की सवारी का भी उसको बड़ा भारी शौक है। फ़ुर्सत के समय वह बाढ़ लगाया करता है। इस में उसको व्यायाम का आनन्द आता है। कभी २ वह बेला बजा कर अपना दिल बहलाया करता है। प्राचीन कवियों में उसे दांते (Dante) और प्लैटो (Plato) की कविताएं बहुत पसन्द हैं।

वह शराब या सिगरट नहीं पीता। ताश या ताश जैसे और खेल भी उसको पसन्द नहीं हैं। इस प्रकार के खेलों में समय और धन नष्ट करने वालों पर उसे दया आया करती है।

भोजन की तड़क भड़क भी उसको पसन्द नहीं है। वह निर्धनों के जैसा अत्यन्त सादा भोजन करता है।

मुसोलिनी प्रसिद्ध सेनापति नेपोलियन के समान साढे पांच फुट लम्बा है। उसका शरीर अत्यन्त बलिष्ठ और सुदृढ़ है। वह प्राय: फ़ासिस्ट मिलिशिया के कारपोरल की वर्दी पहिने रहता है। वह रोम नगर के मध्य भाग में पैलैज़ो वेनिज़िआ

(Palazzo Venezia) नामक महल में बैठ कर काम किया करता है। बीच में विला टारलोनिया (Villa Torlonia) नामक अपने प्रमोद-उद्यान में दस मिनिट के लिये जाया करता है। यहां से मोटर में बैठ कर पैलोज़ो वेनीज़िया दस मिनट में जा सकते हैं। मुसोलिनी को यह उद्यान और इसकी कोठी बहुत पसन्द है।

मुसोलिनी की पत्नी पहिले तो कई वर्ष तक मिलन में रही, किन्तु अब वह भी रोम में आ गई है और विला टारलोनिया में ही रहती है।

वर्तमान डिक्टेटरों में मुसोलिनी ही एक ऐसा व्यक्ति है, जिसको अपने सम्बन्धियों तथा पारिवारिक जीवन का पूरा ध्यान है। नेपोलियन और हिंडेनबर्ग के समान मुसोलिनी भी अपने सम्बन्धियों का ही अधिक विश्वास करता है। उसका भाई आरनैल्डो कई वर्ष तक उसका एकमात्र मित्र रहा। रोम से वह उसके साथ मिलन में (जहां वह पोपोलो डीटैलिया का सम्पादक था) प्रायः प्रतिदिन टेलीफ़ोन पर बातचीत किया करता था। उसकी आकस्मिक मृत्यु से मुसोलिनी को बड़ा भारी आघात पहुंचा है। इस समय उसकी सबसे अधिक प्रेम पात्री उसकी पुत्री एडा (Edda) है। उसका पति काउंट गैलीत्सो चानो (Count Galeazzo Ciano) भी मुसोलिनी का प्रधान बिश्वासपात्र है। उसने ऐबीसीनिया युद्ध में बड़ा भारी काम किया था। मुसोलिनी का बड़ा पुत्र विटोरिओ (Vittorio)

सन् १३७ में बीस वर्ष का और दूसरा पुत्र ब्रूनो (Bruno) अठारह वर्ष का था। ऐबीसीनिया युद्ध में यह दोनों भी आकाशी सेना में सम्मिलित होकर गए थे। उनसे छोटे पुत्रों के नाम रोमैनो (Romano) और अन्ना-मैरिया (Anna-Maria) हैं। इन दोनों बच्चों को पहिली पहल हवाई जहाज़ में बिठला कर मुसोलिनी ने स्वयं ही उस हवाई जहाज़ को चलाया था।

मुसोलिमी का स्वास्थ्य इस समय चव्वन वर्ष की अवस्था होने पर भी बहुत अच्छा है। अपने उत्तम स्वास्थ्य का कारण बतलाते हुए मुसोलिनी ने एक अमरीकन पत्रकार को मेज़ पर रखी हुई फलों की टोकरी की ओर संकेत करते हुए कहा था—"मेरे उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य एक मात्र फल हैं। प्रात:काल मैं एक प्याला कहवा (Coffee) और फलों का सेवन करता हूं। दोपहर को मैं शोरबा तथा फल और रात को फिर फ़लों का ही सेवन करता हूं। मैं मांस कभी नहीं छूता। हां, कभी २ थोड़ी मछली अवश्य ले लेता हूं।"

मुसोलिनी व्यायाम का बड़ा भारी प्रेमी है। वह घोड़े की सवारी करता, बाढ़ लगाता, तैरता और अनेक प्रकार का व्यायाम करता है। वह न तो शराब ही पीता और न धूम्रपान ही करता है। आरम्भ में वह स्त्रियों का बड़ा प्रेमी था। किन्तु अब वह संयमी है।

मुसोलिनी की शारीरिक गठन इस्पात के स्प्रिङ्ग के समान है। (इस तुलना में स्टालिन को ग्रैनाइट चट्टान और हिटलर को

बाह्य जीवोज (प्रोटोप्लाज्म) की बून्द समझा जाता है।) मुसोलिनी इस कारण संयमी है कि वह भोग विलासों का आनन्द लेकर उनकी निःसारता को समझ चुका है; किन्तु हिटलर का संयम उस निर्बल मनुष्य के समान है, जिसको सांसारिक प्रलोभनों से भय लगता है। इसके विपरीत स्टालिन की भोगाकांक्षा एक भैंसे के समान शरीर की आवश्यकता के अनुसार है।

मुसोलिनी का सामाजिक जीवन अत्यन्त परिमित है। पहिले वह थ्येटर का बड़ा भारी प्रेमी था, किन्तु अब वह समय न मिलने के कारण कभी २ अपने घर पर ही सीनेमा कराया करता है।

मुसोलिनी प्रति दिन कम से कम पांच छै घंटे काम करके दिन के शेष भाग को अध्ययन, मनन अथवा व्यायाम में व्यतीत किया करता है।

मुसोलिनी को धन की चिन्ता कभी नहीं रहती। उसका निजी वेतन आठ सहस्र लीरा अथवा लगभग दो सहस्र रुपये है। किन्तु ख़ज़ाने में उसका प्रथक् व्यक्तिगत खाता भी है। उसके अपने लिखे हुए जीवन चरित्र (My Autobiography) के लिए उसको अमरीका से पांच सहस्र पौंड अथवा पिचहत्तर सहस्र रुपया मिला था, जिसमें से कुछ उसने रोम के निर्धनों को दे दिया था। पहले वह समाचार पत्रों में लेख लिख कर भी कुछ कमा लेता था, किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के पेचीदा होने के कारण उसने लिखना छोड़ दिया।

वर्तमान डिक्टेटरों में केवल मुसोलिनी ही एक ऐसा डिक्टेटर

है जिसका धर्म के साथ समझौता हो गया है। सन् १९२९ में लैटेरन सन्धि (Lateran Treaty) के अनुसार इटली में धर्म और राज्य का सम्बन्ध ठीक २ निश्चित कर दिया गया; किन्तु पोप और मुसोलिनी दोनों ही आचरण के पक्के थे। अतएव फ़ासिस्ट नवयुवकों की शिक्षा के सम्बन्ध में फिर दोनों का मतभेद हो गया। आखिर मुसोलिनी के सन् १९३२ में पोप के स्थान वैटिकन (Vatican) में जाकर धार्मिक प्रार्थना करने पर मतभेद फिर दूर हो गया। मुसोलिनी पहले पूर्ण नास्तिक था, किन्तु आजकल वह अत्यन्त धार्मिक है। वह प्रतिदिन परमात्मा की स्तुति किया करता है।

स्वयं सम्पादक होने के कारण मुसोलिनी समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों को बहुत पसंद करता है। मुसोलिनी के उत्तम शिष्टाचार को देखकर पत्र प्रतिनिधियों का हाथ उसके विरुद्ध लिखने के लिए कभी नहीं चलता। वह पत्र प्रतिनिधियों से भेंट करके उनके लिखे हुए को स्वयं देखता है और तब उसको पास करके छपने देता है।

उसको इटली से बाहिर जाना बहुत कम पसन्द है। सन् १९२२ में प्रधानमन्त्री होने के बाद वह अभी तक केवल पांच बार ही इटली से बाहिर गया है। उसने पहिले सन् १९२२ में लोसान कांफ्रेन्स में, दूसरी बार सन् १९२३ में लन्दन, तीसरी बार सन् १९२५ में लोकार्नो कांफ्रेन्स में, चौथी बार मार्च सन् १९३७ में लीबिया में और पांचवी बार सितम्बर १९३७ में बर्लिन जाकर हिटलर से भेंट की।

वह प्रत्येक समय पढ़ता रहता है। जेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति मैसेरीक (Masaryk) के अतिरिक्त अन्य कोई आधुनिक राजनीतिज्ञ मुसोलिनी के समान आधुनिक साहित्य का ज्ञाता नहीं है। वह अपने अध्ययन किए हुए विषय का नियमानुसार संक्षेप बनाता जाता है। वह बड़ा भारी विद्वान् है। फ्रेंच और जर्मन भाषाओं के ऊपर उसका इटालियन भाषा के समान ही अधिकार है। सन् १९२५ के पश्चात् उसने इंगलिश भी सीख ली। उसने और भी कई ग्रन्थ लिखे हैं। अपने पत्र पोपलो डीटैलिया में वह अब भी कल्पित नाम से अथवा बिना नाम के लिखा करता है।

मुसोलिनी को श्रेष्ठजनों के शासन, धन, बिल्लियों और वृद्धावस्था से घृणा है। इसके विपरीत उसको रोम नगर, अपनी कन्या एडा, किसानों, पुस्तकों, हवाई जहाजों और शीघ्रगति से अत्यधिक प्रेम है।

अन्य डिक्टेटरों के समान वह भी निर्दयी है। हिटलर, मुसोलिनी अथवा स्टालिन अपने शत्रु को कभी क्षमा नहीं करते।

मुसोलिनी अपने जीवन के विषय में एक दम निश्चित है। यद्यपि उसके प्राण लेने के प्रयत्न पांच या छै बार किये गए, किन्तु उसने अपनी रक्षा का कोई असाधारण प्रयत्न नहीं किया। कहा जाता है कि रोम में केवल एक पुलिस अफ़सर ही ऐसा है, जो मुसोलिनी से उसके कर्तव्य या अकर्तव्य के विषय में कह सकता है। अपने जाने के मार्ग के विषय में मुसोलिनी

उसकी आज्ञा का सदा पालन करता है। रोम की कुछ सड़कों में तो वह कभी नहीं जाता। इसके विरुद्ध अपने घर से दफ़्तर को वह प्राय: बिना विशेष रक्षा का प्रबन्ध किये आया जाया करता है।

कहा जाता है कि हिटलर अपने डेस्क में सदा एक छोटी रिवाल्वर (Revolver) रखे रहता है। यह समझा जाता है कि फ़ासिस्टपार्टी के शासन का अन्त होने पर वह आत्मघात कर लेगा, किन्तु मुसोलिनी पूरा खिलाड़ी है। उसके ध्यान में कभी ऐसी बातें नहीं आ सकतीं।

मुसोलिनी का कार्य

मुसोलिनी कर्मठ, वीर और दृढ़-निश्चयी है। उसने इटली की जनता में नवीन जाग्रति उत्पन्न करने, एवं उसको राष्ट्रीयता के पवित्र मन्त्र से दीक्षित करने का दृढ़ संकल्प किया हुआ है। इसी का यह परिणाम है कि आज समस्त इटली अपने राष्ट्र के नाम पर एक हो गया है और इटालियनों में देश भक्ति की पवित्र भागीरथी गंगा की धारा अविरल रूप से प्रवाहित हो रही है। आज प्रत्येक इटालियन के हृदय में इटालियन होने का अभिमान है। वह अपने राष्ट्र के लिए तन, मन और धन तीनों को पूर्ण-तया न्योछावर करने को उद्यत है। निःसन्देह इटालियन जनता में इस भावना को भरने का सारा श्रेय हमारे चरित्र नायक मुसोलिनी को ही है। इसी लिए हमने उसको इस ग्रन्थ में 'राष्ट्र-निर्माता' के अलंकृत नाम से सम्बोधन किया है।

मुसोलिनी ने इटालियन जनता में केवल राष्ट्रीय भावना भर

कर ही राष्ट्र निर्माण का कार्य किया हो, सो बात नहीं है। उसने इटली में राष्ट्रनिर्माण के कार्य को वास्तव में करके दिखलाया है। सब से पहिले उसने अपने राष्ट्र को राष्ट्र निर्माण की फिलासफ़ी दी। राष्ट्रनिर्माण की उस फिलासफी का नाम ही 'फासिज्म' है। फिर उसने उस फ़िलासफ़ी के अनुसार इटली में संघशासन अथवा कारपोरेट स्टेट का निर्माण किया। इन सब कार्यों के साथ २ उसने अपने देश में माताओं और शिशुओं की रक्षा करके योग्य नागरिक उत्पन्न करने की परिपाटी चलाई। उसका वास्तविक राष्ट्र-निर्माण इन सब से ही अधिक विचित्र है। इसमें उसने ६ वर्ष के बच्चों से लगा कर २० वर्ष तक के युवक और युवतियों के लिये मानसिक और शारीरिक शिक्षा का प्रबन्ध किया हुआ है। उसका राष्ट्रीय बलिल्ला संघ का आंदोलन तो बच्चे को जन्म लेते ही सैनिक बना देता है।

मुसोलिनी वीर है। अतएव वह सारे इटली राष्ट्र को वीर बनाना चाहता है। अनेक लेखक मुसोलिनी और उसके दलवालों पर क्रूरता का दोष लगाते हैं; किन्तु उनको स्मरण रखना चाहिये कि यह दोष इटालियन रक्त अथवा फासिज्म के सिद्धान्त का न हो कर यूरोपियन रक्त का है। इस प्रकार के समालोचक यदि फासिज्म के प्रति विद्वेष के पक्षपात को त्याग कर यूरोप के विभिन्न देशों के इतिहास को देखेंगे तो उनको, फ्रांस, रूस, इङ्गलैंड तथा जर्मनी आदि सभी देशों में इस प्रकार की क्रूरता देखने को मिलेगी। रूस के साम्यवादी और समाजवादी तो आज भी किसी

इटालियन से कम क्रूर नहीं है। हमारी सम्मति में क्रूरता यूरोपीय रक्त में कूट २ कर भरी हुई है। उनमें प्रतिहिंसा की मात्रा अधिक होती है और अवसर मिलने पर वह कभी भी क्रूरता का भयंकर से भयंकर रूप प्रगट करने में संकोच नहीं करते। अस्तु, इसके लिए एक मात्र मुसोलिनी को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

मुसोलिनी का सब से बड़ा कार्य इटली का पुनः संगठन है। उसने देश की बिखरी शक्तियों को संगठित कर एक निश्चित मार्ग की ओर लगाया है। महायुद्ध से पूर्व और उसके बाद इटली में अराजकता का अखण्ड राज्य था। समाजवादियों के उत्पातों के कारण तो वह और भी भयंकर हो गई थी। किन्तु मुसोलिनी ने देश में शांति स्थापित कर तथा अराजकता का दमन कर उसको एक बड़े ख़तरे से बचा कर सारे देश में राष्ट्रीयता की पवित्र धारा को बहा दिया। इन्हीं सब कारणों से हमने उसको 'राष्ट्रनिर्माता' के उच्च पद से अलंकृत किया है।

इटली में सदा से राज्य और पोप में तनातनी चली आती थी। इसको कावूर भी दूर न कर सका। किन्तु मुसोलिनी ने अपनी नीति से चर्च और पोप को न केवल अपना सहयोगी और समर्थक, वरन् राज्य का एक अंग ही बना लिया। उसने रोमन कैथोलिक धर्म को राज्य-धर्म घोषित करके धार्मिक विचार वालों के हृदय में भी अपने प्रति सहानुभूति तथा विश्वास उत्पन्न कर लिया। उसने दिखला दिया कि यद्यपि धर्म तथा

राष्ट्रीयता देश की दो धाराए हैं, किन्तु उनका एक में बहना उन्नति तथा शक्ति का द्योतक है। राज्य के लिये धर्म आवश्यक है। राज्य का आधार नैतिकता एवं सदाचार है। धर्म नैतिकता एवं सदाचार का द्योतक है। अतएव धर्म राजनीतिक संगठन का जीवन है। वह राजनीति से भिन्न नहीं, वरन् उसका सबसे बड़ा अङ्ग है। इसी धर्म के आधार पर मुसोलिनी ने फ़ासिस्ट इटली के सदाचार और उसकी नैतिकता का निर्माण किया है।

भारतवर्ष में धर्म और राजनीति को प्रथक् २ रखने की भावना दृढ़ होती जाती है। कांग्रेस में भी यह परिपाटी चलती जा रही है। सोवियट रूस में भी धर्म को राजनीति से सर्वथा भिन्न रखा गया है। किन्तु जर्मनी तथा इङ्गलैंड में यह बात नहीं है। हिटलर आर्य संस्कृति वालों तथा ईसाइयों को ही जर्मनी का नागरिक बनने देता है। इङ्गलैण्ड में भी राजा का प्रोटेस्टेंट होना आवश्यक है। महात्मा गांधी भी राजनीति को धर्म से भिन्न रखना नहीं चाहते। उन्होंने तो राजनीति को एक प्रकार से धर्म का रूप ही दे दिया है। हमारे भारत की प्राचीन परिपाटी में तो राजनीति अथवा राजधर्म दोनों का एक ही आशय है। सन् १९२१ के भारतीय आंदोलन को मुसलमानों की इसी धार्मिक भावना के कारण अधिक बल मिल गया था।

मुसोलिनी ने इटली की आर्थिक दशा भी अच्छी करदी है। वहां स्वदेशी वस्तुओं की खपत पर जोर दिया जाता है। अब

वहां केला, रेशम और गेहूं जैसी वस्तुएं भी अधिक मात्रा में उत्पन्न होने लगी हैं।

इटली में कोयला नहीं होता; किन्तु मुसोलिनी ने देश के जलप्रपातों से बिजली बना कर कोयले का काम बिजली से लेना आरम्भ कर दिया है। अतएव आज इटली अपने उद्योग धन्दों में बहुत उन्नति कर रहा है। आर्थिक उन्नति इटली ने अपने उपनिवेशों में भी की है। वह उपनिवेशों को इङ्गलैण्ड के समान अपने व्यापार का केवल बाज़ार ही नहीं बनाता, वरन् वह उनमें भी व्यापार की उन्नति करता है। जापान के समान मुसोलिनी भी ग्राम-उद्योग धन्दों पर अधिक बल देता है। आजकल की मन्दी और बेरोज़गारी के जमाने में भी इटली के कल कारख़ाने न तो एक मिनट के लिये बन्द ही हुए और न इटली का एक भी श्रमिक बेकार है। बेरोज़गारी तो इटली से कपूर के समान उड़ गई है तथा इटली को और भी श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती रहती हैं।

आज इटली की ओर आस्ट्रिया और जर्मनी की निगाह लगी रहती हैं। वह उसे गुरु के समान मानते हैं। संसार के अधि-नायक डी० वेलेरा, कमालपाशा और हिटलर आदि आज मुसोलिनी के ही पदचिन्हों पर चल रहे हैं।

आज लन्दन, पेरिस, मास्को, बर्लिन और वाशिंगटन राजनीति के केन्द्र नहीं हैं। संसार भर की राजनीति आज रोम में केन्द्रित हो गई है। मुसोलिनी की भावभंगी पर आज सभी

दृष्टि लगाए हुए हैं। उसकी पदध्वनि एवं गर्जना की उठती ध्वनि से आज सभी कांप उठते हैं। यद्यपि सभी उसके विरोधी हैं और सभी उसका बहिष्कार करना चाहते हैं, किन्तु उनको बारबार हार मान कर फिर उसके सामने सिर झुकाना ही पड़ता है। राष्ट्र-संघ की बहिष्कार की आज्ञा इस बात का ताज़ा प्रमाण है। अतः इन सब बातों से सिद्ध है कि मुसोलिनी वास्तव में राष्ट्र-निर्माता है।

अब हम मुसोलिनी के राष्ट्रनिर्माण के कार्यों को एक २ करके संक्षेप से गिनावेंगे। किन्तु उस सारे राष्ट्रनिर्माणके कार्य का कारण मुसोलिनी का फ़ासिज़्म का सिद्धान्त है। अतः सबसे पहले उस फ़ासिज़्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का ही वर्णन किया जाता है। यहां फ़ासिज़्म के सिद्धान्तों का वर्णन मुसोलिनी के शब्दों में ही किया गया है। कहीं २ पर उसकी व्याख्या करने के लिये कुछ नोट भी लगा दिये गए हैं।

दसवां अध्याय

फ़ासिज़्म के मौलिक सिद्धान्त

अन्य सभी वास्तविक राजनीतिक विचारों के समान फ़ासिज़्म कार्य भी है और विचार भी। यह वह कार्य है, जिसमें स्वाभाविक सिद्धान्त है। साथ ही यह वह सिद्धान्त है, जिसका उद्भव उन ऐतिहासिक शक्तियों से हुआ है, जिनमें यह समाया हुआ है और जिनको यह अपने मूल रूप में कार्यान्वित कर रहा है। अतएव इसका वह रूप है, जो समय और आकाश की संभावनाओं से सम्बन्धित है; किन्तु इसमें वह आदर्श भी गर्भित है, जो इसको विचार के इतिहास के उच्चतर प्रदेश में सत्य का रूप

देता है।* संसार में मानवी इच्छा शक्ति का दूसरों की इच्छा शक्ति पर प्रभाव डाल कर अपने आत्मिक प्रभाव को तब तक प्रगट नहीं किया जा सकता, जब तक उसको उस अस्थायी और विभेदक वास्तविकता का, जिसके ऊपर प्रभाव डालना है तथा उस स्थायी और सारभौम वास्तविकता का, जिसमें वह अस्थायी वास्तविकता निवास करती है—निश्चित पता न हो। जनता (मनुष्यों) को जानने के लिये मनुष्य को जानना आवश्यक है; और मनुष्य को जानने के लिये तत्व (वास्तविकता) और उसके नियमों से परिचित होना आवश्यक है। ऐसे राज्य (State) का विचार ही नहीं किया जा सकता, जो सिद्धान्त रूप में जीवन का विचार न हो। जीवन का सिद्धान्त ही दर्शनशास्त्र अथवा अन्तर्ज्ञान है। वह तर्क की परिभाषा में विकसित होने वाली विचार सरणि, अथवा दृष्टि अथवा विश्वास में एकत्रित की हुई विचार सरणि है। किन्तु वह सदा ही कम से कम संभावित रूप में संसार का सावयव विचार है।

इस प्रकार फ़ासिज़्म के अनेक व्यवहारिक कार्यों—यथा

---

*मुसोलिनी का सिद्धान्त है कि फ़ासिज़्म का उद्भव यद्यपि इटली से हुआ है, किन्तु वह एक ऐसा सार्वभौम सिद्धान्त है, जिसके द्वारा संसार भर को शान्ति प्राप्त हो सकती है। मुसोलिनी की दृष्टि में फ़ासिज़्म संसार भर की आवश्यकता पूरी करता है। यह राज्य और व्यक्ति, राज्य और संस्थाओं तथा संस्थाओं और संगठित सभाओं के सम्बन्ध की त्रिविध समस्या को सुलझाता है।

दल के सङ्गठन, शिक्षा प्रणाली, विनयानुशासन—को केवल तभी समझा जा सकता है, जब उन पर जीवन के लिये उनके सार्वजनिक उपयोग के सम्बन्ध में विचार किया जावे। उसी उपयोग को आत्मिक* उपयोग कहना चाहिये।

फ़ासिज्म संसार में उन ऊपरी और भौतिक रूपों को ही नहीं देखता, जिनमें मनुष्य एक व्यक्ति के रूप में अकेला, आत्म-केन्द्रित और उस स्वाभाविक नियम में बंधा हुआ प्रगट होता है, जो उसको क्षणिक सुख के स्वार्थी जीवन की ओर ढकेल देता है। फ़ासिज्म केवल व्यक्ति को ही नहीं, वरन् राष्ट्र और देश को देखता है। फ़ासिज्म व्यक्तियों और वंशपरम्पराओं को उस एक नैतिक नियम में बंधा हुआ देखता है, जिसकी एक परम्परा है तथा जिसका उद्देश्य सुख के सीमित केन्द्र में बन्द जीवन की भावना को दबा कर कर्तव्य के आधार पर स्थापित उच्च जीवन का निर्माण करना है। वह जीवन समय और आकाश के बंधन से रहित है। उस जीवन में व्यक्ति आत्म बलिदान, स्वार्थ त्याग और यहां तक कि मृत्यु के द्वारा भी उस विशुद्ध आत्मिक अस्तित्व (पद) को प्राप्त कर सकता है, जिसमें उसका मूल्य मनुष्य के रूप में निहित है।

---

*मुसोलिनी भौतिकवादी न होकर अध्यात्मवादी है। वह आत्मा और परमात्मा के प्रति कर्तव्य को मानता है। उसका कहना है कि वर्तमान फासिज्म यूरोप के भौतिकवाद के विरुद्ध क्रान्ति है। उसकी सम्मति में विज्ञान को दर्शन शास्त्र में मिलाने से ही यथार्थ तत्व की प्राप्ति होसकती है।

अतएव यह विचार अध्यात्मिक है। यह उन्नीसवीं शताब्दी के पिलपिले भौतिक निश्चयवाद के विरुद्ध एक शताब्दी की साधारण प्रतिक्रिया से उत्पन्न हुआ है। फ़ासिज्म निश्चयवाद का विरोधी होते हुए भी निश्चयात्मक है। यह सामान्य रूप जीवन के केन्द्र को मनुष्य (उसके व्यक्तित्व) से बाहिर स्थापित करने वाले उन [सब प्रतिषेधात्मक] सिद्धांतों के समान न तो प्रत्येक बात में संदेह करने वाला नास्तिक ही है और न ईश्वर को बुद्ध्यतीत ही समझता है; यह न तो निराशावादी ही और न बेसुध [और हाथ पर हाथ धरके बैठने वाला] आशावादी ही है। फ़ासिज्म का सिद्धांत है कि मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति के उपयोग से स्वयं अपने संसार का निर्माण कर सकता है और उसका निर्माण करना ही उसका कर्तव्य है।

फ़ासिज्म प्रत्येक मनुष्य को चुस्त और अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से कार्य में व्यस्त देखना चाहता है। फ़ासिजम चाहता है कि मनुष्य को उसके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का साहस रूप में ज्ञान हो और वह सदा उनका मुकाबला वीरता पूर्वक करने के लिए तयार रहे। फ़ासिज्म जीवन को एक युद्ध समझता है, जिसमें वह प्रत्येक मनुष्य को उसके लिये सर्वथा उपयुक्त पद को जीतने के योग्य बना हुआ देखना चाहता है। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये फ़ासिजम मनुष्य को (शारीरिक, नैतिक तथा बौद्धिक रूप में) योग्य बना कर उसमें विजय प्राप्त करने का साधन बनाना चाहता है। जो बात व्यक्ति के लिये है, वही राष्ट्र

और वही सम्पूर्ण मनुष्य जाति पर भी लागू होती है। इसी लिए संस्कृति का उसके सब रूपों (कला सम्बन्धी, धार्मिक और वैज्ञानिक) में सबसे अधिक महत्व है और इसी लिए शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है*। इसी लिए फ़ासिज्म उस कार्य को अनिवार्य मूल्य देता है, जिससे मनुष्य प्रकृति को अपने आधीन करता और मानव संसार (आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक और बौद्धिक) की रचना करता है।

जीवन का यह निश्चयात्मक विचार स्पष्ट रूप से नैतिक है। इसमें वास्तविकता के सम्पूर्ण क्षेत्र और सभी मानवी कार्यों का अन्तर्भाव हो जाता है। नैतिक निर्णय से किसी कार्य को मुक्त नहीं किया जाता; सभी वस्तुओं के नैतिक उद्देश्य के महान् मूल्य को किसी कार्य से नहीं छीना जा सकता। अतएव फ़ासिस्टों के विचार के अनुसार जीवन गम्भीर, कठोर और धार्मिक है। उसके सभी रूप नैतिक शक्तियों के आधारभूत संसार में आत्मिक उत्तरदायित्वों की अधीनता में तोले जाते हैं। फ़ासिस्ट आरामतलबी के जीवन से घृणा करता है।

फ़ासिस्टों का जीवनसम्बन्धी विचार पूर्णतया ऐसा धार्मिक है, जिसमें मनुष्य का उच्चतम नियम से इस प्रकार का स्वाभाविक सम्बन्ध होता है, जिसमें उसकी इच्छा दूसरे के आधीन होती हुई भी उसका व्यक्तित्व उन्नति करता हुआ उसको आत्मिक

---

*मुसोलिनी से फ़ासिज्म की व्याख्या केवल एक वाक्य में करने को कहा गया तो उसने कहा "हम सुगम जीवन के विरुद्ध हैं।"

समाज के जाग्रत सदस्य के उच्च पद पर पहुंचा देता है। जिन लोगों को फ़ासिस्ट जीवन प्रणाली की धार्मिक नीति में अवसरवादिता (Opportunism) के विचारों के अतिरिक्त और कुछ दिखलाई नहीं देता, वह इस बात को अनुभव नहीं कर सकते कि फ़ासिज्म केवल शासन प्रणाली ही नहीं, वरन् वह एक विचार प्रणाली भी और वह भी उच्च कोटि विचार प्रणाली है।

फ़ासिस्टों के इतिहास-सम्बन्धी विचार में मनुष्य आत्मिक प्रणाली के गुण के कारण, जिसको वह एक कुटुम्ब, सामाजिक वर्ग और राष्ट्र का सदस्य होने के कारण इतिहास की भेंट करता है और उस इतिहास के कार्य में, जिसमें सब राष्ट्र अपनी २ भेंट लेकर उपस्थित होते हैं—केवल मनुष्य ही है। इसीलिये लेख, भाषा, प्रथाओं और सामाजिक जीवन के नियमों में परम्परा का अधिक मूल्य है। मनुष्य इतिहास के बाहिर केवल अभाव रूप है। अतएव फ़ासिज्म अठारहवीं शताब्दी के भौतिकवाद के सभी व्यक्तिगत भावों के विरुद्ध है, साथ ही यह रक्त रंजित क्रान्ति के सभी विचारों तथा कल्पनाओं से भी दूर है। फ़ासिज्म पृथ्वी पर उस आनन्द की संभावना में भी विश्वास नही करता, जिसका वर्णन अठारहवीं शताब्दी के अर्थशास्त्र-साहित्य में किया हुआ है। अतएव यह कारणवाद के उस विचार के विरुद्ध है, जिसके अनुसार कभी भविष्य में मानव कुटुम्ब की सभी कठिनाइयां अन्तिम रूप से दूर हो जावेंगी। यह बात अनुभव के विरुद्ध है। अनुभव से तो यही पता चलता

है कि जीवन एक सतत प्रवाह तथा सदा विकसित होने वाला है। राजनीति में फ़ासिज्म का उद्देश्य वास्तविकतावाद है। कार्य रूप में यह उन्हीं समस्याओं को सुलझाना चाहता है, जो ऐतिहासिक दशाओं की तात्कालिक उपज हैं और जो स्वयं ही अपना हल उपस्थित कर देती हैं। (क) केवल वास्तविक कार्य करके और उसमें कार्य करने वाली शक्तियों पर अधिकार करके ही मनुष्य मनुष्य और प्रकृति पर अपना प्रभाव डाल सकता है। ❀

(क) फ़ासिज्म परमात्मा के नाम पर किसी उपदेश को नहीं मानता। वह स्वीकृत सिद्धान्तों और स्वर्ग की चकाचौंध को नहीं मानता। चमत्कारों से वह कोसों दूर भागता है। उसको कार्यक्रमों, सन्तों और ईश्वरीय दूतों में विश्वास नहीं है। न उसको यह विश्वास है कि किसी लोक में सुख ही सुख मिलेगा। फ़ासिज्म अकर्मण्यता से घृणा करता है। उसको तो ज़ीवन की कभी समाप्त न होंने वाली यात्रा ही अच्छी लगती है।

❀ फ़ासिज्म न तो अकर्मण्यता पसन्द करता है और न उसकी किसी एक धर्म के ढंग पर एक साथ बैठ कर प्रार्थना करने का कट्टरपन ही अच्छा लगता है। फासिस्ट अपने को वास्तविक मनुष्य समझते हैं और इतिहास में अपने कार्य को पूर्ण करना चाहते हैं। फ़ासिज्म नैतिकता का कायल है। उसको भूत और भविष्य की चिन्ता न करते हुए जीवन की यात्रा करते जाना ही अधिक पसन्द है।

फ़ासिज्म व्यक्तित्व का विरोधी है। फ़ासिज्म के जीवन-सम्बन्धी विचार में राज्य का महत्व अधिक है। वह व्यक्तित्व को केवल वहीं तक स्वीकार करता है, जहां उसका स्वार्थ राज्य के उस स्वार्थ से बिल्कुल मिल जाता है, जो एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में मनुष्य के आत्मा और उसके सार्वभौम निश्चय के रूप में प्रगट होता है*। फ़ासिज्म उस उच्चकोटि के उदारतावाद के विरुद्ध है, जो निरंकुशवाद (Absobutism) की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हुआ और जिसका ऐतिहासिक कार्य राज्य की जनता के आत्मा और निश्चय रूप में प्रगट होने पर समाप्त हो जाता है। उदारतावाद व्यक्तित्व के नाम पर राज्य का प्रतिषेध करता है। फासिज्म राज्य के अधिकारों को व्यक्ति के वास्तविक सार के रूप में प्रगट करता हुआ फिर स्थापित करता है और वह यदि स्वतन्त्रता को जीवित मनुष्यों का गुण बनाता है—न कि व्यक्तिवाद सम्बन्धी उदारतावाद के द्वारा आविष्कार किये हुए भावपूर्ण गुमसुम मनुष्यों का—तो फ़ासिज्म उस स्वतन्त्रता का पक्ष समर्थन करता है। वास्तव में केवल वही स्वतन्त्रता ग्रहण करने योग्य होती है। राज्य स्वतन्त्रता और राज्य के अन्दर २ व्यक्ति की स्वतन्त्रता

---

*फासिज्म राष्ट्र के लिये व्यक्ति की स्वतन्त्रता का बलिदान करने को सदा तयार रहता है। वह व्यक्तियों के स्वार्थ के समूह को ही राष्ट्र मानता है। इसी लिए इटली में राष्ट्रकार्य के सन्मुख व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कोई विशेष मूल्य नहीं है।

ही वह स्वतन्त्र है। *फासिस्टों के राज्य में सभी को सम्मिलित किया जाता है। उसके बाहिर किसी मानवी अथवा आत्मिक शक्ति का अस्तित्व नहीं हो सकता और यदि होता है तो उसका कुछ मूल्य नहीं हो सकता। सारांश में फासिज्म पूर्णतावादी है, और फ़ासिस्ट राज्य—एक सम्मिश्रण तथा एक ऐसी इकाई है, जिसमें सभी मूल्यवान् तत्वों का अन्तर्भाव है। फासिज्म जनता के संपूर्ण-जीवन की व्याख्या करता, उसका विकास करता और उसको शक्ति देता है।

फ़ासिस्ट राज्य में राज्य के बाहिर कोई व्यक्ति या दल (राजनीतिक दल बन्दियां, संस्कृति सम्बन्धी सभाएं, आर्थिक समि-

---

* स्वतन्त्रता के सम्बन्ध मे विचार करते हुए यह ध्यान रखना चाहिये कि वह भी निरंकुशतापूर्ण नहीं होनी चाहिये; क्योंकि जीवन में निरंकुश कुछ नहीं है। स्वतन्त्रता अधिकार नहीं, वरन् एक कर्तव्य है। वह उपहार नहीं, वरन् विजय फल है। वह समानता नहीं, वरन् एक सुविधा है। समय के परिवर्तन के साथ २ स्वतन्त्रता की परिभाषा और उसका विचार भी बदलता जाता है। शांति के समय जैसी स्वतन्त्रता होती है, युद्ध के समय वैसी तथा उतनी ही स्वतन्त्रता नहीं हो सकती।

फ़ासिस्ट राज्य में व्यक्ति की स्वतन्त्रता का अपहरण नहीं किया जाता। उस राज्य में उसको अकेले निःसम्बन्ध व्यक्ति की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्रता है; क्योंकि वहां राज्य उसकी रक्षा करता है और वह राज्य का एक अंग है। निःसम्बन्ध व्यक्ति अरक्षित होता है।

तियां, समाजिक वर्ग) नहीं होते। अतएव फ़ासिज्म उस समाजवाद (सोशिएलिज्म) का विरोधी है, जो राज्य (जो सभी वर्गों को एक आर्थिक और नैतिक अस्तित्व में सम्मिलित कर देता है) के अन्दर एकता से अनभिज्ञ है और जो इतिहास में वर्गयुद्ध के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखता। फ़ासिज्म उसी प्रकार वर्ग के साधन के रूप में ट्रेड यूनियन का भी विरोधी है। फ़ासिज्म उन वास्तविक आवश्यकताओं को स्वीकार करता है, जिनसे समाजवाद (सोशिएलिज्म) और ट्रेड यूनियनवाद उत्पन्न होते हैं। फ़ासिज्म उनको उस पेशे अथवा संघ शासन प्रणाली (Corporative system) में, जिसमें विभिन्न प्रकार के स्वत्व एक दूसरे की सहायता करते हुए राज्य की एकता के रूप में सम्मिलित होते हैं—योग्य मान देता है ❋

❋मुसोलिनी ने इस संघशासन राज्य के सिद्धान्त के आधार पर इटली को एक राष्ट्र बना डाला है। सन् १८७० में स्वतन्त्रता प्राप्त करके भी इटली कभी एक सम्मिलित राज्य नहीं बना था। किन्तु मुसोलिनी ने उसको अपने प्रबल सिद्धान्त के आधार पर एक राज्य बना ही डाला। उसका सिद्धान्त है, "प्रत्येक बात राज्य के अन्दर हो, राज्य के विरुद्ध कुछ न हो, राज्य के बाहिर कुछ न हो।"

दूसरे शब्दों में मुसोलिनी का संघ राज्य (Corporative State) वह राज्य है, जो स्वाभाविक रूप से काम करता हुआ सभी शक्तियों पर

अपने अनेक स्वत्वों के समूह के अनुसार व्यक्ति ही वर्ग अथवा दल बनाते हैं। जब वह अपने अनेक आर्थिक कार्यों के अनुसार संगठित हो जाते हैं, तो वह ट्रेड-यूनियन बना लेते हैं। किन्तु सबसे पहले और सबसे अधिक वह उस राज्य का निर्माण करते हैं, जो केवल संख्या पर ही निर्भर नहीं करता, वरन् बहु-संख्या बनाने वाले व्यक्तियों का सार रूप होता है। अतएव फ़ासिज्म उस प्रकार की जनतन्त्रशासन प्रणाली का विरोधी है,

---

शासन करता है। वह राजनीतिक, नैतिक और आर्थिक सभी शक्तियों पर शासन करता है। इसी लिये उसको पूर्ण पल्लवित पञ्चायती राज्य कहते हैं। वर्तमान राजनीति में यह बिल्कुल नया सिद्धान्त है। यह जनतन्त्र शासन (Democracy), धनिक वर्ग के शासन और फ्री मैसन लोगों के सिद्धान्तों का विश्लेषणात्मक वर्णन है।

संघ राज्य का मन्त्रीमण्डल नौकरशाही प्रणाली का नहीं होता, न वह अन्य स्वतन्त्र सभाओं के कार्य को स्वयं करना चाहता है; क्योंकि उसका उद्देश्य तो उन सभाओं के सदस्यों को संगठित करना, निर्वाचित करना और उनकी उन्नति करना है। संघराज्य का मन्त्रीमण्डल वह संस्था है, जिसके कारण पूरा संघ—केन्द्र में और बाहिर भी—पूर्ण और एक होता है। इसी में विशेष स्वत्वों और संसार की आर्थिक शक्तियों का ठीक २ संतुलन होता है। इस प्रकार का संतुलन केवल राज्य में ही हो सकता है; क्योंकि केवलमात्र राज्य ही विभिन्न दलों और व्यक्तियों के परस्पर-विरोधी स्वत्वों से—उच्चतम उद्देश्यों की प्राप्ति में उनकी सहायता का

जो राष्ट्र को बहुसंख्यक दल की समानता देकर उसको बहुसंख्यक दल की बड़ी से बड़ी संख्या के निम्न पद पर गिरा देती है। किन्तु यदि राष्ट्र पर परिमाण (संख्या) की अपेक्षा योग्यता (विभिन्न स्वत्वों की) की दृष्टि से विचार किया जावे तो वह जन-तन्त्रशासन का सबसे अधिक शुद्ध रूप होगा । विचार के रूप में सबसे अधिक उत्तम आचरण वाला, सभी के सबसे अधिक अनु-कूल और सबसे अधिक सत्यवादी होने के कारण सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति अपने को यदि एक की इच्छा का नहीं, तो अनेक की इच्छा और आत्मा का प्रतिनिधित्व करके जनता की इच्छा और आत्मा के प्रतिनिधि रूप में प्रगट करता है। वह प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक कारणों से बनी हुई मनुष्य जाति के

ध्यान रखते हुए—अधिक उच्च हो सकता है । इस उद्देश्य की प्राप्ति शीघ्रतापूर्वक तभी हो सकती है, जब सभी आर्थिक संस्थाएं, जिनके संघ को राज्य ने स्वीकार करके उनके विशेष स्वत्वों की रक्षा करके उनको सहायता दी हो, केवल फ़ासिज़्म की कक्षा में रहें । अथवा यह कहना चाहिये कि वह फ़ासिज़्म के विचार को सिद्धांत और व्यवहार दोनों में स्वीकार करें ।

मुसोलिनी ने एक संघ शासन और फ़ासिस्ट राज्य अथवा राष्ट्रीय समाज के राज्य का निर्माण किया है । वह राज्य सभी सामाजिक वर्गों के—जिनकी समान मात्रा में रक्षा की जाती है—स्वत्वों पर ध्यान रखता, शासन करता, उनमें एकरसता उत्पन्न करता और उनको परस्पर

एक भेद विशेष के सम्पूर्ण वर्ग के रूप में उन्नति और आत्म-निर्माण के आत्म-मार्ग पर एक इच्छा और एक आत्मा के रूप में अग्रसर होता है। वह एक जाति अथवा भौगोलिक परिभाषा में बतलाए हुए देश का निवासी नहीं होता; वरन् वह अपने अस्तित्व को ऐतिहासिक रूप से स्थायी रखने वाला होता है। उसके सारे वर्ग का एक विचार होता है। वह जीवित रहने और शक्ति के निश्चय, आत्मज्ञान और व्यक्तित्व के रंग में रंगा होता है।

जब इस उच्च व्यक्तित्व को राज्य के ऊपर घटाया जाता है तो यही राष्ट्र कहलाता है। राज्य को राष्ट्र नहीं, वरन् एक प्राचीन पदार्थविद्या सम्बन्धी वह विचार उत्पन्न करता है, जिसने राष्ट्रीय सरकार के पक्ष में उन्नीसवीं शताब्दी में प्रचार का साधन प्रदान किया था। वास्तव में राज्य ही राष्ट्र का निर्माण करता है। वह जनता को उसकी नैतिक एकता से परिचित करके उसको संकल्प और वास्तविक जीवन प्रदान करता है।

मिलाता है। इससे पूर्व लोकतन्त्रवादी उदार सरकार के शासन में मजदूर लोग राज्य को संदेह की दृष्टि से देखते थे। वह वास्तव में राज्य के बाहिर, बल्कि उसके विरुद्ध थे। वह राज्य को प्रतिदिन और प्रत्येक क्षण अपना शत्रु समझते थे। किन्तु आज इटली में एक भी ऐसा श्रमिक नहीं है, जो उसके वर्तमान पञ्चायती राज्य में स्थान न लेना चाहता हो; जो उस विशाल, विस्तृत, जीवित संगठन—अर्थात् फासिज्म के राष्ट्रीय पञ्चायती राज्य में एक जीवित परमाणु न बनाना चाहता हो।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का अधिकार केवल आत्म-संवेदन के साहित्यिक और आदर्शवादी रूप से ही प्राप्त नहीं होता, न वह न्यूनाधिक परिमाण में दूसरे के द्वारा अनजान में दिया जाता है। वह उस चुस्त, आत्म-संवेदन वाले राजनीतिक निश्चय से प्राप्त होता है, जो सदा कार्य रूप में प्रगट होता तथा अपने अधिकार को प्रमाणित करने के लिए तयार रहता है। संक्षेप में वह उस अस्तित्व से प्राप्त होता है, जो राज्य के लिये अत्यधिक उत्साह दिखाने से प्रगट होता है। वास्तव में राज्य ही सार्वजनिक नैतिक निश्चय को प्रगट करके राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के अधिकार का निर्माण करता है।*

---

*राष्ट्र का अस्तित्व जनता के रूप में ही है। अधिक संख्या वाले, कठिन परिश्रमी और नियमबद्ध जनसमुदाय को जनता कहते हैं। इस प्रकार इस त्रिविध सिद्धान्त के परिणाम स्वरूप शक्ति उत्पन्न होती है।

फ़ासिस्टों के लिये राष्ट्र केवल इलाका नहीं, वरन् भावना है। इतिहास में अनेक ऐसे राज्य थे, जिनके पास बहुत बड़ा इलाका था, किन्तु जिनका अब कोई भी चिह्न शेष नहीं है। राष्ट्र अधिक संख्या वाली जनता पर भी निर्भर नहीं करता; क्योंकि इतिहास में अनेक ऐसे छोटे से छोटे राज्य थे, जिनका कार्य कला और दर्शनशास्त्र के अविनाशी शास्त्र रूप में अब भी अमर है।

किन्तु राष्ट्र का बड़ापन इन सब गुणों और दशाओं की अधिकता पर अवलम्बित है।

राज्य में इस प्रकार बतलाया हुआ राष्ट्र तभी तक जीवित और नैतिक अस्तित्व वाला समझा जाता है, जब तक वह उन्नतिशील हो। अकर्मण्यता का नाम ही मृत्यु है। अतएव राज्य केवल शासन करने वाला और उसके व्यक्तिगत निश्चयों को कानूनी रूप और आत्मिक महत्व देने वाला अधिकार मात्र ही नहीं है, वरन् वह शक्ति भी है, जो उसके निश्चय को उसकी सीमाओं से बाहिर भी अनुभव कराती और उसका सम्मान कराती तथा इस प्रकार उसकी उन्नति के लिए आवश्यक निर्णय के सार्वजनिक रूप का व्यवहारिक प्रमाण उपस्थित करती है। इसमें संगठन और विस्तार भी यदि वास्तविक नहीं, तो अपने संभावित रूप में गर्भित है। इस प्रकार राज्य अपनी समानता उस मनुष्य के निश्चय के साथ करता है, जिसकी उन्नति विघ्न बाधाओं के द्वारा नहीं रुक सकती और जो आत्माभिव्यक्ति का अवसर पाकर अपने अनन्तपने को प्रमाणित करके दिखला देता है।

फ़ासिस्ट राज्य व्यक्तित्व की उच्च कोटि की तथा अधिक शक्तिशाली अभिव्यक्ति के रूप में शक्ति होते हुए भी आत्मिक शक्ति है। वह मनुष्य के सभी नैतिक और बौद्धिक जीवन के स्वरूपों का सारांश निकालता है। अतएव उसके कार्य को—उदार-दल वालों के सिद्धांत के अनुसार—उसकी आज्ञाओं का पालन कराने और शान्ति बनाए रखने में सीमित नहीं किया जा सकता। वह केवल उस क्षेत्र की परिभाषा करने का यांत्रिक उपाय ही नहीं है, जिससे व्यक्ति अपने कल्पित अधिकारों का योग्य रूप से

प्रयोग कर सके। फ़ासिस्ट राज्य आन्तरिक रूप से स्वीकृत पद, आचरण का नियम और समस्त मनुष्यों का विनयानुशासन है। वह इच्छाशक्ति और बुद्धि सभी में से आर पार निकल जाता है। वह उस उद्देश्य के लिए है, जो मनुष्य का उसके सभ्य समाज का सदस्य होने के नाते उसके व्यक्तित्व में गहरा डूबता हुआ—केन्द्रीय उद्देश्य बन जाता है। वह कर्मिष्ठ, विचारशील, कलाकार और वैज्ञानिक मनुष्य के हृदय में निवास करता है। वास्तव में वह आत्मा का भी आत्मा है।

सारांश यह है कि फ़ासिज़्म केवल नियम का निर्माता तथा संस्थाओं का संस्थापक ही नहीं है, वरन् शिक्षा देने वाला और अध्यात्मिक जीवन की उन्नति कराने वाला भी है। उसका उद्देश्य जीवन के विभिन्न रूपों का ही पुनर्निर्माण करना नहीं है, वरन् उसके अंगों—मनुष्य, उसके आचरण और उसके विश्वास का पुनर्निर्माण करना भी है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह आत्मा में प्रवेश करके निर्विवाद अधिकार से शासन करता हुआ विनयानुशासन को बलपूर्वक पालन कराता और अधिकार से काम लेता है। इसलिये उसने अपना चिन्ह लिक्टर * के दंडों (Lictor;s Rods) को बनाया है, जो एकता, शक्ति और न्याय का चिन्ह है।

---

*लिक्टर प्राचीन रोम में एक सार्वजनिक कार्यकर्ता था, जिसका कार्य न्यायाधीशों की आज्ञाओं पर आचरण करना, अपराधियों को दंड देना और सभी सार्वजनिक कार्यों में अपने उच्च अधिकारियों के साथ रहना था

फ़ासिज्म का प्रधान देवता राष्ट्र है। युरोपीय वायुमण्डल की जातीय तथा आत्मविश्वास की भावना ने मुसोलिनी को शक्तिशाली पूर्ण राष्ट्र के निर्माण के लिये प्रेरित किया। राष्ट्रों की कूटनीति, अविश्वास, ईर्ष्या, द्वेष, आर्थिक युद्ध एवं शस्त्रीकरण की होड़ से उसे अनुभव हुआ कि राष्ट्रीय भावना की जागृति के बिना इटली संसार के राष्ट्रों की श्रेणि में बैठने योग्य न होगा। फ़ासिस्टों की दृष्टि में व्यक्तिगत, सांस्कृतिक, सार्वजनिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं नैतिक क्षेत्रों में राज्य की सत्ता ही प्रधान है। फ़ासिस्ट केवल एक ही स्वतन्त्रता में विश्वास करते हैं और वह स्वतन्त्रता है राज्य की स्वतन्त्रता।

ग्यारहवां अध्याय

मुसोलिनी का राष्ट्रनिर्माण कार्य

१. फ़ासिस्टों का कारपोरेटिव राज्य

साम्यवाद का ऐतिहासिक श्रोत—मुसोलिनी के राष्ट्र-निर्माण का दूसरा कार्य उसका कारपोरेटिव राज्य है। कारपोरेटिव राज्य का विचार पहिली पहल मस्सीनी (मैज़िनी) ने दिया था। उसके पश्चात् सोरेल, डिनो ग्रान्डी और रोक्को ने इसके सिद्धान्तों की विस्तृत रूप से व्याख्या की। मुसोलिनी ने अपने इन सहयोगियों की सहायता से समूचे इटली राष्ट्र का नये सिरे से निर्माण कर डाला। उसने संघवाद के आधार पर इटली के वाणिज्य, व्यवसाय एवं कल-कारख़ानों का सङ्गठन किया। उसने संघवाद के अन्तर्राष्ट्रीय रूप को राष्ट्रीय रंग में रंग डाला।

उसने श्रेणि युद्ध के स्थान पर सहयोग का परिधान पहिना कर पूंजीपतियों तथा श्रमिकों को एक ही मंच पर ला खड़ा किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि फ़ासिस्ट संघवाद का सिद्धान्त आर्थिक एवं राष्ट्रीय संघवादों के सिद्धान्तों का वह मिश्रण है, जो ब्रिटेन के गिल्ड समाजवाद (Guild Socialism) से बहुत कुछ मिलता जुलता है।

ग्रांडी का कहना है कि फ़ासिस्ट संघवाद व्यक्ति को प्रजा अथवा नागरिक न मानकर उत्पत्तिकर्त्ता मानता है। वह संघवाद की समितियों के संगठन को नवीन, सच्चा तथा सामाजिक जीवन की यथार्थ एवं ऐसी विचारशील संस्था समझता है, जो वर्तमान राज्य के रूप को धीरे २ अपने रूप में छिपा लेगी।

फासिस्टों का शासन सिद्धान्त

फ़ासिस्टों ने पहिली पहल १९२२ की बोलोइना की कांग्रेस में नियमानुसार संघवाद के सिद्धान्तों को अपनाया। उन्होंने उस समय घोषणा कर दी कि वह प्रत्येक प्रकार के काम करने वाले श्रमिकों की प्रथक् २ समितियां स्थापित करके देश के उत्पादन की उन्नति करेंगे।

राज्यसूत्र हाथ में आने पर उन्होंने निश्चय किया कि देश की सभी शक्तियों को केन्द्रित करके उन्हें उत्पादन की ओर लगाया जावे, देश के पिछले व्यवसायों की रक्षा आयातकारों द्वारा की जावे, जिससे वह बाज़ार की प्रतीयोगिता में मुकाबला कर सकें। वह जानते थे कि किसी भी वर्ग से विशेष त्याग के लिये कहने

का अर्थ होगा, उस वर्ग को चिढ़ा देना। अतएव फ़ासिस्टों ने सभी वर्गों का सहयोग प्राप्त किया। समाज के सभी उत्पादक अंगों, एवं सामग्रियों को उन्होंने इस प्रकार संगठित किया कि प्रत्येक वर्ग का अस्तित्व—उसके दूसरे विरोधी वर्गों के साथ काम करते रहने पर भी—पृथक् ही बना रहा। परिणाम यह हुआ कि देश के कल कारखाने फिर चलने लगे और देश में से बेकारी दूर होने लगी।

जेन्टाइल कमीशन

फ़ासिस्ट सरकार द्वारा स्थापित जेन्टाइल कमीशन ने सन् १९२५ में सुधारों के विषय पर विचार करके निश्चय किया कि देश के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का आधार कारपोरेटिव प्रणाली को बनाना चाहिये। कमीशन ने घोषणा की कि नए सुधारों में केवल उन्हीं लोगों को नागरिकता का स्वत्व प्राप्त होगा, जो देश के उत्पादन में मानसिक अथवा शारीरिक श्रम द्वारा योग देते हैं अथवा देंगे।

संघवाद के सिद्धान्त नागरिकों को श्रमिक वर्ग में विभाजित कर एक दूसरे का सिर फोड़ने को नहीं कहते। संघवाद कल कारखानों को बन्द करना, नष्ट करना अथवा हड़ताल और तालेबन्दी से उनको हानि पहुंचाना बुरा समझता है। समाजवादियों के वर्ग युद्ध के सिद्धान्त को तो वह उठा कर रद्दी की टोकरी में फेंक देता है। वह देश के लिये पूंजीपतियों की पूंजी और श्रमिकों के श्रम की आवश्यकता को एक समान आवश्यक समझता है।

संघवाद शारीरिक श्रम के ही समान बौद्धिक श्रम को भी मान देता है। वह राष्य की शासनप्रणाली में राजनीति के समान अर्थनीति को भी महत्त्व देता है।

कारपोरेटिव प्रणाली आर्थिक क्षेत्र एवं नीति को अधिक महत्व देती है। लोकतन्त्र का आधार आर्थिक क्षेत्र बनाता है। फ़ासिस्टों का कहना है कि सच्चा लोकतन्त्र वही है, जिसका आधार उन श्रमिकों का मत होता है, जो अपने श्रम द्वारा देश के सुख, समृद्धि एवं शक्ति में सहायक होते हैं। श्रमिक राज्य के उत्पादन में सहायक होते हैं, अतः उन्हें ही राज्य के विषय में बोलने का अधिकार है। इस समय तक फ़ासिस्टों का संघ स्थापित हो चुका था।

फ़ासिस्ट संघों को वैध रूप देना

जेन्टाइल कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित होने पर फ़ासिस्टों के राष्ट्रीय संघ ने दिसम्बर १९२५ में मांग की कि सरकार फासिस्ट संघ समूह को वैध रूप देकर उन्हें राज्य का एक अंग मान ले और फ़ासिस्ट संघ ही श्रमिकों की एक मात्र प्रतिनिधि सभा समझी जावे। मुसोलिनी ने कल कारख़ानों के मालिकों तथा उन सभी लोगों को निमन्त्रित किया जो श्रमिकों द्वारा उत्पादन में सहायता देते थे। साथ ही फ़ासिस्टों द्वारा संगठित फ़ासिस्ट श्रमिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को भी निमन्त्रित किया गया। इन दोनों दलों के सम्मेलन का परिणाम यह हुआ कि कारख़ानों के मालिकों ने प्रतिज्ञा की कि वह अपने कारख़ानों में उन्हीं

श्रमिकों को रक्खेंगे, जो फ़ासिस्ट संघों के सदस्य होंगे। इस प्रकार कल-कारखानों के मालिकों ने फ़ासिस्ट संघ को श्रमिकों का एकमात्र प्रतिनिधि मान लिया।

इसका परिणाम यह हुआ कि श्रमिक फ़ासिस्ट संघों की ओर दौड़ पड़े और समाजवादियों के संघ टूट गए। इस प्रकार बात की बात में सारा इटली फ़ासिस्ट बन गया।

श्रमिकों का अधिकार पत्र

उक्त मालिकों तथा मज़दूरों की सन्धि पैलागो विडोनी (Palaggo Vidoni) की सन्धि के नाम से प्रसिद्ध है। २५ नवम्बर १९२६ को इस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर होकर मज़दूरों का अधिकारपत्र (Labour Charter) प्रकाशित कर दिया गया।

फ़ासिस्ट सम्पत्ति पर राज्य का अधिकार मानते हैं, किन्तु वह व्यक्ति के निजी अधिकारों का भी अतिक्रमण नहीं करते। वह सम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण में विश्वास नहीं करते। उनका सिद्धान्त है कि यद्यपि सम्पत्ति वास्तव में राज्य की वस्तु है, परन्तु उस पर व्यक्तियों का निजी अधिकार है। किन्तु यह अधिकार पूर्ण अधिकार नहीं है। व्यक्ति का उन पर अधिकार केवल ट्रस्टी अथवा संरक्षक के रूप में है। वह उसका मनमाना उपयोग नहीं कर सकता। फ़ासिज़्म किसी व्यक्ति को सम्पत्ति का व्यर्थ व्यय करने का अधिकार नहीं देता।

श्रम-अधिकारपत्र (Labour Charter) उद्योग धन्दों के निजी संगठन के सिद्धांत को मानता है। यद्यपि यह संगठन

नागरिकों द्वारा किया जाता है, किन्तु वह राज्य के प्रति अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी रहते हैं। राज्य को उद्योग धन्दों के संगठन एवं नियंत्रण में हस्तक्षेप करने का पूर्ण अधिकार है।

विभिन्न श्रमिक संघों का संगठन

श्रमिक लोग अपने मानसिक, शारीरिक एवं कला सम्बन्धी वर्गों के अनुसार अनेक संघों में संगठित हैं। राज्य एक प्रकार के कार्य करने वाले एक संघ को ही स्वीकार करता है। इस प्रकार राज्य प्रत्येक नगर, तहसील, ज़िले और प्रान्त के एक एक वर्ग के संघ को एक २ प्रकार के काम करने वालों के लिये मानता है।

प्रत्येक संघ एक प्रकार के श्रमिकों और मालिकों द्वारा संगठित उनका प्रतिनिधि होता है। श्रमिकों आर मालिकों के संघ सर्वथा भिन्न होते हैं। फ़ासिस्ट श्रमिकों और मालिकों के मिश्रित संघ को नहीं मानते और न उन्हें प्रोत्साहन ही देते हैं। जब किसी उद्योग धन्दे के किसी स्थान विशेष के रहने वाले कुल श्रमिकों में से दस प्रतिशत श्रमिक संघ के संगठन में सम्मिलित हो जात हैं तो सरकार उनके अस्तित्व को कानूनी मान लेती है। इसी प्रकार जब मालिकों का संघ सरकार को यह भरोसा दिला देता है कि वह उद्योग धन्दे जिसके लिये वह संघ बनाते हैं, कुल श्रमिकों का दस प्रतिशत संख्या को काम दे चुके हैं तो सरकार उसको वैध रूप देकर उसके अस्तित्व को मान लेती है। अठारह वर्ष का प्रत्येक नागरिक संघ का सदस्य बन सकता है।

संघ में श्रमिकों और मालिकों के प्रतिनिधि होते हैं। वह श्रमिकों और मालिकों की ओर से श्रमिकों के इक़रारनामों पर हस्ताक्षर करते हैं।

इटली में और भी संघ तथा समितियां हैं। परन्तु सरकार उनको फ़ासिस्ट संघ के समान स्वीकार नहीं करती। इस प्रकार के संघ सरकारी नौकरी करने वालों के हैं। सैनिकों, अस्त्र शस्त्र धारी नागरिकों, मैजिस्ट्रेटों, विश्व विद्यालयों के अध्यापकों, सेकिंडरी स्कूल के शिक्षकों, स्वायत्त विभाग तथा परराष्ट्र विभाग के काम करने वालों तथा विद्यार्थियों के संघ स्थापित करना अवैध है।

उक्त संघों का संगठन भारतीय राष्ट्रीय महासभा के संगठन के समान ग्रामों से आरम्भ होकर नगर, दैशिक, प्रान्तीय एवं अन्त में राष्ट्रीय रूप में परिणत हो जाता है। ऐसे कुल ६ प्रकार के संघ हैं, जिनमें ६ श्रमिकों और ६ मालिकों के अर्थात् दोनों मिलाकर १२ संघ हैं। उक्त संघ निम्नलिखित हैं—

औद्योगिक (Industrial), कृषि (Agricultural), सामुद्रिक (Transportation), अन्तर्देशिक (Inland Navigation), वाणिज्य व्यवसाय (Commerce) और बैंकिंग। इनमें सातवां विभाग कलाकारों और तथा अन्य व्यवसाय वालों का है।

सन् १९३० में राष्ट्रीय संघ सभा (Nation Council of Corporation) की स्थापना हुई। इस सभा में सभी संघों के प्रति-

निधि, मन्त्रीमण्डल के मंत्रीगण तथा फ़ासिस्ट दल के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। मुसोलिनी इस सभा का सभापति था। इस सभा अथवा कौंसिल का मुख्य कार्य राष्ट्र के उत्पादन में सभी संघों को एक दूसरे के सहयोग एवं समानता के आधार पर उत्पादन की उन्नति के लिये स्थापित करना था। इसके सातों विभागों में से प्रत्येक विभाग संघों के संगठन, नियम तथा कार्यों का परिचालन तथा नियंत्रण करता है। राज्य के मन्त्रीमण्डल में इन संघों का एक मन्त्री होता है, जो देश के समस्त संघों का एकमात्र परिचालक तथा उत्तरदायी व्यक्ति समझा जाता है।

मालिकों और श्रमिकों के संघ प्रथक् २ होते हैं। उनके प्रतिनिधि राष्ट्रीय सभा में सीधे जाते हैं। पहिली पहल १९३३ में उद्योगों के नियन्त्रण के लिये क़दम बढ़ाया गया। मई १९३४ के अन्त तक मुसोलिनी ने २२ संघ (Corporations) स्थापित किये। प्रत्येक सघ का सभापति या तो मन्त्रीमण्डल का कोई सदस्य अथवा उपमन्त्री होता है। इसको मुख्य रूप से तीन काम करने पड़ते हैं।

सरकार को आर्थिक, उत्पादन आदि विषयों पर सलाह देना, श्रमिकों और मालिकों के पारस्परिक झगड़ों का निपटारा और मजदूरी तथा उत्पादन के मूल्य का नियन्त्रण तथा संरक्षण करना।

उक्त संघों की स्थापना के पश्चात् राष्ट्रीय संघ सभा (National Council of Corporations) ही समितियों का संघ हो गई और उसने चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ अथवा इटालियन प्रतिनिधि

संघ या पार्लियामेंट का स्थान ग्रहण किया। इस प्रकार इटली ने संसार की राजनीति में एक नये प्रकार की शासनव्यवस्था की स्थापना की, जिसे कारपोरेटिव राज्य (Corporative State) कहते हैं।

कारपोरेटिव प्रणाली की विशेषता

कुछ लोग इसकी तुलना गिल्ड समाजवादियों के सिद्धान्त से और कुछ इसकी स्थापना सोवियट प्रणाली के आधार पर की गई बतलाते हैं। सोवियट समितियों के समान कारपोरेशन किसी दल विशेष का प्रतिनिधि नहीं है। दोनों में अन्तर यह है कि एक केवल श्रमिकों का प्रतिनिधि है तो दूसरा मालिकों का भी है। इस प्रणाली में शासन की बागडोर सीधे श्रमिकों और मालिकों के सम्मिलित हाथ में दे दी गई है।

फ़ासिस्टों की कारपोरेटिव प्रणाली आधुनिक उलझी हुई आर्थिक अवस्था के सुलझाने का एक साधन है। सभी देशों की आर्थिक अवस्था सुधारने एवं आर्थिक क्षेत्र की उठती हुई भयानक समस्याओं—वर्ग युद्ध, श्रेणि युद्ध, राष्ट्रीयकरण, श्रमिक नियन्त्रण, आर्थिक साम्राज्यवाद तथा एकाधिकार आदि को बड़ी सुन्दरता के साथ अपनी कारपोरेटिव स्टेट प्रणाली द्वारा सुलझाया गया है। यह प्रणाली पारस्परिक सहयोग, आदान प्रदान एवं मैत्री के आधार पर चलाई गई है। इस प्रणाली में दस रुपये के दास से तक लेकर पांच सौ रुपया मासिक पाने वाले सभी का दर्जा बराबर रहता है।

ऐसा राज्य श्रमिक और मालिक दोनों को ही देश के लिये बड़े से बड़ा त्याग करने की शिक्षा देता है। वह उनको आत्मोत्सर्गी और स्वाभिमानी बनाता है। वह श्रमिकों को वर्गयुद्ध, निरतंर होने वाली हड़तालों, तालेबन्दी, हिंसा, कल-कारखानों की तोड़फोड़, एक दूसरे के साथ मनोमालिन्य तथा ईर्ष्या द्वेष की भावनाओं से दूर हटा कर कर्तव्यप्रिय, सहयोगी, उपयोगी, सहनशील एवं निःस्वार्थ नागरिकों की श्रेणी में खड़ा कर देता है।

वह उनको समाज का सेवक बना कर मजदूरों की श्रेणि से उठा कर समाज सेवकों के ऊंचे स्थान पर बिठाता है।

२. फासिस्ट शासन पद्धति

इटली की शासनपद्धति अमेरिका, इंगलैंड तथा फ्रांस की लोकतन्त्रीय शासनपद्धति से एक दम भिन्न है। यद्यपि सामान्य रूप से देखने में वह अधिनायकतन्त्र अथवा निरंकुश देख पड़ती है, किन्तु ऐसा न होकर उसका मूल आधार लोकतन्त्र के परिवर्तित रूप पर स्थित है।

दल शासन का प्रथम चरण

मुसोलिनी के सन् १६२२ के प्रथम मन्त्रीमण्डल में उसका बहुमत चैम्बर आफ डेपुटीज में नहीं था। सन् ११२३ में फासिस्ट दल के प्रमुख कार्यकर्ता श्री ऐक्रेबो (Acrebo)ने आने वाले १९२४ के निर्वाचन के लिए एक नई निवोचन प्रणाली का आविष्कार किया, जिसको तत्कालीन चैम्बर ने एक सौ तीन के विरुद्ध तीन सौ तीन वोटों से स्वीकार किया। अपने विरोधियों

द्वारा इस प्रणाली के स्वीकार करने से ही फ़ासिस्टों की जड़ इटली में जम गई। परिणामस्वरूप सन् १९२४ के निर्वाचन में फ़ासिस्ट दल को आशातीत सफलता मिली और चैम्बर में उसका बहुमत हो गया।

दल शासन का द्वितीय चरण

एक दल का शासन स्थापित करने का द्वितीय चरण १७ मई सन् १९२८ को उठाया गया। अब क्षेत्रों के स्थान पर संघों को यह अधिकार दिया गया कि वह प्रतिनिधि चुन कर भेजा करें। इस समय उन सभी नागरिकों को मताधिकार दे दिया गया, जिनकी अवस्था कम से कम २८ वर्ष की हो, जिनके सन्तति हो, जो किसी संघ के सदस्य हों और संघ का शुल्क देते हों, सौ लीरा टैक्स देते हों, पेंशन पाते हों अथवा पादड़ी हों।

स्त्रियों को मताधिकार नहीं दिया गया। फ़ासिस्ट लोग स्त्रियों का स्थान भारतवासियों और जर्मनों के समान राजनीति न मान कर घर का चूल्हा चक्की ही मानते हैं।

प्रतिनिधि निर्वाचन प्रणाली

नये विधान के अनुसार तेरहों संघ अपने प्रतिनिधियों की सूची बनाते हैं। उक्त संघों के सदस्यों की यह सूची ८०० प्रतिनिधियों से अधिक नहीं होनी चाहिये। उक्त ८०० की सूची में दो सौ प्रतिधियों की सूची और जोड़ी जाती है, जो उन कानूनी संघों द्वारा निश्चित की जाती है, जिनका काम बौद्धिक, सांस्कृतिक, शिक्षा और राष्ट्र हितकारी कार्यों की उन्नति करना है।

उक्त एक सहस्र प्रतिनिधियों की सूची फ़ासिस्ट ग्रैंड कौंसिल

में विचारार्थ उपस्थित की जाती है। ग्रैण्ड कौंसिल फिर उनमें से ४०० प्रतिनिधियों को छांट कर उनकी सूची तयार करती है। उस सूची में मुसोलिनी का नाम सर्वप्रथम रहता है। यही सूची जनता के सन्मुख उपस्थित की जाती है। वोटरों को केवल इतना ही अधिकार प्राप्त है कि वह कुल सूची को चाहे स्वीकृत या अस्वीकृत करदें। उनको यह अधिकार नहीं है कि वह उन चार सौ प्रतिनिधियों की सूची में से कुछ को निर्वाचित करें और कुछ को निर्वाचित न करें। निर्वाचक वर्ग केवल उस प्रस्तुत सूची के विषय में ही हां या ना कह सकता है।

यदि निर्वाचक लोग उक्त सूची को स्वीकार करते हैं तो उनका फ़ासिस्टदल पर विश्वास समझा जाता है और वह चार सौ व्यक्ति चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ के सदस्य समझे जाते हैं। किन्तु यदि सूची अस्वीकृत हो जावे तो मुसोलिनी तथा सरकार पर अविश्वास समझा जाता है। अस्वीकृति की अवस्था में निर्वाचक वर्ग को सन् १९२४ की निर्वाचन प्रणाली द्वारा पुनः चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ का निर्वाचन करना होगा और यही निर्वाचन फ़ासिस्ट दल के भाग्य का निर्णय करेगा।

चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ में ज्योलिटी के विरोध करने पर भी यह बिल १५ के विरुद्ध २१६ मतों से स्वीकृत हुआ था, यद्यपि विरोध इसका सीनेट में भी हुआ था, किन्तु यह वहां से भी पास हो ही गया।

आज बलिल्ला संघ के ३७७४१३० सदस्य हैं, जो भिन्न २ श्रेणियों में इस प्रकार विभाजित हैं—

बलिल्ला	१६, ४१, ८१२
इटालियन बच्चियां	१४, ०६, ४७९
ऐडवांस गार्डस्	४, ७५, ५७०
इटालियन युवतियां	२, ५०, ८६९
	३७, ७४, १३०

इनके अतिरिक्त शेर बच्चे प्रथक् हैं, जिनकी संख्या ऊपर नहीं दी गई है।

शिक्षा कार्य का संचालन

शिक्षा का सारा काम शिक्षा विभाग के उपमन्त्री श्री रैनेसे रिकी के संचालन में चलता है। उनकी सहायता के लिये ९४ प्रान्तीय संचालक भी हैं। इटालियन उपनिवेशों के लिये ५ संचालक प्रथक् हैं, क्योंकि यह संगठन उपनिवेशों में भी किया गया है।

उक्त अफ़सरों के अतिरिक्त जिलों में भी अनेक अफ़सर हैं। जिलों तथा सब-डिविजनों में कुल मिला कर ९६५७ संचालक हैं, जिनके लगभग ३१,००० परामर्शदाता हैं। युवतियों की शिक्षा के लिये प्रान्तों में ९४ और जिलों में ९१४१ संचालिकाएं हैं।

अफ़सरों की ट्रेनिंग के लिए दो बड़े २ कालेज खुले हुए हैं, जिनमें एक पुरुषों के लिये तथा दूसरा स्त्रियों के लिये है।

बलिल्ला संघ की शिक्षा के लिए स्थान-स्थान पर स्थायी

शिक्षा भवन खुले हुए हैं, जिनमें व्यायामशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, सिनेमाभवन तथा सभाभवन का प्रबन्ध वैज्ञानिक ढंग से किया हुआ है। इन्हें 'कासाडी बलिल्ला' नाम से पुकारा जाता है।

शारीरिक शिक्षा

इन लोगों को नैतिक शिक्षा के साथ २ शारीरिक शिक्षा सैनिक ढंग पर दी जाती है। इन लोगों को प्रत्येक प्रकार का खेल खिला कर सैनिक ढंग पर ड्रिल कराई जाती है। ऐडवान्स गार्ड्स को तो बन्दूक देकर भी परेड कराई जाती है। इन बालिकाओं और बालकों की शिक्षा का प्रधान उद्देश्य इनको ६ वर्ष की अवस्था से ही सैनिक बना देना होता है। इस आंदोलन के कारण आज सारा इटली देश सैनिक छावनी बन गया है, जिसमें ५ वर्ष की अवस्था से अधिक का व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) सैनिक है।

उन्हें बाल्यावस्था से ही रोमन वीरों की गाथाएं पढ़ाई तथा सुनाई जातीं और सैनिक बनने का उपदेश दिया जाता है। क्यों कि फ़ासिस्ट लोग युद्ध प्रेमी होते हैं।

बलिल्ला संघ की ओर से अनेक बालहितकारी कार्य तथा ग्राम स्कूल भी चलाये जाते हैं। इन लोगों को धार्मिक तथा अध्यात्मिक शिक्षा भी दी जाती है।

यह तो मुसोलिनी के इटली को सैनिक राष्ट्र बनाने का विवरण है। इसके अतिरिक्त उसकी जल सेना तथा आकाशी सेना ने भी आज यूरोप में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है।

बारहवां अध्याय

इटली तथा अन्य राष्ट्र

इटली और अलबेनिया—यूरोप के प्रमुख राष्ट्र यह पहिले ही स्वीकार कर चुके थे कि अलबेनिया इटली का प्रभावक्षेत्र बना रहे और इटली उस पर अप्रत्यक्ष रीति से शासन करता रहे। ७ नवम्बर १९२१ को पेरिस की घोषणा से फ्रांस, इङ्गलैंड, जापान और इटली में तय हुआ कि राष्ट्रसंघ में जोर देकर अलबेनिया की सीमा का प्रश्न इटली को सौंप दिया जावे। किन्तु मुसोलिनी ने शासनारूढ़ होने पर अलबेनिया को उसकी स्वतन्त्रता का विश्वास दिला कर उसकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया, उसने उसके आन्तरिक विप्लवों को शांत करने में सहायता देकर उसका इस प्रकार आर्थिक सुधार कराया कि वह अपनी स्वतन्त्र सेना के बोझ को स्वयं सम्भाल कर अपनी आंतरिक रक्षा कर सके। इस कार्य के

लिए अलबेनिया को धन और जन दोनों की ही सहायता देकर उसको स्वतन्त्रता का मार्ग दिखलाया गया। अलबेनिया के प्रश्न के साथ २ मुसोलिनी ने ऐड्रियाटिक समुद्र की समस्या का अध्ययन करना भी आरम्भ किया।

इटली और यूनान—कार्फू का झगड़ा

मुसोलिनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति की दृष्टि में ऐड्रियाटिक की समस्या का अध्ययन कर ही रहा था कि अगस्त १६२३ में उसे समाचार मिला कि अलबेनिया में जो इटली का सैनिक मिशन गया हुआ था, उसको यूनानी सीमा के कुछ डाकुओं ने पहिले तो धोखे से सड़क के एक किनारे पर छिपा दिया और फिर जान से मार डाला। इस कमीशन में इस प्रकार निम्न लिखित चार इटालियन मारे गए—

जेनेरल एनरीको टेलेनी,
सर्जन मैजर ल्यूगी कोर्टो,
तोपखाने के लेफ्टीनेन्ट मेरिओ बोनासीनी और एक
सैनिक फर्नेटी।

इस मिशन को अन्य अन्तर्राष्ट्रीय मिशनों के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय समझौते के कार्य के लिए भेजा गया था। इटली के व्यक्तियों पर आक्रमण करने का अर्थ था इटली को कुछ न समझना। इस घटना से सारे इटली में रोष छा गया। मुसोलिनी से तुरन्त कार्यवाही करने के लिए स्थान २ से अनुरोध किया जाने लगा। परिणामस्वरूप मुसोलिनी ने यूनान को अल्टिमेटम दे दिया।

मुसोलिनी ने यूनान से तुरन्त क्षमा प्रार्थना करने और क्षति पूर्ति स्वरूप पांच करोड़ लीरा* देने की मांग की।

यूनान एक ओर तो इस पर बिलकुल ध्यान न देकर अनेक बहाने बनाता रहा और दूसरी ओर इटली के विरुद्ध अन्य राज्यों से सहायता मांगता रहा। मुसोलिनी को इस पर बड़ा क्रोध आया। उसने तुरन्त ही जलसेना का एक दस्ता यूनानी द्वीप कार्फू (Carfu) को भेज दिया। इसके साथ ही साथ इसकी सूचना उसने यूरोप के अन्य राष्ट्रों को भी दे दी। राष्ट्रसंघ इस मामले मे भी बिल्कुल नपुंसक सिद्ध हुआ।

इधर इटली के जंगी बेड़े ने ३१ अगस्त १९२३ को कार्फू द्वीप पर थोड़ी बहुत गोलाबारी करके उस पर अधिकार कर लिया।

मुसोलिनी ने घोषणा करदी कि यदि इस मामले का संतोष जनक निपटारा न होगा तो इटली राष्ट्रसंघ से त्यागपत्र दे देगा; क्यों कि उसके लिये यह शाब्दिक अपमान का प्रश्न न होकर इटालियन अफ़सरों के जीवन का प्रश्न था। अंत में अनेक राज्यों के हस्तक्षेप से यूनान को झुकना पड़ा। उसने मुसोलिनी को पूर्णतया संतुष्ट करके पूरा हर्जाना दे दिया। मुसोलिनी ने इसमें से १ करोड़ यूनानी शरणार्थियों को दे दिया। पूर्ण संतुष्ट होने पर मुसोलिनी ने २७ सितम्बर को अपनी जलसेना कार्फू से वापिस बुला कर इस अध्याय को समाप्त कर दिया।

---

*इटालियन सिक्का

यद्यपि इस घटना से इटली और यूनान का पर्याप्त मनो-मालिन्य हो गया था, किन्तु मुसोलिनी के कई वर्ष के अनवरत उद्योग के परिणामस्वरूप इन दोनों का मनोमालिन्य २३ सितम्बर १९२८ को मित्रता की सन्धि से एक दम दूर होगया।

फ़्यूम की समस्या का इतिहास

इसके पश्चात् मुसोलिनी ने फ़्यूम के प्रश्न को अपने हाथ में लेकर उसका निर्णय किया। इस प्रसंग मे यहां फ़्यूम सम्बन्धी सभी घटनाओं का सिंहावलोकन कर लेना चाहिये।

फ़्यूम नगर इटली और यूगोस्लैविया की सीमा पर है। महायुद्ध से पूर्व इस स्थान पर इटली के अतिरिक्त अन्य अनेक राज्यों का दांत भी था। किसी जबर्दस्त राज्य का अंग न होने के कारण बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही यहां विदेशी लोग आकर बसने लगे। इन नये बसने वालों में इटली वालों की संख्या सब से अधिक थी। यहां तक कि सन् १९१० में २२४२८ इटालियन तथा १३३५१ स्लैव, हंगैरियन, जर्मन तथा अन्य लोग थे।

यहां इटालियन अधिक होने के कारण इटली वाले इस पर अपना अधिकार समझते थे। उन्होंने फ़्यूम में अनेक उत्तम २ सड़कें बनालीं तथा अस्पताल आदि बना कर अपना बहुत सा रुपया भी वहां फंसा दिया था।

जिस समय सन् १९१५ में इटली को महायुद्ध में सम्मिलित करने के लिये लन्दन सन्धि पर वार्तालाप किया जा रहा था, इटली ने फ़्यूम के प्रश्न पर इस लिये कुछ अधिक ध्यान नहीं

दिया कि फ्यूम में इटालियनों की अधिक संख्या होने के कारण आत्मनिर्णय के सिद्धान्त के अनुसार उसको फ्यूम के मिल जाने की पूरी आशा थी।

इधर इटली के मुकाबले पर फ्यूम का एक और भी जबर्दस्त दावेदार पैदा हो गया था। महायुद्ध के पूर्व का छोटा सा राज्य सर्विया अब एक बड़ा भारी राज्य बनाने के मनसूबे बांध रहा था। उसकी महत्वाकांक्षाओं को क्रोट्स् और स्लोवेन्स् लोगों ने उसके साथ एक राज्य में रहने की इच्छा प्रदर्शित करके और भी बढ़ा दिया था। फ्यूम केवल एक अच्छा बन्दरगाह ही नहीं है, वरन ऐसा अच्छा बन्दरगाह है कि उसके जैसा उत्तम बन्दरगाह ऐड्रियाटिक समुद्र में और कोई भी नहीं है। अतः इस नवीन राज्य का स्वप्न देखने वाले अपने भावी राज्य के लिये इसको सुरक्षित रखने का महायुद्ध समाप्त न होने पर भी उद्योग कर रहे थे। अक्टूबर १९१८ में जिस समय इटली की सेनाएं पिआवे के युद्ध में आस्ट्रिया की अंतिम आहुति देने में लगी थीं, क्रोट लोगों की सेनाओं ने २३ अक्टूबर १९१८ को फ्यूम पर अधिकार कर लिया। नवम्बर के आरम्भ में महायुद्ध समाप्त हो गया। इधर इटली की सेनाओं ने फ्यूम पर सर्विया की सेनाओं का अधिकार देख कर नवम्बर में उन्हें वहां से निकालना चाहा। इस प्रश्न को लेकर दोनों सेनाओं में कुछ थोड़ा सा झगड़ा भी हो गया। अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन और फ्रांस के प्रधानमन्त्री क्लेमेंशू की सहानुभूति इटली

की अपेक्षा सर्बिया की ओर अधिक थी। उन्होंने युद्ध से छुट्टी मिलते ही उसकी नवीन राज्य की इच्छा पूरी करके इस राज्य का नाम यूगोस्लैविया रख दिया। इटली और सर्बिया की सेनाओं के झगड़े का इस यूगोस्लैविया की नेशनल कौंसिल ने जबर्दस्त विरोध किया। अन्त में पेरिस के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञों के हस्तक्षेप के कारण फ्यूम से सर्बिया की सेनाएं तब तक के लिए हट गईं जब तक पेरिस की शान्ति परिषद् इस प्रश्न का अन्तिम निर्णय न कर दे।

फ्यूम के प्रश्न को लेकर पेरिस की शान्ति परिषद् में इटली और यूगोस्लैविया का खूब झगड़ा रहा। यहां तक कि एक बार तो इटली के प्रधानमन्त्री आरलैण्डो २३ अप्रैल १९१९ को सन्धि-परिषद् को छोड़ कर ही चले आये। किन्तु यूगोस्लैविया के हिमायती राष्ट्रपति विल्सन थे। इस समय इटली में आरलैण्डो के मन्त्रीमण्डल की स्थिति डांवाडोल हो रही थी। ५ मई को इटालियन प्रतिनिधिमण्डल फिर पेरिस चला। जून में आरलैण्डो के मन्त्रीमण्डल का पतन होने पर नीती प्रधानमन्त्री बना। जून में ही फ्यूम में फ्रांसीसी मल्लाहों और इटली के सैनिकों में बड़ा भारी झगड़ा हो गया। इसके थोड़े दिन पश्चात् ही नीती ने पेरिस की शान्ति परिषद् के निर्णय को शिर झुका कर स्वीकार कर लिया।

किन्तु पेरिस की शान्ति परिषद् ने ता० २८ जून १९१९ को वरसाई की सन्धि के अनुसार फ्यूम को पचास सहस्र जनसंख्या तथा आठ वर्ग मील क्षेत्र फल को राष्ट्रसंघ के आधीन एक

स्वतन्त्र राज्य बना दिया। राष्ट्रसंघ ने इसको अपनी ओर से यूगोस्लैविया का प्रभाव क्षेत्र बना दिया। इस पर राष्ट्रीय इटालियनों ने क्रुद्ध होकर—जैसा कि पहिले बतलाया जा चुका है—दनुनसिओ के नेतृत्व में फ्यूम पर चढ़ाई करके ट्रिएस्टे के समीप रौंशी (Ronchi) नामक स्थान पर सेना जमा करली। ता० १२ सितम्बर १६१९ को उन्होंने फ्यूम पर भी अधिकार कर लिया। मुसोलिनी अपने पत्र द्वारा इस राष्ट्रीय सेना की सब प्रकार से सहायता कर रहा था। प्रधानमन्त्री नीती ने दनुनसिओ को फ्यूम से हटने की आज्ञा दी, किन्तु उसने उस आज्ञा की लेशमात्र भी चिन्ता न की। उसने फ्यूम पर अधिकार करके उसके लिये एक स्वतन्त्र शासन विधान बनाया। इसके पश्चात दनुनसिओ डलमाशिया की राजधानी जारा (Zara) आया। वहां से वह कुछ और प्रदेश जीतने के लिये आगे बढ़ा। इस समय नीती के मन्त्रीमण्डल ने उसका आर्थिक बहिष्कार किया, किन्तु राष्ट्रीय इटालियन लोग उसको बराबर सहायता भेजते रहे। कुछ दिनों के पश्चात् नीती के मन्त्रीमण्डल का पतन होने पर उसके स्थान पर ज्योलिटी फिर प्रधान मन्त्री हुआ। उसने ता० १२ नवम्बर १९२० को यूगोस्लैविया के साथ रैपोलो की सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार उसने वरसाई की सन्धि के निर्णय को मान कर फिर उसको यूगोस्लैविया का प्रभाव क्षेत्र स्वीकार कर लिया। उसने इस सन्धि के ऊपर २ फरवरी १९२१ को आचरण किये जाने के दिन फ्यूम से इटली का सम्बन्ध तोड़ने के लिये दनुनसिओ को वहां

से निकालने का निश्चय किया। उसने फ़्यूम को एक सेना भेजी, जिसने राष्ट्रीय इटालियनों तथा दनुनसिओ के निवास स्थान तक पर बम बरसाए। दनुनसिओ घायल होने से बाल बाल बच गया।

इटली की सरकारी सेना के सामने राष्ट्रीय इटालियनों को हटना पड़ा। अब इटली और यूगोस्लैविया की सरकार ने मिलकर फ़्यूम के शासन विधान को फिर ठीक किया। फ़्यूम की सरकार का प्रधान वहीं का एक निवासी और दननुसिओ का विरोधी सिन्योर ज़ेनेला (Signor Zenella) बनाया गया। यह व्यक्ति स्लैव था। वह राष्ट्रीय इटालियनों के विरुद्ध यूगोस्लैविया से ही सम्बन्ध रखना चाहता था। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्यूम के राष्ट्रीय इटालियनों (फ़ासिस्टों) ने सन् १९२२ में फ़्यूम की विदेशी नीति पर फिर कड़ी चोट की। उन्होंने सरकारी दफ़्तरों तक को घेर लिया। लाचार होकर सिन्योर ज़ेनेला ने "फ़्यूम की राष्ट्रीय रक्षा सभा" के पक्ष में पद त्याग कर दिया। उसको एक सशस्त्र मोटर में बैठा कर ज़बर्दस्त पहरे में सीमा पर पहुंचा दिया गया। उसका उत्तराधिकार सिन्योर प्रोडान (Signor Prodan) नामक वहीं के एक इंजीनियर को मिला। उसने फ़्यूम को इटली में सम्मिलित करने की घोषणा कर दी; किन्तु इटली की सरकार अब भी फूंक २ कर पैर रख रही थी। उसने जूरिआती (Giurati) नामक एक फ़ासिस्ट डिप्टी से इस बात का अनुरोध किया कि वह इस भेंट को अस्वीकार करके इटली

की सरकार को अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े में पड़ने से बचा दे। इस समय दनुनुसिओ गार्डा नाम की एक झील के पास एकान्तवास कर रहा था। फ्यूम के राष्ट्रीय दल ने उसको वहां से बुलाने का फिर निमन्त्रण भेजा। किन्तु उसने इस झगड़े की निन्दा करते हुए भी स्वयं इस मामले में पड़कर उसका नेतृत्व करने से साफ़ इन्कार कर दिया।

दनुनुसिओ के इन्कार करने पर भी दोनों जातियों का संघर्ष बना ही रहा, जिससे वहां का व्यापार चौपट हो गया। मुसोलिनी फ्यूम के प्रश्न को सुलझाने का बराबर यत्न कर रहा था। शासनसूत्र हाथ में आने पर तो उसने इस विषय में और भी उद्योग करना आरम्भ किया। अन्त में उसने २४ जनवरी १९२४ को रोम में यूगोस्लैविया की सरकार के साथ एक सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार बड़े बन्दरगाह सहित फ्यूम इटली को मिल गया। तथा पोर्टो, बैटास और 'डेल्टा' यूगोस्लैविया को मिल गए। इस सन्धिपत्र पर यूगोस्लैविया की ओर से वहां के प्रधान राजनीतिज्ञ पैसिक (Pasic) और मन्त्री निसिक (Nincic) ने हस्ताक्षर किये थे।

यूगोस्लैविया के साथ फ्यूम का प्रश्न तय हो जाने पर भी इटली का रेल्वे के आयात निर्यात के प्रश्न के ऊपर हंगैरी के साथ फिर भी झगड़ा बना रहा। बहुत कुछ वार्तालाप के पश्चात २५ जुलाई १९२७ को रोम में एक सन्धि इटली और हंगैरी में

हुई, जिसके अनुसार हंगैरी को भी वहां की रेलों से काम लेने की सुविधा मिल गई।

इटली और यूगोस्लैविया

फ्यूम के अतिरिक्त अन्य भी कई प्रश्नों के ऊपर इटली का यूगोस्लैविया के साथ मतभेद था। मुसोलिनी ने इन सब मामलों को सन् १९२५ में नेट्यूनो कनवेंशन (Nettuno Convention) करके समाप्त कर दिया। इस सारे राजनीतिक वार्तालाप में मुसोलिनी को डलमाशिया के ऊपर से अधिकार छोड़ना पड़ा। किन्तु इससे अच्छा समझौता होना सम्भव भी नहीं था।

यद्यपि नेट्यूनो कनवेंशन की संपुष्टि यूगोस्लैविया ने नहीं की, किन्तु इससे दोनों पड़ौसियों के राजनीतिक सम्बन्ध और अच्छे हो गए।

मुसोलिनी की परराष्ट्रनीति का समर्थन

सन् १९२४ में मुसोलिनी ने अपना परराष्ट्रीय कार्यक्रम सीनेट के सन्मुख उपस्थित किया तो उसके पक्ष में ३१५ वोट आये। छब्बीस अनुपस्थित सदस्यों को इसके विरुद्ध समझा गया।

इटली और स्वीज़लैंड

२० सितम्बर १९२४ को मुसोलिनी ने स्वीजलैंण्ड के साथ सन्धि करके अपनी उदारहृदयता का परिचय किया।

इंगलैंड और इटली के सम्बन्ध

इस समय मुसोलिनी ने इंगलैण्ड से भी नये सम्बन्ध बनाने की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। वह सम्बन्ध पेरिस की

सन्धि परिषद् में २६ अप्रैल १९१५ के लंदन पैक्ट की धारा १३ पर पर्याप्त ध्यान न देने के कारण बिगड़ने लगे थे।

दिसम्बर १९२४ में मुसोलिनी ने ब्रिटेन के नये परराष्ट्र मन्त्री चैम्बरलेन से भेंट की। इस वार्तालाप के फलस्वरूप ब्रिटेन इटली को अफ्रीका (केनिया) में जूबालैण्ड से आगे का प्रदेश औपनिवेशिक हर्जाने के रूप में देने को सहमत हो गया। इस विषय में ६ दिसम्बर १९२५ को इटली, मिश्र और इंगलैण्ड में मिश्र की राजधानी काहिरा (Cairo) में एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार लीबिया और मिश्र की सीमा का झगड़ा भी सदा के लिये तय हो गया और जाराबुब (Jarabub) स्थान की मरुस्थली के हरे-भरे प्रदेश पर भी इटली का अधिकार मान लिया गया।

अब इटली का पूरे सेनूसिया (Senussia) प्रदेश पर अधिकार हो गया और उसने साइरेनाएका (Cvrenaica) के अन्तरतम प्रदेश पर अधिकार करके कूफ्रा (Kufra) की हरित भूमि को भी हस्तगत कर लिया।

निश्शस्त्रीकरण की योजना

मुसोलिनी ने यूरोप की निश्शस्त्रीकरण योजना के लिये बहुत कुछ किया था। ५ जून १९२८ को तो उसने इटली की सीनेट के सन्मुख एक योजना भी उपस्थित की थी, किन्तु इस योजना में फ्रांस ने बाधा डाल दी। इसके पश्चात् मुसोलिनी ने सन् १९३१ में इस सम्बन्ध में राष्ट्रसंघ में एक प्रस्ताव उपस्थित किया। १० फर्वरी १९३२ को काउंट ग्राण्डी ने जेनेवा कांफ्रेन्स में फिर इस पर

ज़ोर दिया, किन्तु योरोपीय राष्ट्रों की रक्त पिपासा अधिक होने के कारण इस विषय में कुछ भी न किया जा सका।

इटली और अफ़गानिस्तान

सन् १९२५ में अफ़गानिस्तान की राजधानी काबुल में पीपरनो नामक एक इटालियन इंजीनियर मारा गया। यह व्यक्ति वहां काम करने को गया हुआ था। मुसोलिनी के बार २ चेतावनी देने पर भी वहां की सरकार ने पीपरनो के परिवार वालों को कोई हर्जाना नहीं दिया। इसके पश्चात् जब वहां के बादशाह अमानुल्ला यूरोप के दौरे पर आते हुए रोम आए तो मुसोलिनी ने उनका अच्छा स्वागत किया, जिससे दोनों देशों की मित्रता दृढ़ हो गई।

इटली वाले स्वभाव से ही अतिथिप्रिय होते हैं। वह अपने देश में आने वाले शत्रु तक का सत्कार करते हैं। यदि इटली-वासियों की यह प्रकृति न होती तो इटली का अफ़गानिस्तान के साथ अत्यन्त अधिक मनमुटाव हो जाता और न बादशाह अमानुल्ला का ही वहां स्वागत हो पाता।

इटली और जर्मनी—लोकार्नो पैक्ट

यद्यपि महायुद्ध में इटली ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध किया था, किन्तु जर्मनी की पराजय के बाद उसने जर्मनी के शोषण में कोई भाग नहीं लिया। मुसोलिनी की तो शासनारूढ़ होने के बाद से ही पीड़ित जर्मनी के साथ बराबर सहानुभूति रही। फ्रांस

द्वारा रूर पर अधिकार की घटना भी मुसोलिनी को पसंद नहीं थी, किन्तु इस विषय के अन्तर्राष्ट्रीय होने के कारण मुसोलिनी ने इसमें हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा। युद्ध की क्षति-पूर्ति के लिये भी उसने जर्मनी पर कभी दबाव नहीं डाला। इसके विरुद्ध उसने बेल्जियम, फ्रांस और इंगलैण्ड के निमन्त्रण पर ५ अक्तूबर १९२५ को लोकार्नो जाकर उनकी जर्मनी के साथ सन्धि कराई। यह कांफ्रेंस स्वीजरलैंण्ड के लोकार्नो नामक नगर में ग्यारह दिन तक होती रही। इस सन्धि पर १६ अक्तूबर १९२५ को हस्ताक्षर किए गए। इसके अनुसार जर्मनी के सीमान्त के राइनलैण्ड प्रदेश को निःशस्त्रीकरण प्रदेश घोषित किया गया। यह भी निश्चित किया गया कि यदि जर्मनी या फ्रांस कोई भी इस प्रदेश में सेना लावे तो उसका मुकाबला हस्ताक्षर करने वाले शेष राष्ट्र करेंगे।

इस सन्धि के द्वारा इंगलैंड और इटली ने फ्रांस और जर्मनी की पारस्परिक शांति की जमानत ली।

इस सन्धि से इटली का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान बढ़ा और उसकी गणना फिर यूरोप की प्रधान शक्तियों में की जाने लगी।

इसके पश्चात् लोकार्नो सन्धि के अनुसार जर्मनी ने राष्ट्रसंघ का सदस्य बन कर जब उसमें सितम्बर १९२८ को राइनलैंड की फ्रेंच तथा इंगलिश सेनाओं को हटाने का प्रस्ताव उपस्थित किया तो इटली ने जर्मनी का समर्थन किया।

चार शक्तियों का समझौता(१९३३) और उसकी समाप्ति

किन्तु लोकार्नो पैक्ट के कुछ वर्ष के अन्दर ही यूरोप के राष्ट्रों में पारस्परिक अविश्वास फिर बढ़ने लगा। फ्रांस ने बेल्जियम, पोलेण्ड, जेकोस्लोवाकिया, रूमानिया और यूगोस्लैविया के साथ मित्रता करली। फ्रांस और पोलैंड की मित्रता जर्मनी तथा रूस के विरुद्ध थी, जब कि फ्रांस और रूमानिया की मित्रता केवल रूस के विरुद्ध थी। यद्यपि इन घटनाओं से जर्मनी और रूस की मित्रता की पूरी सम्भावना हो गई थी, किन्तु उस समय जर्मन राजनीति की अस्थिरता के कारण यह सम्भव न हो सका। इधर हिटलर के शासनारूढ़ होने के बाद तो रूस का सब से बड़ा शत्रु ही जर्मनी होगया है। फ्रांस की इस प्रकार की सन्धियों के कारण जर्मनी ने आस्ट्रिया से और इटली ने हंगैरी, बल्गेरिया और अन्त में रूस से भी सन्धियां करली थीं। फ्रांस ने इसके अतिरिक्त इंगलैंड की भी गहरी मित्रता सम्पादन कर ली थी। इस प्रकार यूरोप में इस समय स्पष्ट रूप से चार दल बन गये थे।

इंगलैंड में लायड जार्ज और चैम्बरलेन यह कई बार कह कह चुके थे कि जर्मनी को फ्रांस की सुरक्षा की सन्धि पर हस्ताक्षर करने चाहियें। इस कार्य के लिये लोकार्नो सन्धि को बिल्कुल ही पर्याप्त नहीं समझा जाता था।

अतएव मुसोलिनी ने विचार किया कि कोई ऐसा कार्य किया जावे, जिससे योरुप के आकाश से अशान्ति के बादल दूर हो

जावें। उसने अपनी इस इच्छा को २३ अक्तूबर १९३२ को अपने ट्यूरिन (Turin)के भाषण में प्रगट भी किया ।

इसके थोड़े दिनो के पश्चात् जर्मनी का शासनसूत्र ३० जनवरी १९३३ को ऐडल्फ हिटलर के हाथ में आया। इससे यूरोप के राष्ट्र जर्मनी की ओर और भी संदिग्ध दृष्टि से देखने लगे।

१८ मार्च १९३३ को ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमन्त्री मि० रामसे *मैकडोनल्ड और परराष्ट्रमंत्री सर जान साइमन रोम आये। इसी दिन मुसोलिनी ने अपनी योजना रोमस्थित इंगलिश, फ्रेंच और जर्मन राजदूतों को दी। इस योजना के ऊपर ता० १८ और १९ को रोम में खूब वादविवाद किया गया। २१ मार्च को मि० मैकडोनल्ड और सर साइमन पेरिस गए । वहां उन्होंने इस योजना के सम्बन्ध में फ्रेंच कौंसिल के प्रधान डैलेडीयर (Daladier) और वहां के परराष्ट्रमन्त्री पाल बांकौर (Pal Boncour) से वादविवाद किया। २३ मार्च को मि० मैकडोनल्ड ने पार्लमेंट में और हिटलर ने राइक्स्टाग में इसके समर्थन में भाषण दिये।

अब इस सन्धि के प्रश्न पर नियमित रूप से वार्तालाप होने लगा। इस समझौते का उद्देश्य योरुप में बढ़ती हुई दलबन्दियों को राष्ट्रसंघ की नियमावली तथा लोकार्नो पैक्ट क अनुसार स्थिर रखते हुये रोकना था।

यह सन्धि-वार्ता रोम में ही हुई थी। इसमें इंगलैंड, फ्रांस, इटली और जर्मनी ने भाग लिया था। इस पर अप्रैल, मई और

*इनका अमरीका यात्रा पर जाते समय १० नवम्बर १९३७ को देहान्त होगया

हर् एडल्फ हिटलर

जून भर वार्तालाप होता रहा। अन्त में '१५ जुलाई १६३३ को सारी बातें तय होकर इस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हो गये। इस सन्धि के द्वारा मध्य यूरोप में दस वर्ष के लिये स्थायी शान्ति का आयोजन किया गया! इस सन्धि से सिन्योर मुसोलिनी की यूरोप भर में खूब प्रशंसा की गई। १६ जुलाई को ऐडल्फ हिट-लर ने इस सन्धि के लिये सिन्योर मुसोलिनी को बधाई का तार भेज कर इटली और जर्मनी में स्थायी मित्रता होने की आशा प्रगट की। किन्तु चार शक्तियों के समझौते से की जाने वाली बड़ी २ आशाओं का स्वप्न सन् १९३३ के अन्तमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की आकस्मिक घटनाओं के कारण शीघ्र ही टूटता हुआ दिखलाई देने लगा। जर्मनी ने इस समझौते पर राष्ट्रसंघ के सदस्य के नाते हस्ताक्षर किये थे, किन्तु १४ अक्तूबर १६३३ को उसने निश्शस्त्री-करण कमीशन और राष्ट्रसंघ दोनों से ही अस्तीफा दे दिया। अत: उक्त अस्तीफे के साथ २ इस समझौते का महत्त्व भी एकदम नष्ट होगया। किन्तु लोकार्नो पैक्ट का धागा इस राजनीतिक निराशा में अब भी आशा की एक किरण दिखला रहा था।

चीन और जापान के झगड़े पर राष्ट्रसंघ के चीन का पक्ष लेने के कारण जापान तो राष्ट्रसंघ की सदस्यता २७ मार्च १६३३ को छोड़ ही चुका था, किन्तु जर्मनी के अस्तीफे से राष्ट्र संघ की अन्तर्राष्ट्रीय साख को बड़ा भारी धक्का लगा।

इटली और आस्ट्रिया

जर्मनी में हिटलर के शासनारूढ़ होने से फ्रांस में बड़ी भारी

और ब्रिटेन में थोड़ी २ बेचैनी बढ़ रही थी। इस घटना का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से आस्ट्रिया के आंतरिक मामलों पर भी पड़ा था।

यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी तक आस्ट्रिया इटली की स्वतन्त्रता का शत्रु था, किन्तु महायुद्ध में इटली ने इसका बदला उससे ब्याज समेत चुका लिया। महायुद्ध के बाद सेंट जर्मेन की सन्धि द्वारा तो इटली ने आस्ट्रिया पर पराजित होने की छाप भी लगा दी। किन्तु महायुद्ध के पश्चात् पीड़ित आस्ट्रिया के प्रति मुसोलिनी के हृदय में समवेदना का उदय हुआ। फलतः आस्ट्रिया भी इटली की ओर आशा भरे नेत्रों से देखने लगा।

आस्ट्रिया सामाजिक-प्रजातन्त्र वादी प्रणाली (Social democratic system) का त्याग करके अपने पड़ौसी शक्तिशाली राज्यों से सुरक्षा और स्वतन्त्रता चाहता था। इस समय आस्ट्रिया का चैंसलर डालफस (Dollfuss) था। उसने पहिले ही अप्रैल १९३३ में रोम जाकर मुसोलिनी से मित्रता संपादन करली थी। इसके अतिरिक्त उसके अंतर्राष्ट्रीय कार्यों से आस्ट्रिया को बड़ी २ शक्तियों का समर्थन प्राप्त हो गया था। अतएव इस समय मुसोलिनी आस्ट्रिया और जर्मनी का मनोमालिन्य दूर कराने में लग गया।

२० अगस्त १९३३ को जर्मनी के वान पैपेन और हंगैरी के प्रधानमन्त्री रोम आए। इस वार्तालाप के फलस्वरूप इटली की आस्ट्रिया और हंगैरी से प्रथक् २ और व्यापारिक सन्धियां

हो गईं। इटली की इन सारी योजनाओं को फ्रांस और राष्ट्र-संघ दोनों ने पसन्द किया।

सन् १६३४ के आरम्भ में आस्ट्रिया के अदर और उसकी सीमा पर नाज़ियों द्वारा उपद्रव किये जाने के कारण यूरोप के अन्तर्राष्ट्रीय आकाश में काले २ बादल छा गए। आस्ट्रिया सरकार ने १७ फरवरी १९३४ को पेरिस, लन्दन और रोम को लिखा कि जर्मनी आस्ट्रिया के प्रजातंत्र में हस्तक्षेप कर रहा है। इस पत्र में आस्ट्रिया ने अपनी स्वतंत्रता की अक्षुण्णता की ज़बर्दस्त मांग उपस्थित की, जिसका उन राष्ट्रों ने अनुकूल उत्तर दिया।

इसके एक माह पश्चात १७ मार्च १९३४ को रोम में इटली, आस्ट्रिया और हंगैरी के प्रतिनिधियों ने एकत्रित होकर पारस्परिक मित्रता की एक सन्धि की। इसको रोम सन्धि (Rome Protocol) कहा जाता है। इसी सन्धि के सिलसिले में यह लोग ५ अप्रैल को रोम में फिर एकत्रित हुए। इस बार इन्होंने रोम सन्धि की समाप्ति पर कुछ व्यापारिक सन्धियां की।

इस सन्धि के द्वारा इटली, आस्ट्रिया और हंगैरी ने यह तय किया कि अपने तीनों राष्ट्रों के सम्बन्ध के प्रश्नों के ऊपर वह सदा मिलकर परामर्श कर लिया करेंगे। यह भी तय किया गया कि इस सन्धि में डैन्यूब नदी का तटवर्ती अन्य कोई राष्ट्र भी इटली, आस्ट्रिया अथवा हंगैरी के साथ प्रथक् सन्धि करके सम्मिलित हो सकता है।

इसके थोड़े दिनों के पश्चात् जुलाई माह में आस्ट्रिया का चैन्सलर डालफस मुसोलिनी से फिर मिलने को इटली आने ही वाला था कि २४ जुलाई १९३४ को आस्ट्रिया के नाज़ियों द्वारा उसकी उसके दफ्तर में ही हत्या कर दी गई। मुसोलिनी ने इस समाचार को पाते ही ब्रेनर और कारंथिया की सीमाओं पर सेना भेज कर आस्ट्रियां के वायस चैंसेलर को आश्वासन दिया कि आस्ट्रिया की स्वतन्त्रता की—जिसके लिये डालफस को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े हैं—सब प्रकार से रक्षा की जावेगी। इस समय इंगलैंड और फ्रांस की सहानुभूति भी जर्मनी के विरुद्ध आस्ट्रिया के साथ ही थी।

२१ अगस्त को आस्ट्रिया के नये चैंसलर शुषनिग ने फ्लोरेंस आकर मुसोलिनी से भेंट की। इस भेंट से आस्ट्रिया तथा इटली की मित्रता घनिष्ट होकर रोम सन्धि पर दोहरी मुहर लग गई।

इसके दो वर्ष पश्चात् १८ मार्च १९३६ को इटली, आस्ट्रिया और हंगैरी की सन्धि को रोम में फिर पक्का किया गया। तब से इटली आस्ट्रिया की स्वतन्त्रता का ट्रस्टी जैसा बना हुआ है। उसने सन् १९३५ में आस्ट्रिया की स्वतन्त्रता की रक्षा की गारंटी की सन्धि फ्रांस से भी की। उसने इंगलैण्ड से भी इसी आशय का वचन लिया। ११ जुलाई १९३६ को उसने आस्ट्रिया और जर्मनी की सन्धि करा कर उन दोनों के मनोमालिन्य को भी दूर करवा दिया।

सन् १९३७ के आरम्भ में मुसोलिनी और डाक्टर शुषनिग की पहले ३ अप्रैल को और फिर २३ अप्रैल को वेनिस में भेंट हुई। इस समय शुषनिग ने मुसोलिनी की यह बात मान ली कि आस्ट्रिया के प्राचीन हैप्सबर्ग वंश के आर्क ड्यूक ओटो को इस समय गद्दी पर लाना उपयुक्त नहीं।

इसके पश्चात् २१ मई १९३७ को इटली के सम्राट् और सम्राज्ञी काउंट चानो तथा अन्य आर्थिक विशेषज्ञों सहित हंगैरी की राजधानी बुडापेस्ट गए। वहां उनका बड़ा भारी स्वागत किया गया। इटालियन सम्राट् की इस यात्रा से रोम पैक्ट और भी बलिष्ट हो गया।

इटली और फ्रांस

यद्यपि इटली महायुद्ध में फ्रांस का मित्र था और सन् १९३३ के रोम के चार शक्तियों के समझौते द्वारा उनकी मित्रता और भी घनिष्ट हो चुकी, थी किन्तु इटली के वरसाई सन्धि से असन्तुष्ट होने आदि के कारण उनमें पारस्परिक राजनीतिक वार्तालाप की आवश्यकता थी। दिसम्बर १९३४ के अन्त में रोम में मुसोलिनी और फ्रांसीसी राजदूत का वार्तालाप हुआ। इस वार्तालाप के फलस्वरूप ७ जनवरी १९३५ को फ्रांस के परराष्ट्र मंत्री लैवल (Laval) के रोम आने पर दोनों देशों में एक सन्धि हुई। इस सन्धि के द्वारा ट्यूनिस (Tunis) के अफ़रीकन प्रदेश में इटली को पर्याप्त सुविधाएं दी गईं और उसकी लीबिया तथा सुमालीलैंड की सीमा को बढ़ाया गया। इसके अतिरिक्त इन

दोनों ने आस्ट्रिया की स्वतन्त्रता की रक्षा करने की भी प्रतिज्ञा की। कहा जाता है कि इसी समझौते के कारण इटली ऐबीसीनिया के साथ युद्ध कर सका।

स्ट्रेसा कांफ्रेंस

इस सन्धि के समाप्त होते ही इटली, फ्रांस और इंगलैंड की एक कांफ्रेंस आरम्भ हो गई, जिसको स्ट्रेसा कांफ्रेंस कहा जाता है। यह कांफ्रेंस १५ अप्रैल १९३५ को समाप्त हुई। इस कांफ्रेंस के द्वारा योरुप की शान्ति को बनाए रखने का निश्चय किया गया।

इटली और रूस

२ सितम्बर १९३३ को रोम में इटली ने सोवियट रूस के साथ मित्रता, अनाक्रमण तथा तटस्थता की सन्धि की। नवीन रूस की किसी पश्चिमीय राष्ट्र के साथ यह प्रथम सन्धि थी। किन्तु बाद में इटली की जर्मनी के साथ घनिष्ठता होने से फासिस्टों और समाजवादियों की पारस्परिक घृणा प्रगट हो ही गई। इसी कारण अब जर्मनी के समान इटली भी रूस का विरोधी है।

यूरोप के महायुद्ध से पहिले के उपनिवेश

एक विदेशी राज्य की आधीनता में जीवन व्यतीत करने वाले हम भारतवासी यह जानते हैं कि उपनिवेश बसाने की नीति मनुष्य समाज के हित की न होकर उसके विनाश की ही है। यदि उपनिवेश बसाने ही हों तो निर्जन प्रदेश में बसाये जाने चाहियें, न कि मनुष्यों वाले प्रदेश में और वह भी वहां के मूल-

निवासियों के ऊपर अत्याचार करके। किन्तु आज सारे यूरोप-वासियों का यह विश्वास है कि उपनिवेश बसाने, उन पर अधिकार करने और उनका शोषण करने का उनको जन्मसिद्ध अधिकार है। इसीलिए गत महायुद्ध से पूर्व यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों का उपनिवेशों के रूप में भिन्न २ देशों की भूमि पर निम्न प्रकार से अधिकार था—

देश	क्षेत्रफल		जनसंख्या
ग्रेट ब्रिटेन	१९०००,०००	वर्ग किलोमीटर*	९५००,०००
फ्रांस	६१,०००	"	५००,०००
हालैण्ड	१३०,०००	"	१७०,०००

इन भूमियों में इनके पास ऐसे भी अनेक स्थान थे जो छोटे होने पर भी बड़े २ देशों से अधिक उपयोगी थे। पनामा नहर एक ऐसा ही स्थान है।

आस्ट्रेलिया महाद्वीप के आस-पास हजारों मीलों तक सहस्रों द्वीप फैले हुए हैं। इन सभी पर यूरोप वालों का महायुद्ध स पूर्व निम्न परिमाण में अधिकार था—

ग्रेट ब्रिटेन	८०००,०००	वर्ग किलोमीटर	७०००,०००
फ्रांस	२१,०००	"	९०,०००
हालैण्ड	४१६,०००	"	३००,०००
जर्मनी	२४१,४००	"	६००,०००
संयुक्त राज्य अमरीका	१७,०००	"	२५८,०००

*१००० मीटर अथवा लगभग 5/8 मील को किलोमीटर कहते हैं।

यूरोप वालों के पास एशिया में महायुद्ध से पूर्व निम्न संख्या में उपनिवेश थे—

ग्रेट ब्रिटेन	५,२५०,०००	वर्ग किलोमीटर	३५५,०००,०००
फ्रांस	७००,०००	”	१७,००० ०००
हालैण्ड	१,५००,०००	”	४०,०००,०००
पुर्तगाल	२३,०००	”	८३०,०००
संयुक्त राज्य अमरीका (फिलीपाइन)	२४०,०००	”	८,५००,०००
जर्मनी (किओचाऊ)	५३२	”	१९६,०००

अफ्रीका के तो लगभग पूरे के पूरे महाद्वीप पर लगभग पचास वर्ष से केवल यूरोप वालों का ही शासन है। महायुद्ध से पूर्व उसके ऊपर विभिन्न देशों का इस प्रकार अधिकार था—

देश	क्षेत्रफल		जनसंख्या
ग्रेट ब्रिटेन	५,५००,०००	वर्ग किलोमीटर	३७,०००,०००
फ्रांस	१०,५००,०००	”	२९,०००,०००
स्पेन	३४१,०००	”	६६२,०००
पुर्तगाल	२,०००,०००	”	८,५००,०९०
जर्मनी	२,६८२,१५०	”	११,५००,०००
बेल्जियम	२,३६५,०००	”	१५,०००,०००

अफ्रीका का कुल क्षेत्रफल ११,५२१,५३० वर्ग मील है।

यदि महायुद्ध से पूर्व के इन अंकों की तुलनात्मक अंकों की दृष्टि में पड़ताल की जावे तो पता चलता है कि उस समय ग्रेट

ब्रिटेन मिश्र और सूडान के अतिरिक्त (जिनके क्षेत्रफल का अभी तक ठीक-ठीक पता नहीं लगा है) अपने से ९० गुनी भूमि पर, बेल्जियम अपने से ८० गुनी भूमि पर, हालैण्ड अपने से ६२ गुनी भूमि पर, पुर्तगाल २२ गुनी भूमि पर, फ्रांस २० गुनी भूमि पर और जर्मनी ५ गुनी भूमि पर शासन करता था।

इटली का क्षेत्रफल ११८,००० वर्ग मील और जनसंख्या ४३,०००,००० है। उस समय उसका अधिकार लीबिया, एरेट्रिया और सुमालीलैण्ड पर था। इसके अतिरिक्त टीन-सीन (Tien-Sin) में उसे विशेष सुविधाएं मिली हुई थीं। इस प्रकार उसका कुल १,६३३,००० वर्ग किलोमीटर भूमि और बीस लाख मनुष्यों पर अथवा अपने से पांच गुनी भूमि पर अधिकार था।

महायुद्ध के पश्चात् उपनिवेशों के अंक

महायुद्ध के पश्चात् यह अंक पूरी तौर से बदल गए। इस समय ब्रिटेन के पास अधिक उपनिवेश हो गए और जर्मनी के पास कोई उपनिवेश न रहा। अतएव ऐबीसीनिया युद्ध से पूर्व यूरोप वालों के पास निम्नलिखित भूमि थी—

देश	क्षेत्रफल		जनसंख्या
ब्रिटिश साम्राज्य	३१,३६४,९३४	वर्ग किलोमीटर	४४६,७२६,०००
फ्रांस	१२,२७८,७२२	"	५३,५९०,०००
बेल्जियम	२,४१९,०००	"	१६,०००,०००
इटली	१,९२०,०००	"	२,२००,०००

इटली का उपनिवेशों का दावा

इटली का कहना है कि उसको उपनिवेशों की आवश्यकता आत्म-रक्षा के लिये है, न कि साम्राज्य विस्तार के लिये।

यह इस ग्रंथ में बतलाया जा चुका है कि यूरोप के देशों में सबसे प्राचीन सभ्यता वाला होने पर भी इटली स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये सबसे पीछे जागा। जिस समय सन् १८७० में उसकी राष्ट्रीय एकता पूर्ण हुई तो उपनिवेश घिर चुके थे। तौ भी कुछ हाथ पैर मारने से उसको जो कुछ मिला उसी को लेकर उसे सन्तुष्ट होना पड़ा। यूरोप के राज्यों में इटली की जन संख्या प्रति वर्ष सबसे अधिक मात्रा में बढ़ रही है। अतएव अपने देश में काम न मिलने से इटालियनों को दूसरे २ महाद्वीपों में जाना पड़ता रहता है। एक करोड़ इटालियन अब भी अपनी मातृभूमि से दूर परदेश में रहते हैं। किन्तु महायुद्ध के पश्चात् जब आर्थिक स्थिति खराब होने लगी तो सब राष्ट्र अपने २ देशों में परदेशियों पर पाबंदियां लगाने लगे, जिससे प्रवासी इटालियनों की दशा और भी बुरी हो गई।

इटली की जन संख्या इस समय ४ करोड़ तीन लाख है और वह भी प्रति वर्ष साढे चार लाख बढ़ जाती है। इटली की जन-संख्या फ्रांस के बराबर और क्षेत्रफल उसका तृतीयांश है। अतएव इटली की सरकार के सामने इस सारी जनसंख्या को स्थान और आजीविका देने का कठिन प्रश्न हर समय भयानक रूप में उपस्थित रहता है। मुसोलिनी इस समस्या को हल करने के लिये दस वर्ष से

अनेक प्रकार के उपायों से काम ले रहा है, किन्तु वह अभी उसका पूरा प्रबन्ध नहीं कर सका है।

मुसोलिनी की इस विषय की असफलता के कई कारण हैं। एक तो यह है कि इटली पहाड़ी देश है। यूरोप के देशों में स्वीजलैंड के अतिरिक्त और किसी देश में इतनी पहाड़ियां नहीं हैं। इटली की २८८,५३८ वर्ग किलोमीटर भूमि को तो ऐल्प्स और ऐपेनाइन पर्वत माला ने ही घेरा हुआ है। इन सब पर्वतों की चोटियां अत्यन्त ढलवां और विषम होने के कारण मनुष्य के बसने अथवा कृषि आदि किसी भी कार्य के करने योग्य नहीं हैं। शेष तृतीय भाग में से भी ५६,००० वर्ग किलोमीटर या तो पथरीली या इतनी ठंडी है कि उसमें खेती नहीं की जा सकती। उनमें केवल ग्रीष्म ऋतु में ही कुछ गडरिये जाकर काम करते हैं। पर्वतों की नीचे की भूमि के बड़े भारी भाग गहन बनों से ढके हुए हैं। इस प्रकार उपयोगी भूमि वहां बहुत कम है। पो नदी का मैदान, नेपुल्स, ऐड्रियाटिक का किनारा और पगली प्लैटो कुछ अच्छी भूमियां हैं, किन्तु यह मैदान और ऊंची भूमियां भी रूक्षता (Dryness) और मलेरिया की सदा शिकार बनी रहती हैं।

मुसोलिनी ऐसी परिस्थियों में अपने देश के निवासियों के लिये भोजन और साये का प्रबन्ध करने का उपाय कर रहा है।

इटली की सरकार ने सन् १८७० से १९२२ तक ५६०,०७० एकड़ भूमि को सरकारी तौर से सुधार कर कृषि योग्य बनाया। मुसोलिनी ने इस काम में अधिक उन्नति करते हुए ग्यारह वर्ष

उस परिणाम को बढ़ा कर १,७५०,००० एकड़ कर दिया। उसी के परिश्रम से इटली की पहिले की प्रति वर्ष दस करोड़ मन की फ़सिल अब बढ़ कर प्रति वर्ष २४ करोड़ मन हो गई है।

जिस समय मुसोलिनी ने सन् १९२५ में अपने देश में अधिक अन्न पैदा करने का काम आरम्भ किया तो उस वर्ष बाहिर से ३ करोड़ चार लाख पौंड का गेहूं आया था। किन्तु सन् १९३५ में इटली को केवल ५ लाख ६८ हज़ार पौंड का गेहूं ही बाहर से मंगाना पड़ा।

इसके अतिरिक्त चालीस घंटों का सप्ताह कर देने से वहां अधिक मनुष्यों को काम मिलने लगा और बेरोज़गारी कम हो गई। (सप्ताह के इस मान को भी इटली ने अभी २ छोड़ा है।)

इटली की चार करोड़ तीस लाख जन संख्या में से प्रायः जनता कृषि का कार्य करती है। देश का केवल दसवां भाग उद्योग धन्दों में लगा हुआ है। देश की कम से कम बीस प्रति शतक जन संख्या एक दम अशिक्षित है। कच्चे माल की तो इटली में बड़ी भारी कमी है। रबर, टीन, निकेल, टंगस्टन (बिजली की बत्ती के अन्दर के तार बनाने की धातु), अभ्रक अथवा क्रोमियम नामक धातु का तो वहां एक दम अभाव है। इटली को अपनी ९९ प्रतिशतक रूई, ८० प्रतिशतक ऊन, ६५ प्रतिशतक कोयले, ९९ प्रति शतक मिट्टी के तेल (पेट्रोल), ८० प्रति शतक लोहे और इस्पात तथा ६६ प्रति शतक ताम्बे के लिये दूसरे देशों का मुखापेक्षी बनना पड़ता है। मुसोलिनी के अन्न उत्पन्न करने

में अत्यन्त परिश्रम करने पर भी इटली को १५ प्रति शतक मांस और २० प्रति शतक अन्न विदेशों से मंगाना पड़ता है।

फ़ासिस्ट राज्य के प्रथम वर्ष से ही मुसोलिनी ने प्राकृतिक ढंग पर बिजली बनाने का उद्योग किया। उसको सफलता तो मिली; किन्तु इसमें सम्पूर्ण राष्ट्रीय आय का अड़तीस प्रति शतक ख़र्च हो गया। व्यापार का संतुलन तो एक दम बिगड़ गया, जिससे बजट में प्रति वर्ष अधिकाधिक कमी होने लगी। सन् १९३०-३१ में १ करोड़ १० लाख पौंड, १६३२--३३ में ६ करोड़ पौंड, और १९३३-३४ में १० करोड़ ७० लाख पौंड की कमी हुई। अर्थात् कुल राष्ट्रीय आय का चतुर्थांश बजट की कमी को पूरा करने में ही लगने लगा। ऐबीसीनिया युद्ध के लिये तयारी करने में ही लगभग ३ करोड़ ३० लाख पौंड लग गए। इससे इटली का सुवर्ण कोष आधा रह गया। निदान मुसोलिनी को भी इटली के राष्ट्रीय सिक्के के मूल्य की रक्षा करने के लिये विवश होकर इंगलैंड के समान स्वर्णमान का परित्याग करना पड़ा। ऐबीसीनिया युद्ध में भी इटली का बहुत सा धन ख़र्च हो गया।

तेरहवां अध्याय

ऐबीसीनिया की समस्या का इतिहास

आज जिस देश को हम ऐबीसीनिया नाम से जानते हैं उसमें अनेक जातियों के अनेक जिले सम्मिलित हैं। मुख्य ऐबीसीनिया हवाश नदी के उत्तर में ओमो तथा ऐबे नदियों के बीच का इलाक़ा है। इसमें शोआ, गोज्जम, अम्हारा और टाइगर जिले हैं। उसका शेष भाग बहुत बाद में आधीन किया गया है। सुमाली, गाल तथा सिडैमो जातियां पहिले सब स्वतन्त्र जातियां थीं, जिनको ऐबीसीनिया की साम्राज्य-लिप्सा के कारण पिछले दिनों ही अपनी स्वतन्त्रता से हाथ धोना पड़ा है।

ऐबीसीनिया का प्राचीन इतिहास

ऐबीसीनिया का इतिहास अत्यन्त प्राचीन इतिहास है। उसके पहिले शासक जेरुसलेम के बादशाह सुलेमान (Solomon) के वंशज

थे। अरब तथा लाल समुद्र के तटवर्ती देशों के अधिक सभ्य व्यापारी तत्कालीन एरेट्रिया की भूमि से आकर्षित होकर उसमें बसने लगे। अरब वालों ने वहां शीघ्र ही एक राज्य स्थापित कर लिया, जिसकी राजधानी अकसुम थी। यह घटना दूसरी या तीसरी शताब्दी की है।

चौथी शताब्दी में यह राज्य ईसाई हो गया। अब इसने बहुत अधिक उन्नति की। सन् ५२५ में तो इसने यमन को भी जीत लिया। किन्तु अगली शताब्दी में इस्लाम के प्रचार के कारण इन लोगों को अरब की भूमि से हटना पड़ा। अब इस राज्य ने अपने को अफ्रीका के अन्दर बढ़ाना आरम्भ किया। इस प्रकार इस अकसुम राज्य ने सातसौ वर्षों में शोआ तक की भूमि पर राज्य किया।

इस बीच में इस राज्य पर अनेक आक्रमण होते रहे। यहां तक कि सन् १२७० में यहां के सुलेमान के वंशजों का स्थान जगवे नामक एक मुसलमान वंश ने ले लिया। यह वंश बारहवीं शताब्दी से ही बलवान हो रहा था। इस समय मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये देश भर में युद्ध छिड़ गया। सन् १५४३ में इस देश पर पुर्तगाल वालों ने लाल सागर की ओर से चढ़ाई करके मुसलमानों को बुरी तरह से पराजित किया।

मुसलमानों का आतंक समाप्त न होने पाया था कि दक्षिण की ओर से गाल लोगों ने आक्रमण किया। इन लोगों ने ऐबीसीनिया के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया। पुर्तगाल वाले

रोमन कैथोलिक मतावलम्बी थे। उनका धर्म के सम्बन्ध में गाल लोगों से काफ़ी झगड़ा रहा। सन् १६२६ में यहां के मुसलमान शासक सुसेनयोस ने रोमन धर्म स्वीकार कर लिया। किन्तु इस धर्म परिवर्तन के कारण उसको सन् १६३२ में राजगद्दी का परित्याग करना पड़ा। उसके भतीजे फसीलडेस ने गद्दी पर बैठ कर फिर प्राचीन धर्म का प्रचार किया।

इन लोगों को प्राचीन काल से ही नीगुस कहा जाता था। नीगुस सुसेनयोस ने (१६३२-१६५७) ताना झील के उत्तर में गोंडर नामक नगर बसा कर वहां एक प्रथक् राज्य की नींव डाली, किन्तु गाल लोगों ने उसका वहां भी पीछा न छोड़ा।

सतरहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में धार्मिक झगड़ों के कारण इस राज्य की और भी अवनति हुई। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में तो नीगुस के अधिकार बहुत कम रह गए। वह केवल गोंडर के महल में रहता था और शासन की बागडोर सरदार लोगों के हाथ में थी। क्रमशः शोआ, गोज्जम, सीमेन और टाइर के जिले स्वतन्त्र हो गए। इस समय यह नाममात्र के लिये नीगुस के आधीन थे। यह लोग बराबर आपस में लड़ते रहते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक वीर योद्धा ने गोंडर को जीत कर सिंहासन पर अधिकार कर लिया। वह थिओडोर द्वितीय के नाम से नीगुस बना। सन् १८५१ में उसने इस राज्य को प्रबल राज्य बना कर अन्य जिलों को भी जीतने का यत्न

आरम्भ कर दिया। इस प्रकार ऐतिहासिक लोग इसी व्यक्ति को ऐबीसीनियन साम्राज्य का संस्थापक समझते हैं।

ऐबीसीनिया पर इंगलैंड की चढ़ाई (१८६७-६८)

इस समय यूरोप के राज्य, विशेषकर इंगलैण्ड और फ्रांस पूर्वी अफ्रीका में हाथ पैर जमाने का यत्न कर रहे थे। उस समय स्वेज नहर के खोलने की तयारी भी की जा रही थी। किन्तु नीगुस यूरोपियन लोगों से सम्पर्क रखना नहीं चाहता था। उसने कुछ यूरोपियनों को कैद कर लिया, जिससे इंगलैण्ड आदि देशों मे घोर असंतोष फैल गया। ३ नवम्बर सन् १८६७ को सर राबर्ट नैपीयर (Sir Robert Nepier) ने बड़ी भारी सेना लेकर ऐबीसीनिया पर चढ़ाई की। वह मगदल तक बढ़ा चला आया, जहां नीगुस एक पहाड़ी में बैठा हुआ युद्ध कर रहा था। १३ अप्रैल १८६८ को थिओडोर की सेना हरा दी गई और वह बड़ी कठिनता से ब्रिटिश सैनिकों के हाथ कैद होते २ बचा। अन्त में उसने आत्म ग्लानि से आत्म-हत्या कराली।

अब फिर राज्य में अव्यवस्था फैल गई और थिओडोर के करे कराये पर पानी फिर गया। जनवरी १८७२ के अन्त में टाइगर के एक राजकुमार ने इस राज्य पर अधिकार करके जान-चतुर्थ नाम से राज्य किया। वह अपनी राजधानी उठाकर अडोवा ले गया। उसने मेनेलिक को शोआ का राज्य देकर बड़ी कठिनता से अपने आधीन किया। जान चतुर्थ के समय में इटली ने भी

लाल समुद्र के मार्ग से आकर इससे अपना सम्बन्ध स्थापित किया। यह सम्बन्ध लगभग ५० वर्ष तक चला।

एबीसीनिया में इटली वासियों का प्रवेश

कावूर के समय में ही पिएडमांट के सैवाय वंश की ओर से ऐबीसीनिया के अन्वेषण का कार्य आरंभ कर दिया गया था, किन्तु कावूर की मृत्यु से यह काम जहां का तहां ही रोक दिया गया।

इस समय सहस्रों इटालियन धन और साहस के कार्यों के लिये दक्षिणी अमरीका जा रहे थे। इस विषय पर इटली की पार्लमेन्ट में वाद विवाद हुआ और लोकमत विदेशों से सम्पर्क बढ़ाने के पक्ष में अधिक प्रबल हो गया। इस समय यह भी अनुभव किया गया कि इटली की बढ़ती हुई जन संख्या को अधिक भूमि की आवश्यकता है। अब पूर्वी अफ्रीका के अन्वेषण और यात्रा के लिये इटली भर में वैज्ञानिक तथा राजनीतिक सभाएं खुल गईं। इटालियन लोगों ने अपने साहस के बल पर सूडान, शोआ, टाइगर और अफ्रीका की बड़ी २ झीलों के किनारे अन्वेषण कार्य करना आरम्भ कर दिया, जिससे अनेकों को अपने प्राणों तक से हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार इटली में उपनिवेश हथियाने की इच्छा क्रमशः प्रबल होती गई। १७ नवम्बर सन् १८६६ को स्वेज नहर नियमानुकूल खुल गई। अब इटली की इच्छा अफ्रीका के साथ व्यापार करने की ओर भी बढ़ गई।

नवम्बर १८६९ में प्रोफ़ेसर सैपेटो ने इटली के जहाज़ निर्माता रैफले रूबैटीनो की ओर से असाब की खाड़ी (Bay of Asab) को मोल लिया। यह स्थान अरब के तट पर बाबल मंडब के पास है। इसके अन्दर एक ३६ मील लम्बा और लगभग ६ मील चौड़ा भूमिभाग भी था। यह पूर्वी अफ्रीका में इटली का सबसे प्रथम उपनिवेश था।

इटली और ऐबीसीनिया का युद्ध (१८८५)

इसके पश्चात् इटलीवालों ने अफ्रीका के अन्दर के भागों का अन्वेषण करके दनाकील (Danakil) के सुलतान हौसा (Haussa) और ऐबीसीनिया के नीगुस जान चतुर्थ से व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित किये। इस समय अफ्रीका के मूल निवासियों ने दो इटालियनों की हत्या कर दी। इसके अतिरिक्त नील नदी के प्रदेश में भी कुछ ऐसी घटनाएं हो गईं कि इटली को पूर्वी अफ्रीका में अपनी सेनाएं भेजनी पड़ीं। इस कार्य में इटली का साहस ग्रेट ब्रिटेन ने भी बढ़ाया; क्योंकि उस समय ब्रिटेन भी मिश्र पर चढ़ाई करना चाहता था।

निदान ५ फरवरी १८८५ को इटली की सेनाओं ने मसावा पर उतर कर वहां इटली की सरकार के नाम पर अधिकार कर लिया और मिश्र की सेना को भगा दिया। इससे भयभीत होकर नीगुस ने इटली के साथ सन्धि कर ली। इस सन्धि के अनुसार नीगुस ने इटली को बोगस (Bogos) और कसाला पर अधिकार करने की स्वीकृति के साथ २ मसावा के मार्ग से अपने देश में

निःशुल्क व्यापार करने की स्वीकृति दे दी। इस सन्धि से इटली की सरकार का ऐबीसीनिया की सरकार से सीधा सम्बन्ध हो गया। इस सन्धि का कुछ दिनों तक अच्छी तरह पालन किया गया।

ऐबीसीनिया और इटली का मनोमालिन्य

जब इस सन्धि पर दोबारा विचार करने का समय आया तो नीगुस ने इस वार्तालाप के लिये बारूमीडा (Borumıeda) नामक स्थान को पसन्द किया। यह स्थान मसावा से ५० दिन की यात्रा की दूरी पर था।

इस समय काउंट पोरो (Count Porro) शोआ और सुमाली तट के मार्ग का अन्वेषण करने के लिये जीला से चला तो उसको अप्रैल १८८६ में हरार के अमीर के आदमियों ने मार डाला। इसके अतिरिक्त मसावा के मार्ग में टाइगर के निवासियों और नीगुस के एक सूबेदार रास अलूला ने भी इटालियनों पर आक्रमण किया।

इस पर मसावा के अधिकारियों ने हादा घाटी की ओर के कतिपय स्थानों पर अधिकार कर लिया। इसका नीगुस ने विरोध किया और रास अलूला ने और भी कई इटालियनों को कैद कर लिया। २५ जनवरी १८८७ को रास अलूला ने दस सहस्र सेना लेकर सआती पर आक्रमण किया। इटली वालों के पास इस समय कुल दो कम्पनियाँ और तीन सौ देसी सिपाही थे। किन्तु रास अलूला को इस आक्रमण से हानि ही उठानी पड़ी। अब उसने इसका बदला लेने को दूसरे दिन मौंकूलो (Monkullo) से

सश्राती (Saati·) को जाते हुए पांचसौ इटालियनों को घेर कर जान से मार डाला। इटली वालों की अफ्रीका में यह पहली पराजय थी। किन्तु इसमें रास अलूला के एक सहस्र आदमी मारे गए और वह भय के मारे मसावा पर आक्रमण करने का साहस न कर अस्मरा को वापिस चला गया।

अब इटली से और सेनाएं भेजी गईं। इस बार अक्तूबर से नवम्बर १८८७ तक इटली ने २०,००० सैनिक भेजे।

इस बीच में शोआ के इटालियन प्रतिनिधि काउंट ऐनटोनेली (Count Antonelli) ने मेनेलिक के साथ मित्रता की सन्धि कर ली और ग्रेटब्रिटेन ने भी नीगुस से रास को दण्ड देने का अनुरोध किया।

किन्तु मेनेलिक की सन्धि से नीगुस को सन्देह हो गया। उसने ८०,००० सैनिक और ऐबीसीनिया के वीर रासों (सूबेदारों) को साथ लेकर इटली की सेना पर आक्रमण कर दिया। इस समय इटालियन सेना सश्राती के किले में थी। नीगुस उसको कई सप्ताह तक घेरे पड़ा रहा। किन्तु अन्त में भोजन की कमी आदि से परेशान होकर वह ३ अप्रैल को वहां से हट गया। इस बीच में एक और इटालियन सेनापति जनरल बलडीसेरा ने उपनिवेश को सुसंगठित करके चढ़ाई की तयारी की।

जिस समय नीगुस जान महाइ लोगों के साथ युद्ध में लगा हुआ था, जेनेरल बलडीसेरा ने २ जून १८८८ को तेजी से केरेन की ओर बढ़ कर अस्मरा पर ३ अगस्त को अधिकार कर लिया

और अपनी सेनाओं को एक पर्वत पर टिका दिया। उधर नीगुस जान महादियों के साथ युद्ध में १० मार्च १८८६ को मेतेमा नामक स्थान पर मारा गया और मेनेलिक ने अपने को ऐबीसीनिया का सम्राट् घोषित कर दिया। मेनेलिक राजसिंहासन पर अधिकार करने के लिये गोंडर तक बढ़ आया।

१८८६ की सन्धि

मेनेलिक प्रायः इटली का विरोधी था। क्योंकि उसने अगस्त १८८८ में काउंट ऐटैनेली के साथ सन्धि के अनुसार नीगुस से युद्ध करने के लिये पांच सहस्र बन्दूकें लेकर भी अपनी सेना से उलटे नीगुस की ही सहायता की। किन्तु गद्दी पर बैठने पर मेनेलिक ने देखा कि अपने टाइगर, सेबाथ और भैंगाना के शत्रुओं को दबाने के लिये इटालियनों की सहायता आवश्यक होगी। अतएव उसने २ मई १८८९ को उसिआली (Ucialli) नामक स्थान पर इटली के साथ एक सन्धि और की। इसके अनुसार इटली के द्वारा जीते हुये सब इलाकों पर उसके अधिकार को मान लिया गया और ऐबीसीनिया इटली का आधीन राज्य माना गया। इसके बदले में उसको इटली से ४० लाख लीरा ऋण मिला और उस के भतीजे डेजक मैकोनेन को सन्धि की सम्पुष्टि करने के लिये इटली से निमन्त्रित किया गया।

जिस समय मेनेलिक अन्य लोगों के साथ युद्ध में लगा हुआ था जेनेरल बलडीसेरा ने अपनी सेनाओं को मरेब, बेलेसा और मूना नदियों के किनारे २ बढ़ाना आरम्भ किया। उसिआली की

सन्धि के इलाके और इस नये इलाके के ऊपर १ अक्तूबर १८८९ को नेपुल्स की सन्धि द्वारा इटली का अधिकार मान लिया गया। इस सन्धि पर इटली के प्रधानमन्त्री क्रिप्सी और रास मैकोनेन ने हस्ताक्षर किये थे।

इस सन्धि के अनुसार ऐबीसीनिया इटली का संरक्षित राज्य हो गया, जिसकी उसने ११ अक्तूबर को यूरोप के अन्य राज्यों को सूचना दे दी। इधर मेनेलिक भी मेनेलिक द्वितीय के नाम से ३ नवम्बर को ऐबीसीनिया का सम्राट् बना। उसने उसिआली की सन्धि के विरुद्ध इटली-सरकार से बिना स्वीकृति लिए ही गद्दी पर बैठने की सूचना फ्रांस और जर्मनी की सरकारों को स्वयं भेज दी।

इटली से फिर मनोमालिन्य

१ जनवरी १८९० को इटली की सरकार ने अपने लाल समुद्र के किनारे के सारे इलाके का एक शासक नियुक्त करके उसका नाम एरेट्रिया रखा। अब नीगुस ने इटली का संरक्षित राज्य कह-लाने से इंकार कर दिया। उसने कहा कि मैंने उसिआली की सन्धि के अनुसार इस प्रकार का कोई वचन नहीं दिया। मिलान करने पर सन्धिपत्र की धारा १७ के इटालियन और अम्हरिक भाषाओं के शब्द भी वास्तव में प्रथक् २ ही पाए गए। एरेट्रिया की सीमा के सम्बन्ध में भी कुछ मतभेद हुआ, किन्तु अन्त में इस बात पर मेनेलिक ने अधिक बल नहीं दिया; क्यों कि उसको रास मंगशा जैसे शत्रुओं के विरुद्ध इटली की अब भी आवश्यकता थी।

सन् १८६३ में मेनेलिक की रास मंगशा से एक सन्धि हो गई, जिसके अनुसार रास मंगशा को टाइगर की ओर से पश्चिमी प्रदेश का शासक मान कर उसिआली की सन्धि को रद कर दिया गया। इस सन्धि के अनुसार एरेट्रिया की सीमा को फिर स्वीकार करने से इन्कार कर दिया गया। उसने ऐबीसीनिया की सीमा को एरेट्रिया में मरेब तक बढ़ा कर उसे अडोवा (Adowa) के सरदार के आधीन कर दिया। किन्तु इटली की सरकार ने अपने अधिकार को न छोड़ा और जून १८९० में उसने ख़ारतूम के ख़लीफ़ा की सहायता से ऐगोरडट (Agordat) को जीत लिया।

दिसम्बर १८९० में काउंट ऐंटोनेली को सीमा की बातचीत के लिये फिर अदीस अबेबा भेजा गया और कहा गया कि यदि नीगुस इटली का संरक्षण स्वीकार करे तो कुछ इलाका और छोड़ दिया जावे। नीगुस ने इस सीमा को भी स्वीकार नहीं किया। उसने काउंट ऐंटोनेली से अम्हरिक भाषा की एक ऐसी दस्तावेज पर आग्रहपूर्वक हस्ताक्षर करवा लिये, जिसमें ऐबीसीनिया की इटली से स्वतन्त्रता घोषित की गई। जब काउंट ऐंटोनेली को असली बात का पता लगा तो उसने इसका बड़ा भारी विरोध किया, किन्तु नीगुस ने इस विरोध का कोई उत्तर नहीं दिया। अंत में समझौते की बातचीत छोड़ कर काउंट ऐंटोनेली ऐबीसीनिया से चला आया।

इसके पश्चात् २४ मार्च और १५ अप्रैल १८९१ को इटली और ब्रिटेन की सरकार ने दो संधियां कीं, जिनमें पूर्वी अफ्रीका

में अपने २ अधिकार-क्षेत्र को स्पष्ट किया गया। प्रथम संधि में सारे के सारे ऐबीसीनिया को इटली का प्रभावक्षेत्र माना गया। दूसरे समझौते में इटली के इलाके और सूडान की सीमा निश्चित की गई। इसी समय नीगुस ने अपनी सीमा के विषय में यूरोप के राज्यों को सूचना दी, जिसमें इटली का इलाका भी था।

१८९१ की फर्वरी के अंत में ५०० ऐबीसीनियनों ने अगमे से आकर इटली के इलाके पर आक्रमण किया, किंतु वह भगा दिये गये। किंतु यह होने पर भी एरेट्रिया के गवर्नर और रास मंगशा की एक संधि हो गई, जिसके अनुसार इटली की सीमा मरेब से बेलेसा और मूना तक स्वीकार करली गई।

दुर्वेश का इटालियन सेना से युद्ध

जून १८९२ में एक दुर्वेश ने कुछ सेना लेकर एरेट्रिया में प्रवेश किया और अनेक स्थानों पर आग लगा दी। सराबेटी पर पराजित होने के पश्चात् उसने १०,००० सैनिक एकत्रित करके करेन और मसावा पर आक्रमण करने की तयारी की। इस समय एरेट्रिया का गवर्नर जेनेरल बैराटिएरी छुट्टी पर इटली में गया हुआ था। यह आक्रमण अचानक किया गया, था तौ भी स्थानापन्न गवर्नर कर्नल रायमण्डी ने २४०० सैनिकों और ८ बन्दूकों से ही २१ दिसम्बर को विजय प्राप्त करली। इस युद्ध में दुर्वेश के एक सहस्र सैनिक मरे, जिनमें कई बड़े २ सरदार भी थे। लूट में ७३ झंडे, एक मशीनगन, ७०० बन्दूकें, भाले और अनेक क़ैदी मिले।

जौलाई में जेनेरल बैराटिएरी (General Barattieri) ने दुर्वेश को फिर पराजित करके अर्का से गाश तक के इलाके पर कसाला सहित अधिकार कर लिया।

रास मंगशा और मेनेलिक का मेल

सन् १८९२ और १८६३ में इटली की सरकार पर आर्थिक संकट आया हुआ था, जिससे वह औपनिवेशिक कार्य के लिये कुछ खर्च न कर सकी और नीगुस से केवल सीमा के सम्बन्ध में ही बातचीत करती रही। सीमा का प्रश्न तय करने के लिये अदीस अबेबा को दो प्रतिनिधि मंडल भेजे गए। किन्तु इसका कुछ भी परिणाम न निकला और जैसा कि पहिले कहा जा चुका है, नीगुस ने सन् १८६३ में उसिआली की सन्धि को एकदम तोड़ दिया।

रास मंगशा फिर नीगुस से मिल गया। जून १८९४ में वह अदीस अबेबा में नीगुस के सामने गले में पत्थर बांध कर उपस्थित हुआ और अपनी आधीनता प्रगट की। मेनेलिक ने उसकी बड़ी लानत मलामत की और उससे इटालियनों को टाइगर से निकालने का अनुरोध किया।

रास मंगशा और इटालियनों में युद्ध

अब रास मंगशा ने टाइगर वापिस आने पर इटली के विरुद्ध तयारी आरम्भ कर दी। इटलीवालों से वह यही कहता रहा कि मैं आपकी ओर से समझौते के अनुसार दुर्वेश पर चढ़ाई करने की तयारी कर रहा हूं। इसके अतिरिक्त उसने इटली के

आकीली गुजई (Akele Guzai) नामक प्रान्त के सूबेदार बाथ अगोस आदि अनेक सरदारों को रिश्वत देकर इटली के विरुद्ध विद्रोह कराने की आयोजना की। जेनेरल बैराटिएरी ने बाथ अगोस का दमन करके रास मंगशा को धमकी दी कि वह विद्रोहियों को इटली के सुपर्द करे और दुर्वेश का दमन करे। रास मंगशा ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, जिससे जेनेरल बैराटएरी ने २६ दिसम्बर १८९४ को ३५०० सैनिक लेकर अडोवा पर चढ़ाई की।

१२ जनवरी १८९५ को इटली की सेनाओं का कोटिट की उच्च भूमि पर रास मंगशा की सेना के साथ युद्ध हुआ। दो दिन के कठिन युद्ध के पश्चात् रास मंगशा पराजित होकर भाग गया। उसने सेनेफे में फिर भी दोबारा युद्ध किया, किन्तु वह फिर हार गया। इस पर रास मंगशा ने इटली के राजा को पत्र लिख कर पश्चात्ताप प्रगट किया, किन्तु इसके थोड़े ही दिनों पश्चात् वह फिर युद्ध की तयारी करने लगा।

इतना होने पर भी इटली की सरकार ने शान्ति की ही इच्छा प्रगट की। अतएव जेनेरल बैरेटिएरी ने ३ अप्रैल तक अपनी सेना पीछे हटाली।

इसके पश्चात् जेनेरल बैरेटिएरी रोम जाकर चढ़ाई करने की अनुमति लाया। अतएव वापिस आने पर उसने ३ अक्तूबर से १३ अक्तूबर १८९५ तक टाइगर पर अधिकार कर लिया। इस इलाके में छै सहस्र सैनिक रख कर मसावा की स्थिति भी दृढ़ की गई।

ऐबीसीनिया द्वारा इटली की पराजय (१८६६-६७)

इसके थोड़े दिनों के पश्चात् ही शोआ की ओर से आक्रमण की तयारी की जाने लगी और इटली से मेनेलिक के सम्बन्ध बहुत बुरे हो गए। इस समय मेनेलिक को फ्रांस और रूस की भी सहायता मिल रही थी। उसने युद्ध की बड़े जोर से तयारी की। सैनिकों के अतिरिक्त अमित भोजन सामग्री, शस्त्रास्त्र और पशुओं को एकत्रित किया गया। इस समय नीगुस के नेतृत्व में सारा ऐबीसीनिया एक हो गया था।

ऐबीसीनिया के सम्राट् ने इस युद्ध की एक वर्ष तक तयारी की। सन् १८६६ में बरसात के बाद उसने अपनी सेनाओं को बढ़ाना आरम्भ किया। दिसम्बर में उसने अपनी सेना के दो-भाग किये। तीस सहस्र सैनिकों के एक भाग को रास मेकोनेन की अध्यक्षता में अशंघी झील के उत्तर में भेजा और ७० सहस्र सैनिकों के भाग को नीगुस ने दक्षिण की ओर अपनी आधीनता में रक्खा। इटलीवालों ने अपनी दस सहस्र सेना के तीन भाग किए। २३०० सैनिक मैजर टोसेली की कमांड में अम्बा अलाजी पर, २६०० सैनिक जेनेरल ऐरीमोंडी की कमांड में मैकाले पर और ५०० सैनिक ऐडीग्रैट में रखे गए।

पहिला युद्ध अम्बा अलाजी में हुआ। यहां सारी की सारी इटालियन सेना काट दी गई। ७ दिसम्बर को ऐबीसीनिया की तीन सेनाओं ने मैजर टोसेली पर आक्रमण किया। सात घन्टे

युद्ध करके मैजर टोसेली १८ अफ़सरों और दो सहस्र सैनिकों सहित मारा गया। नीगुस के तीन सहस्र सैनिक मारे गए।

उधर मैकाले के किले की इटालियन सेनाओं को भी घेर लिया गया। किंतु इटली से और सहायता आ जाने के कारण इस घेरे को उठा लिया गया। इटली की सेना का एक भाग एनटीशो के किले में था। यह किला अत्यन्त सुरक्षित और जल आदि से परिपूर्ण था। किन्तु फर्वरी में इसकी भोजन सामग्री भी समाप्त हो गई। अतएव अब आक्रमण करके मार्ग बनाने के अतिरिक्त कोई उपाय शेष न था। यह लोग १ मार्च १८९७ को रात्रि के समय वहां से निकल कर सौरिया की ओर गए। किन्तु अत्यन्त सावधानी बरतने पर भी इस बार इटली को बड़ी बुरी तरह से पराजित होना पड़ा।

इस युद्ध में ऐबीसीनिया के एक लाख सैनिक थे, जिनमें दस सहस्र घुड़सवार थे; जब कि इटली के पास केवल १४५१९ सैनिक और ५६ तोपें थीं। इस युद्र में इटली के ६६०० सैनिक मारे गये, ५६० घायल हुए और १७०० कैद कर लिये गये। नीगुस के इस युद्ध में सात सहस्र सैनिक मारे गये और दस सहस्र घायल हुए।

इटली की पार्लमेंट में इस पराजय के सम्वाद से बड़ा भारी रोष फैल गया। उसने पूर्वी अफ्रीका से कुल सेना को वापिस बुलाने के लिये प्रधानमन्त्री को आज्ञा दी। इटली की इस पराजय से प्रधानमन्त्री क्रिप्सी को भी त्यागपत्र देना पड़ा। उसके

पश्चात् मार्किस डी० रूडिनी प्रधानमन्त्री हुआ। उसने शांति की नीति बरती। किन्तु नीगुस ने अब भी शांति की बात करके कैदियों को वापिस न किया।

इस बीच में जेनेरल बैल्डीसेरा ने दुर्वेश को पराजित कर दिया। कर्नल स्टेवानी ने तो केवल कसाला को नहीं जीता, वरन् ३ अप्रैल १८९७ को टुकरुफ़ स्थान पर ऐबीसीनियनों को भी पराजित कर दिया। इसके कुछ दिनों के पश्चात इटली की सेना ने ऐडीग्रैट जाकर वहां घिरे हुए मैजर प्रैस्टिनैरी को एक सहस्र सैनिकों सहित छुड़ाया।

अक्तूबर में नीगुस ने सन्धि करली। इस नई सन्धि के अनुसार उसिआली की सन्धि को रद्द किया गया और ऐबीसीनिया की पूर्ण स्वतन्त्रता को स्वीकार किया गया। इटली को मरैब में कुछ सुविधाएं देकर उसके कैदियों को छोड़ दिया गया। नई सीमा को पारस्परिक वार्तालाप से तय करना निश्चित किया गया। किंतु जैसा कि आगे देखने में आवेगा, इटली इस अपमान को न भूला और उसने ४० वर्ष के पश्चात् इसका बदला भयंकर रूपसे लिया।

इटली से निपट जाने पर भी ऐबीसीनिया में शांति नहीं हुई। रास मंगशा ने जिस प्रकार इटली को धोखा दिया था, उसी प्रकार नीगुस को भी फिर धोखा दिया। सन् १८९८ में उसने स्वयं नीगुस बनने का प्रयत्न किया, किन्तु रास मैकोनेन ने उसको पराजित कर दिया।

नीगुस के फ्रांस और इटली से नये सम्बन्ध

इस समय ऐबीसीनिया में यूरोप के अन्य राष्ट्र भी हाथ पैर गड़ा रहे थे। सन् १८९६ के अन्त में फ्रांस ने अदीस अबेबा से जीबूटी तक रेलवे लाइन बनाने की सुविधा प्राप्त करली और मेनेलिक के साथ एक सन्धि द्वारा फ्रेंच सुमालीलैण्ड की सीमा निश्चित करा ली। सन् १८९७ में ग्रेट ब्रिटेन ने एक सन्धि द्वारा कुछ व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त कीं।

इस बीच में इटली और ऐबीसीनिया के सम्बन्ध भी कुछ अच्छे हो गए। अप्रैल १८९८ में दोनों ने मिल कर मसावा से अदीस अबेबा तक तार (Telegraph) लगाना निश्चित किया। टेलीग्राफ़ लगाने का काम केवल इटली सरकार के हाथ में रहा, जो सन १९०१ में पूर्ण हो गया।

इटली को ऐबीसीनिया में खानें खोदने का अधिकार भी दे दिया गया। जनवरी १९०४ में ऐबीसीनिया के प्रतिनिधि ने सरकारी तौर से एरेट्रिया में आकर दोनों देशों की सीमा के विषय में वार्तालाप किया। सन १९०८ में दोनों देशों में समझौता होकर ऐबीसीनिया और एरेट्रिया तथा ऐबीसीनिया और इटालियन सुमालीलैण्ड की सीमान्त-रेखाएं निश्चित करदी गईं।

नीगुस लीज यासू

इसके पश्चात् मेनेलिक के सामने इटली और ऐबीसीनिया के सम्बन्ध अच्छे बने रहे। किन्तु सन १९१३ में उसकी मृत्यु होने पर ऐबीसीनिया में फिर अशान्ति का समय आया। मेनेलिक अपनी

मृत्यु से पूर्व कई वर्ष से बीमार था। यहां तक कि उसने सन् १९०९ में अपने दौहित्र लीज यासू को अपना उत्तराधिकारी बना दिया था। लीज यासू वालू गाला के रास माइकेल का पुत्र था और मुसलमान से ईसाई बना था। इस नवयुवक का ईसाई होने के कारण विरोध किया था। इसके अतिरिक्त वह यूरोपीय राज्यों और टर्की को रियायतें देने का पक्षपाती था।

सम्राज्ञी ज़ौदीतू

लीज यासू को २१ दिसम्बर १९१६ को गद्दी से उतार दिया गया। उसके स्थान में मेनेलिक की पुत्री ज़ौदीतू सम्राज्ञी और मोकेनेन का पुत्र रासतफ़ारी युवराज बना। इस घटना के कारण लीज यासू के पिता माइकेल ने अपने पुत्र की हिमायत में युद्ध किया। किन्तु वह पराजित होकर ता० २७ अक्तूबर १९१६ को क़ैद कर लिया गया। फर्वरी १९१७ में ज़ौदीतू का सम्राज्ञी के रूप में राज्याभिषेक किया गया। लीज यासू ने फिर भी मुकाबला किया, किन्तु वह १९२६ में कैद करके रास कासा के पास रख दिया गया।

राष्ट्रसंघ की सदस्यता

ऐबीसीनिया ने पहिली पहल सन् १९१९ में राष्ट्र संघ का सदस्य बनने का प्रार्थनापत्र भेजा। किन्तु उस देश में दासप्रथा के अत्यन्त उग्र रूप में होने के कारण उसका ब्रिटेन ने विरोध किया।

सन् १९२२ में ऐबीसीनिया ने फिर राष्ट्रसंघ का सदस्य बनने का उद्योग किया। किन्तु इस बार भी उसकी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी गई। इस बार उसका बड़ा भारी विरोध किया

गया। 'वेस्ट मिनिस्टर गज़ट' में कई लेख प्रकाशित हुए, जिनमें देश की अव्यवस्था, दासप्रथा की क्रूरता, रासों के अत्याचारों, दासों के व्यापार और देश की अमानुषिक दण्डप्रथा आदि को चित्रित किया गया। इस पत्र में बतलाया गया था कि वहां केवल १५० कैदियों के लिये ही स्थान था। शेष कैदियों को जान से मार डाला जाता था। दासों को तो ब्रिटिश दूतावास तक से पकड़ कर खींच लिया जाता था। वेस्ट मिनिस्टर गज़ट के बाद, टाइम्स और वेस्टअफ्रीका नामके पत्रों ने भी इसी प्रकार का आन्दोलन किया।

पत्रों के इस आन्दोलन से पता लगा कि सन् १६२२ में अदीस अबेबा के पास एक दासों का बाजार था, जहां सब प्रकार के दास बेचे जाते थे।

दासों को प्राप्त करने के भी अनेक प्रकार थे। सशस्त्र सैनिक गांव को जाकर घेर लेते थे और वहां की स्त्रियों, बच्चों और जवान पुरुषों को पकड़ लेते थे। कभी २ तो किसानों को लगान के एवज़ में अपने छोटे २ बच्चों को देने के लिये विवश किया जाता था। डाक्टर मरेब की पुस्तक में दासों को पकड़ने की अनेक चढ़ाइयों का वर्णन है। उसमें दिया हुआ है कि युवराज लीज यासू सन् १९१२ में दस सहस्र सैनिक लेकर पश्चिमी प्रान्तों में घुस गया और चालीस सहस्र दासों तथा दासियों को पकड़कर अदीस अबेबा लाया। इनको उसने अपने मित्रों, सम्बधियों और धर्माधिकारियों में बांट दिया।

दासों और दासियों का मूल्य उनकी आयु, ऊंचाई, सुन्दरता और शारीरिक गठन के अनुसार होता था।

पिछली शताब्दी में उनका मूल्य निम्न लिखित था—

कुमारियां	३८० रुपये से ५०० रुपये तक
लड़के	१६० रुपये से ५०० रुपये तक
बधिया बनाये हुए लड़के	२५० रुपये से ४६० रुपये तक
जवान स्त्रियां	२६० रुपये से ४४० रुपये तक
जवान पुरुष	३०० रुपये से ५०० रुपये तक

ऐबीसीनिया की कुल जनसंख्या ८० लाख है, जिस में से उस समय बीस लाख दास थे।

सितम्बर १९२२ में ऐबीसीनिया की दासप्रथा के विरुद्ध राष्ट्रसंघ में प्रस्ताव उपस्थित किया गया। १२ अगस्त १९२३ को ऐबीसीनिया ने फिर राष्ट्रसंघ का सदस्य बनने की प्रार्थना की। अन्त में उसको २८ सितम्बर १९२३ को दासप्रथा और दास-व्यापार को बन्द करने की शर्त पर इटली और फ्रांस के अनुमोदन पर राष्ट्रसंघ का सदस्य बना लिया गया। यद्यपि सन् १९३२ तक की अन्तर्राष्ट्रीय रिपोर्टों से वहां दासों की बड़ी भारी संख्या का पता चलता रहा।

युवराज रासतफ़ारी

अब ऐबीसीनिया में फिर शान्ति स्थापित हो गई थी। सन १९२४ में युवराज रासतफ़ारी ने प्रधान २ यूरोपीय राज्यों का दौरा किया। रासतफ़ारी एक उन्नतिशील नवयुक था। अप्रैल १९२४

में रासतफ़ारी इटली के सम्राट् से भी मिलने आया था, जहां उसका बहुत स्वागत किया गया।

सन् १९२७ में इटली ने रासतफ़ारी के आगमन के बदले में ड्यूक आफ़ ऐब्रूत्सी (Duke of Abruzzi) को सरकारी तौर पर ऐबीसीनिया भेजा। इसके परिणाम स्वरूप ता० २ अगस्त १९२८ को एक सन्धि द्वारा इटली और ऐबीसीनिया की मित्रता और गाढ़ी हो गई। इस सन्धि के अनुसार इटली ने असाब की ओर का कुछ इलाका ऐबीसीनिया को दे दिया और ऐबीसीनिया ने इटली को असाब से देसी तक सड़क बनाने की सुविधा दे दी। देसी से अदीस अबेबा तक सड़क बनाने का उत्तरदायित्व ऐबीसीनिया की सरकार ने लिया।

किन्तु इस शर्त का ईमानदारी से पालन नहीं किया गया, जिस से यह सड़क कभी न बन सकी; जब कि असाब की ओर का इटली का इलाका भी हज़म कर लिया गया।

७ अक्तूबर १९२८ के दिन रासतफ़ारी को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया गया। इसके पश्चात् सन् १९३० में सम्राज्ञी जौदीतू के यकायक मर जाने से रासतफ़ारी २ अप्रैल १९३० को नीगुस तथा सम्राट् हुआ। इसके समय में इटली के साथ सीमा का प्रश्न फिर उठ खड़ा हुआ। एरेट्रिया और सुमालीलैण्ड दोनों देशों में सीमा सम्बन्धी झगड़े होते रहे, जिससे दोनों देशों के सम्बन्ध और ख़राब हो गए। सेटिट, आकेले और सुमाली सीमा की ओर कई २ बार चढ़ाई की गई। इटली सरकार ने इसका

विरोध किया और हर्जाना मांगा । किन्तु इन मांगों की बिल्कुल उपेक्षा की गई ।

सम्राट् रासतफ़ारी

रासतफ़ारी ने गद्दी पर बैठते ही सब प्रान्तीय शासकों को अपनी आधीनता स्वीकार कराने को अदीस अबेबा बुलाया. जिससे २ नवम्बर १९३० को उसका राज्याभिषेक हुआ । इन शासकों में रास कासा और रास ऐलू भी आए थे । जैसा कि पीछे बतलाया जा चुका है, भूतपूर्व नीगुस मेनेलिक का पुत्र लीज यासू रास कासा के ही संरक्षण में था । लीज यासू को नीगुस ने रास कासा से छीनकर अपनी कैद में रखा । वह सन् १९३२ में कैद से भाग गया, किन्तु नीगुस के सैनिकों द्वारा फिर पकड़ लिया गया । उसके भागने के जुर्म में रास ऐलू को पदच्युत कर दिया गया । इससे उसके प्रान्त गोधियम में विद्रोह के भाव फैल गए । लीज यासू का इटली-ऐबीसीनिया युद्ध के समय जेल में ही देहांत हो गया ।

चौदहवां अध्याय

ऐबीसीनिया युद्ध

रासतफ़ारी और इटली का मनोमालिन्य—रासतफ़ारी की नीति आरम्भ से ही इटली विरोधी रही। उसने फ्रांस और जापान तक को ऐबीसीनिया में सुविधाएं दीं, किन्तु इटली के साथ उसने बराबर बुरा व्यवहार किया। यहां तक कि जून १९३२ में कर्नल पीलूसो नामक एक इटालियन को दुमैनी में गुप्त रूप से मार डाला गया।

ऐबीसीनिया के सड़क निर्माण कार्य में किसी इटालियन को नहीं रखा जाता था; और न इटालियन डाक्टरों तथा पादड़ियों को ही अस्पतालों और मिशनों में जाने दिया जाता था।

१९२८ की सन्धि की तो ऐबीसीनिया ने ऐसी दुर्गति की कि उसके बाद ऐबीसीनिया की ओर से इटली के राजनीतिक प्रतिनिधियों तथा नागरिकों के ऊपर अनेक आक्रमण किए गए।

मई १६२८ से अगस्त १६३५ तक २६ आक्रमण किये गए। इसके अतिरिक्त इटली की उपनिवेशों की सीमा पर लूट-मार और आक्रमण की घटनाएं तो पाठकों को एकदम आश्चर्य में डाल देती हैं। राष्ट्रसंघ के कागज़ों से १६२३ से १६३५ तक इस प्रकार की ५१ घटनाओं का पता लगता है।

ऐबीसीनिया-युद्ध का तात्कालिक कारण

१६२८ में इटालियन सुमालीलैण्ड की सीमा का नया प्रबन्ध करते हुए इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिये सीमा पर अनेक चौकियां बिठलाई गईं। इनमें से एक चौकी वलवल में भी थी। वलवल ऐबीसीनिया की सीमा में था। यहां पानी का एक प्रसिद्ध कुंआ भी है। तीन चार वर्ष तक तो ऐबीसीनिया की ओर से इस चौकी के विषय मे शान्ति की नीति बर्ती गई। किन्तु मार्च १६३४ में उनके आदमियों ने इस चौकी पर आक्रमण करना आरम्भ किया। जून में तो इनके आक्रमण को रोकने के लिये सुमालीलैण्ड की सरकार को तीन हवाई जहाज़ भेजने पड़े। २८ नवम्बर १६३४ को वलवल चौकी पर इंगलैण्ड और ऐबीसीनिया का एक कमीशन सुमालीलैण्ड और ओगैडेन की सीमा निश्चित करने आया। इटालियन अफ़सरों ने इस कमीशन को बिना रक्षकों के जाने को कहा। इस पर यह कमीशन वापिस आडो को चला गया। यहां से इन्होंने इटालियन अफ़सर के पास यह कह कर प्रतिवाद भेजा कि वलवल ऐबीसीनिया की सीमा में था और उनको रोकने का किसी को अधिकार नहीं था।

५ दिसम्बर को ऐबीसीनिया के लगभग ११०० सैनिकों ने इस चौकी पर आक्रमण किया, जिससे अनेक इटालिन हताहत हुए। यह लोग ता० ६ को और सेना आने पर भगाए जा सके।

इटली की सरकार ने इस बात से और विशेष कर ५ दिसम्बर की दुर्घटना से रुष्ट होकर ऐबीसीनिया की सरकार के सम्मुख निम्नलिखित मांगें उपस्थित कीं —

(१) हरजाना (२) क्षमा-प्रार्थना (३) इटली के झंडे को सलामी और (४) हताहतों के परिवारों को २० सहस्र पौंड हरजाना। किन्तु ऐबीसीनिया की सरकार ने इन मांगों को पूरा करने से साफ़ इन्कार करके राष्ट्रसंघ में इसकी अपील की।

युद्ध की तयारी

१४ दिसम्बर को ऐबीसीनिया के हरार और ओगैडेन प्रान्तों की सेना को एकत्रित किया गया। १६ दिसम्बर को अदीस-अबेबा में सभी रासों (प्रान्तीय गवर्नरों और सरदारों) को बुला कर परामर्श किया गया। दो के अतिरिक्त सभी रास इटली के साथ युद्ध करने के पक्ष में थे। कहा जाता है कि इसी समय सन् १६३५ के आरम्भ में इटली तथा फ्रांस में एक गुप्त समझौता हुआ, जिसमें तय हुआ कि ऐबीसीनिया के मामले में इटली स्वतन्त्र कार्यवाही कर सकेगा और फ्रांस उसमें कोई बाधा न देगा। इस समझौते के अनुसार फ्रांस ट्रिपोली के दक्षिण में अपने सहारा प्रदेश का बहुत बड़ा प्रदेश इटली को देने वाला था। ट्यूनिस के इटालियनों को इस समझौते के अनुसार फिर

राष्ट्रीयता प्राप्त हो गई। इस सबके बदले में इटली ने फ्रांस को यूरोप में सहायता देने का बचन दिया था। अब ऐबीसीनिया में बड़े ज़ोर शोर से युद्ध की तयारी की जाने लगी। फर्वरी १९३५ से इटली भी धीरे २ अपने उपनिवेशों की सेना को बढ़ाता रहा था। मार्च के अन्त तक इटली ने स्वेज़ नहर के मार्ग से ३० सहस्र सेना अपने इलाके में भेज दी। अप्रैल तक ऐबीसीनिया ने भी ५ लाख सेना जमा करली, इनमें से तीस सहस्र सेना अकेले रास सेयम के ही साथ थी।

राष्ट्रसंघ का समझौते का प्रयत्न

२७ जून १९३५ को राष्ट्रसंघ की ओर से मिस्टर ऐनथोनी ईडेन सिन्योर मुसोलिनी से मिले। उन्होंने प्रस्ताव किया कि ऐबीसीनिया का ओगैडेन प्रान्त इटली को दे दिया जावे और उसके बदले में ग्रेट ब्रिटेन अपने ज़ीला (Zeila) बन्दर (ब्रिटिश सुमालीलैण्ड) को कुछ इलाके सहित ऐबीसीनिया को दे दे। किन्तु मुसोलिनी को इंगलैण्ड की यह दानशीलता पसंद न आई। इसके अतिरिक्त केवल मरुभूमि होने के कारण ओगैडेन प्रान्त भी उसको पसन्द नहीं था।

अगस्त १९३५ में मि० ईडेन ने फ्रांस के प्रधानमन्त्री मिस्टर लवाल के साथ पेरिस में एक और योजना बनाई। इसके अनुसार ऐबीसीनिया का पुनर्निर्माण के कार्य उसके सीमान्त राज्यों (फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन और इटली) की सहायता से राष्ट्रसंघ को दिया जाने वाला था। किन्तु इंगलैण्ड का लोकमत इस योजना

के विरुद्ध था। इसके अतिरिक्त इटली को भी इसमें ऐबीसीनिया की सेना न घटाने आदि सम्बन्धी अनेक आपत्तियां थी। इस सारे अन्तराष्ट्रीय वार्तालाप में इटली का प्रतिनिधि बैरन ऐलोईजी (Baron Aloisi) था।

सितम्बर १६३५ में राष्ट्रसंघ की पांच सदस्यों की उपसमिति ने एक और प्रस्ताव किया। इस प्रस्ताव के अनुसार ऐबीसीनिया का लगभग सारे का सारा प्रबन्ध राष्ट्रसंघ को सौंपा जाने वाला था, किन्तु इसमें इटली की शिकायतों का कुछ प्रबन्ध नहीं किया गया था। इसके अतिरिक्त इटली ऐबीसीनिया को राष्ट्रसंघ के आदेश प्राप्त देश के रूप में लेना चाहता था, जिसके ऊपर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया था।

इन सारे प्रस्तावों में राष्ट्रसंघ का नेतृत्व ग्रेट ब्रिटेन के हाथों में था। अतः इस वार्तालाप में इटली और ऐबीसीनिया के झगड़े ने पहिले इटली और राष्ट्रसंघ तथा इसके पश्चात् इटली और ग्रेट ब्रिटेन के झगड़े का रूप धारण कर लिया।

युद्ध का आरम्भ

इधर राष्ट्रसंघ में समझौते की बातें हो रही थीं, उधर ऐबीसीनिया में इटली के विरुद्ध भाव फैलते जाते थे। रास लोग नीगुस को युद्ध करने पर जोर दे रहे थे। अन्त में ३ अक्तूबर १९३५ को नीगुस ने ऐबीसीनिया की सारी सेनाओं का युद्ध करने को एकत्रित होने (Mobilization) के लिये आह्वान किया। इसी दिन अदीस अबेबा स्थित सभी इटालियनों को कैद करके

इटालियन दूतावास पर भी पहरा बिठला दिया गया। ऐबीसीनिया के इस कार्य से मुसोलिनी के क्रोध का पारा एक दम चढ़ गया। उसने अपनी सेनाओं को ऐबीसीनिया पर एक दम चढ़ाई करने की आज्ञा दी, जिससे ३ अक्तूबर १९३५ को युद्ध आरंभ हो ही गया।

राष्ट्रसंघ द्वारा इटली पर दण्ड-विधान

इटली और ऐबीसीनिया का युद्ध आरम्भ होने पर राष्ट्रसंघ के सदस्यों में एक दम खलबली मच गई। राष्ट्रसंघ की कौंसिल की जरूरी मीटिंग बुलाई गई, जिसने इटली को अक्रान्ता (Aggressor) घोषित किया। इस कौंसिल में इटली का प्रतिनिधि भी था। उसने अपना बहुत बचाव किया, किन्तु ७ अक्तूबर १९३५ को राष्ट्रसंघ की कौंसिल ने इटली को आक्रांता घोषित कर ही दिया।

अब राष्ट्रसंघ के सन्मुख आक्रान्ता को दण्ड देने और ऐबी-सीनिया की रक्षा करने का प्रश्न उपस्थित हुआ। उस समय यूरोप के सभी देश बगलें झांकने लगे। सब ने स्पष्ट कह दिया कि हम ब्रिटेन का अनुसरण करेंगे। सैनिक कार्य के लिये ब्रिटेन भी तयार नहीं था और म्याऊं का मुंह भी यही था।

९ अक्तूबर को राष्ट्रसंघ-असेम्बली की फिर बैठक हुई। इसमें आस्ट्रिया और हंगैरी के प्रतिनिधियों के विरोध करने पर भी इटली पर प्रतिबन्ध (Sanctions) लगाने का निश्चय किया गया।

१० अक्तूबर को राष्ट्रसंघ-असेम्बली ने एक कमैटी बनाई, जिसको प्रतिबन्धों की योजना बनाने का कार्य सौंपा गया। इस कमैटी में हंगैरी और आस्ट्रिया के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त राष्ट्र-संघ असेम्बली के सभी सदस्यों को रखा गया। इस प्रतिबन्ध-कमैटी की प्रथम बैठक ११ अक्तूबर को हुई। इसने अपनी एक १८ सदस्यों की उपसमिति बना कर निश्चय किया कि इटली अथवा ऐबीसीनिया किसी भी देश को शस्त्र न भेजे जावें।

१८ अक्तूबर को १८ सदस्यों की उपसमिति की फिर बैठक हुई। इसमें प्रतिबन्ध लगाने के अन्य साधनों पर विचार किया गया। इसमें इटली के अनेक प्रकार के कच्चे माल पर प्रतिबन्ध लगा कर निश्चय किया गया कि इटली का आर्थिक बहिष्कार किया जावे, अर्थात् उसको न तो कोई ऋण या उधार माल दे और न उससे कोई ऋण या उधार माल ले।

२० अक्तूबर को पूर्वीय अफ्रीका के इटालियन हाई कमिश्नर जेनेरल डे बोनो ने घोषणा निकाली कि ईथोपिया के इटालियन अधिकृत प्रदेशों में से दास प्रथा उठा दी गई।

अठारह सदस्यों की कमैटी ने २ नवम्बर को निश्चय किया कि इटली के ऊपर प्रतिबन्ध १८ नवम्बर के दिन से लगाये जावें। इस समय ५१ देशों ने इटली पर प्रतिबन्ध लगाये। इन्होंने इटली को शस्त्र भेजने बन्द करके उसका आर्थिक बहिष्कार किया। ४९ ने तो इटली से एक दम व्यापारिक सम्बन्ध तोड़

लिये। इनमें से ४१ ने पारस्परिक सहायता देने का भी वचन दिया। किन्तु अलबेनिया, आस्ट्रिया और हंगैरी ने इन सब योजनाओं का अन्त तक विरोध किया। भारत सरकार ने भी सरकारी गजट में इस बात की घोषणा करके इटली के साथ भारतीय व्यापार बन्द करके राष्ट्रसंघ का सदस्य होने का अपना कर्तव्य पूर्ण किया।

किंतु जैसा कि समाचारपत्रों के साधारण पाठक भी जानते हैं कि राष्ट्रसंघ के इन ५१ देशों की सारी शक्ति को भी मुसोलिनी के सामने पराजित होना पड़ा। प्रतिबन्ध लगाये गये और आशा से भी अधिक सफलतापूर्वक लगाये गए, किन्तु वह मुसोलिनी को उसके दृढ़ निश्चय से विचलित न कर सके।

इटली के पत्रों में ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन होते रहने तथा साइरेनाएका (Cirenaica) में इटली के दो डिविज़नें भेजने के कारण अगस्त से ब्रिटिश सरकार ने भी भूमध्यसागर (Maditerranean Sea) में अपने जहाजी बेड़े को रखा हुआ था। दिसम्बर के आरम्भ में ब्रिटेन ने भूमध्यसागर के तटवर्ती देशों (टर्की, यूनान, स्पेन और युगोस्लैविया) से स्पष्ट रूप से प्रश्न किया कि यदि प्रतिबन्धों को कार्यान्वित करते हुए ब्रिटेन के बेड़े पर भूमध्यसागर में इटली आक्रमण करे तो उनकी क्या नीति होगी। क्या वह ब्रिटेन के वर्तमान कार्य का समर्थन करते हैं? क्या उस दशा में वह ब्रिटेन को सहायता देंगे?

यह प्रश्न पहिले २६ सितम्बर को फ्रांस से किया गया था,

जिसने ४ अक्तूबर के इसके पक्ष में उत्तर दिया। फ्रांस ने इस प्रकार की योजना स्थल और आकाश में भी कार्यान्वित करने का प्रस्ताव किया था। किन्तु इसके साथ २ ब्रिटेन और फ्रांस इस झगड़े को समाप्त करने में भी यत्नशील थे। ७ दिसम्बर १९३५ को फ्रांस के प्रधानमंत्री एम. लवाल और ब्रिटिश परराष्ट्र मन्त्री सर सैमुएल होर ने पेरिस में मिल कर इस झगड़े को समाप्त करने की एक योजना बनाई। इस योजना का १० दिसम्बर को ब्रिटिश मन्त्रीमण्डल ने भी स्वीकार कर लिया। ११ दिसम्बर को यह प्रस्ताव इटली की सरकार अदीस अबेबा और जेनेवा को भेज दिये गए।

१३ दिसम्बर को इन प्रस्तावों को समाचार पत्रों में प्रकाशित कर दिया गया। इन प्रस्तावों के अनुसार इटली को टीगरई (ऐक्सूम को छोड़ कर) के एक भाग, दनकालिया के एक भाग और ओगैडेन के एक भाग का शासन दिया जाने वाला था। इसके विरुद्ध इथोपियो को समुद्र को सुविधा देकर असाब बन्दर दिया जा रहा था। इसके अतिरिक्त इटली को एक बड़े भारी भूमि-भाग का भी शासन दिया जा रहा था।

नीगुस ने इन प्रस्तावों को तारीख १६ दिसम्बर को अस्वीकार कर दिया। इधर इन प्रस्तावों के विरुद्ध ब्रिटेन में इतना अधिक आन्दोलन हुआ कि लोकमत को विरुद्ध देख कर ता० १८ को ब्रिटिश पर राष्ट्रमन्त्री सर सैमुएल होर को पदत्याग करना पड़ा। १९ दिसम्बर को नीगुस ने इन प्रस्तावों पर अपनी विरोधी

सम्मति लन्दन और पेरिस भेजी। इस पर मि० वाल्डविन और सर होर को अपने समझौते के प्रयत्न को पार्लमेंट में योग्य बतलाते हुए यह स्वीकार करना पड़ा कि वह समझौता कराने में सर्वथा असफल सिद्ध हुए।

२० दिसम्बर को रोम में फासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल की बैठक हुई। इसमें लवाल-होर योजना के इंगलैण्ड द्वारा अस्वीकृत किये जाने को रिकार्ड में लाकर कहा गया कि इटली इस योजना पर विचार करने को अब भी तयार है। इस बैठक में यह भी निश्चय किया गया कि ऐबीसीनिया युद्ध को अन्त तक लड़ा जावे।

इस समय इटली की एक मात्र अभिलाषा प्रतिबन्धों का मुकाबला करने और ऐबीसीनिया युद्ध को चलाने की थी। प्रतिबन्धों का मुकाबला करने के लिये सारे इटली भर में प्रत्येक वस्तु में मितव्ययिता से काम लिया जाने लगा। इस समय आर्थिक प्रतिबन्ध के कारण इटली को धन संग्रह करने की आवश्यकता थी। अतः इस समय उसके देशवासियों से देशभक्ति का प्रमाण मांगा गया। इटली की महारानी (बाद में सम्राज्ञी) ने ता० १८ दिसम्बर को अपने देशवासियों से सरकार की सहायता करने की अपील की। उन्होंने यहां तक कहा कि इस समय घर में सोना रखना देशद्रोह के समान है। उन्होंने महिलाओं से अपील की कि वह अपने विवाह की अंगूठी तक उतार कर अपने देश को दे दें। ऐसा कहते हुए सबसे पहिले उन्होंने अपनी अंगूठी उतार कर सरकार को दे दी। महारानी की अपील का

देश भर में स्वागत किया गया। इस समय सारा इटली प्रतिबन्धों की राष्ट्रीय आपत्ति का निवारण करने में लग गया। इस समय सारे देश ने त्याग किया और अपनी इच्छा से त्याग किया। रोम के विश्वविद्यालय नगर का उद्घाटन करते हुए इटली के राजा (बाद में सम्राट्) ने भी जनता से डटे रहने का अनुरोध किया।

इटली-ऐबीसीनिया युद्ध का विस्तृत वर्णन

३ अक्तूबर को ही ऐबीसीनिया के अडोवा नामक नगर पर इटालियन हवाई जहाज़ों ने भीषण बम वर्षा की। इस छोटे से नगर पर २० मिनट के भीतर ७८ बम बर्षाये गये। इन बमों से कुछ अस्पतालों को भी हानि पहुंची। इस घटना से ऐबीसीनिया में ऐसा क्रोध छा गया कि ऐबीसीनियन लोग प्रत्येक गोरे चमड़े वाले की जान ले लेने के लिये अधीर हो उठे। सम्राट् ने नगर में कड़ा पहिरा बिठला कर बड़ी कठिनता से राजधानी के यूरोपियनों की रक्षा की।

अडोवा का युद्ध

इटालियनों ने पहिले ऐडीग्रेट-एनटीचो-अडोवा मार्ग से आक्रमण करने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी सेना के तीन भाग किये। बाएं भाग को जेनेरल सैंटिनी, मध्य भाग को पिर्जिओ-बिरोली और दाहिने भाग को मैराविग्ना की कमांड में रखा गया। मध्यभाग में देशी सैनिक थे, जिनके साथ एक पल्टन काली कमीज वालों की थी। उनको मरेन नदी को पार कर करके क्रमशः ऐडीग्रेट, ऐनटीचो और अडोवा पर आक्रमण करने की आज्ञा दी गई। इटालिन लोग

सन् १८९६ की अडोवा की पराजय का बदला लेने को अत्यन्त उत्सुक थे। इन में से केवल दाहिने भाग को ही कुछ कठिन विरोध का मुकाबला करना पड़ा।

ऐडीग्रैट के ऊपर बिना विशेष परिश्रम के ही अधिकार कर लिया गया। सेना के मध्य भाग का डेजीक गेब्रीट के ५०० सैनिकों से मुकाबला हुआ, जिसमें दो इटालियन अफ़सर मारे गये और १० अस्करी घायल हुए। ऐबीसीनिया के १० मारे गये और ५६ कैद हुए। इटालियनों के हाथ १०० राइफिलें भी लगीं।

अडोवा का युद्ध बड़ा भयंकर हुआ। अडोवा पर १४००० इटालियनों और ८०० देसी सिपाहियों ने चढ़ाई की। मरेब नदी को लकड़ी के अस्थायी पुल से पार करने पर इनका रैमा में तीन सौ ऐबीसीनियों से मुकाबला हुआ। यह लोग शीघ्र ही भगा दिये गए। पग २ पर मुट्ठी २ भर ऐबीसीनियन सैनिकों की वीरता का सच्चा अनुभव प्राप्त करते हुए इटालियन सेना ने ६ अक्तूबर को प्रातःकाल १० बजे अडोवा में प्रवेश किया। अडोवा के लिये उनको स्थल और आकाश दोनों से ही अनेक आक्रमण करने पड़े।

अडोवा को विजय करके इटालियन सेना दक्षिण की ओर बढ़ी। ९ अक्तूबर तक उन्होंने बिना भयंकर युद्ध के १५ मील भूमि पर और अधिकार कर लिया।

इसी बीच में एरेट्रिया की सीमा के एक पश्चिमी कोने पर डेजिअक बूरू ने ओम अगर के पास आक्रमण किया, किन्तु उसको भी भगा दिया गया। इस बीच में इटली के विमान बराबर

ऐबीसीनिया वालों पर बम बरसाते रहे। इन युद्धों में इटली को ५०० कैदी, बहुत सी युद्ध सामग्री, राइफिलें, मशीनगनें और गोला बारूद हाथ लगे। इन युद्धों में इटली को ओर से ३० मरे, ७० घायल हुए और ३३ खोए गए।

युद्धकालीन प्रचार कार्य

इस बीच में इटली की ओर से बराबर प्रचारकार्य किया जा रहा था। महायुद्ध के जर्मनी और मित्रराष्ट्रों के प्रचार कार्य के समान इटली ने भी ·ऐबीसीनिया की जनता में अपने पक्ष में पर्याप्त प्रचार किया, जिससे ऐबीसीनिया के बहुत से सैनिक अपने अस्त्र शस्त्र लेकर उनसे आ मिले। इन आने वालों में भूत-पूर्व ऐबीसीनियन सम्राट् जान का भतीजा डेजिअक हाइले सलासी गुगसा भी था। यह १५०० सैनिकों को लेकर इटालियन सेना से आ मिला।

१३ और १४ अक्तूबर को इटालियन सेनाओं के प्रधान सेनापति जेनेरल बदोलिओ ने अडोवा में सन् १८९६ के मृत इटालियनों की स्मृति में बनाये हुए संगमरमर के स्तम्भ का उद्घाटन किया। १६ अक्तूबर को रास गुगसा को इटली की ओर से टाइगर प्रान्त का गवर्नर घोषित किया गया।

युद्धकालीन निर्माण कार्य

इटालियन लोग चढ़ाई की तयारी के साथ सड़कें भी बनाते जाते थे; क्योंकि ऐबीसीनिया में पेंचीले पहाड़ी मार्गों के अतिरिक्त यातायात के साधनों का एकदम अभाव था। शीघ्र ही १४० मील

सड़क बनाली गई, १२१ नए कुंए खोदे गए, तीन तालाब बनाए गए और तीन चश्मों को फिर खोला गया।

२० अक्तूबर को इटली की ओर से सारे टाइगर प्रान्त से दासप्रथा को उठा देने की घोषणा की गई। उसी दिन २०० पादड़ियों ने इटली की आधीनता स्वीकार की। ईसा धर्म के प्रधान के पुत्र ने भी आधीनता स्वीकार कर ली; और ऐक्सम में रास सेयम द्वारा एकत्रित किया हुआ गेहूं जनता में बांट दिया गया।

२७ अक्तूबर को इटली की देसी सेना और काली कमीज वालों ने आगे बढ़कर फ़ेरेस माई प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इटालियन सेनाएं ज्यों २ आगे बढ़ती जाती थीं, अपनी स्थिति को दृढ़ करती जाती थीं।

इस समय ऐबीसीनियन सम्राट् इटालियनों के दक्षिण के मार्ग को रोकने की पूरी तयारी कर रहे थे। उनके ऐडीग्रैट से मकाले के मार्ग में ५००० सैनिक थे, जिनमें से कुछ उत्तर की ओर को बढ़े आत थे। गोंडर में डेजिअक अयालू बूरू की अध्यक्षता में ४०,००० सैनिक थे। कुछ सहस्र सेटिट सीमा पर भी थे। रास कस्सा की अध्यक्षता में ३०,००० सैनिक ताना झील की ओर से बढ़ रहे थे।

सुमाली सीमा के युद्ध (अक्तूबर)

इस बीच में सुमाली सीमा पर भी महत्वपूर्ण घटनाएं हो रही थीं। अक्तूबर के आरम्भ में ही इटालियन सैनिकों ने डोलो, ओडो, मैलैडई आदि स्थानों पर अधिकार कर लिया।

५ अक्तूबर को इटालियनों ने वलवल से ३० मील दक्षिण-पूर्व की ओर घेरलोगूबी नामक स्थान पर अधिकार कर लिया। १४ अक्तूबर को उन्होंने विमानों की सहायता से डगनेरी पर अधिकार कर लिया। इस चढ़ाई में शवेली का सुलतान भी इटालियनों से मिल गया। इसी समय भयंकर युद्ध के पश्चात् शिलैवे भी ले लिया गया।

मकाले का युद्ध

इटालियन जानते थे कि अभी तक भारी युद्ध न होने पर भी मकाले का मोर्चा बड़ी टेढ़ी खीर है। इसके अतिरिक्त ऐबीसीनियनों का पांच २ सात २ की टुकड़ियां बना २ कर छिपे २ धोखे से चोट करना (गुरिल्ला युद्ध) उनकी कठिनाई को और भी बढ़ा रहा था।

मकाले की चढ़ाई के लिए स्थान २ पर खाद्य भण्डार तथा युद्ध सामग्री के भण्डार स्थापित करके अडोवा और ऐडीग्रैट में रोटी बनाने के बड़े २ डीपो खोले गए। अनेक अस्पताल यूनिटों तथा तीन पशु चिकित्सालयों का भी प्रबन्ध किया गया। इस सबके लिये ९८० लारियों और १३२ मोटर गाड़ियों का प्रबन्ध किया गया। इसके अतिरिक्त ४० सहस्र इटालियन सेनाओं, ६० सहस्र देसी सेनाओं और ४० सहस्र बोझा ढोने वाले पशुओं के लिये खाद्य सामग्री का भी स्थान २ पर प्रबन्ध किया गया। युद्ध सामग्री तथा गोला बारूद आदि का तो विशेष

रूप से प्रबन्ध किया गया। मसावा, ऐडीग्रैट, बेलेसा और अदी-क्वेला में विशेष रूप से सब प्रकार के साधन जुटाए गए।

ऐबीसीनिया में यद्यपि आधुनिक अस्त्र शस्त्रों का प्रायः अभाव था, किन्तु वहां के निवासियों की गुरिल्ला युद्ध प्रणाली, वहां की मरुभूमि, तेज़ पहाड़ी नदियां, पर्वतमय ऊबड़ खाबड़ भूमि, चक्करदार मार्ग, बुरा जलवायु और जल का अभाव आदि पग-पग पर इटालियनों के मार्ग में कठिनाई उत्पन्न कर रहे थे। इन प्राकृतिक बाधाओं के कारण ही अशिक्षित ऐबीसीनियन सात मास तक नवीन अस्त्र शस्त्र और हवाई जहाज़ वाली सुशिक्षित सेना का मुकाबला करते रहे। जब तक उनकी नीति गुरिल्ला युद्ध की रही, इटली को कुछ अधिक सफलता नहीं मिली। किन्तु शत्रु को मुकाबले पर डट कर तयारी करते देख कर ऐबीसीनिया वाले भी मोर्चे पर जमने लगे। वास्तव में ऐबीसीनियनों के विनाश का कारण उनका मकाले के मोर्चे पर अपनी सारी शक्तियों को केन्द्रित करना ही था।

मकाले का युद्ध ३ नवम्बर सन् १९३५ को आरम्भ हुआ। इटालियन सेना ने पहिले दिन ही ३० मील भूमि पर अधिकार कर लिया। सेना का मुख्य भाग सन्मुख मोर्चे पर था। उसके चारों ओर अनेक भाग उसकी रक्षा कर हे थे। मुख्य भाग के साथ २ शेष भाग भी आगे को बढ़ते जाते थे। ४ नवम्बर को उन्हों ने २५ मील और आगे बढ़ कर कमसरिएट के पीछे से आजाने के लिये पड़ाव डाल दिया। ५ नवम्बर को ऐगेमे (Agame)

के सरदार डेजिअक बोल्डे गैब्रील ने आकर इटली की आधीनता स्वीकार कर ली। इसी दिन गुण्डी पर्वत पर एक छोटा सा युद्ध हुआ, जिसमें दो इटालियन अफ़सर मारे और १०० ऐबीसीनियन हताहत हुए। ७ नवम्बर को वह लोग फिर आगे बढ़े।

मकाले पर अधिकार

यह लोग ८ तारीख को मकाले प्रदेश में पहुंच गये। १२ नवम्बर को इटली की देशी सेनाओं ने देसा पर अधिकार कर लिया। यह स्थान मकाले से कुल २५ मील दूर था। इसी दिन इटली की सेना का एक दूसरा भाग आर्जी पहुंचा, जिसका ५०० ऐबीसीनियनों से युद्ध हुआ। यह युद्धसायंकाल तक हुआ। इस में ५५ ऐबीसीनियन मारे गए। इटली के २० अस्करी मारे गए और ४ अफ़सर तथा ५२ अस्करी घायल हुए। सायंकाल के समय ऐबीसीनियन लोग भाग खड़े हुए।

१२ तारीख को यह मकाले से भी आगे बढ़े। ता०१७ और २८ को इनको फिर छोटे २ युद्ध करने पड़े, जिनमें ऐबीसीनियनों ही की हानि हुई। नवम्बर समाप्त होते २ इटली का सारे के सारे तेम्बियन प्रदेश पर अधिकार हो गया। इस चढ़ाई में फौजें बढ़ती जाती थीं और हवाई जहाज़ आगे बढ़ २ कर शत्रु का पता लगाते और उनको भूनते जाते थे। ९ हवाई जहाज़ों ने १८ नवम्बर को बहुत सी एकत्रित हुई ऐबीसीनियन सेना को नष्ट कर डाला।

सुमाली सीमा के युद्ध (नवम्बर)

ऐबीसीनियन लोग गोरहई (Gorhai) प्रदेश को ओगैडेन प्रान्त की रक्षा के लिये अत्यधिक महत्व देते थे। गोरहई अपने अपरिमित कुओं के लिये प्रसिद्ध है, जब कि शेष प्रांत प्रायः निर्जल हैं। नगर के पास ही बड़े भारी मैदान में एक सुरक्षित और दृढ़ किला भी था। उस समय इस किले में ६० मशीनगनें और अनेक तोपें बुर्जों पर चढ़ी हुई थीं। अतएव तोपों की मार से बचने के लिए इटालियनों ने इस किले पर आकाश से बम बरसाए। २, ३, और ४ नवम्बर को लगभग २० विमानों ने इस किले पर लगभग २० टन बम बरसाए जिससे न, केवल किले की खाइयां और दीवार ही टूट गई वरन् नगर की झोंपड़ियां भी जल कर खाक हो गईं। २ नवम्बर की बम वर्षा तो अत्यन्त भयंकर थी। ५ नवम्बर को इस किले पर कर्नल मैलेटी ने उत्तर से और जेनेरल फ्रस्की ने पूर्व की ओर से आक्रमण किया। किन्तु मध्यान्ह के समय उनको विदित हुआ कि किला कभी का खाली किया जा चुका था। अब दोनों सेनाएं घेरे को उठा कर रात भर चलती रहीं। प्रातःकाल के समय जब उन्होंने मेरेराले पर अधिकार किया तो वहां अनेक बन्दूकों, गोले बारूद, चिकित्सा-सामग्री, रसद और एक मोटरकार को पड़ा पाया। वास्तव में ऐबीसीनियन लोग बमों के भय से उस स्थान को छोड़ कर उत्तर की ओर भाग गए थे। इटालियन सेनाएं ऐबीसीनियनों का

जेनेरल बदोल्लिओ (General Bodoglio)

पीछा करती रहीं। मार्ग में उनको स्थान २ पर अनेक कैदी, कई सौ बन्दूकें, मोटरें और रसद प्राप्त हुई।

मार्शल बदोल्लिओ

इसी समय १६ नवम्बर को जेनेरल डे बोनो की पदवृद्धि करके उनको फील्ड मार्शल बना कर इटली बुला लिया गया और उनके स्थान में फ़ील्ड मार्शल पिएट्रो बदोल्लिओ (Pietro Badoglio) को इटालियन पूर्वी अफ्रीका का हाई कमिश्नर एवं इटली की ऐबीसीनिया स्थित सेनाओं का प्रधान सेनापति बनाया गया।

लामाशीलिन्दी का युद्ध

विमानों से पता लगा कि डोलो से ८० मील की दूरी पर लामाशीलिन्दी नामक स्थान में रास देस्ता दैमतो की सेना पड़ी हुई है। इटालियन सेना ने रास देस्ता को तयार होने से पूर्व ही पराजित करने का निश्चय किया।

रास देस्ता पर आकाश मार्ग और स्थल मार्ग दोनों ओर से २२ नवम्बर को आक्रमण किया गया। अन्त में पशुबल के सम्मुख खड़े रहने में असमर्थ होकर रास देस्ता की सेना दोपहर को ही भाग निकली। लामाशीलिन्दी ग्राम में आग लगा कर शत्रु की सारी रसद जला दी गई। लूट में ५० बन्दूकें, अनेक पिस्तौलें और कारतूसों की पेटियां मिलीं। इस युद्ध में १०० ऐबीसीनियन मारे गए। इटली की ओर के ४ मारे गये, ५ घायल हुए और दो खोए गए।

नवम्बर के अन्त में अब्दल्ला, तलमोचे और गलीमी कबीलों

के अनेक सरदार, उमराव और सैनिकों ने इटालियनों की आधीनता स्वीकार कर ली। इन लोगों ने इटालियन सेना में भर्ती हो कर अदीस अबेबा के धावे में सम्मिलित होने की प्रार्थना की।

इसके पश्चात् विमानों के एक दस्ते ने दगवुर के किले पर बम बरसा कर अनेक मोटरों को नष्ट किया।

तकज्जे का युद्ध

दिसम्बर के पूर्वार्द्ध में युद्धस्थल में प्रायः शांति रही। इस समय इटालियन लोग विजित स्थानों का प्रबन्ध करके उन्हें सुदृढ़ करने में लगे हुए थे। इसी समय विमानों ने समाचार दिया कि ऐबीसीनियन सेनाएं मकाले के दक्षिण में चढ़ाई की तयारी कर रही हैं। अतएत ६ दिसम्बर को देसी के आसपास घोर बमवर्षा की गई, जिससे बहुत से मकान भी गिर गए। इस बमवर्षा के विषय में अदीस अबेबा से रेड क्रास अस्पतालों पर बम बरसाने की शिकायत की गई। इस विषय में इटली की ओर से इस विषय के सचित्र प्रमाण दिये गए कि रेड-क्रास अस्पतालों को बिल्कुल छोड़ दिया गया। यद्यपि बाद को यह पता लग गया कि इन अस्पतालों में अनेक गैर-मेडीकल लोगों को स्थान दिया गया था। इटलीवालों ने यह भी सिद्ध करने का यत्न किया कि अनेक तम्बुओं, कैम्पों और खाली स्थानों तक पर अयोग्य रूप से रेड-क्रास के चिन्ह लगा दिये गए थे।

इस बम वर्षा के कारण यद्यपि एबीसीनियों की दशा बहुत बुरी होगई थी, तौ भी रास सेयम मंगशा तेम्बियन प्रदेश को इस

कारण बचाना चाहता था कि वह गुरिल्ला युद्धप्रणाली के लिये बहुत उपयुक्त था। किन्तु इटालियनों ने इस प्रदेश पर शीघ्र ही आक्रमण किया। दिसम्बर के पूर्वार्द्ध में इटालियन सेना का एक दस्ता तकज्जे की ओर बढ़ा।

ऐबीसीनियन सेना को उत्तरी भाग में एकत्रित करके नष्ट करने के उद्देश्य से इटालियन सेना को माई तिमकेत के दक्षिणी भाग को खाली करने की आज्ञा दी गई। इस कार्य को इटली की पराजय समझ कर सारे संसार में हर्ष छा गया। भारतीय पत्रों में भी उस समय ऐबीसीनिया की विजय को धर्म और न्याय की विजय समझा गया। निदान इटालियन सेनाएं पीछे हटती गईं और रास-इमीरू की सेनाएं आगे बढ़ती गईं। उसकी सेना पांच सहस्र से अधिक थी। उनमें से कुछ के पास आधुनिक शस्त्र भी थे। दिन भर युद्ध हुआ और इटालियन बराबर दबते नज़र आते रहे। सायंकाल के समय इटालिन सेना माउंट असार और माउंट नानम्बा के बीच में सेम्बेला प्रदेश के उत्तरी भाग में पहुंच गई। दूसरी ओर २००० ऐबीसीनियन अदी ऐतकेब के दक्षिण में तकज्जे के पास डेम्बेग्वाइना पहुंच गए। इस प्रकार एबीसीनियन सेना दोनों ओर से घिर गई। १७ तारीख को इनका इटालियन सेना से घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में इटली की हानि निम्नलिखित हुई—

मृत—७ इटालियन अफ़सर, २९ सैनिक, ४८ देशी अफ़सर और १९७ अस्करी।

घायल—३ इटालियन अफ़सर २ सैनिक और २५ अस्करी।

इससे पहिले के मुकाबले में निम्नलिखित हानि हुई थी—

मृत—४ अफ़सर, ६ इटालियन सैनिक।

घायल—३ सैनिक।

इसी समय एक दूसरी ऐबीसीनियन सेना ने मकाले के दक्षिण में आक्रमण किया। किन्तु वह इटालियन मशीनगनों के वेग को न संभाल सकी। इस प्रदेश के अनुकूल न होने पर भी विमानों ने यथाशक्ति खूब सहायता की। २० दिसम्बर को तो उन्होंने रास इमीरू की तकज्जे और माई तिमकेत के पास की सैनिक चौकियों पर बम बरसाए।

तेम्बियन का प्रथम युद्ध

ऐबीसीनियनों ने तकज्जे की ओर असफल होकर दूसरी ओर ज़ोर बांधना आरंभ किया। इसके लिये उन्होंने अबी अदी के मुख्य नगर तेम्बियन को चुना। चार मुख्य मार्गों का केन्द्र होने के कारण यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पहिले उन्होंने २० दिसम्बर को आक्रमण किया, किन्तु उनको हानि उठाकर भी पीछे हटना पड़ा।

इस पराजय के होने पर भी रास सेयम मंगशा के दो सरदारों ने पांच सहस्र सेना के साथ अबी अदी के पास तंका पर आक्रमण किया। वास्तव में यह बड़ा भीषण युद्ध था। उन्होंने बड़े प्रबल वेग से इटालियनों पर तीन ओर से आक्रमण किया। इटालियनों ने भी आक्रमण का जवाब आक्रमण, तोपखाने और विमानों से दिया। इस युद्ध में तलवार का भी बड़ा भीषण युद्ध हुआ। अशिक्षित ऐबीसीनियन सैनिकों की वीरता देखते ही बनती थी। किन्तु भला

गिद्ध और मच्छर का युद्ध कब तक चलता। सायंकाल के समय ७०० एबीसीनियन मारे गए और दो सहस्र घायल हुए। साथ ही अपने शत्रु के लिये वह बहुत से हथियार और गोले बारूद भी छोड़ते गए। इटालियनों की हानि भी कम नहीं हुई। उनके ७ अफ़सर मारे गए और ६ घायल हुए। उनके १६७ अस्करी मारे गये और १६० घायल हुए।

२२ दिसम्बर को इटालियन विमानों ने अशांगी झील और कोरम के बीच में बम बरसा कर अनेक तम्बुओं और गोदामों को जला दिया। उन्होंने ३ सहस्र भगोड़ों पर भी बम बरसाए। इन युद्धों में ऐबीसीनियनों ने गुरिल्ला युद्ध न करके सन्मुख युद्धक्षेत्र में वीरता प्रदर्शित की।

सुमालीलैंड की ओर के युद्ध (दिसम्बर)

इटलीवालों के गोरहई ले लेने पर ऐबीसीनियनों ने पीछे हट कर हरार के मार्ग पर दगबुर में मोर्चा लगाया। इन पर इटालियन विमानों ने नवम्बर २६ और २८ को बम बरसाए, जिससे अनेक मकानों के अतिरिक्त मैगज़ीन की किलेबंदी भी जल गई। विमानों ने ऐबीसीनियन सेनाओं के प्रधान सेनापति जेनेरल वहीब पाशा के मकान को भी देख लिया; किन्तु उन्होंने उस पर बम नहीं बरसाए। इसके पश्चात् कई दिनों तक इस ओर कुछ विशेष घटना नहीं हुई।

१४ दिसम्बर को १५ विमानों ने ऐबीसीनियन कैम्प पर आक्रमण किया। इस बार बहुत सी सेना, पशुओं और मैगज़ीन को जला दिया गया।

१३ दिसम्बर को ओगडेन प्रान्त के नगर गोरहई में इटली की आधीनता स्वीकार करने के लिये एक राजनीतिक सभा (शीर) हुई। इसमें रेर अब्दुल्ला कबीले के पैंतीस सरदार अपने २ अनुयाइयों सहित उपस्थित थे। उन सब ने अत्यन्त भक्तिपूर्वक इटली की आधीनता स्वीकार की।

इस प्रदेश के ऐबीसीनियनों पर मोटरकारें और मोटरबन्द मशीनगनें भी थीं। इसलिये इधर का इटालियन सेनापति जेनेरल ग्रैज़ियानी इस मोर्चे का प्रबन्ध बड़ी सतर्कता से कर रहा था।

टाइगर प्रान्त के युद्ध

उधर पुरानी सीमा से लेकर मकाले तक १५० मील लम्बी मोटर की नई सड़क बनाई जा चुकी थी। जनवरी १९३७ में यातायात के साधनों की ओर और भी अधिक ध्यान दिया गया। साथ ही ऐक्लम की ओर परिस्थिति को दृढ़ करके तेम्बियन में पुलिस को तैनात किया गया। जनवरी के आरम्भ में ही सेलोआ की ओर ऐबीसीनियन सेना के आने का समाचार मिला। अतएव जनवरी के पूर्वार्द्ध में विमानों द्वारा बम बरसाए गए। माई-घीबा की ओर भी यही किया गया।

मऊ घीबा की ओर से भी ऐबीसीनियन सेना के एकत्रित होने का समाचार मिला। इस सेना पर एक दस्ता इटालियनों और एक अस्करी सैनिकों का भेजा गया। ऐबीसीनियनों को भारी हानि सह कर भागना पड़ा। इस युद्ध में पांच छै इटालियन भी हताहत हुए।

घीबा के उत्तर अंदीनों प्रदेश में विमानों ने बम बरसाए।

इसी समय दक्षिणी तेम्बियन में सलोश्रा, ऐवगैंले और एंडर्टा की ओर से ४०,००० ऐबीसीनियन सेना के आने का समाचार मिला। मकाले के दक्षिण की ओर से भी एक भारी सेना के एकत्रित होने का समाचार मिला। ऐबीसीनियन सेना अपने शत्रु को मकाले और हौज़ीन के बीच में घेर कर मारना चाहती थी। दक्षिणी तेम्बियन की ओर की सेना का सेनापति रास कस्सा दरघी था। यह व्यक्ति नीगुस का सम्बन्धी था। दूसरी सेना उसके दोनों पुत्रों की अध्यक्षता में बढ़ी चली आ रही थी। एक और छोटी सेना रास सेयम मंगशा और रास कस्सा के तृतीय पुत्र की अध्यक्षता में अनदीनो प्रदेश में भेजी गई थी। मुख्य सेना युद्ध मन्त्री रास मूलूघीता की अध्यक्षता में इटालियन सेना के सामने पड़ी हुई थी। इसके साथ तोपख़ाना भी था।

१६ जनवरी १९३७ को इटली की थर्ड कोर के अगले संरक्षकों ने बिना विरोध के नेगुइदा और देवरी पर अधिकार कर लिया। किन्तु दूसरे दिन इनका मुकाबला शत्रु सेना से हो गया। ऐबीसीनियन लोग ऊंचे पर थे। उन पर तोप के गोले छोड़े गए। दाहिनी ओर इटली की 'सीला' डिविज़न ने कुछ विरोध के पश्चात गैबत के दक्षिणी टीले पर २० जनवरी को अधिकार कर लिया। २१ जनवरी को तो उन्होंने पूरे पर्वत पर अधिकार कर लिया। इन युद्धों में ३०० ऐबीसीनियन मारे गए।

इटली के भी ६ अफ़सर तथा ६३ सैनिक मारे गए और २ अफ़-सर तथा ३३ सैनिक घायल हुए।

दूसरी ओर २० जनवरी को इटली की देसी सेना का माई मेरेता से आते हुये जबन करकेता पर ऐबीसीनियन सेना से मुक़ाबला हो गया। दिन भर युद्ध के पश्चात ऐबीसीनियन लोग एक सहस्र मुर्दों को छोड़ कर भाग गए।

इटालियन सेना का दूसरा दस्ता अम्बा देबरा तक बढ़ गया। उस पर २१ जनवरी को छिपी हुई ऐबीसीनियन सेना ने आक्रमण किया। यह सेना बड़ी कठिनता से अपनी रक्षा करती हुई अपने दूसरे दल से जा मिली।

२१ जनवरी की रात को बड़ी भारी ऐबीसीनियन सेना ने वारिऊ घाटी में इटालियन सेना का मुकाबला किया। युद्ध २२ जनवरी को भी होता रहा। वह लोग अपने ढंग पर भयंकर युद्ध करते रहे। इधर इटालियन विमानों ने उन पर बम बरसाए। अन्त में २३ जनवरी तक कठिन युद्ध करके वह भाग खड़े हुए। इस युद्ध में पांच सहस्र ऐबीसीनियन मारे गए, जिनमें बड़े २ सरदार भी थे।

इटालियनों के २५ अफ़सर, २८९ गोरे सैनिक और ३१० अस्करी सैनिक मारे गए और १९ अफ़सर घायल हुए। उनके हाथ बहुत सी युद्ध सामग्री भी लगी। इस युद्ध के बाद ऐबी-सीनियनों की कमर टूट गई।

सुमाली सीमा के युद्ध (जनवरी १९३६)

सुमाली सीमा पर जेनेरल ग्रैज़ियानी की अध्यक्षता में युद्ध किया जा रहा था। जनवरी के मध्य में नीगुस के दामाद रास देस्ता दैमतौ की सेना पूर्णतया नष्ट कर दी गई। रास देस्ता की सेना पर विमानों द्वारा प्रति दिन बम बरसाए जाते थे। उधर उसकी सेना में अच्छे निशानेबाज़ों की भी कमी नहीं थी। उनकी गोली से विमानों को प्रायः हानि पहुंचती रहती थी। लौटने वाले सभी विमानों पर गोलियों से होने वाली हानि के चिन्ह होते थे। एक बार तो लेफ़्टिनेन्ट मिनीटी के विमान को गोली मार कर नीचे गिरा लिया गया और लेफ़्टिनेएट को बुरी तरह से छेद २ कर मार डाला गया। १३ तारीख को इटली और ऐबीसीनिया की फ़ौजों में मुक़ाबला हुआ। यह युद्ध ता० १४ और १५ को भी रात और दिन भर चलता रहा। किन्तु ता० १५ को ऐबीसीनियनों को पीछे हटना पड़ा। इस युद्ध में तीस सहस्र ऐबीसीनियन मारे गए। इनमें बहुत से भूख और प्यास से भी मारे गए थे। कुओं पर जेनेरल ग्रैज़ियानी का कब्ज़ा हो गया।

ता० १८ को जेनेरल ग्रैज़ियानी ने रास देस्ता की बची खुची सेना पर डोलो से ३०० मील दूर नेघेली पर आक्रमण किया। किन्तु इस बार रास देस्ता सब कुछ छोड़ छाड़ कर बिना मुका-बला किए ही भाग गया। सुमाली सीमा के इन युद्धों में कम से कम दस सहस्र ऐबीसीनियन मारे गए। इटालियनों को बहुत से शस्त्रास्त्र, पशु, रसद और अनेक वस्तुएं पड़ी मिलीं।

नेघेली पर अधिकार करके जेनेरल ग्रैज़ियानी ने फ़ौजी दस्तों को उत्तर की ओर भेजा। उन्होंने २३ जनवरी को नेकेली से ५० मील दूरी पर वादरा इलाक़े पर अधिकार कर लिया। यहां से उनको अनेक कैदी, बहुत सी रसद और मैगज़ीन मिला। २६ जनवरी को डोलो से १९० मील की दूरी पर मलकामुरी नामक स्थान पर अधिकार कर लिया गया। जनवरी के अन्त में अन्य बहुत से सरदारों ने इटली की आधीनता स्वीकार की। फर्वरी में इटालियन सेना ने अन्य कई स्थानों पर युद्ध करके वेबी ग्रेस्ट्रो आदि पर अधिकार कर लिया।

एंडर्टा का युद्ध

तेम्बियन के प्रथम युद्ध (जनवरी १९ से २३ तक) में रास कस्सा और रास सेयम मंगशा की सहन शक्ति का अनुभव करके इटालियन अधिकारियों ने ऐडीग्रैट और मकाले के बीच के महत्वपूर्ण स्थानों पर अधिकार करने का निश्चय किया।

तेम्बियन के ४०,००० ऐबीसीनियनों के अतिरिक्त मकाले के दक्षिण में रास मुलूघीता की अध्यक्षता में ८०,००० ऐबीसीनियन और आ गए थे। यह निश्चय किया गया कि रास कस्सा और रास सेयम मकाले और तेम्बियन के बीच में इटालियन सेना के घेरे को तोड़ें और रास मुलुघीता मकाले पर आक्रमण करे। उत्तर में रास इमेरू की ३०,००० सेना ऐक्सम पर इटालियन सेना का मुक़ाबला कर रही थी।

फर्वरी मास के आरम्भिक दस दिन तयारी में ही निकल

गए। इटालियनों ने अपनी सेना के पांच भाग (४ इटालियन और एक देसी) किये। १० फर्वरी से तीन सप्ताह तक तीन युद्ध हुए। एक एंडर्टा का, दूसरा तेम्बियन का और तीसरा शाईर का। इन युद्धों में चारों ऐबीसीनियन सेनाएं नष्ट हो गईं और उत्तरी मोर्चे पर ऐबीसीनिया की पूर्ण पराजय हुई। इन युद्धों में इटालियन तोपखाने ने बड़ा भयंकर कार्य किया। इटालियन सेनाओं ने ऐबीसीनियनों को चारों ओर से घेर कर तोप से भूनना आरंभ कर दिया। रास मुलूघीटा इटालियनों के वेग को न संभाल सका और भाग निकला। इटालियन विमानों ने उसकी भागती हुई सेना पर भीषण बम वर्षा की। इस प्रकार एंडर्टा का युद्ध जीत लिया गया। इसमें २० सहस्र ऐबीसीनियन निकम्मे हो गए, जिनमें से ५ सहस्र मारे गए। भागते समय वह बहुत से शस्त्रास्त्र, गोले-बारूद, पशु, युद्ध सामग्री और रसद छोड़ गए।

एंडर्टा के युद्ध में इटालियन पक्ष की निम्न लिखित हानि हुई—

अफ़सर—१२ मरे, २४ घायल हुए।

गोरे सैनिक—१२२ मरे, ४६६ घायल हुए।

देसी सैनिक—६२ मरे, ८३ घायल हुए। इनमें रास गुगसा के सैनिक भी सम्मिलित थे।

इस युद्ध में तोपख़ाने और विमानों ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। कभी २ तो एक साथ १५० विमानों ने बम बरसाए। इस

युद्ध के फलस्वरूप अम्बा ऐरैडम पर इटालियनों का अधिकार हो गया। एंडर्टा का युद्ध १५ फर्वरी को समाप्त हुआ।

तेम्बियन का द्वितीय युद्ध

यह युद्ध २२ फर्वरी से १ मार्च तक चला। २८ फर्वरी को रास कस्सा और रास सेयम की ३०,००० सेनाओं से घोर युद्ध हुआ। ऐबीसीनियन लोगों के भागने पर अम्बा जेलेरे पर इटालियनों का अधिकार होगया। तेम्बियन पूर्णतया इटली की आधीनता में आ गया। ऐबीसीनियन लोग बहुत सा सामान छोड़ भागे। विमानों ने भागते हुओं पर बम बरसाए।

शाइर का युद्ध

इस युद्ध में रास इमेरू की सेना के अतिरिक्त अयेलिऊ बूरू की ३०,००० सेना भी थी। तोपों और विमानों के भयंकर युद्ध के पश्चात ३ मार्च को ऐबीसीनियन सेना भाग निकली। तेम्बियन और शाइर के दोनों युद्ध में लगभग १५ सहस्र ऐबीसीनियन मरे और घायल हुए। इटालियन पक्ष के १२७३ अफ़सर और सैनिक हताहत हुए। इस युद्ध में उत्तरी मोर्चों की अन्तिम सेना भी नष्ट हो गई।

इन तीनों युद्ध के परिणामस्वरूप ८० मील का डेढ़ लाख ऐबीसीनियन सैनिकों का मोर्चा खाली हो गया और ऐबीसीनिया के मध्य में जाने का मार्ग साफ़ हो गया। यह बतलाया जा चुका है कि इटालियन सेनाएं युद्ध करती थीं और इंजीनीयर तथा श्रमिक लोग नई २ सड़कें बना २ कर विजित प्रदेश का

प्रबन्ध करते जाते और सेना के लिये रसद तथा युद्ध सामग्री के नये २ गोदाम खोलते जाते थे। सात दिन के पश्चात १० मार्च को ही तकज्जे का ८० मील लम्बा पुल तयार हो गया और सड़कें भी तयार हो गईं। अब लस्टा और औसा के अम्हारा वाले प्रदेश पर आकमण करने की आज्ञा दी गई।

औसा पर अधिकार

१० मार्च से ४ अप्रैल तक के युद्ध में उत्तरी मोर्चे की शेष सेनाएं भी नष्ट कर दी गईं।

११ मार्च को इटालियन सेना ने सारडो पर अधिकार किया। यह स्थान असवाक नदी के पास औसा प्रान्त के मध्य में है। इस स्थान पर अधिकार करने से इटालियनों का जीबूटी-अदीस अबेबा रेलवे लाइन और अशंघी झील के यातायात के साधनों पर भी आतंक छा गया। यहां का हवाई स्टेशन दीरेदावा से १५० मील और देसी से १२० मील ही है। अतएव अब इटली के दोनों मोर्चों में हवाई सम्बन्ध स्थापित हो गया।

सोकोटा और गोंडर पर चढ़ाई

सारडो की चढ़ाई के समय ही इटालियन सेनाएं १० मार्च से २० मार्च तक दक्षिण की ओर सेटिट और तकज्जे से आगे बढ़ रही थीं। इस प्रकार सूडान की सीमा से लेकर लाल समुद्र तक के कुल उत्तरी ऐबीसीनिया पर सेनाएं एक साथ अधिकार करती जाती थीं। सेटिट पार करने के पश्चात् काफ्ता, बिरकुतान और धोलके पर अधिकार किया गया। इस सेना ने तकाज्जे पार

करके रास इमेरू की शेष सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। वह त्ओलेमटी को पार कर ऐबीसीनिया के सबसे ऊंचे पर्वत सेमियन की ओर बढ़ी। २९ मार्च को वह बोघेरा के मुख्य केन्द्र फ़ेबेरेक पहुंच गई। एक और सेना फ़ेनेरोआ को पार करके सामरे और त्जेलैरई होती हुई सोकोटा पहुंच गई। यह स्थान ताना झील और गोज्जम के यातायात के साधनों का केन्द्र होने के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है। इधर का मार्ग लारियों के लिये दुर्गम होने के कारण ढुलाई का कार्य दो सहस्र मनुष्यों को करना पड़ा। मार्च २९ से ३१ तक देसी फौज़ का एक दस्ता डेबेरेक से डैकुआ और डैबट होता हुआ १ अप्रैल को गोंडर पहुंच कर दूसरी इटालियन सेना से मिल गया। अब यहां पांच सहस्र इटालियन सेना और ५०० लारियां आदि एकत्रित हो गईं। इस समय रास इमेरू और डेजिअक ऐलू बूरू के सैनिक दक्षिण की ओर भाग गए।

अशंघी झील का युद्ध

अम्बा अलगी पर अधिकार करने पर इटली की देसी सेनाओं ने मसीफ़ के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया। इस समय रास मूलूघीटा, रास कस्सा और रास सेयम की बची खुची सेनाएं दक्षिण की ओर भागती रहीं।

इसी समय समाचार मिला कि इटालियन सेनाओं की गति को अशंघी झील की ओर रोकने के लिये स्वयं नीगुस चालीस से ६० सहस्र तक सेना एकत्रित कर रहा है। इटालियन सेना का इस सेना के साथ ३१ मार्च से ४ अप्रैल तक युद्ध हुआ।

यह युद्ध अब तक के युद्धों में सब से बड़ा था। इस में अशिक्षित ऐबीसीनियनों ने बड़ी वीरता दिखलाई, उन्होंने कई २ बार आक्रमण किया। कई स्थानों पर तो तलवारों, ख़ंजरों और भालों का ऐसा भयंकर युद्ध हुआ कि इटली के तोपख़ाने को पहिचान के भय से अपना काम ही बन्द कर देना पड़ा। किन्तु तोपों, मशीनगनों और विमानों के आधुनिक साधनों का कहां तक मुकाबला किया जा सकता था। ३१ मार्च को सायंकाल ६ बजे ऐबीसीनियन सेना के पांव उखड़ गये। उनके सात सहस्र से अधिक सैनिक खेत रहे और बहुत से क़ैद कर लिये गए।

१ अप्रैल को उन्होंने फिर आक्रमण किया। किन्तु तोपखाने की मार ने उनको आगे न बढ़ने दिया। ३ अप्रैल को 'इटालियन सेना ने एज्रबा घाटी पर अधिकार कर लिया। ४ अप्रैल नीगुस की सम्पूर्ण सेना छिन्न भिन्न हो गई। उसके सहस्रों सैनिक खेत रहे और ५०० कैद हुए। वह लोग १८ बन्दूकें, १ तोप, ४३ मशीनगनें, १५०० राइफिलें, १ मोटर कार, ११ लारियां और अन्य युद्ध सामग्री छोड़ गए, जो इटालियन सेना को मिली। ३१ मार्च से ४ अप्रैल तक इटालियन सेना के ७० अफ़सर (२१ मरे और ४९ घायल हुए), ३५५ इटालियन सैनिक (८६ मारे गए और २६९ घायल हुए) और ८७३ अस्करी (२०४ मारे गए और ६६६ घायल हुए) बेकार हो गये।

इस समय इटली ने सूडान की सीमा से लेकर लाल समुद्र तक के कुल उत्तरी एबीसीनिया—ताना झील—अशंघी—औसा लाइन—पर

अधिकार कर लिया। इस बीच में विमानों ने भी खूब काम किया। उन्होंने १८ मार्च से ४ अप्रैल तक के बीच में ऐबीसीनिया के ६ विमान नष्ट किये, जिनमें से दो अशंघी झील के पास क़ोरम के दक्षिण में, दो गोंडर के पूर्वोत्तर में दोबत पर और दो विमान अदीस अबेबा के हवाई स्टेशन पर नष्ट किये। इन विमानों के नष्ट होने पर ऐबी-सीनिया का बचा खुचा हवाई सहारा भी जाता रहा।

दक्षिणी मोर्चा (मार्च)

दक्षिण की ओर भी मार्च में इटालियन सेना ने अनेक स्थानो पर अधिकार किया, जिससे अनेक पुल और सड़कें बनाई गईं। एक बार तो २० दिन में १५० मील सड़क बनाई गई।

इनके अतिरिक्त विमानों ने २० मार्च से ३० मार्च तक गोबा, जिगजिगा, हरार और बुलेल पर भीषण बम वर्षा की। इस चढ़ाई मे ३३ विमानों ने ७०० मील के बीच में बम बरसाए। इससे ऐबीसीनिया का हरार का सैनिक केन्द्र तो पूर्णतया नष्ट हो गया।

ताना झील की चढाई

गोंडर पर अधिकार करके इटालियन सेनाओं ने ताना झील के सम्पन्न प्रदेश पर अधिकार करके उस प्रदेश और ऐंग्लो-मिश्री सूडान के यातायात के साधनों पर अधिकार करने का निश्चय किया। वह लोग इस चढ़ाई पर ११ अप्रैल को रवाना होकर १२ को ताना झील के उत्तरी किनारे गोरगोरा प्रायद्वीप मे पहुंच गए। उसी दिन एक दूसरा सैनिक दस्ता नोग्गारा से गैलैबेट सीमा की

चुंगी पर पहुंच गया। यह स्थान सूडान की सीमा के बिल्कुल पास है। इस चढ़ाई में इटालियन सेना का कहीं मुकाबला नहीं किया गया। ऐबीसीनियन लोग उनके आने का समाचार पाकर ही भाग गए। २४ अप्रैल तक ताना झील पर इटली का पूर्णतया चारों ओर से अधिकार हो गया। २७ अप्रैल को ताना झील का लाल समुद्र से हवाई सम्बन्ध भी हो गया। अब इस सेना ने बेघेमेडर के मुख्य केन्द्र देबरा टैबर पर अधिकार किया।

दक्षिणी मोर्चा.(अप्रैल)

जेनेरल ग्रैजियानी ने मार्च भर संगठन आदि का काम किया। अप्रैल के आरम्भ में उसने डेजिअक नसीबू की उस सेना को नष्ट करने का निश्चय किया, जो ऐबीसीनिया की अन्तिम सेना समझी जाती थी।

१३ अप्रैल को उसका पश्चिमी सीमा में ऐबीसीनियन सेना से भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में ४६ इटालियन बेकार हो गए। किन्तु ऐबीसीनियन सेना को बहुत भारी हानि उठा कर भागना पड़ा।

ओगेडेन का युद्ध

यह युद्ध १४ अप्रैल से ३० अप्रैल तक चला। हरार की सड़क को डेजिअक नसीबू की तीस सहस्र सेना ने रोक रखा था। इस सेना के पास कुछ आधुनिक मशीनगनें और भारी गनें भी थीं। इसका सेनापति एक चतुर तुर्क वहीब पाशा था। इसके साथ रास देस्ता के भाई डेजिअक अबेबे द्वैमतौ की बची खुची सेना भी थी। जेनेरल ग्रैजियानी ने इटालियन सेना के तीन भाग करके तीन ओर से आक्रमण किया। १४ अप्रैल से २५ अप्रैल

तक बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। कई स्थानों में तो तलवार, भालों और खंजरों तक से युद्ध हुआ। अंत में २५ अप्रैल को ऐबीसीनियन सेना को पीछे हटना पड़ा। जेनेरल ग्रैजियानी ने २६ और २८ अप्रैल को अपनी सेना को फिर संगठित करके २८ अप्रैल को सामाबनेह-बुलाने-दगाबुर-की मजबूत मोर्चेबन्दी पर आक्रमण करके शत्रु को तितर बितर कर दिया। इस आक्रमण में पांच सहस्र ऐबीसीनियन मारे गये। इटालियन पक्ष के १४ अप्रैल से ३० अप्रैल तक ५० अफ़सर और १८०० सैनिक हताहत हुए। इन युद्धों में ७६० बार विमानों से बम वर्षा की गई, जिसमें २४ विमानों को गोली का निशाना बनाया गया। इस युद्ध के फल-स्वरूप डेजिअक नसीबू की सेना नष्ट हो गई और सासाबनेह बुलाले-दगाबुर लाइन पर इटली का अधिकार हो गया।

दूसरे मोर्चे

इस समय इटालियन प्रधान सेनापति मार्शल बदोग्लिओ था। वह बड़ी सरगर्मी से देसी और अदीस अबेबा पर चढ़ाई की तयारी कर रहा था। उसके इंजिनीयर लोग विजित प्रान्तों में सड़कें बनाते जाते थे और सेना बराबर आगे बढ़ती हुई अन्य स्थानों पर अधिकार करती जाती थी। ६ अप्रैल को गादाबी पर और १२ को गल्लाबट पर भी अधिकार हो गया। अब इटली की सीमा एकदम सूडान की सीमा से जा मिली। उसी दिन ताना झील के समीप गारगोरा प्रायद्वीप पर और १७ को त्वेकेडे पर अधिकार किया गया। २३ तारीख को उन्होंने झील के दक्षिणी

किनारे बहरे दर पर अधिकार करके पूरी ताना झील पर अधि-कार कर लिया। २८ ता० को उनका रास कस्सा के प्रधान स्थान और बेगेमेदेर के प्रधान केन्द्र देबरा तैबर पर भी अधिकार हो गया।

२६ अप्रैल को सुल्तान मुहम्मद याहो ने इटालियन शिविर में आकर आधीनता स्वीकार करली। इस प्रकार पूरे औसा प्रान्त पर इटली का अधिकार हो गया।

देसी पर अधिकार

९ अप्रैल को १८ सहस्र देसी सेना और ६००० बोझ के पशुओं ने देसी की चढ़ाई आरम्भ की। इस सेना ने ७ दिन में २२० मील की यात्रा की। १४ अप्रैल को वह लोग देसी के समीप पहुंच गए। यहां उनका ऐबीसीनिया के युवराज ने मुकाबला किया, किन्तु उसको शीघ्र ही भागना पड़ा। दूसरे दिन जेनेरल पीरज्रिओ बिरोली ने रास माइकेल के भवन और दूतावास पर इटली का झण्डा फहरा दिया। उसी समय वहां पहली पहल बिमान भी उतरे।

इस बीच में अदीस अबेबा पर भी विमानों से आक्रमण किया गया। १३ अप्रैल को २२ बम डालने वाले विमान प्रातः-काल १०-४० पर अदीस अबेबा के ऊपर उड़ते रहे। उन्होंने छपे हुए पर्चे डाल कर राजधानी के निवासियों को अपनी विजय का समाचार दिया।

नीगुस का स्वदेश से पलायन

इटालियन सेना की इस विजय से नीगुस बहुत घबरा गया

था। उसका पुत्र युवराज तो १४ अप्रैल को पराजित होकर देश में इधर उधर भटक ही रहा था, इधर नीगुस भी कुछ थोड़े से राजभक्त सैनिकों को लेकर लाली बेला पहुंचे। वहां से वह १७ अप्रैल को चुपचाप ऐबीसीनिया से भाग गए और जहाज़ में बैठ कर जेरुसलेम पहुंचे। उनके पीछे उनके भक्त सरदार इटली के साथ युद्ध करते रहे।

१८ अप्रैल को इटालियन सेना का फिर १५०० ऐबीसीनियनों से युद्ध हुआ। सम्भवतः सम्राट् की अब यही सेना शेष रह गई थी। इस सेना को विमानों की सहायता से शीघ्र ही नष्ट कर दिया गया।

राजधानी पर चढ़ाई

२० अप्रैल को मार्शल बदोल्लिओ ने अपना प्रधान कार्यालय बदल कर देसी को बनाया। यहां उसका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। अब उसको राजधानी (अदीस अबेबा) पर चढ़ाई करनी थी। अतः सैन्य संचालन का काम उसने स्वयं अपने हाथ में लिया। यद्यपि उसको सम्राट् की सेना के भाग जाने का पता था किन्तु वह राजधानी में ज़बर्दस्त प्रदर्शन करना चाहता था।

राजधानी पर तीन ओर से चढ़ाई की गई। तीनों सेनाओं में दस सहस्र इटालियन, दस सहस्र देसी सैनिक, ग्यारह बैटरी, एक स्कैड्रन टैंकों का और १६०० लारियां थीं। चढ़ाई तीनों सेनाओं द्वारा क्रमशः २४, २५ और २६ अप्रैल को आरम्भ की गई। यह लोग सड़कों को बनाते और आगे बढ़ते जाते थे। २८ अप्रैल को देसी सेना ने दोबा पर और ३० को 'सबाउदा' सेना

ने देबरा पर अधिकार कर लिया। यद्यपि वर्षा के कारण मार्ग बहुत ख़राब हो रहा था, किन्तु यह लोग बढ़े ही चले जाते थे। कई स्थानों पर तो उनको रस्सों के सहारे चढ़ना पड़ा। यहां लारियों को बुरी तरह से धकेल २ कर चढ़ाना पड़ता था। अन्त में यह लोग ४ मई को सायंकाल के समय अदीस अबेबा के समीप पहुंच गए, जहां नीगुस के चले जाने पर बेहद लूट मार मची हुई थी।

अदीस अबेबा पर अधिकार

मार्शल बदोल्छिओ ने ५ मई को सायंकाल ४ बजे अदीस अबेबा में सेना सहित प्रवेश किया। कुछ घंटों में ही उसके सब मुख्य नाकों पर अधिकार कर लिया गया। इस समय मार्शल बदोल्छिओ ने अपनी सेना को बड़े मार्मिक शब्दों में बधाई दी।

दक्षिण मोर्चे के अन्तिम युद्ध

ओगैडेन की विजय के पश्चात ऐबीसीनियन सेनाएं ३ मई को डैगैबुर से ६० मील की दूरी पर मोर्चा बांध कर डट गईं। किन्तु वह लोग थोड़े से युद्ध के बाद ही भाग निकले। उनका अध्यक्ष उमर सामन्तर तो बुरी तरह घायल हुआ।

५ मई को इटालियन इंजिनीयरों ने तूफ़ान से भरी हुई गेरर नदी के ऊपर ६० फुट लम्बा और २६ टन भारी पुल बिछा दिया। यह युद्धकाल में ओगैडन में १६ वां पुल था। अब इटालियनों ने फिर आगे को बढ़ना आरम्भ किया। जेनेरल ग्रैज़ियानी की सेना ने १२० मील आगे बढ़ कर जिगजिगा पर अधिकार कर लिया। यह अधिकार अदीस अबेबा पर अधिकार होने के कुछ

घंटों बाद ही किया गया था। यहां उनके हाथ बहुत सी युद्ध-सामग्री भी लगी। अब ड्यूबट लोगों को जिगजिगा-हरार सड़क की मारदा धाटी पर अधिकार करने को भेजा गया। अब दक्षिणी मोर्चे से भी शत्रु के मुकाबले का भय बिल्कुल जाता रहा था और केवल हरार पर ही अधिकार करना शेष था। अतएव एक सैनिक दस्ता जेनेरल नैसी की आधीनता में भेजा गया, जिसने ८ मई को सायंकाल के समय हरार पर अधिकार कर लिया। इस समय अदीस अबेबा के समान हरार में भी भयंकर लूट मची हुई थी। अतएव शान्ति रक्षा के लिये ३५ विमानों को हरार के ऊपर घुमाया गया।

जेनेरल नैवैरा की अध्यक्षता में एक और सेना ने ९ मई को दिरेदावा पर अधिकार किया। यहां भी उनको बहुत सी युद्ध-सामग्री मिली। इसी दिन यहां एक इटालियन सेना अदीस अबेबा से आई। इस प्रकार उत्तरी और दक्षिणी सेनाओं के मिल जाने से बड़ी भारी खुशी मनाई गई और ऐबीसीनिया विजय के कार्य को पूर्ण समझा गया। इस प्रकार यह युद्ध ३ अक्तूबर १९३५ से ९ मई १९३६ तक ७ माह ६ दिन चला।

इस युद्ध में इटली को कुल ४३५६ व्यक्तियों की हानि निम्न प्रकार से उठानी पड़ी—

गोरे ११४८ मारे गये, १२५ जख्मों से मरे, ३१ खोए गए, १००९ घायल हुए अर्थात् कुल २३१३ गोरे बेकार हुए।

श्रमिक ४५३ बेकार हुए और देसी सैनिक १५९३ बेकार हो गए।

युद्ध के बाद प्रबन्ध

ऐबीसीनिया पर विजय प्राप्त होते ही मुसोलिनी ने ९ मई को एक विज्ञप्ति निकाल कर घोषणा की, जिसके अनुसार ऐबीसीनिया, एरेट्रिया और सुमालीलैंड का एक उपनिवेश बना कर उसका नाम इटालियन पूर्वी अफ्रीका रखा गया और इटली के राजा को उसका सम्राट् और मार्शल बदोग्लिओ को उसका वाएसराय घोषित किया गया। इसी समय ब्रिटिश रेडक्रास यूनिट को ऐबीसीनिया छोड़ने की आज्ञा दी गई। एरेट्रिया, सुमालीलैण्ड और ऐबीसीनिया का सम्मिलित क्षेत्रफल ६ लाख वर्गमील और जनसंख्या डेढ़ करोड़ से अधिक है। शासन की सुविधा के लिये इसको एरेट्रिया, सुमालीलैण्ड, अम्हारा, हरार और गोजम नाम के पांच प्रान्तों में बांट दिया गया। ऐबीसीनिया नाम को सरकारी काग़ज़ों में से एकदम उड़ा दिया गया। एरेट्रिया की राजधानी अस्मारा और सुमालीलैंड की राजधानी योगाडीशु अब प्रान्तीय राजधानियां बना दी गईं। उनको शीघ्र ही रेल द्वारा अदीस अबेबा से मिला दिया जावेगा। इस समस्त उपनिवेश की राजधानी अदीस अबेबा को बनाया गया।

रास नसीबू के बचे हुए सैनिकों और किसानों ने हरार नगर को लूट कर उसमें आग लगा रखी थी। १२ मई तक भी वहां की गलियां लाशों से भरी पड़ी थीं। हज़ारों व्यक्ति जिनमें अंग्रेज़, अरब और भारतीय भी थे, बेघरबार हो गये थे। डाकुओं ने प्रसिद्ध भारतीय फ़र्म मुहम्मदअली स्टोर को तो बुरी तरह लूटा।

ऐबीसीनिया के इस उपनिवेश में इटली को लोहा, कोयला तथा मिट्टी का तेल प्रचुर मात्रा में प्राप्त होंगे। अभी तक इटली को इन वस्तुओं के लिये अन्य राष्ट्रों का मुंह जोहना पड़ता था। किन्तु अब वह इस विषय में भी स्वावलम्बी बन कर अपने कलाकौशल की उन्नति कर सकेगा।

२१ मई को इटली ने ब्रिटेन तथा फ्रांस को सूचित किया कि वह ऐबीसीनिया से अपनी उन अतिरिक्त फौजों को वापिस बुलालें, जो उन्होंने अपने नागरिकों की रक्षा के लिए वहां रखी हुई थी।

इसी समय इटालियन सेनाओं ने ऐबीसीनिया के पुराने किले डेब्रामकज़ोस तथा गज्जम नगर पर भी अधिकार कर लिया।

२४ मई को मार्शल बदोलिओ मसावा से जहाज में सवार होकर इटली को चले। आपकी अनुपस्थिति में मार्शल ग्रैजियानी को वहां का वाएसराय बनाया गया।

अदीस अबेबा पर जिस समय इटली ने अधिकार किया था, वहां अराजकता का अखण्ड साम्राज्य था। सारे नगर में लूट मार, अग्निकांड और हत्या का बाज़ार गरम था। इटालियन अधिकारियों ने स्थिति का कठोरता से मुकाबला किया, और २५ मई तक ३५३ आदमियों को विभिन्न अपराधों में गोली से उड़ा दिया। १० जून को किरीलोस के आर्क बिशप, रास हेलुअबुना और ५० इथोपियन सरदारों तथा धर्माचार्यों ने जेनेरल ग्रैज़ियानी के सामने आत्म समर्पण कर दिया और इटली की आधीनता स्वीकार की।

मार्शल बदोग्लिओ रोम में

२५ मई को मार्शल बदोग्लिओ मसावा से जहाज में बैठ कर इटली को चले। जब आप ४ जून १९३६ को नेपुल्स में जहाज से उतरे तो राजकुमार अम्बरतो ने ५०० अफ़सरों, २००० मेहमानों और कई फ़ासिस्ट संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित उनका स्वागत किया। फौज, पल्टन और बैण्ड के साथ ही उनको २१ तोपों की सलामी दी गई। आप एक विशेष रेल द्वारा रोम पहुंचे। गाड़ी से उतरते ही आपको प्लैटफार्म पर खड़े हुए मुसोलिनी ने चूम लिया। यहां भी बैंड और सेना ने आपको सलामी दी। जब आप अपनी स्त्री, लड़की और लड़के के साथ मोटर में बैठ कर घर को चले तो हर्षोन्मत्त जनता ने आपकी जय बोल कर आपका स्वागत किया। १२ जून को आपको 'अदीस अबेबा का ड्यूक' बनाया गया। उन्होंने फिर अपने पुराने जेनेरल-स्टाफ के प्रधान पद का कार्यभार सम्भाल लिया। उनके स्थान में इथोपिया का वाएसराय मार्शल ग्रेज़ियानी को बनाया गया।

९ जुलाई को यह घोषणा की गई कि मार्शल बदोग्लिओ के प्रति समस्त इटालियन राष्ट्र की कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिये मंत्रीमण्डल ने निश्चय किया है कि उनके वर्तमान वेतन को आजन्म दिया जावे।

पन्द्रहवां अध्याय

परतंत्र ऐबीसीनिया की तड़प

ऐबीसीनिया की पराजय और राष्ट्रसंघ—ऐबीसीनिया के मामले में राष्ट्रसंघ ने जिस नपुंसकता का परिचय दिया वह इतिहास में अपने ढंग की अनूठी है। यद्यपि राष्ट्रसंघ ने इटली का आर्थिक बहिष्कार कर दिया था और उसमें राष्ट्रसंघ के असदस्य-राष्ट्र अमरीका, जर्मनी और जापान भी सम्मिलित हो गए थे, किन्तु इटली ने इस आर्थिक संकट का बड़ी सफलता से सामना किया और ऐबीसीनिया को जीत ही लिया। ऐबीसीनिया की पूर्ण पराजय से राष्ट्रसंघ के क्षेत्र में बड़ा भारी आश्चर्य प्रगट किया गया। अब उसको इटली के मुकाबले अपनी नाक बचाने की चिन्ता पड़ी। ११ मई को राष्ट्रसंघ की कार्यकारिणी का एक अधिवेशन हुआ, जिसमें ऐबीसीसीनियन मामले को विचाराधीन रखने का निश्चय

किया गया। इसके विरोध स्वरूप इटली के प्रतिनिधि बैरन ऐलोईज़ी (Baron Aloisi)सभा से उठ कर चले गए।

काउंट चानो (Count Ciano) मुसोलिनी के दामाद हैं। आपने ऐब्रीसीनिया पर बम-वर्षा करने में बड़ी वीरता का परिचय दिया था। जूनके आरम्भ में मुसोलिनी ने आपको विदेशी मन्त्री बना दिया। इसके पश्चात ता० १२ जून को मुसोलिनी ने राष्ट्रसंघ का प्रतिनिधि बैरन ऐलोईज़ी के स्थान में सिन्योर डीपेपो को बनाया। बैरन ऐलोइज़ी को 'रीयर एडमीरल' की उपाधि दी गई।

आर्थिक प्रतिबन्ध

ऐबीसीनिया की विजय के पश्चात् प्रतिबन्धों की असारता को सारे संसार ने समझ लिया। अत: सबसे पहिले अमरीका ने ता० २१ जून १९३६ को इटली के व्यापार पर से प्रतिबन्ध उठाने की घोषणा की। इससे पूर्व २० जून को ब्रिटेन के विदेशी मन्त्री कप्तान ऐंथोनी ईडेन ने दण्डव्यवस्था की असफलता को स्पष्टत: स्वीकार करते हुए कहा कि अब प्रतिबन्धों को आगे चलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि ऐबीसीनिया को प्रतिबन्धों से नहीं—वरन् केवलमात्र युद्ध से ही बचाया जा सकता था, जिसके लिए कोई राष्ट्र तयार नहीं था। २४ जून को फ्रांस के चैम्बर आफ़ डेपुटीज में भी विदेशी मन्त्री श्री डोल्बी ने प्रतिबंधों को जारी रखना व्यर्थ बतलाया।

राष्ट्रसंघ की पूर्ण पराजय

राष्ट्रसंघ में इशोपिया का मामला १२ मई के बाद ३० जून को उपस्थित किया जाने वाला था। अनेक प्रतिनिधियों के अतिरिक्त इशोपिया के भूतपूर्व सम्राट् भी इसमें भाग लेने के लिये ता० २६ जून को जेनेवा पहुंचे। यहां उनका हजारों की संख्या में जनता ने स्वागत किया। ३० जून को नीगुस ने राष्ट्रसंघ में बड़ा हृदयद्रावक भाषण दिया। आपने स्पष्ट शब्दों में कहा कि राष्ट्रसंघ ने उसको वचन देकर भी कुछ सहायता नहीं दी और इटली के सामने चुपके से सिर झुका दिया। किन्तु राष्ट्रसंघ के बलवान् सदस्यों पर इस भाषण का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसके विरुद्ध उन्होंने इटली पर से दण्डव्यवस्था उठाकर नीगुस को साफ़ अंगूठा दिखा दिया और इटली के सन्मुख अपनी पराजय को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर किया।

सम्राट् नीगुस ने ४ जुलाई को राष्ट्रसंघ के सेक्रेटरी को सूचित किया कि इथोपिया के गोर प्रदेश में अभी तक इथोपियन सरकार क़ायम है। सिनेटर बाल्डोसैडिक वहां की सरकार का प्रेसीडेंट है और रास इमेरू वहां साम्राज्य की सेनाओं का फिर से संगठन कर रहा है।

राष्ट्रसंघ के इस अधिवेशन में नीगुस ने राष्ट्रसंघ के सामने दो मांगें उपस्थित की थीं। एक तो एक करोड़ स्टर्लिंग के कर्जे की मांग तथा दूसरा इथोपिया में इटली की सरकार का स्वीकार न किया जाना। राष्ट्रसंघ ने पहिली मांग को ६ जुलाई को अस्वीकार

करके दूसरी को विचित्र रूप से टाल दिया। परिणाम स्वरूप १५ जुलाई को २०१ दिन के पश्चात ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा, भारत आदि देशों ने दण्डव्यवस्था का अन्त कर दिया। इस अवसर पर सम्पूर्ण इटली भर में बड़ा भारी उत्सव मनाया गया।

विद्रोही इथोपियन

इथोपिया विजय के पश्चात् भी स्वतन्त्रता के पुजारी इथोपियन लोगों ने इटली की आधीनता स्वीकार नहीं की। वह लोग छोटी २ पार्टियों में इटालियनों पर जब कभी भी आक्रमण कर के लूट मार किया करते थे। उन्होंने इटालियन सैनिकोंको पकड़ २ कर उनकी गर्दनें काट डालीं। एक दिन तो जून मास के अन्त में अदीस अबेबा में ही कुछ इटालियन सिपाहियों को काट डाला गया। इस पर इटालियन अधिकारियों ने हज़ारों इथोपियनों और यूरोपियनों को, गिरफ्तार कर लिया, जिनमें से बहुतों को दण्ड दिया गया।

मुसोलिनी ने पीछे से इन विद्रोहियों को शांतिपूर्ण नागरिक बनाने के लिये सेना में स्थान देना आरम्भ किया। इसका वास्तव में इच्छित प्रभाव देखने में आया।

नया प्रबन्ध

इथोपिया के १॥ लाख काली कुर्ती के सैनिकों को वहां राजकर्मचारी, व्यापारी, किसान तथा इंजिनीयर आदि के रूप में बसा दिया गया। उनके लिये अनेक स्त्रियों को भी इटली से ऐबीसीनिया भेजा गया।

उगदन की मरुभूमि को नहरों से सींच कर उसे कृषि के योग्य बनाया जा रहा है। बैबशिबेली और जूबा नदियों के जल से आबपाशी की उन्नति की जा रही है।

इथोपियनों की अदीस अबेबा पर चढ़ाई

६ जुलाई को इथोपियनों ने जिम्मा के हवाई अड्डे पर उतरे हुए ३ विमानों को नष्ट करके उनमें बैठे हुए ८-६ इटालियन अफ़सरों को मार डाला। इसके दो ही दिन बाद उन्होंने अदीस अबेबा--जिबूरी रेल्वे की लाइन काट दी और इटालियनों के लिये सामान लेजाने वाली दो गाड़ियों को रोक लिया।

२२ जुलाई को इथोपियन सेनाओं द्वारा अदीस अबेबा पर फिर चढ़ाई करने का समाचार मिला था। कहा गया था कि इस समय रास कस्सा की बची खुची सेना और रास सेयूम दो ओर से राजधानी की ओर बढ़े। इथोपियन और इटालियन सेनाओं में भयंकर घमासान हुआ, जिसमें दोनों ओर के कई सैनिक हताहत हुए।

२८ जुलाई को रास कस्सा के पुत्र ने विशाल और शक्ति-शाली सेना की सहायता से अदीस अबेबा और देसी के बीच का इटालियन यातायात काटने का यत्न किया। किन्तु रास हेलू की संगठित सेना ने युद्ध करके उसे पीछे हटा दिया। उसके एक सहस्र सैनिक हताहत हुए।

२ अगस्त के लगभग दीसी के पास इटालियन सेना और इथोपियनों में फिर भीषण युद्ध हुआ, जिसमें दोनों ओर के

७ सहस्र व्यक्ति हताहत हुए। एक बार तो इथोपियन लोग अदीस अबेबा में भी घुस आए, किन्तु उनको शीघ्र ही फिर निकाल दिया गया। जनता में इससे खूब आतंक छा गया, किन्तु इथोपियन लोग शहर से निकल जाने पर भी उसके चारों ओर झाड़ियों में छिप गए। वह अचानक ही किसी भी दिशा से नगर पर कभी भी आक्रमण कर देते थे। उन दिनों इटालियन सेनाएं उनका सामना करने के लिये सदा तयार रहती थीं। उस समय इटालियन अधिकारियों को दीरेदावा से अदीस अबेबा में विमान द्वारा सेना लानी पड़ती थी। एक बार तो इटालियनों ने इस प्रकार सेना लाने वाले एक विमान को निशाना लगा कर नीचे गिरा लिया।

अदीस अबेबा से ४० मील दूर मोझियो में दो सहस्र इथोपियन कबीले वाले इटालियन सेना पर टूट पड़े, जिनको बाद में खदेड़ दिया गया। इथोपियनों ने एक बार १६ लारियों की कुमक पर आक्रमण करके उसको नष्ट भ्रष्टकर दिया। इटालियन पक्ष के २०० सैनिक भी मारे गए।

५ अगस्त के पोर्ट सईद के समाचार के अनुसार उत्तरी पश्चिमी मुहिम के ऐबीसीनियन सेनापति असीमूर ने ६ सहस्र व्यक्तियों की एक सेना तयार की और वह चालीस सहस्र सेना के साथ देसी और अदीस अबेबा पर चढ़ाई के लिये रवाना हुआ। ऐबीसीनियनों का कहना है कि रास इमेरू ने बहुत सी इटालियन चौकियों पर चढ़ाई

करके उसको नष्ट कर दिया और उनके हाथ अदीस अबेबा की हाल की चढ़ाई में बहुत सी युद्ध सामग्री भी लगी है।

उधर रास कस्सा के दूसरे पुत्र देजाज बांढबासा की अध्यक्षता में इथोपियन सेना ने ताना झील के पास इटालियनों के साथ भीषण युद्ध किया। पेरिस स्थित भूतपूर्व इथोपियन मिनिस्टर तकले वारीत की अध्यक्षता में एक इथोपियन टुकड़ी अदीस अबेबा के पास रेलवे लाइन पर मोर्चाबंदी की हुई थी। किन्तु वर्षा के कारण प्रगट हुई ऐबीसीनियन स्वतंत्रता की यह अन्तिम चमक भी थोड़े दिन और चमक कर लुप्त हो गई। इटली ने इन लोगों का पूरी शक्ति से दमन किया। इतना ही नहीं वरन्, विदेशों में ऐबीसीनिया के पक्ष में प्रचार करने वाले रास नसीबू और भूतपूर्व इथोपियन सरकार के पेरिस स्थित भूतपूर्व प्रतिनिधि बालडामरिया की सारी जायदाद १५अगस्त को जब्त करली गई। १८अगस्त को ऐबीसीनिया के भूतपूर्व सम्राट् नीगुस की व्यक्तिगत जायदाद को भी जब्त कर लिया गया। सरकारी तौर से घोषणा करके इटली-प्रवासी किसानों को ऐबीसीनिया में अक्तूबर में सम्राट् नीगुस की जायदाद पर बसा दिया गया।

२७ अगस्त को १२०० ऐबीसीनियों ने अदीस अबेबा पर स्थानीय वाई बन्दर के दक्षिणी पार्श्व से जोरदार आक्रमण किया, किन्तु इटालियनों ने उनको मार भगाया। इस युद्ध में २०० ऐबीसीनियनों और इटालिन पक्ष के १५ अस्करी मारे गए और ४० घायल हुए।

रास ऐलू अपनी सेना सहित विद्रोही ऐबीसीनियों के विरुद्ध इटालियनों से जा मिला।

शाह नीगुस इंगलैंड में

यह बतलाया जा चुका है कि ऐबीसीनिया के सम्राट् रास तफ़ारी युद्ध के समय वहां से चुपचाप भाग कर फ़िलिस्तीन के जेरूसलेम नगर को चले गए थे। २३ मई १९३६ को वह अपने दो लड़कों, एक लड़की और प्राईवेट सेक्रेटरी सहित वहां से लंदन के लिये रवाना हुए और ता० ३ जून १९३६ को वहां पहुंच गए। लंदन में आपका कई एक सार्वजनिक सभाओं में व्याख्यान हुआ। भारतीयों ने तो आपका और आपके परिवार का कई बार स्वागत किया। आपने ३०जून को जेनेवा के राष्ट्रसंघ में अपना पक्ष समर्थन करते हुए बड़ा मार्मिक भाषण दिया, जिसका उल्लेख पीछे पृष्ठ ३८० पर किया जा चुका है। वहां से लंदन आकर २५ अगस्त को आप वेंकिंग मस्जिद में गये। यहां आपको एक कुरआन भेंट किया गया।

राजनीतिक क्षेत्रों में अत्यंत दौड़ धूप करने पर भी भूतपूर्व सम्राट् नीगुस को यूरोपीय राष्ट्रों की सहानुभूति इटली के विरुद्ध न मिल सकी। उनको राष्ट्रसंघ से बड़ी आशा थी, किन्तु वह भी कोरी मृततृष्णा ही प्रमाणित हुई। यद्यपि कभी २ उनके मन में आशा की एक मंद किरण चमक जाया करती है, किन्तु सितम्बर १९३६ के आरंभ में ही उनको निर्धनता का अनुभव होने लगा। उन्होंने होटल के खर्चीले जीवन को छोड़ कर लन्दन के समीप ही रहने के लिये मकान ढूंढना आरम्भ किया। मकान का स्थायी प्रबंध

हो जाने पर वह जेरुसलेम से अपनी पत्नी को भी बुला लेने वाले थे। उनकी सुपुत्री राजकुमारी ताशाही लन्दन के एक अस्पताल में काम सीखने लगी। वह आम दाइयों के समान निश्चित समय पर काम करती और प्रत्येक कर्त्तव्य को निबाहती थी।

इथोपिया और राष्ट्रसंघ की सदस्यता

राष्ट्रसंघ के सितम्बर १९३६ के अधिवेशन में यह प्रश्न उपस्थित था कि इथोपिया को राष्ट्रसंघ का सदस्य रहने दिया जावे या नहीं। इसके लिये राष्ट्रसंघ में अपने प्रतिनिधियों को सहायता देने के लिये सम्राट् नीगुस फिर स्वयं ता० २१ सितम्बर सन् १९३६ को सायंकाल ५॥ बजे जेनेवा पहुंचे। हवाई अड्डे पर सैंकड़ों पत्रकारों और फोटोग्राफरों की भीड़ ने आपका स्वागत किया। ५० पुलिसमैन भी अड्डे पर मौजूद थे। नीगुस मोटर में सवार होकर सीधे होटल चले गए।

इटली ने ऐबीसीनिया-विजय के पश्चात् राष्ट्रसंघ का तब तक के लिए बहिष्कार कर दिया, तब तक इथोपिया को राष्ट्रसंघ की सदस्यता से प्रथक् न किया जावे। राष्ट्रसंघ ने इथोपिया का मामला एक अधिकार निर्णय कमैटी (क्रेडेंशियल कमैटी) के सुपुर्द किया, जिसके सदस्य ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, यूनान, जेकोस्लोवाकिया, तुर्की, पीरू और न्यूज़ीलैण्ड को बनाया गया। इस कमैटी ने तारीख २३ को इथोपिया के प्रश्न को स्वयं तय न करके हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के सुपुर्द करने का निश्चय किया। इटली कमैटी के इस निर्णय से भी संतुष्ट न हुआ। राष्ट्रसंघ की असेम्बली ने भी क्रेडेंशियल कमैटी के इस निर्णय को ३९ पक्ष और ४ विपक्ष मतों से

स्वीकार कर लिया। ६ देशों ने मत नहीं दिया। हेग के न्यायालय का निर्णय होने तक इथोपिया को राष्ट्रसंघ का सदस्य रहने दिया गया। ऐबीसीनियन प्रतिनिधि मि० टेईजाज ने इस निर्णय को सिर झुका कर धन्यवाद सहित स्वीकार किया। किन्तु ऐबीसीनिया के भूतपूर्व सम्राट् हेली सलासी अथवा रास तफ़ारी ने इस सब कार्य का कोई फल न देख कर २६ मई १९३७ को राष्ट्रसंघ को सूचना दी कि वह अब अपना प्रतिनिधि राष्ट्रसंघ में नहीं भेजेंगे, क्योंकि इससे वह अपना भविष्य में कोई लाभ नहीं देखते।

पेरिसस्थित ऐबीसीनियन राजदूत

२४ सितम्बर को पेरिस स्थित ऐबीसीनियन राजदूत मि० वुलडीमेरियन ने इटालियन दूतावास पर जाकर इटालियन नौसेना तथा फ़ौजी राजप्रतिनिधि सिन्योर करूरी के सामने आधीनता स्वीकार कर ली और इटली के राजा को ऐबीसीनिया का सम्राट् स्वीकार कर लिया।

स्वतन्त्र ऐबीसीनिया पर इटली की चढ़ाई

२४ सितम्बर को ही इटली ने उस स्वतन्त्र ऐबीसीनियन सरकार के विरुद्ध चढ़ाई की, जिसका अस्तित्व गोर प्रदेश में बतलाया जाता था। इन लोगों ने पश्चिमी ऐबीसीनिया के गियवेसेरी नामक स्थान पर अधिकार किया। इस समय ता० २१ अक्तूबर १९३६ को इनको ऐबीसीनियनों के साथ भयंकर युद्ध करना पड़ा। यह युद्ध ६ घंटों तक हुआ। पहिले इटालियन तोपों ने गोलाबारी की। फिर पलटन ने ऐबीसीनियनों पर धावा बोला.

जिससे वह लोग सैंकड़ों की संख्या में मर गए और उनको भाग कर गुफाओं में आश्रय लेना पड़ा। इसके पश्चात् डेडजेच एबी की अध्यक्षता में ऐबीसीनियनों ने इटालियन सेना पर भयंकर आक्रमण किया। किन्तु इस आक्रमण को विमानों की बम-वर्षा द्वारा व्यर्थ कर दिया गया। इसके पश्चात इटालियन पलटन ने भागते हुए ऐबीसीनियनों का पीछा किया। ऐबीसीनियन कमांडर डेडजेच एबी भी मारा गया। उसकी लाश रण भूमि में पाई गई। ऐबीसीनियनों की बहुत सी मशीनगनें इटालियनों के हाथ लगीं। इस युद्ध के परिणाम स्वरूप इटालियन लोग पश्चिमी ऐबीसीनिया के उपजाऊ क्षेत्र सिडोमा तक पहुंच गए।

२१ नवम्बर तक इटालियन सेना ने जिम्मा प्रांत पर अधिकार कर लिया। सेना की एक टुकड़ी ने गोर से ३५ मील उत्तर बोलागा ज़िले में जूण्डी की प्लैटीनम की खान पर अधिकार कर लिया। इटालियन सेनाओं का प्रायः कहीं मुकाबला नहीं किया गया।

२६ नवम्बर तक इटालियन सेना ने पश्चिमी ऐबीसीनियन सरकार की राजधानी गोर पर भी बिना किसी मुकाबले के अधिकार कर लिया। इटालियन सरकार ने एक वक्तव्य देकर घोषणा की कि वहां कोई भी स्वतन्त्र सरकार नहीं पाई गई। सम्भवतः रास इमेरू की सेनाएं सूडान के सीमान्त की ओर लौट गईं। किन्तु इटालियन सेना ने रास इमेरू का पीछा किया और लगभग १५ दिसम्बर को उसे ८०० ऐबीसीनियनों

सहित गिरफ़्तार कर लिया। इस युद्ध में इटली को एक सहस्र से भी अधिक बन्दूकें और पांच मशीनगनें मिलीं।

१८ दिसम्बर को इटालियन दस्ता गोर से ७५ मील दूर पश्चिम गैम्बेला प्रदेश में दाखिल हुआ। उसने उस चुंगीघर पर अधिकार कर लिया, जो सूडान से आने और वहां को जाने वाले माल की चुंगी वसूल किया करता था। इस सेना को युद्ध तथा चिकित्सा-सम्बन्धी सामग्री विमानों द्वारा पहुंचाई जाती थी।

ऐबीसीनिया विजय की अन्य राष्ट्रों द्वारा स्वीकृति

इटली द्वारा ऐबीसीनिया की विजय को राष्ट्रसंघ के विरोध के कारण अन्य राज्यों के स्वीकार न करने पर भी सब से पहिले जर्मनी ने तारीख २५ अक्तूबर १९३६ को उसे स्वीकार कर लिया। उसके पश्चात् आस्ट्रिया और हंगैरी ने भी ता० १३ नवम्बर १९३६ को उसको स्वीकार कर लिया। २८ नवम्बर को एक अर्द्धसरकारी घोषणा द्वारा जापान ने भी इथोपिया पर इटली का अधिकार स्वीकार कर लिया। इसके बदले में इटली ने मंचूको पर जापान का अधिकार मान लिया। समझौते में जापान का इथोपिया में औद्योगिक अधिकार स्वीकार किया गया। इसके थोड़े दिनों के पश्चात् जापान मन्त्रीमंडल ने अदीस अबेबा में जापानी लीगेशन के स्थान में कांसुलेट की स्थापना कर दी। २२ दिसम्बर को ब्रिटेन ने भी अपने अदीस अबेबा के लीगेशन को कांसुलेट में बदल कर अप्रत्यक्ष रीति से इथोपिया पर इटली के प्रभुत्व को मान लिया। इसके पश्चात् २३ दिसम्बर को फ्रांस ने भी अपने अदीस अबेबा के

लीगेशन को कांसुलेंट में बदल कर ब्रिटेन का अनुकरण किया। २४ दिसम्बर को स्वीजरलैंण्ड ने और १६ नवम्बर को यूगोस्लैविया ने भी इथोपिया पर इटली के प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया।

इथोपियनों का जनवरी सन् ३७ में फिर युद्ध

यद्यपि इटली ने ऐबीसीनिया को विजय कर लिया और यूरोप के राज्यों ने भी उस पर उसके प्रभुत्व को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीति से मान लिया, किन्तु वहां स्वतन्त्रता का बीज विद्यमान है। यद्यपि वह लोग दमन के कारण दब जाते हैं किन्तु मौका पाते ही उठने से भी नहीं चूकते।

२१ जनवरी सन् १६३७ को सम्राट् नीगुस के एक प्रमुख सेनापति रास देस्ता के देसियों की एक बड़ी भारी सेना लेकर इटालियनों के विरुद्ध खड़े होने का समाचार मिला था। इस पर इटालियन सेनापति तथा वायसराय मार्शल ग्रैज़ियानी ने रास देस्ता के विरुद्ध चढ़ाई की। उन्होंने २० सहस्र सैनिकों के चार दस्ते रास देस्ता को घेरने के लिये भेजे। उस समय रास देस्ता अपनी १० सहस्र सेना सहित झील मारघेरीटा के पूर्व प्रदेश में था। दास देस्ता के साथ गैब्री मेरियम भी था। इस युद्ध के लिये मार्शल ग्रैज़ियानी को अपना हेडकार्टर अदीस अबेबा से हटा कर युद्ध की तयारी के लिये इरगालेन ले जाना पड़ा। थोड़े दिनों के युद्ध के पश्चात् रास देस्ता की सेनाओं को पूर्णतया नष्ट कर दिया गया। कमांडर हैड जेसमच ग्रेब्रे मेरियन को ग्रेट लेक के प्रांत में घेर कर मार डाला गया। किन्तु रास देस्ता न पकड़ा जा सका।

मार्शल ग्रेज़ियानी

जेनेरल ग्रैंज़ियानी पर बमवर्षा

ऐबीसीनिया का इटालियन वाएसराय १६ फरवरी को अदीस अबेबा के गिरजाघरों और मस्जिदों में उपहार बांट रहा था कि कुछ असन्तुष्ट ऐबीसीनियनों ने जो भीड़ में आकर मिल गए थे, उस पर हाथ से फेंके जाने वाले कई बम फेंके। इससे जेनेरल ग्रैंजियानी के साधारण, परन्तु जेनेरल लियोटा के सख्त चोट आई। भीड़ में कई ऐबीसीनियन भी घायल हुए।

इस घटना से उसी समय पुलिस ने भीड़ को रोक लिया और गिरफ़्तारियां आरम्भ करदीं। २२ फरवरी के रोम के समाचार के अनुसार उस समय तक दस सहस्र ऐबीसीनियन गिरफ़्तार किये जा चुके थे। मार्शल ग्रैंज़ियानी की दशा इस समय तक सन्तोष-जनक हो गई थी। जेनेरल लियोटा भी बहुत कुछ अच्छा हो गया था। किन्तु वह दोनों ही ३१ मार्च तक अस्पताल में रहे। फ़ासिस्टों (इटालियनों) के सैनिक दस्ते ने राजधानी के संदिग्ध क्षेत्र से तमाम ऐबीसीनियनों को निकाल दिया और अदीस अबेबा पर तीस सहस्र इटालियन सैनिकों का पहरा बिठला दिया।

विभिन्न समाचार कम्पनियों का कहना है कि बम फेंके जाने के बाद अदीस अबेबा में रहने वाले ऐबीसीनियनों को घर से निकाल कर एक पंक्ति में खड़ा किया गया और वह सब मशीन-गन द्वारा उड़ा दिये गए। ऐबीसीनियन पजामा पहिनने वालों को शूट किये जाने की आज्ञा के कारण ऐबीसीनियन पजामा

पहिनने वाले मुसलमान भी छूट कर दिये गये। क़त्ले आम से स्त्रियां और बच्चे तक भी नहीं बच पाए।

इटालियन अधिकारियों के सन्मुख आत्मसमर्पण करने वाले सभी ऐबीसीनियन सरदारों को शहर के बाहिर कर दिया गया। हेल सिलासी, रास गुगसा और रास हैलू को भी शहर से निकाल दिया गया।

इस क़त्ले आम के आरम्भ करते समय ब्रिटिश लीगेशन के चारों ओर गार्ड बिठला कर उसे चेतावनी दे दी गई कि वह रेडियो द्वारा समाचार बाहिर न भेजे। उस समय समाचारपत्रों पर कठोर सेंसर लगा दिया गया था।

उस समय १५ भारतीय और ५० अरब भी गिरफ़्तार किये गए थे। किन्तु ब्रिटिश काउन्सल जेनेरल के हस्तक्षेप पर भारतीय सभी छोड़ दिए गए। लूटमार और आग लगाने की घटनाएं भी हुईं, किन्तु राजधानी ऐबीसीनियनों से सर्वथा खाली कराली गई। केवल जहां तहां थोड़े से गूरेज लड़के दिखाई पड़ जाते थे। हावेश तक की रेलवे लाइन पर भी भयानक बम बर्षा की गई और सैकड़ों गांव जला दियेगए। हरार से भी कुछ लोगों के मारे जाने का समाचार मिला था। वहां भी लोगों के घर फूंक दिए गए। कहा जाता है कि डिरे डाक में भी वही आर्डर दिया गया था और सब ऐबीसीनियनों को एक स्थान पर एकत्रित होने का आदेश दिया गया था। किन्तु फ्रेंच काउंसल के प्रबल विरोध के कारण उनके प्राण बच गए।

१६ मार्च को इंगलैंड की लार्ड सभा में कैण्टरबरी के आर्क

बिशप ने कहा कि "१६ फर्वरी को जिस दिन अदीस अबेबा में मार्शल ग्रैज़ियानी पर बम फेंका गया और उसके अगले दो दिन इटालियन सेना और ब्लैकशर्ट कोर ने अदीस अबेबा के इथोपियनों पर जो अत्याचार किये गए हैं, उनकी तुलना जे.जे. एक्सेरल से की जा सकती है। ब्लैकशर्ट लोगों की सशस्त्र टोलियां बम, आग फेंकने वाली राइफिलें और पिस्तौलें लेकर पागलों के समान अदीस अबेबा के इथोपियनों की बस्ती में घुस गईं। जहां बम गिरा था, उन्होंने उस हल्के को चारों ओर से घेर लिया। झोंपड़ियों में आग लगा दी गई और आग से बच कर निकल भागने वालों को शूट कर दिया गया। अनुमान किया जाता है कि इन तीन दिनों में दो सहस्र से लेकर छै सहस्र व्यक्ति तक मारे गए।"

लार्ड प्लाइमाउथ ने उत्तर में कहा कि सरकार को इस सम्बन्ध में बहुत कम समाचार मिले हैं। बम फेंकने के बाद इटालियन सैनिकों ने बहुत ज्यादती की है और बहुत से लोग मारे गए हैं। किन्तु उनकी निश्चित संख्या के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता।

इस विषय में भूतपूर्व नीगुस रासतफ़ारी ने राष्ट्रसंघ के मंत्री को ता० २० मार्च के लगभग लिखा था कि वह कुछ एक चुने हुए व्यक्तियों को अदीस अबेबा में हुए कत्लेआम की जांच करने को भेजें।

किन्तु जैसा कि बाद में पता चला ऐबीसीनियनों के इस क़त्ले आम में इटालियन अधिकारियों का हाथ बिल्कुल ही नहीं था। यह सब कुछ कार्यवाही उत्तेजित ब्लैकशर्ट लोगों की की हुई थी। मार्शल ग्रैज़ियानी इस क़त्ले आम के समय डाक्टरों के निरी-

क्षण में थे। जब ४८ घंटे तक क़त्ले आम हो चुका तो उनको पता चला। वह २१ मार्च तक भी अस्पताल में ही थे ।

मार्शल ग्रैज़ियानी ने इस मामले की जांच करवाने के पश्चात ब्लैकशर्ट लेबर कोर के विभिन्न ओहदों के २०० इटालियनों को ऐबीसीनिया से निकाल दिया। बाद के विवरणों से पता चला कि इटालियनों द्वारा अन्धाधुन्ध गोलियां चलाने से कुछ इटालियन भी मारे गए थे। इस काण्ड के कारण ऐबीसीनिया और बाह्य संसार के बीच व्यापार बहुत दिनों तक बन्द रहा। मुहम्मद-अली नाम की ब्रिटिश भारतीय फ़र्म को तो एक दम बन्द कर दिया गया और उसके मालिकों तथा कर्मचारियों को ऐबीसीनिया छोड़ने की आज्ञा दी गई ।

डा० मार्टिन के दो लड़कों को मार्शल ग्रैज़ियानी पर आक्रमण करने के अपराध में फांसी दे दी गई ।

यद्यपि देखने में इस समय ऐबीसीनिया के नवयुवक दब गए। किन्तु उनके हृदय में स्वतंत्रता की आग बराबर सुलगती रहती है।

इसीलिये कुछ माह चुप रहने के पश्चात् ऐबीसीनियन लोगों ने वर्षा समाप्त होने पर अक्तूबर १९३७ में फिर गुरिल्ला युद्ध आरंभ कर दिया। ११ अक्तूबर के समाचार के अनुसार उन्होंने हानि सह कर भी अनेक इटालियनों को मार डाला। १५ अक्तूबर को उन्होंने ३८ अफ़सरों और १६ सैनिकों को मार डाला। किन्तु उनके आक्रमणों को दबा कर पूरा बदला लिया गया।

ऐबीसीनिया युद्ध का कुल व्यय

रोम के ता० १५ मई सन् १९३७ के समाचार के अनुसार ऐबीसीनिया युद्ध पर इटली का कुल ११ अरब ३५ करोड़ लीरा ख़र्च हुआ।

ऐबीसीनिया का पुनर्निर्माण

इटली इस समय सन् ३७ के अन्त में भी ऐबीसीनिया के पुनर्निर्माण में लगा हुआ है। वहां इटली के किसानों को बसाने, खानें खोदने, खेती के सम्बन्ध के बड़े २ परीक्षणों के अतिरिक्त बड़े २ कल और कारखाने खोले जा रहे हैं। कहा जाता है कि ऐबीसीनिया की उन्नति बिल्कुल नए तरीकों से होगी। उसमें वैयक्तिक एकाधिकार, भीड़ भड़क्का और अत्युत्पत्ति का एक दम अभाव होगा। वहां तीन सहस्र फुट से कम ऊंचे मकान न होंगे। अनेक मकान तो छै सहस्र फुट से भी ऊंचे होंगे। नीगुस की ज़मीन इटली के किसानों को दी जा रही है। वहां चमड़े, कहवे, रुई और तिल आदि की फ़सिल की ओर विशेष ध्यान दिया जावेगा। ताना झील के इलाके में रुई पैदा की जावेगी। सरकार का लैंसस लेकर पांच फर्में पीतल, शीशे और टीन की तथा तीन फर्में मिट्टी के तेल की खोज कर रही हैं; इनमें से एक का मुखिया एक जर्मन है।

ख्याल किया जाता है कि जर्मनी, जापान और आस्ट्रिया के साहसियों को विशेष रियायत दी जावेगी।

सोलहवां अध्याय

इटली के अन्य प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ

इटली में मुसोलिनी के तीन पद हैं। वह फ़ासिस्ट दल का ड्यूस (नेता), प्रधानमन्त्री (Capo del Governo) और फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल का प्रधान है। यह तोनों पद बिल्कुल प्रथक् २ होते हुए भी एक ही व्यक्ति में एकत्रित हो गए हैं। प्रधान-मन्त्री के रूप में वह सिद्धांततः इटली के सम्राट् के प्रति उत्तर-दायी है। दल के ड्यूस के रूप में वह फ़ासिस्ट गैण्ड कौंसिल की नियुक्ति करके उसके अध्यक्ष-आसन को ग्रहण करता है। फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल पार्लमेंट का शासन करती है। हिटलर ने जर्मनी में अपने दल और राज्य को मिला दिया है। अतएव वह कहां राइक्ह फुहरर (पार्लमेंट का नेता) है। किन्तु मुसोलिनी व्यवहार में इस प्रकार न होकर परिणाम में इसी प्रकार का है। रूस में स्टालिन की नियुक्ति साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति के सदस्य करते हैं और वह उनके प्रति उत्तरदायी है, जब कि

इटली में फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल के सदस्य मुसोलिनी द्वारा नियुक्त किये जाते हैं। मुसोलिनी के समान स्टालिन भी दल और राज्य को प्रथक् २ रखता है।

मुसोलिनी का उत्तराधिकार

वर्तमान डिक्टेटरों में केवल मुसोलिनी ही एक ऐसा डिक्टेटर है, जिसने अपने उत्तराधिकार का प्रबन्ध किया हुआ है। फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल के लगभग पच्चीस सदस्य हैं। पदाधिकारियों और आजीवन सदस्यों के अतिरिक्त उसके अन्य सदस्यों का कार्यकाल सदा गुप्त और बदलता रहता है। इसके अधिवेशन भी गुप्त रूप से ही होते हैं। इसके मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारी अपने पदों के कार्यकाल तक ही इसके सदस्य बने रहते हैं। रोम पर चढ़ाई करने वाली गुप्त युद्ध-समिति के तीन जीवित सदस्य बाल्बो, डे बोनो और डे वेछी—इसके आजीवन सदस्य हैं। मुसोलिनी की मृत्यु होने पर ग्रैण्ड कौंसिल को व्यक्तियों की एक सूची बनानी होगी, जिसमें से इटली का सम्राट् उत्तराधिकारी का निर्वाचन करेगा। यह समझा जाता है कि इस सूची में अभी पहिले से ही मुसोलिनी द्वारा तीन नाम रखे गए हैं।

यह प्रायः प्रश्न किया जाता है कि क्या मुसोलिनी की मृत्यु के पश्चात् भी इटली में फ़ासिस्ट शासन प्रणाली रहेगी? फ़ासिस्ट-विरोधी इसका उत्तर नकार में देते हैं। किन्तु इसका उत्तर खोजने के लिए हमको अन्य देशों की परिस्थिति की ओर भी ध्यान देना होगा। महायुद्ध के बाद के चार डिक्टेटरों की मृत्यु हो चुकी—

रूस के लेनिन, आस्ट्रिया के डालफस (Dollfuss), यूगोस्लेविया के अलेग्जेंडर और पोलैंड के पिलसुद्स्की (Pilsudski) की। किन्तु उनकी मृत्यु होने पर भी उनके द्वारा चलाई हुई शासन-प्रणालियां अभी तक अच्छी तरह चल रही हैं।

फासिस्ट दल का सेक्रेटरी

फ़ासिस्ट पार्टी के मन्त्री (सेक्रेटरी) का काम ही गलतियां करना है। मुसोलिनी सारा काम उसी से लेता है। जब वह कुछ अर्से में विनयानुशासन का पालन कराने, तरक्कियां न देने, लोगों को पदच्युत करने आदि के कारण जनता में पर्याप्त अप्रिय हो जाता है तो उसको पदच्युत करके उसके स्थान मे दूसरे व्यक्ति को रख लिया जाता है। सन् १६१६ में पार्टी के बनने से लगा कर अब तक छै व्यक्ति इस पद पर काम कर चुके हैं। सारांश यह है कि इस पद पर प्रत्येक व्यक्ति औसतन अढ़ाई वर्ष ही रह पाता है। इसका प्रथम सेक्रेटरी बिआंची (Bianchi) था। वह आरम्भिक युद्धसमिति के चार सदस्यों में से था। वह मत्तिओत्ति (Matteotti) की हत्या के षड्यन्त्र में फंस गया, जिससे मुसोलिनी ने उसको पदच्युत कर दिया। उसका उत्तराधिकारी (२) जिउंटा (Giunta) दनुनसिओ के साथ फ्यूम पर आक्रमण करने वाले वीरों में से था। उसके पश्चात क्रेमोना नगर के नेता (३) राबर्टो फ़ारीनाची (Roberto Faranacci) को सेक्रेटरी बनाया गया। वह अत्यन्त उद्धत था। अतएव उसको अब कोई भी नहीं जानता। उसके पश्चात् (४) आउगुस्तो तूराती

काउंट चानो (Count Ciano)

(Augusto Turati) आया। यह व्यक्ति अधिक योग्य और प्रतिष्ठित था। उसने इस पद पर चार वर्ष तक काम किया। उसके पश्चात् (५) जूरिआती (Giurati) सेक्रेटरी बना। फासिस्टों की दस आज्ञाओं का निर्माता यही व्यक्ति था। वर्तमान सेक्रेटरी (६) ऐकील्ले स्ताराचे स्तारास्के (Achille Starace) है।

स्ताराचे

स्ताराचे सेक्रेटरी होने के साथ २ ग्रैण्ड कौंसिल का उपसभापति भी है। पार्टी में उसका प्रभाव बहुत अधिक है। वह फासिस्टों के फुर्सत और काम के घन्टों का भी नियन्त्रण रखता है। यद्यपि वह अत्यन्त ईमानदार है, किन्तु अपने पद के कारण वह भी अप्रिय बन चला है।

काउंट चानो

काउंट गालेआत्सो चानो (Count Galeazzo Ciano) मुसोलिनी का सब से अधिक निकटवर्ती है। वह उसका जामाता है। वह पहिले प्रचारमन्त्री था। उसके पिता का नाम काउंट कास्ताजो चानो (Count Constanzo Ciano) भूतपूर्व आयत मंत्री आजकल चैम्बर आफ़ डेपुटीज़ का प्रधान है। वह मुसोलिनी के निकटतम साथियों में से है। यह समझा जाता है कि यह व्यक्ति (न कि उसका पुत्र) फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल की उत्तराधिकार सूची के तीन नामवालों में से एक है। उसके पुत्र काउंट चानो ने पहिली पहल राजनीति में एक छोटे

इंगलिश उच्चारण की नकल करने वाले इसी को काउंट सियानो कहते हैं।

स्थान से प्रवेश किया था। वह सब से पहिले दक्षिणी अमरीका के इटालियन राजदूत का सेक्रेटरी और फिर शंघाई में कौंसल-जेनेरल बनाया गया। वह अत्यन्त बुद्धिमान् और अपने उत्तरदायित्व को समझने वाला है। रोम के पत्रकार लोगों में वह अत्यन्त प्रसिद्ध है। उस ने ऐबीसीनिया में भी बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया था

रोसोनी

एडमांडो रोसोनी (Edmondo Rossoni) मुसोलिनी के प्रधानमंत्री पद का सहायक-सेक्रेटरी है। पार्टी में वह भी अत्यन्त शक्तिशाली समझा जाता है। वह श्रमिकों का संगठन करने में अमरीका में कई वर्ष तक रह चुका है। मुसोलिनी के श्रम विभाग का संगठन उसी ने किया है।

बाल्बो

इटालो बाल्बो ने ही रेंडी के तेल (Castor oil) की चिकित्सा का आविष्कार किया है। वह कभी मुसोलिनी का दाहिना हाथ समझा जाता था। पहिले वह लीबिया का गर्वनर था, किन्तु दिसम्बर १९३५ तक उसको लीबिया में ही निर्वासित कर दिया गया था।

कहा जाता है कि मुसोलिनी ने उसको हवाई जहाज़ में अत्यन्त ख्याति प्राप्त कर लेने के कारण निर्वासित किया। किन्तु इसका एक और कारण यह है कि बाल्बो की युवराज अम्बर्टो (Umberto) से घनिष्ट मित्रता हो गई थी। सन् १९३२ और १९३३ में अम्बर्टो की प्रवृत्ति फासिस्टों के विरुद्ध हो रही थी।

अतएव मुसोलिनी ने आधीनता की शपथ में परिवर्तन करके उसमें युवराज का उल्लेख करना बन्द कर दिया। यह भी सुना गया था कि संभवत: युवराज अम्बर्टो का स्थान ड्यूक आफ़ ओस्टा (Duke of Aosta) को दिया जाने वाला था। उस समय बाल्बो अम्बर्टो का मित्र था। कहा जाता है कि इटली के राजा ने अम्बर्टो की मूर्खता को बहुत कुछ दूर कर दिया है। किन्तु बाल्बो की अम्बर्टो से अब भी घनिष्टता है। वह लीबिया से अम्बर्टो के निवास स्थान नेपुल्स प्राय: हो आता है और वहां एक दो दिन रह आता है।

फ़ासिस्टों में केवल बाल्बो ही एक ऐसा व्यक्ति है जो कभी २ अपने मन के अनुसार काम कर जाता है। बाल्बो का जन्म सन् १८६७ में बोलोइञा नगर में हुआ था। उस ने बाल्यावस्था में ही सेना में नाम लिखा लिया था। बीस वर्ष की अवस्था में उसने एक अपना पत्र निकाला। उसने दनुनसिओ के साथ भी काम किया और सन् १९१९ में पहिली पहल मुसोलिनी का साथ दिया। उसने सोशिएलिस्टों से खूब मुकाबला किया और उनसे रैवेना नगर को छीन लिया। उसने पारमा नगर पर भी घेरा डाला था। एक बार उसको दल से प्रथक् भी कर दिया गया था। छब्बीस वर्ष की अवस्थामें उसको फ़ासिस्ट मिलीशिया का कमांडर बनाया गया। इसके पश्चात् उसको राष्ट्रीय अर्थ विभाग का सहायक सेक्रेटरी और अन्त में हवाई विभाग का सेक्रेटरी बनाया गया। उसने आडेसा, भूमध्यसागर और ब्रैजिल के लिये हवाई जहाज भेजने का प्रबन्ध किया था। इसके पश्चात् वह स्वयं भी अत्यन्त सफलतापूर्वक

रोम से उड़ कर शिकागो गया था। इसके पश्चात् जून १९३३ में उसको लीबिया भेज दिया गया। इस समय उसका नाम इटली के पत्रों में एक बार भी कठिनता से ही आता है।

मार्शल डे बोनो

मार्शल एमिलिओ डे बोनो (Emilio De Bono) भी प्राचीन युद्धसमिति के चार सदस्यों में से एक था। वह ऐबीसीनिया की इटालियन सेनाओं का प्रथम प्रधान-सेनापति था। उसका जन्म सन् १८६६ में हुआ था। उसका अधिक समय सेना में ही बीता है। महायुद्ध में वह मुसोलिनी की ही सेना का कमांडर था। उसने इटली की सन् १९१९ और १९२० की दशा से असन्तुष्ट होकर वेरोना नगर में सेना से अस्तीफ़ा देकर फ़ासिस्ट आन्दोलन में प्रवेश किया। उसको संगीत का बड़ा भारी प्रेम है। फ़ासिस्टों के प्रयाण समय के गीत की रचना उसने ही की है। वह कुछ समय ट्रिपोली का गवर्नर रहा और फिर उपनिवेश मन्त्री भी रहा।

मार्शल बदोल्लिओ

नवम्बर १९३५ में मुसोलिनी ने डे बोनो का स्थान मार्शल पिएट्रो बदोल्लिओ (Pietro Bodoglio) को दिया। ऐसा करने के अनेक कारण थे। वास्तव में युद्ध के मन्द गति से चलते हुए भी डे बोनो अपना काम पूरा कर चुका था। अन्त में ऐबीसीनिया युद्ध को विजय करने का श्रेय बदोल्लिओ को मिला। उसको इथोपिया का प्रथम वाएसराय और बाद में ड्यूक आफ़ अदीस अबेबा बनाया गया।

मार्शल बदोग्लिओ का जन्म सन् १८७५ में हुआ था। सन् १८६० में वह रिसाले में भर्ती हो गया। तब से उसने इटली के प्रत्येक युद्ध में भाग लिया है। सन् १८९६ में उसने अडोवा को विजय किया था। उसको वीरता के लिए सात बार पुरस्कार मिल चुका है। महायुद्ध के पश्चात् वह सीनेटर, ब्रैज़िल का राजदूत, जेनेरल स्टाफ़ का चीफ़ और युद्ध कौंसिल का सभापति रह चुका है। यदि इटली के राजा की अनुमति होती तो वह रोम की चढ़ाई को पूर्णतया नष्ट कर सकता था। कहा जाता है कि आरम्भ में उसने ऐबीसीनियन युद्ध का विरोध किया था।

मार्शल ग्रैज़ियानी

जेनेरल रूडोल्फो ग्रैज़ियानी (General Rudolfo Graziani) सुमालीलैण्ड की सेनाओं का सेनापति था। उसको अफ़रीका का बहुत अच्छा ज्ञान है। उसने सात वर्ष तक एरेट्रिया में छोटे पद पर और सन् १९२६ से १६३० तक साइरेनैका (Cyrenaica) में शान्ति स्थापना का काम किया था। सेनाविशेषज्ञ उसको इटली का सब से अच्छा सैनिक बतलाते हैं। बदोग्लिओ के पश्चात् ऐबीसीनिया का शासनभार उसको दिया गया।

जेनेरल तेरुत्सी

जेनेरल ऐटीलिओ तेरुत्सी (General Attilio Teruzzi) सात वर्ष तक फ़ासिस्ट मिलिशिया के स्टाफ़ का चीफ़ रहा है। सन् १९३५ में उसको ऐबीसीनिया के काली कुर्ती दल का कमांडर बनाया गया। अब उसने राजनीति में प्रवेश किया है। डे बोनो के

सतरहवां अध्याय

उपसंहार

मुसोलिनी की एल्बा यात्रा—२२ अगस्त १९३६ को मुसोलिनी विमान द्वारा एल्बा द्वीप पहुंचा। उसके साथ इटालियन हवाई सेना का उपमंत्री भी था। इस यात्रा का उद्देश्य एल्बा की किलेबन्दी करना बतलाया गया। प्रसिद्ध नेपोलियन बोनापार्ट जब पहली बार फ्रांस से पराजित होकर भागा था तो वह यहीं ठहरा था। यह द्वीप इटली से पांच मील दूर है। इसमें बहुत अच्छे किले हैं।

इटली का अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव

यद्यपि सन् १९२२ में ब्रिटेन ने इटली को केनिया का जूबालैण्ड तथा मिश्र का जगबून रायूल सौंप दिये थे, किन्तु इससे इटली की साम्राज्य-लिप्सा पूरी न हुई और उसने ऐबीसीनिया को बलपूर्वक अपना उपनिवेश बना ही लिया।

इटालियन पूर्वी अफ्रीका के समान मुसोलिनी ने ट्रिपोली तथा साइरेनैका को भी संयुक्त करके उसका नाम लीबिया रख दिया है।

इन कृषि योग्य प्रदेशों में गत कई वर्ष से इटालियन किसानों को बसाया जा रहा है। इटली के हाथ में अफ्रीका के पूर्व में ऐबीसीनिया है तो उत्तर में लीबिया है। इसके अतिरिक्त इस समय यूरोप में भी उसका बड़ा भारी प्रभाव है। युद्ध के बाद से अलबेनिया में भी इटली ही सर्वेसर्वा है। कहने को यद्यपि बादशाह जोग अलबेनिया का अधिपति है, किन्तु देश के सैनिकबल, कोष, मुख्य २ सड़कों तथा बन्दरगाहों का नियंत्रण इटली के ही हाथ में है। अलबेनिया की राजधानी तिराना में इटली का जंगी बेड़ा सदा बना रहता है। हंगैरी तथा बलगेरिया यद्यपि इटली के आधीन नहीं है, किन्तु उसके मित्र अवश्य हैं। वह अपनी विषम परिस्थिति के कारण इटली का साथ अवश्य देंगे। २१ मई १९३७ को इटली के सम्राट् अपनी रानी और काउंट चानो सहित हंगैरी की राजधानी में स्वयं आए। इससे इन दोनों देशों में और भी गाढ़ी मित्रता होगई। एशिया में लाल सागर का तटवर्ती यमन नाम का अरब राष्ट्र भी इटली का साथी है। जर्मनी और आस्ट्रिया से तो उसकी गहरी मित्रता हो गई है। जापान की भी जर्मनी के कारण इटली के ही साथ अधिक सहानुभूति है। इस प्रकार मुसोलिनो के नेतृत्व में इटली योरुप के अग्रणी राष्ट्रों में स्थान पा चुका है और अफ्रीका में बृहत् साम्राज्य पाकर ब्रिटेन से प्रतिद्वन्दिता करने लगा है।

इटली के श्रमिक

यह पीछे बतलाया जा चुका है इटली की कारपोरेट स्टेट में श्रमिकों को विशेष प्रतिनिधित्व दिया गया है। ऐबीसीनिया युद्ध के पश्चात्

जनता के रहन सहन में खर्चीलापन आजाने से इटली के कई बड़े २ कारखानों में ३ सितम्बर १९३६ को ७ प्रतिशत से लेकर १० प्रतिशत तक मजदूरी बढ़ा दी गई।

इटली और यूगोस्लैविया की नई सन्धि

वरसाई की सन्धि के पश्चात् इटली के यूगोस्लैविया से सम्बन्ध बिगड़ गये थे। किन्तु मुसोलिनी ने अपनी राजनीतिक बुद्धिमता से फ्यूम के प्रश्न पर उससे समझौता कर के सन्धि करली, जिसका वर्णन पीछे किया जा चुका है। २३ मार्च १९३७ को इन दोनों देशों में एक राजनीतिक समझौते पर फिर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते के अनुसार दोनों राष्ट्र ५ साल तक अपनी सीमांत के सम्बन्धमें कोई गड़बड़ न होने देंगे। इस समझौते का किसी अन्य राष्ट्र के साथ युद्ध होने की दशा में भी पालन किया जावेगा।

मुसोलिनी की लीबिया यात्रा

मार्च १९३७ में मुसोलिनी ने अपने उपनिवेश लीबिया की यात्रा की। वह १२ मार्च को लीबिया के टोबरुक नामक बंदरगाह पहुंचा। यहां उसका अनेक इटालियनों तथा विदेशियों ने अत्यंत समारोह पूर्वक स्वागत किया। लीबिया के अरब लोगों ने तो इस यात्रा में उसका पग पग पर स्वागत किया। वह लोग अपने परिवार के साथ देहातों से सैकड़ों मील पैदल चल कर उसके दर्शन को आते थे। मुसोलिनी के दिखलाई देने पर वह 'अल्लाह ड्यूस की रक्षा करे' का गगनभेदी जयघोष करते थे। मुसोलिनी ने १६ मार्च को रात को फिलनैरम के रेगिस्तान में १२० फुट ऊंचे एक

विजय-स्तम्भ का उद्घाटन किया। १७ मार्च को उसने श्वेत अरबी घोड़े पर बैठ कर ट्रिपोली में प्रवेश किया। यहां उसको इस्लाम की तलवार के रूप में एक शानदार उपहार दिया गया। इसको बनाने में २००० पौण्ड खर्च हुए थे। इसी दिन उसने जूलियस सीज़र की मूर्ति का भी उद्घाटन किया। मुसोलिनी इस यात्रा को समाप्त करके ता० २२ मार्च को वापिस रोम लौट आया। उसने १२ अप्रैल को घोषणा करके लीबिया को नया शासनविधान दिया। इस अवसर पर लीबिया के सब विद्रोहियों को क्षमा कर दिया गया। उसने घोषणा की कि किसानों की मदद की जावेगी और लीबिया की अपनी स्वतंत्र नौसेना तथा फौजी यूनिट होगी।

फ़ासिस्टों और सोशिएलिस्टों का मनोमालिन्य

इस ग्रन्थ में यह बतला दिया गया है कि मुसोलिनी का फ़ासिस्ट-वाद सोशिएलिज्म की प्रतिक्रिया है। इसी प्रकार नाज़ीवाद भी जर्मनी में सोशिएलिज्म की ही प्रतिक्रिया है। अतएव संसार भर के सोशिएलिस्ट फ़ासिस्टों और नाज़ियों के शत्रु होते हैं। यह पीछे बतलाया जा चुका है कि सोशिएलिज्म के समान फासिज्म भी एक विशेष सिद्धान्तों वाली प्रणाली है, जिसको बिना इटली की आधीनता के संसार भर में लागू किया जा सकता है। अतएव साम्यवाद और समाजवाद के समान फ़ासिस्टवाद भी समस्त संसार में फैलता जाता है। सोशिएलिज्म से इसके फैलने में केवल इतना अन्तर है कि सोशिएलिज्म जहां थर्ड नेशनल के गुप्त प्रचार के कारण फैलता है; वहां फ़ासिज्म बिना किसी गुप्त प्रचार

के फैलता जाता है। इस समय फ्रांस और इंगलैण्ड तक में फ़ासिस्टों के संगठन मौजूद हैं। सोशिएलिस्ट लोग भी इन दोनों ही स्थानों में अपने स्वभाव के अनुसार उनके पीछे पड़े रहते हैं। इटली में तो उनके विरुद्ध सदा ही गुप्त षड्यंत्र चलते रहते हैं। इंगलैण्ड में ११ अक्तूबर १९३६को साम्यवादियों और फ़ासिस्टों की मुठभेड़ हुई थी कि फ्रांस के क्लिची नामक स्थान में १७ मार्च को फ़ासिस्टों की एक सभा को भंग करने के उद्योग में भारी दंगा होगया, जिसमें पांच व्यक्ति मारे गए।

स्पेन का झगडा

सन् १९३१ की राज्यक्रान्ति के फलस्वरूप स्पेन का राजा ऐलफेंजो अपना देश छोड़ कर चला गया। उस समय से लगा कर सन् ३६ तक पांच वर्ष से भी कम समय में वहां तीन निर्वाचन हुए, जिससे प्रगट है कि वहां की केन्द्रीय सरकार सदा ही निर्बल और अस्थिर रही। ऐलफेंजो के पश्चात् प्रेज़ीडेंट ज़मोरा ने देश में सुख और समृद्धि के दिन लाने का प्रयत्न किया, किन्तु अपनी सरकार की निर्बलता के कारण वह भी कुछ न कर सका। सन् १९३३ के निर्वाचन में रिपब्लिकनों में नरम दल की विजय हुई। इस बार का मंत्रीमण्डल गंगा जमुनी था। दिसम्बर १९३५ में किसानों ने प्रेसीडेंट ज़मोरा को आम चुनाव करने के लिये फिर विवश किया। इस बार ज़मोरा के स्थान पर अज़ाना प्रेसीडेंट चुना गया। इस तीसरी

गवर्नमेंट को साम्यवादियों का समर्थन प्राप्त था, यद्यपि वह स्वयं पूर्णतया साम्यवादी नहीं थी।

कम्यूनिस्टों (साम्यवादियों) को चुनाव में आशातीत विजय मिली देख कर विरोधी शक्तियां चौक उठीं। उन्होंने धीरे धीरे अपना संगठन करके कम्युनिस्ट विरोधी शक्तियों को एकत्रित किया। आखिर २० जुलाई १९३६ को स्पेन में गृहयुद्ध आरंभ हो गया।

इन युद्ध करने वालों में सरकार साम्यवादी और विद्रोही फ़ासिस्ट विचार के थे। अतः भारतवर्ष के महाभारत के समान स्पेन में भी संसार भर की शक्तियां अपने २ विचार वालों को सहायता देने लगीं। जर्मनी और इटली से भी बड़ी २ संख्या में स्वेच्छा स्वयंसेवक विद्रोहियों की सहायता को दौड़ पड़े। उधर रूस और फ्रांस के स्वेच्छा स्वयंसेवक वहां की साम्यवादी सरकार की ओर से युद्ध करने लगे। इंग्लैण्ड भी अपने स्वयंसेवकों को स्पेन जाने को न रोक सका। वास्तव में स्पेन में प्रत्येक देश के निवासी—यहां तक कि भारतवासी भी—दोनों ओर से कुछ न कुछ संख्या में युद्ध करने लगे।

इस घटना से स्पेन की सरकार बड़ी चौंकी। उस की दृष्टि में विद्रोहियों को कोई सहायता नहीं दे सकता था। उसने खुले शब्दों में इटली और जर्मनी की सरकार पर स्पेन में हस्तक्षेप करने का दोष लगाया। यद्यपि रूस द्वारा उसकी ओर से हस्तक्षेप करने के भी अनेक प्रमाण मिले।

विद्रोह आरंभ होने के लग-भग पांच सप्ताह बाद ही फ्रांस ने प्रस्ताव किया कि स्पेन के गृहयुद्ध से सभी यूरोपीय राष्ट्र प्रथक् रहें। इसके अनुसार एक तटस्थता-पैक्ट हुआ, जिसमें ब्रिटेन, जर्मनी, पुर्तगाल, रूस, फ्रांस, और इटली सम्मिलित हो गए। इन राष्ट्रों ने सिद्धान्त रूप से तो तटस्थ रहना स्वीकार कर लिया, किन्तु यह गुप्त रूप से स्पेन के किसी न किसी पक्ष को सहायता देते ही रहे। अन्त में इटली ने १२ अक्तूबर १९३६ को घोषणा की कि यदि रूस स्पेन की सरकार को सहायता देता रहेगा तो इटली भी अपर पक्ष के जेनेरल फ्रांको और जेनरल मोला को सहायता देगा।

इधर जेनेरल फ्रांको विजय पर विजय प्राप्त करता हुआ माड्रिड के सामने आ गया। इटली और जर्मनी ने स्पेन के अधिकांश भाग पर उसका शासन देख कर १६ नवम्बर १६३६ को स्पेन में जेनरेल फ्रांको की सरकार को स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपने राजदूत भी जेनेरल फ्रांको के पास ता० ३० नवम्बर को भेज दिये।

स्पेन की पुरानी सरकार ने इस प्रकार के हस्तक्षेप की राष्ट्रसंघ में शिकायत करने का निश्चय किया। इस पर इटली ने ३० नवम्बर को घोषणा की कि यदि इस विषय में राष्ट्रसंघ ने कोई हस्तक्षेप किया तो इटली दोबारा अभियुक्त के रूप में खड़े होने की अपेक्षा राष्ट्रसंघ से त्यागपत्र दे देगा। इस धमकी

जेनेरल फ्रांको (General Franco)

का इच्छित फल हुआ और राष्ट्रसंघ में इस प्रश्न पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया।

इसके पश्चात् तटस्थता कमैटी ने स्वयंसेवकों पर भी रोक लगाने का प्रस्ताव किया। २६ जनवरी सन् १९३७ को जर्मनी और इटली दोनों ने ही इन प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया। अन्त में इटली ने ता० २० फरवरी को देश भर में घोषणा करके स्पेन जाने वाले स्ववंसेवकों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। यह प्रतिबन्ध ता० २१ फरवरी से लगाया गया। यह भी घोषणा की गई कि इस आज्ञा का भंग करने वालों को दंड दिया जावेगा। किन्तु स्पेन की साम्यवादी सरकार इटली की इस घोषणा को भी एक राजनीतिक चाल ही बतलाती रही।

इस बीच में तटस्थता कमैटी ने निश्चय किया कि स्पेन के चारों ओर पहरा लगा कर वहां जाने वाली सहायता का नियंत्रण किया जावे। यह योजना ता० २० अप्रैल १९३७ के मध्यरात्रि से अमल में लाई गई। स्पेन से स्वयंसेवकों को वापिस बुलाने की योजना पर भी विचार किया गया।

इधर स्पेन भर में भंयकर नर संहार होता रहा। माड्रिड ने तो न जाने इस समय किस प्रकार अपने अस्तित्व को नाम मात्र के लिये भी बनाये रखा। किन्तु अत्यन्त कठिन युद्ध करने पर भी जेनेरल फ्रांको माड्रिड को विजय न कर सका। अब उसने माड्रिड का ध्यान छोड़ कर बास्क प्रदेश की ओर मुंह फेरा। लगातार एक माह तक परिश्रम करके उसने ता० २६ अप्रैल

को वीर बास्क लोगों की प्राचीन राजधानी गूर नीसा को पूर्णतया तहस नहस करके अपने आधीन कर लिया । बास्क प्रान्त की निर्दयतापूर्ण बेबसी से यूरोप के सभी देशों में दया का संचार हुआ। इंगलैण्ड और फ्रांस ने वहां के बच्चों, वृद्धों और महिलाओं को जहाज़ों से ला २ कर उनका पोषण करने का भार ता० ३० अप्रैल को लिया। भी बच्चों की रक्षा की यह योजना अमल में लाई ही जा रही थी कि ४ जून को जेनेरल फ्रांको के प्रधान साथी सेनापति जेनेरल मोला का एक हवाई दुर्घटनावश देहान्त हो गया।

तटस्थता कमैटी (फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, जर्मनी आदि) स्पेन में बाहिर से आने वाली सहायता को रोकने के लिये उस पर घेरा डाले हुई थी कि २९ मई को स्पेन की पुरानी सरकार के एक हवाई जहाज़ ने जर्मनी के 'डुट्शलैण्ड' नामक जंगी जहाज़ पर दो बम बरसाए, जिससे बीस जर्मन मल्लाह मर गए। जर्मनी ने भी स्पेन के 'अलमीरिया' नामक स्थान पर ता० ३१ मई को बम बरसा कर इसका तुरन्त ही उत्तर दिया, जिससे २० स्पेनिश मरे और लगभग १५० घायल हुए। साथ ही जर्मनी और इटली ने 'डुट्शलैण्ड' काण्ड के विरोधस्वरूप तटस्थता योजना से भी २१ मई को अपना हाथ खींच लिया। किन्तु इंगलैण्ड और फ्रांस ने बीच बिचाव करके तटस्थता कमैटी में निश्चय किया कि भविष्य में स्पेन की ओर से आक्रमण होने पर चारों राष्ट्र मिल कर इसका प्रतिरोध करेंगे । निदान जर्मनी

और इटली ९ जून को फिर तटस्थता-योजना में सम्मिलित हो गए। किन्तु १५ जून १९३७ को जर्मन जहाज़ 'लिपज़िग' पर फिर आक्रमण हुआ। इस पर जर्मनी ने अन्य राष्ट्रों से अनुरोध किया कि वह सब मिल कर विरोधस्वरूप स्पेन के समुद्र में नौसेना का प्रदर्शन करें। किन्तु इंगलैण्ड और फ्रांस के इस पर सहमत न होने से जर्मनी और इटली ने ता० २४ जून को तटस्थता कमैटी से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया, जिससे इस समय के बाद सारी तटस्थता-योजना ही खटाई में पड़ गई।

इधर जेनेरल फ्रांको ने स्पेन में चारों ओर युद्ध की अग्नि को प्रज्वलित किया हुआ था। उसने बास्क सेनाओं को अत्यन्त वीरता से पराजित करके ता० २० जून को बास्क राजधानी बिलबाओ पर भी अधिकार कर लिया।

जेनेरल फ्रांको बास्क प्रदेश को जीतने के पश्चात् एक ओर तो माड्रिड की ओर बढ़ा और दूसरी ओर उसने सैनटैनडर पर आक्रमण किया। यह स्थान फ्रांस की सीमा और समुद्र तट पर होने के कारण सैनिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अनेक दिनों के कठिन युद्ध के पश्चात् जेनेरल फ्रांको ने सैनटैनडर पर ता० २६ अगस्त १९३७ को अधिकार कर लिया।

सैनटैनडर के पश्चात् जेनेरल फ्रांको की सेनाएं पश्चिमी समुद्र तटवर्ती प्रांत आस्टूरिया की ओर बढ़ीं। जेनेरल फ्रांको ने १६ सितम्बर को वहां महत्वपूर्ण विजय प्राप्त करके २२ अक्तूबर १९३७ को आस्टूरिया के प्रधान बन्दर गिजान को भी जीत

लिया। गिजान की विजय से स्पेन की साम्यवादी सेना की कमर टूट गई और आस्टूरियन सरकार के पदाधिकारियों में तो भग्गी पड़ गई। वह लोग वालेंशिया और माड्रिड को भाग गए। गिजान की पतन के बाद अन्य आस्टूरियन मोर्चों का भी पतन हो गया। ओवीडो में तो अनेक सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया। ओवीडो का घेरा एक साल रहने के बाद ता० २५ अक्तूबर को सर्वथा समाप्त हो गया।

२४ जून को तटस्थता कमैटी के खटाई में पड़ जाने पर यह देखने में आया कि भूमध्यसागर में वास्तव में अनेक राष्ट्रों के जहाजों पर अज्ञात पनडुब्बियों द्वारा हमले किये गए। इसका प्रबन्ध करने के लिये इंगलैण्ड ने भूमध्यसागर के तटवर्ती राष्ट्रों की एक कांफ्रेंस नियान (स्वीजलैंण्ड) नामक स्थान में बुलाई। इटली ने इस कांफ्रेंस का भी बहिष्कार किया। इस कांफ्रेंस में निश्चय किया गया कि इटली के दक्षिण सिसली तक के पश्चिमी भूमध्यसागर की चौकसी इंगलैण्ड और फ्रांस तथा शेष पूर्वी भाग की चौकसी अन्य राष्ट्र करें। इससे समुद्री डाकेजनी का कष्ट वास्तव में ही दूर हो गया।

अब इस विषय पर इंगलैण्ड और फ्रांस ने इटली से पेरिस में अलग बातचीत की। इसके अनुसार तय किया गया कि इटली टाइरेनियन और सार्डीनियन समुद्र में इस प्रकार गश्त लगावे कि उसका कोई अंश मारसेल्स से अल्जीरस तक की लाइन को स्पर्श न करे। यह स्थान फ्रांस का गश्तक्षेत्र बनाया

गया। इस समझौते पर ३० सितम्बर को ११ बजे हस्ताक्षर किये गए। इसे पेरिस नौ-पैक्ट कहते हैं।

इसके पश्चात् इंगलैण्ड और फ्रांस ने इटली से तटस्थता योजना के लिये स्पेन के स्वयंसेवकों की वापसी के प्रश्न पर प्रथक् बातचीत करने का प्रस्ताव किया। किन्तु इटली ने ११ अक्तूबर के उत्तर में कहा कि वह बिना जर्मनी के ऐसे किसी वार्तालाप में सम्मिलित नहीं होगा, यह विषय तटस्थता कमैटी में ही उठाया जा सकता है। फलतः तटस्थता कमैटी की बैठक की गई। उसमें इटली ने स्पेन के दोनों पक्षों के लिए युद्ध करने का समान अधिकार मांगने का आग्रह किया। इसका रूस ने पहिले तो प्रबल विरोध किया, किन्तु बाद में १७ नवम्बर को उसने घोषणा की कि वह उपसमिति के उस प्रस्ताव को मानने को सहमत है, जिसके अनुसार स्पेन के दोनों पक्ष से स्वयंसेवकों को वापिस बुलाकर उनको यौद्धिक अधिकार देना तय किया गया है। इस कमैटी ने उपसमिति के निर्णय के सम्बन्ध में स्पेन के दोनों पक्ष की सम्मति मांगी है।

स्पेन में क्रान्ति के आरंभिक महीनों में ही वहां की सरकार अपनी राजधानी माड्रिड से हटा कर वालेंशिया ले आई थी। किन्तु जेनेरल फ्रांको के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण उसको वालेंशिया में भी ठहरना कठिन हो गया। अतएव यह तय किया गया कि राजधानी वालेंशिया से हटा कर बार्सीलोना ले जाई जावे। इस आज्ञा पर ता० १ नवम्बर १९३७ को राष्ट्रपति

अज़ाना ने हस्ताक्षर किये और इसी दिन प्रधान मन्त्री सिन्योर नेगरिन हवाई जहाज़ से बार्सीलोना के लिये रवाना भी हो गए।

९ नवम्बर १९३५ को ब्रिटेन के परराष्ट्र मन्त्री मिस्टर ऐन-थोनी ईडेन ने एक प्रश्न के उत्तर में पार्लमेंट में बतलाया कि वह स्पेन की ब्रिटिश प्रजाजनों की रक्षा के लिये जेनेरल फ्रांको के यहां अपना राजदूत भेज रहे हैं और उनका राजदूत अपने यहां बुला रहे हैं। ब्रिटेन के इस कार्य को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में ब्रिटेन द्वारा फ्रांको सरकार की स्वीकृति समझा जा रहा है, यद्यपि ब्रिटेन इसका अर्थ स्वीकृति नहीं लगाता। तारीख १७ नवम्बर को सर राबर्ट डाडसन को जेनेरल फ्रांको के यहां के लिए ब्रिटिश राजदूत नियुक्त किया गया। १८ नवम्बर का समाचार था कि जापान, आस्ट्रिया और हंगैरी ने भी जेनेरल फ्रांको की सरकार को स्वीकार कर लिया।

हिटलर और मुसोलिनी की भेंट (१९३४)

महायुद्ध के पश्चात् मुसोलिनी की जर्मनी के साथ सहानुभूति होने तथा उसका लोकार्नो पैक्ट में भाग लेकर सन् १९३३ में चार शक्तियों का समझौता कराने का वर्णन गत पृष्ठों में किया जा चुका है। पीछे यह भी बतलाया जा चुका है कि ता० १४ अक्तूबर १९३३ को हिटलर द्वारा राष्ट्रसंघ का परित्याग करने से उक्त समझौता व्यर्थ हो गया। अतः अब जर्मनी को इटली से नया सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता थी। फलतः हिटलर ने स्वयं इटली आकर तारीख १४ जून १९३४ को वेनिस नगर के समीप स्ट्रा नामक स्थान में मुसोलिनी से भेंट की। इस भेंट में हिट-

लर ने आस्ट्रिया की स्वतंत्रता के प्रश्न को सिद्धान्त रूप में स्वीकार कर लिया। इस भेंट से दोनों देशों के सम्बन्ध अधिक घनिष्ठ होगए।

लोकार्नो पैक्ट की समाप्ति

इसके पश्चात जब सन् १९३५ में फ्रांस और रूस की सन्धि की बातचीत चल रही थी तो हिटलर ने इस सन्धि को स्पष्ट ही लोकार्नो पैक्ट की भावना के विरुद्ध बतला कर फ्रांस को चेतावनी दी थी। किन्तु जब फ्रांस ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और २७ फरवरी १९३६ को फ्रांस और रूस की सन्धि हो गई तो हिटलर ने अपने को लोकार्नो पैक्ट की प्रतिज्ञा से मुक्त समझ कर राइनलैण्ड पर ७ मार्च १९३६ को सैनिक अधिकार कर लिया।

इस पर फ्रांस ने लोकार्नो पैक्ट पर हस्ताक्षर करने वाले इंगलैण्ड, बेल्जियम तथा इटली से जर्मनी के विरुद्ध कार्यवाही करने का अनुरोध किया।

इस समय ऐबीसीनिया के विषय में राष्ट्रसंघ की प्रतिबन्ध की आज्ञा के कारण इटली इंगलैण्ड और से फ्रांस असंतुष्ट था। अतः उसने फ्रांस की इस पुकार पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अन्त में लन्दन में इंगलैण्ड, इटली, फ्रांस और बेल्जियम ने यही निश्चय किया कि इस विषय पर जल्दी न कर के जर्मनी से शान्ति की बातचीत की जावे।

२७ जून १९३६ को सरकारी तौर पर घोषणा की गई कि इटली और जर्मनी में दोनों देशों की हवाई यातायात की सुविधा एव सुव्यवस्था के लिये एक दशवर्षीय सन्धि हो गई है।

जर्मनी के राइनलैण्ड पर अधिकार करने के विरुद्ध फ्रांस २२-२३ जुलाई १९३६ को लोकार्नो शक्तियों की एक नई कांफ्रेंस करना चाहता था। किन्तु मुसोलिनी ने बेल्जियम सरकार को इस निमन्त्रण के उत्तर में लिखा कि वह जर्मनी के बिना ऐसी किसी कांफ्रेंस में सम्मिलित होने के लिये तयार नहीं है। मुसोलिनी के इस स्पष्ट उत्तर से केवल इंगलैण्ड, फ्रांस और बेल्जियम की ही कांफ्रेंस २२ जुलाई को लन्दन में की गई। इस कांफ्रेंस में यह निश्चय किया गया कि लोकार्नो पैक्ट के स्थान में जर्मनी के साथ इटली के सहयोग से एक नई सन्धि की जावे। तब से बराबर जर्मनी और इटली से उस नई सन्धि के विषय में बातचीत चल रही है। किन्तु आशा यही है कि ऐसी कांफ्रेंस निकट भविष्य में किसी प्रकार भी न हो सकेगी।

इटली और ज़र्मनी के नये सम्बन्ध

इस प्रकार एबीसीनिया युद्ध के कारण इन दोनों राष्ट्रों में सद्भावना बढ़ी, जिससे हिटलर द्वारा राइनलैण्ड पर अधिकार करने में इटली ने दबी ज़बान से जर्मनी के ही पथ का समर्थन करके लोकार्नो पैक्ट को दफ़ना दिया। तारीख २० अक्तूबर १९३६ को इटली का परराष्ट्र मन्त्री काउंट चानो सरकारी तौर से बर्लिन गया। वह वहां ता० २६ तक रहा। काउंट चानो का हिटलर ने बड़ा भारी स्वागत किया। काउंट चानो का हिटलर के साथ लोकार्नो, राष्ट्रसंघ, डैन्यूब समस्या, स्पेन बोल्शेविज्म और ऐबीसीनिया के ऊपर मुख्य रूप से वार्तालाप हुआ। इसी वार्तालाप

जेनेरल गोएरिंग

के फलस्वरूप जर्मनी ने ऐबीसीनिया पर इटली के प्रभुत्व को मान लिया और इटली ने जर्मनी को ऐबीसीनिया में व्यापार करने की अनेक सुविधाएं दीं। बोल्शेविक आतंक के सम्बन्ध में इटली और जर्मनी ने निश्चय किया कि वह यूरोपियन सभ्यता की विशेषताओं की रक्षा प्राणपन से करेंगे। इस समय इटली और जर्मनी के सांस्कृतिक विनिमय के सम्बन्ध में शीघ्र ही एक सन्धि की जाने का बीज बो दिया गया। इसके पश्चात ता० २१ नवम्बर को मुसोलिनी ने जर्मनी और इटली में घनिष्ट मित्रता की सन्धि होने की घोषणा की।

इसके पश्चात् हिटलर का दाहिना हाथ जेनेरल गोएरिंग ता० १५ जनवरी १९३७ को रोम गया। इस अवसर पर उसने मुसोलिनी के साथ अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर वार्तालाप किया। जेनेरल गोएरिंग ने ता० १८ जनवरी को फ़िजिकल ट्रेनिग ऐकेडेमी का निरीक्षण करते हुए मुसोलिनी के पटेबाज़ी में प्रसिद्ध हस्त-कौशल को देखने की इच्छा प्रगट की। सिन्योर मुसोलिनी ने बड़ी प्रसन्नता से पटेबाज़ी की पोशाक पहनी और पटेबाज़ी के उस्ताद के साथ अपने प्रसिद्ध पटेबाज़ी के हाथ दिखलाए।

जेनेरल गोएरिंग ता० २४ जनवरी को वापिस बर्लिन चला गया। इसके पश्चात् ता० २७ अप्रैल को जेनेरल गोएरिंग ने फिर रोम जाकर मुसोलिनी से वार्तालाप किया। ता० ३ मई को जर्मनी के परराष्ट्रमन्त्री हर वान न्यूराथ रोम पहुंचे। वह वहां काउंट चानो और मुसोलिनी से वार्तालाप करके ६ मई को वापिस जर्मनी चले गए।

जर्मनी में हिटलर ने मई १९३७ में एक उच्च उपाधि 'ग्रैण्ड क्रास आफ़ दी आर्डर इन जर्मन ईगल' नाम की विदेशियों को देने के लिये बनाई। यह उपाधि ता० ७ जून को पहिली पहल सिन्योर मुसोलिनी और काउंट चानो को दी गई। इसी समय जर्मनी से हर वान ब्लामबर्ग रोम आए। ८ जून को मुसोलिनी ने उनको इटालियन नौसेना की कवायद दिखलाई। इस समय नेपुल्स की खाड़ी के बाहिर ७० पनडुब्बियां दो कतारों में ८ मील तक फैली हुई थीं। मुसोलिनी और ब्लामबर्ग उनके बीच में से गश्ती जंगी जहाज़ पर बैठ कर गुज़रे। इस प्रदर्शन के पश्चात् नकली लड़ाई हुई, जिसमें ५० गश्ती जंगी जहाज़ों और ४१ विध्वंसकों ने भाग लिया

मुसोलिनी की जर्मन-यात्रा

सितम्बर १९३७ के अन्त में मुसोलिनी ने जर्मनी जाकर हिटलर से भेंट की। वह २४ सितम्बर को रोम से चला। उसकी पार्टी में काउंट चानो परराष्ट्र मंत्री, काउंट स्ताराचे मन्त्री फ़ासिस्ट पार्टी, सिन्योर अलफिरी प्रेस मिनिस्टर आदि थे। वह २५ सितम्बर को १० बजे म्यूनिक पहुंचे। हर हिटलर, वान न्यूराथ तथा अन्य अफ़सरों ने स्टेशन पर उनका स्वागत किया। इस दिन की खुशी में बैवेरिया भर में राष्ट्रीय छुट्टी मनाई गई। मज़दूरों को इस छुट्टी का पूरा वेतन दिया गया। यहां मुसोलिनी ने हर हिटलर के साथ अनेक प्रकार के राजनीतिक विषयों पर बातचीत करने के अतिरिक्त विभिन्न नाज़ी प्रदर्शनों—फ्लाइंग कोर, मोटर कोर,

ब्लैक गार्ड्स,स्टार्म,ट्रूप्स् और हिटलरयूथ आदिको देखा। इन प्रदर्शनों में ५०० बवेरियन लड़कियों की परेड अत्यन्त आकर्षक थी। मुसोलिनी और हिटलर ता० २५ को ही सायंकाल के समय म्यूनिक से मेक्लेनबर्ग गए। यहां उन्होंने ता०२६ को जर्मन सेना के अब तक के सब से बड़े नकली युद्ध (Manoeuvres) को देखा। यह स्थान बर्लिन से ६५ मील उत्तर को है। यहां उनका फील्ड मार्शल वान ब्लामबर्ग तथा जेनेरल गोएरिंग आदि सैनिक अफसरों ने स्वागत किया।ता० २७ को हिटलर ने मुसोलिनी को एसेन का क्रुप स्टील वर्क्स नामक कारखाना दिखलाया। मुसोलिनी ने जर्मनी के शस्त्र बनाने के इस सबसे बड़े कारखाने को देखने में कई घण्टे लगाए। मुसोलिनी का जर्मनी में बड़ा भारी स्वागत किया गया। नाज़ी लोगों की भीड़ उसके दर्शनों के लिए टूटी पड़ती थी। हिटलर और मुसोलिनी दोनों ही ता० २७ की शाम को बर्लिन आगए। २८ सितम्बर को हिटलर और मुसोलिनी ने तीस लाख नाजियों के ऐतिहासिक प्रदर्शन में बर्लिन में भाषण देते हुए दोनों देशों की अखण्ड मित्रता की घोषणा की। इन भाषणों को रेडियो द्वारा इटली और जर्मनी में लग भग १० करोड़ व्यक्तियों ने सुना।

ता० २६ सितम्बर को जर्मन सेनाओं की परेड देखकर मुसोलिनी ३॥ बजे सायंकाल बर्लिन से बिदा होकर ता० ३० को सायंकाल के समय विजयी रोमन सम्राट् के समान वापिस रोम आया। यहां फिर उसका बड़ा भारी स्वागत किया गया।

इस यात्रा में मुसोलिनी ने हर हिटलर को इटली आने का

निर्मंत्रण दिया। यह आशा की जाती है कि हर हिटलर अगामी वसन्तऋतु में रोम यात्रा करेंगे।

ऐंग्लो इटालियन सन्धि

भूमध्य सागर में वर्तमान स्थिति को बनाये रखने के लिये ता० २ जनवरी १९३७ को ब्रिटेन और इटली ने एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये थे। हस्ताक्षर ब्रिटिश राजदूत सर ई० ड्रमण्ड और इटालियन परराष्ट्र सचिव काउट चानो ने रोम में किये थे। इस सन्धि के द्वारा उस पारस्परिक अविश्वास को दूर कर दिया गया जो इटली की ऐबीसीनिया विजय के बाद उत्पन्न हो गया था। इस के द्वारा प्रगट किया गया कि दोनों देश भूमध्य सागर में और किसी को जीतना अथवा उस पर अधिकार करके एक दूसरे के मार्ग में बाधक बनना नहीं चाहते।

इस सन्धि से कुछ समय पूर्व ही इटली स्पेन में जेनेरल फ्रांको की सरकार को स्वीकार कर चुका था। इस सन्धि की चार धाराओं में पहिली धारा के अनुसार दोनों देश भूमध्यसागर की वर्तमान स्थिति को बनाये रखने के लिए वचनबद्ध हैं। इसका यह अभिप्राय है कि उस समय ब्रिटेन ने भी अप्रत्यक्ष रूप से जेनेरल फ्रांको की सरकार को स्वीकार कर लिया था।

किन्तु स्पेन युद्ध के कारण इटली और इंगलैण्ड में फिर मनोमालिन्य होने लगा। इंगलैण्ड के पत्र इटली के विरुद्ध विष वमन करने लगे। इससे रुष्ट होकर इटालियन सरकार ने इंगलैण्ड के सम्राट् जार्ज षष्ठ के राजतिलक दिवस १० मई को एक विज्ञप्ति निकाल

कर इंगलैण्ड के पत्रों का इटली में आना बंद कर दिया और इटालियन पत्रकारों को भी वापिस बुलाकर राज्याभिषेक का बहिष्कार किया। राज्याभिषेक के पश्चात इंगलैण्ड के प्रधान मंत्री मि०वाल्डविन ने अवकाश ग्रहण किया और मिस्टर नेवाइल चैम्बरलेन वहां के नये प्रधानमंत्री बनाए गए। उन्होंने जुलाई के अन्त में मुसोलिनी को एक मित्रतापूर्ण पत्र लिखा। इसका उत्तर ३ अगस्त को मुसोलिनी ने अत्यंन्त सद्भवनापूर्ण दिया। अतएव इस समय फिर दोनों राष्ट्रों का मनोमालिन्य दूर होगया और दोनों देशों के पत्रकार भी एक दूसरे के यहां चले गये।

किन्तु इतना होने पर भी भूमध्यसागर के प्रश्न पर दोनों राष्ट्रों में पारस्परिक मनोमालिन्य बना ही रहा। अन्त में भूमध्यसागर की डाकेजनी को बन्द करने के सम्बन्ध में गश्त लगाने के लिये इंगलैण्ड, फ्रांस और इटली ने ३० सितम्बर को पेरिस में एक समझौते पर हस्ताक्षर किये, जिसको पेरिस नौ पैक्ट कहते हैं।

किन्तु इंगलैण्ड और इटली में मनोमालिन्य का एक कारण संभवत: और भी विकसित होरहा है।

मुसोलिनी के मंत्रीमण्डल ने अप्रैल १९३७ में निर्णय किया था कि लीबिया में पर्याप्त सेनाएं रखी जावें, अतएव सितम्बर में लीबिया को सेनाएं भेजी जाने लगीं। इस प्रकार लीबिया को ता० १८ सितम्बर से १२ अक्तूबर तक २४ सहस्र इटालियन सैनिकों की टुकड़ियां भेजी गईं। इसके बाद ता० १४ को चार सहस्र,

१५ को सात सहस्र और १६ अक्तूबर को २३०० सैनिक लीबिया भेजे गये।

इटली के लीबिया में सेना बढ़ाने से अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में बहुत से संदेह उत्पन्न हो गए। इंगलैंण्ड ने तो इसको विशेष रूप से इटली द्वारा भूमध्यसागर का नियंत्रण समझकर इसके मुकाबले के लिये अपनी सेनाएं माल्टा में भेजनी आरम्भ करदीं।

किन्तु ब्रिटेन की इच्छा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने की थी। अतः ता० १० नवम्बर १९३७ को इंगलैंण्ड के प्रधान मंत्री मि० चैम्बरलेन ने अपने एक भाषण में इटली तथा जर्मनी से फिर राजनीतिक सन्धि करने की इच्छा प्रगटकी। इसके उत्तरमें सिन्योर मुसोलिनी ने भी ता० ११ नवम्बर को अपनी सरकारी विज्ञप्ति में ब्रिटेन को इटली के साथ राजनीतिक बातचीत आरंभ करने का निमंत्रण दिया।

यमन तथा इटली के सम्बन्ध

सितम्बर १९३७ के आरम्भ में एक इटालियन प्रतिनिधिमण्डल यमन गया। इसने इटली-यमन व्यापारिक-सन्धि को फिर से जारी करने के लिए सफलतापूर्वक बातचीत की। इस प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व जेनेरल गैस पैरिनी ने किया था। यह लोग सन्धि की बातचीत करके ता० २७ सितम्बर को वापिस एरेट्रिया आ गए। इनको यमन के बादशाह ने इटली के सम्राट् और मुसोलिनी के लिये अनेक उपहार भी दिये। राजनीतिक क्षेत्रों में इस सन्धि को पर्याप्त महत्त्व दिया गया।

इटली और जापान के सम्बन्ध

जापान और जर्मनी की सन् १६३७ की सन्धि के कारण इटली के जापान से सम्बन्ध बहुत अच्छे हो गए थे। जापान और इटली का व्यापारिक समझौता पहिले से ही था। ४ अक्तूबर के समाचार के अनुसार उस पुरानी सन्धि को इथोपिया पर भी लागू किया गया। सन् ३७ के उत्तरार्द्ध में जापान के चीन पर आक्रमण करने के समय तो इटली की सहानुभूति विशेष रूप से जापान के साथ देखने में आई।

इधर चीन और जापान का युद्ध हो रहा था उधर बर्लिन में जर्मनी, जापान और इटली में एक कम्युनिस्ट-विरोधी पैक्ट की बातचीत की जा रही थी। कहा जाता है कि इस पैक्ट पर ६ नवम्बर १९३७ को हस्ताक्षर हो गए, किन्तु इस पैक्ट के होने के समाचार का समर्थन अन्य तीनों देशों में से किसी ने भी सरकारी रूप से नहीं किया।

जापान पर चीन के आक्रमण से चीन में विशेष स्वार्थ रखने वाले देशों में खलबली पड़ गई। राष्ट्र संघ ने अपने अक्तूबर १९३७ के अधिवेशन में जापान को आक्रान्ता मान कर उसके विरुद्ध निन्दा का प्रस्ताव पास किया। इस के पश्चात् संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति के संकेत पर बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स में नौ राष्ट्रों की एक कांफ्रेंस ता० ३ नवम्बर से आरम्भ हुई। इसमें अमरीका, इंगलैण्ड, फ्रांस, इटली, बेल्जियम,

चीन, रूस आदि राष्ट्रों ने भाग लिया। जापान ने इस कांफ्रेंस का बहिष्कार किया।

इटली और टर्की

जर्मनी द्वारा वरसाई की सन्धि के टुकड़े २ होते देख कर टर्की के राष्ट्रपति मुस्तफा कमालपाशा ने भी डारडेनेल्स के मुहाने के कष्टों को दूर करने के विचार से सन् १९३६ में यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों की एक कांफ्रेंस बुलाई। यह कांफ्रेंस कई माह तक स्वीज़लैंण्ड के मांट्रियो (Montreux) नामक नगर में होती रही। इससे पूर्व राइनलैण्ड के समान डारडेनेल्स की समुद्री घाटी भी निश्शस्त्रीकरण प्रदेश थी। अन्त में इस कांफ्रेंस में टर्की की मांग को स्वीकार करके उक्त घाटी पर टर्की का अधिकार मान लिया गया। प्रतिबन्धों के कारण रुष्ट होने से इटली ने इस कांफ्रेंस में भाग नहीं लिया था। किन्तु कांफ्रेंस के समाप्त होने पर फरवरी १९३७ के आरम्भ में काउंट चानो और कमाल अतातुर्क में बातचीत हुई; जिससे इटली ने भी डारडेनेल्स पैक्ट को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार इटली की टर्की के साथ भी घनिष्ट मित्रता हो गई।

शस्त्रीकरण की होड़ और इटली

यद्यपि वरसाई की सन्धि के बाद से ही राजनीतिक संसार किसी अनिष्ट की आशंका कर रहा था, किन्तु सन् १९३६ में इटली द्वारा ऐबीसीनिया की विजय तथा जर्मन जापान पैक्ट से तो सारे संसार में शस्त्रास्त्रों की वृद्धि की होड़ सी लग गई।

इस समय तक फ्रांस, रूस, जर्मनी और इटली को ही शस्त्र-वृद्धि में अग्रसर समझा जाता था, किन्तु १४ नवम्बर को आस्ट्रिया, हंगैरी और इटली की कान्फ्रेंस की समाप्ति के अन्त में घोषणा की गई कि आस्ट्रिया और हंगैरी को भी शस्त्रों से फिर सुरक्षित होने का अधिकार है।

यूरोप के राज्यों में शस्त्रास्त्रों की वृद्धि के विषय में ब्रिटेन और संयुक्तराज्य अमेरिका अभी तक बहुत गम्भीर बने हुए थे। किन्तु इस समय की विभिन्न राष्ट्रों की सैनिक तयारियों से वह भी घबरा उठे और उन्होंने शस्त्रास्त्रों की वृद्धि करना आरंभ कर दिया। नवम्बर १९३६ से इन दोनों देशों ने भी अपने २ सैनिक व्यय को बढ़ाना आरंभ कर दिया। ब्रिटेन की पार्लमेंट में तो इस बार एक विचित्र दृश्य देखने में आया। पार्लमेंट में तीन माह के अन्दर सेना का पूरक बजट लगभग तीन बार उपस्थित किया गया और तब भी ब्रिटेन का मन नहीं भरा।

यद्यपि २ जनवरी १९३७ को इटली और इंगलैण्ड में भूमध्य-सागर के संबन्ध में सन्धि हो गई थी, तौ भी ब्रिटेन की इस शस्त्रवृद्धि से इटली चौकन्ना हो गया। उसने २२ फरवरी को घोषणा करके १९०० और १९०४ ई० को पैदा हुए ५ प्रकार के १० लाख रंगरूटों को युद्ध के लिए कभी भी बुलाये जाने पर तयार रहने की आज्ञा दी। २३ फरवरी को रोम की बिजली को काट कर उसके ऊपर हवाई आक्रमण करके उसका मुकाबला करने का अभ्यास किया गया। ता० २ मार्च को फासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल

ने इटली की सैनिक तयारियों के विषय में विस्तृत योजना बना कर १८ से ५५ वर्ष तक के सब योग्य और सक्षम पुरुषों को अनिवार्य रूप से सेना में भरती करने का निश्चय किया।

फ़ासिस्ट ग्रैण्ड कौंसिल इटली की जन्मसंख्या का मान बढ़ाने का सदा ही यत्न करती रहती है। वहां १६२६ से बच्चों की जन्म संख्या बढ़ाने के लिये दस लाख लीरा खर्च किया जा चुका है। इस रकम से बच्चों की उत्पत्ति बढ़ाने वालों को आर्थिक सहायता दी जाती है।

सन् १९१३ में सारे संसार का सैनिक व्यय ८३ करोड़, १० लाख पौंड था। वही १६२८-२९ में १३३ करोड़ ३० लाख हो गया। सन् १९३५ में यह व्यय २६१ करोड़ ६० लाख हो गया। सन् १९२८ की अपेक्षा अब तक भिन्न २ देशों का सैनिक व्यय निम्न प्रकार बढ़ चुका है—

जापान १०० सैंकड़ा, फ्रांस ६८ सैंकड़ा, इंगलैण्ड ३९ सैंकड़ा और अमेरीका ३८ सैंकड़ा। रूस का सैनिक व्यय तो पहिले से १६ गुना बढ़ गया है। आज जर्मनी और इटली को सैनिक शासन का पुजारी बतलाया जाता है। किन्तु वर्तमान परिस्थिति और उपरोक्त अंकों से पता चलता है कि बदनाम चाहे जिसे किया जावे, कम कोई नहीं है। लङ्का में सब बावन गज के ही होते हैं।

फ्रांस के सेना मंत्री ने चैम्बर में फरवरी १९३७ के आरंभ में स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि 'रूस के बाद आकाश सेना में दूसरा स्थान फ्रांस का है।' फ्रांस अपने हवाई जहाजों को जर्मनी

से अच्छे समझता है। फ्रांस का कहना है कि वह जर्मनी के १० लाख नौजवानों की सेना के विरुद्ध युद्ध की तयारियां कर रहा है।

वाशिंगटन का ११ जून का समाचार था की यदि आज संसारव्यापी महायुद्ध छिड़ जावे तो ४८ देशों के साढ़े ५ करोड़ सैनिक युद्ध करने को तयार हैं। उक्त समाचार के अनुसार चीन के दस लाख सैनिकों के अतिरिक्त शेष संसार के कुल सैनिकों की संख्या ५४४१२६२८ है।

संसार में रूस की सेना सब से बड़ी है। उस के पास कुल १ करोड ९४ लाख ६० हज़ार सैनिक हैं, जिन में १५ लाख ४५ हज़ार स्थिर सेना है। इटली का नम्बर दूसरा है। उसके पास ६२९४३९५ शिक्षित सैनिक हैं, जिन में से१३३१२०० स्थिर सेना है। स्थिर सेना की दृष्टि से ब्रिटिश साम्राज्य का पांचवां स्थान हे, क्योंकि उस के पास कुल ३८४७८० सैनिक ही हैं। सब से कम सैनिक स्वीजर्लैंड और कोस्टारिका में हैं। स्वीजर्लैंएड में कुल ३०९ और कोस्टारिका में केवल ७३० सैनिक हैं। फिर भी स्वीजर्लैंएड में कुल छै लाख शिक्षित सैनिक हैं। अमरीका की स्थिर सेना में तारीख १ जुलाई १९३७ को एक लाख ६५ हज़ार सैनिक थे।

उत्तरी चीन में नई सरकार

सन् १९३७ का दिसम्बर मास अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अंदर उतार-चढ़ाव के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा। इसी मास में इटली ने राष्ट्रसंघ से अस्तीफ़ा दिया। इसी मास में जापान ने चीन के प्रजातंत्र की पीठ तोड़ कर उसकी राजधानी नानकिंग को हस्तगत करके उत्तरी चीन में एक नये प्रजातंत्र की स्थापना कर दी। जापान ने १२ दिसम्बर को नानकिंग पर अधिकार करके तारीख १४ को पीपींग का नाम बदल कर पुनः पेकिंग कर दिया। इसी दिन पेकिंग में उत्तरी चीन के नये प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना की गई।

मध्य यूरोप में नई दल बन्दियां

६ नवम्बर को इटली, जर्मनी और जापान का गुट बन जाने से यूरोप में एक दम सनसनी फैल गई। नवम्बर के अन्त में इंगलैण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ लार्ड हैलिफैक्स (भूतपूर्व लार्ड इरवन) ने जर्मनी जाकर हर हिटलर तथा वहां के अन्य राजनीतिज्ञों से भेंट की। कहा जाता है कि इस भेंट में जर्मनी ने अपनी उपनिवेशों की मांग को जोरशोर से उपस्थित करके प्रस्ताव किया की यदि उसको मध्य यूरोप में चाहे जो करने की छूट दे दी जावे तो वह दस बर्ष तक अपने उपनिवेशों को न मांगेगा।

लार्ड हैलिफैक्स ने इस वार्तालाप को इंगलैण्ड और फ्रांस के मंत्रियों के सन्मुख सम्मिलित रूप से उपस्थित किया। इस मीटिंग के अन्त में दोनों देशों ने यह स्वीकार किया कि जर्मनी का उपनिवेशों का दावा असंगत नहीं है।

इस कांफ्रेंस के रुख से फ्रांस की चिन्ता बढ़ गई। अब उसको यह आवश्यकता प्रतीत होने लगी कि उसको भी यूरोप में नये २ साथी तलाश करने चाहियें। फलस्वरूप फ्रांस के परराष्ट्र मंत्री मोशिये डैल्बस ६ दिसम्बर को यूरोप की यात्रा पर रवाना।

हुए। वह पोलैण्ड, रूमानिया, यूगोस्लैविया, जेकोस्लोवाकिया और हंगरी जाकर ता० १६ दिसम्बर को वापिस पेरिस आये। इन सभी देशों में उनका खूब स्वागत किया गया। इस यात्रा के फलस्वरूप फ्रांस की इन देशों के साथ अच्छी मित्रता हो गई।

यूगोस्लैविया के प्रधानमंत्री डाक्टर स्टोयाडिनौविच ने इटली के अतिरिक्त फ्रांस को भी अपनी मित्रता का विश्वास दिलाया और कहा कि वह रूस विरोधी किसी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं करेगा।

इटली का राष्ट्रसंघ से अस्तीफा

ऐबीसीनिया युद्ध के समय राष्ट्रसंघ द्वारा बहिष्कार की आज्ञा सिन्योर मुसोलिनी के हृदय मे अभी तक चुभ रही है। ऐबीसीनिया पर इटली का आधिपत्य स्वीकार करना इस समय इटली की मित्रता का प्रमाण माना जा रहा है। उधर १० दिसम्बर को ड्यूक आफ़ असोटा को जेनेरल ग्रैज़ियानी के स्थान में ऐबीसीनिया का वाएसराय बनाया गया। कहा जाता है कि जो राष्ट्र ऐबीसीनिया में इटली के साम्राज्य को स्वीकार नही करेंगे इटली उनसे राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ देगा।

११ दिसम्बर को सिन्योर मुसोलिनी ने घोषणा की कि 'आज से इटली राष्ट्रसंघ से प्रथक् होता है।' यहां यह बात स्मरण रखने की है कि मई १६३६ से ही इटली राष्ट्रसंघ की किसी बैठक में सम्मिलित नहीं हो रहा था। यह सन्देह किया जाता है कि जर्मनी और जापान के दबाव पर ही इटली ने राष्ट्रसंघ से प्रथक् होने का निश्चय किया है। इटली ने राष्ट्रसंघ के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूरसंघ से भी अस्तीफ़ा दे दिया।

किन्तु इटली के राष्ट्रसंघ से अस्तीफ़ा दे देने पर भी आयर्लैण्ड के मिस्टर डे वेलेरा ने तारीख २४ दिसम्बर को ऐबीसीनिया में इटली की सरकार को स्वीकार कर लिया।

सहायतार्थ प्रयोग किये हुए ग्रन्थों की सूची

1. Europe since 1815 by Charles Downer Hazen.
2. A History of Europe by H. A. L. Fisher.
3. Europe in the Nineteenth and Twentieth Centuries by A. J. Grant and H.W.V. Temperley.
4. Parliamentary Reports from Imperial Library, Calcutta and Imperial Secretariat Library, New Delhi.
5. EncyclopeadiaBrittanica.
6. Abyssinia on the Eve by Ladislas Farago.
7. Eyewitness in Abyssinia by Herbert Matthews
8. Full text of the Treaty of Versailles.
9. My Autobiography by Benito Mussolini.
10. The War in Abyssinia by Edward Hamilton.
11. Italy, Abyssinia and the League by Luigi Villari.
12. Mussolini and the Cult of Italian Youth by P. N. Roy.
13. The Corporate State by Benito Mussolini.
14. How the Italian Infantry fought on the Isonzo Front by Ambrogio Bollati.
15. Foreign testimony on the Italian War 1915-1918 by Benito Mussolini.
16. Memorandum of Italian Government on the Situation in Abyssinia to League of Nations.
17. Protection of Maternity and Child Welfare in Italy by Pietro Corsi.

18. The Doctrine of Fascism by Benito Mussolini.
19. The Youth Movement in Italy by D. S. Piccoli.
20. Social Welfare in Italy by Fernando Gozzetti.
21. Daily Mail Year Book 1937.
22. Hindustan Year Book 1937.
23. Statesman Year Book 1936 & 1937.
24. फासिज्म, लेखक रघुनाथसिंह।
25. भूगोल, ऐबीसीनिया अंक।
26. Then and Now by Gilbert Murray.
27. Inside Europe by John Gunther,
 22nd Impression, May 1937.
28. Land Reclamation in Italy,
 by Cesare Longo bardi, London 1936.
29. Mussolini and the New Italy,
 by Alexandet Robertson.
30. Caesar in Abyssinia by G. L. Steer.
File of the Times, London.
 ,, Political Quarterly, London.
 ,, Round Table, London.
 ,, Asiatic Review, London.
 ,, Foreign Affairs, New York.
 ,, Spectator, London.
 ,, Overseas Monthly, London.
 ,, News in Brief, Berlin.
 ,, Statesman, Delhi,
 ,, Hindustan Times, Delhi.
 ,, हिन्दुस्तान, देहली।

कला पुस्तक माला के नियम

१—इस पुस्तक माला में कुल १२ ग्रन्थों का प्रकाशन होगा और प्रत्येक ग्रन्थ में लगभग ३५० पृष्ठ तथा १२ हाफ़टोन।ब्लाक कपड़े की पक्की जिल्द में होंगे।

२—इसके प्रत्येक ग्रन्थ का मूल्य ३) रु० होगा।

३—॥) प्रवेश शुल्क जमा करके स्थायी ग्राहक बनने वाले महानुभावों को इस पुस्तक माला की प्रत्येक पुस्तक पौने मूल्य में दी जावेगी।

४—जो स्थायी ग्राहक हमारी प्रत्येक ग्रन्थ के प्रकाशन पर भेजी जाने वाली सूचना के साथ प्रत्येक पुस्तक के लिये २।) मनीआर्डर या डाक टिकटों द्वारा अग्रिम भेज देंगे, उन्हें डाक व्यय कुछ नहीं देना होगा।

५—जो ग्राहक २४॥) मनीआर्डर या चेक द्वारा एक मुश्त भेज देंगे उन्हें बारहों ग्रन्थ बिना डाक व्यय के घर बैठे मिलते रहेंगे। किन्तु यह रियायत केवल १ मार्च १९३८ ई० तक ग्राहक बनने वाले सज्जनों को ही दी जावेगी।

६—प्रकाशक को ग्रन्थों के क्रम तथा नामों आदि में लेखक की सम्मति से परिवर्तन करने का अधिकार होगा।

मैनेजर—भारती साहित्य मन्दिर, चांदनी चौक, देहली।

प्रतिक्रियागामी शक्तियों का एक विशेष प्रतिनिधि है। इस लिये उसको 'महान्' कहना अनुचित है। वह हमारे लिये आदर्श नहीं हो सकता।

"यह जान कर मुझको कुछ संतोष हुआ कि शास्त्री जी ने हिटलर को एक महान् पुरुष के रूप में पेश करते हुए भी उसके दोषों को छिपाने का प्रयत्न नहीं किया है। पुस्तक के लिखने में अच्छा परिश्रम किया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्यार्थियों के लिये पुस्तक उपयोगी है। विशेष कर जर्मनी की राजनीति को समझने में उससे अच्छी सहायता मिलेगी।

नरेन्द्रदेव"

"मदरास का प्रसिद्ध कांग्रेसी पत्र 'हिन्दू' लिखता है:—

"...To Indians today the struggle of a brave and virile nation to redeem itself will surely be an interesting study. The present book, giving ample information about Hitler and his contribution to the struggle is bound to be of interest,"

लाहौर का प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र 'ट्रिब्यून'—

"Mr. Shastri's book is a welcome publication for all Hindi-knowing persons. It is one of the best and most thorough books in Hindi on the subject...

While, taking nothing for granted, the au-

thor takes his start from the earliest period of German history. He does not leave out a single notable event. Thus the book has acquired the rare merit of satisfying the beginner, as well as, the most well read student of international politics.

The language of the book is chaste Hindi, untouched by pedantic expressions or difficult Sanskrit words."

काशी का प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र 'आज'—

"......हिटलर के इन गुणावगुणों का और जर्मनी की समस्या के साथ यूरोप की समस्या को समझाने का प्रशंसनीय प्रयत्न पण्डित चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया है। आज जर्मनी और इटली में संसार का 'इतिहास' बनाया जा रहा है। इसे जो देखना और समझना चाहते हैं, उन्हें यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।"

विश्वमित्र कलकत्ता—

'...लेखक ने जर्मनी-सम्बन्धी प्राय: सभी प्रश्नों पर अच्छे ढंग से विचार किया है। हिन्दी में इस प्रकार की राजनीतिक पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। अत: लेखक का प्रयत्न प्रशंसनीय है।'

इस विषय की हिन्दी में इतनी अच्छी यह पहली ही पुस्तक है।"

'लोकमान्य' कलकत्ता—

"अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का ज्ञान रखने वाले छात्रों के

लिये पुस्तक बड़े काम की होगी । शास्त्री जी ने हिन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय विषय की यह किताब देकर भाषा के एक अंग की पूर्ति में अच्छी सहायता की है । एतदर्थ उनको धन्यवाद है ।"

'नवयुग' देहली—

"...जो लोग हिटलर को समझना चाहते हैं उनको इस पुस्तक... से सहायता अवश्य मिलेगी । ......नाज़ीवाद के प्रवर्तकों के मुंह से उसकी प्रशंसा सुनना इधर उधर के परिचय प्राप्त करने की अपेक्षा कहीं अच्छा है । इसलिये हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि वह इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें ।"

'अभ्युदय' प्रयाग—

"पुस्तक में हिटलर की जीवनी के अतिरिक्त जर्मनी के अतीत के इतिहास, उसकी उन्नति और वर्तमान शासनव्यवस्था पर भी दृष्टि डाली गई है और उसके अब तक के कार्य दिये गए हैं । पुस्तक को उपयोगी बनाने में लेखक ने काफी परिश्रम किया है और इसमें उन्हें सफलता भी मिली है । पुस्तक उपादेय है ।"

ब्रह्मा देश की राजधानी रङ्गून का हिन्दी दैनिक बरमा समाचार—

"जब भारत का राष्ट्रीय संग्राम अखिल विश्व से सम्बन्ध स्थापित करने जा रहा हो और हिन्दी राष्ट्र भाषा हो रही हो, उस समय विदेश विषयक-साहित्य को कमी हमारे लिये लज्जा और हानि का विषय हो सकती है । इस पन्थ में आचार्य जी का कलम उठाना स्तुत्य और युवकों को उत्साहित करने वाला होगा ।"

संसार प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रोफ़ेसर विनयकुमार सरकार--

'As a study in contemporary history Pandit Chandra Shekhar Shastri's **"Hitler the Great"** has appeared to me to be a very fine contribution to Hindi Literature. The author has analysed the special economic and constitutional features of the present regime and has placed them all in the perspective of the post war developments in Germany and the world. The presentation is lucid and the author's historical view-point is noteworthy'.

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासलेखक **मिश्र बन्धुओं** में से रायबहादुर **पं० शुकदेव बिहारी मिश्र**--

"हिन्दी में इस ऊंचे दर्जे के ग्रन्थ कम देखने में आते हैं। बहुत ही उपादेय है। हम शास्त्री जी को ऐसा उच्च ग्रन्थ लिखने पर बधाई देते हैं। ऐसे ग्रन्थों से हिन्दी का शिर ऊंचा होता है।"

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ बैरिस्टर स्वर्गीय **श्री काशीप्रशाद जायसवाल**--

"पंडित चन्द्रशेखर शास्त्री जी की कला पुस्तक माला उपयोगी है। इस लिये कि दुनिया में इस समय क्या हो रहा है, जिससे बड़े २ देशों में ऐसे उलट फेर हो रहे हैं कि जैसे रेडियो का निकलना और आधुनिक आकाशयान का चलाना। ऐसी तेजी से संसार बदल रहा है कि पलट कर हमको प्रगति की लीक

नहीं दीख पड़ती। ऐसी दशा में हमारे देशवासियों को उनका बराबर पता रहना वेद और उपनिषद् के ज्ञान की तरह ऐहिक उपनिषद् द्वारा बाध्य है।

"इस कारण मैं शास्त्री जी की योजना से प्रसन्न हूं। ऐसे ग्रंथ जितने निकलें और हिन्दी जनता इनको जितने चाव से पढ़े, मैं उतना ही देश का अच्छा भाग्य मानूंगा। लाला हरदयाल का ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। नए विचार भरे हुए हैं। इसी तरह योरुप के खास २ देशभक्त, जैसे हिटलर और मुसोलिनी, जो अपने देश के भाग्य विधाता हैं—उनका हाल जानना बहुत आवश्यक है। शास्त्री जी उन सब का चरित्र देश के सामने उपस्थित कर रहे हैं, यह बड़ी बात है।"

संसार के प्रसिद्ध विद्वान् **महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज** M. A. भू. पू. प्रिंसिपल गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस—

"Pandit Chandra Shekhar's presentation is lucid and interesting and is calculated to be highly useful to those, for whom it is intended".

देहली रेडियो स्टेशन का ब्राडकास्ट—

"...लेखक ने काफी अध्ययन और संकलन के बाद पुस्तक लिखी है। सुधार और शिक्षा की दृष्टि से ऐसी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है, जिनके द्वारा केवल हिन्दी जानने वाले नर नारियों को संसार के महान् राष्ट्रों के आपस में सम्बन्ध और

उन्नति की दौड़ का पता रहे ।...जर्मनी पन्द्रह वर्ष तक क्यों दासता के बन्धन में जकड़ा हुआ पड़ा रहा और किस प्रकार उसने अपनी खोई शक्ति पाई, ये सब बातें भारत जैसे उठते राष्ट्र की उन्नति के लिये बहुत हितकारी हैं......"

बा० सुमत प्रसाद जैन M. A. L. L. B. ऐडवोकेट नगीना—

"आपका ग्रन्थ......बहुत अच्छा और शिक्षाप्रद है। एम० ए० में राजनीति मेरा विषय था और जर्मनी के विकास का अध्ययन मैंने विशेषतया किया था। आपके ग्रन्थ ने मेरी जानकारी बहुत बढ़ाई है।"

पंडित रामनारायण मिश्र, हेडमास्टर सेंट्रल हिन्दू स्कूल बनारस—

"भारतवर्ष के नवयुवक, जो अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से जर्मनी का इतिहास समझना चाहते हैं, उनको इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत लाभ होगा। हिटलर के प्रभाव का रहस्य इससे अच्छी तरह मालूम हो जावेगा।"

प्रयाग का साहित्यिक पत्र "चांद" लिखता है:—

"संसार की वर्तमान राजनैतिक हलचल को समझने की इच्छा रखने वालों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।"

आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान **महात्मा नारायण स्वामी**—

"पुस्तक वास्तव में मूल्यवान् है। यह किसी भी देशवासी में उत्साह का संचार करने वाली और पुरुषार्थ की मात्रा बढ़ाने वाली है। इस पुस्तक से हिन्दी साहित्य में एक अच्छे ग्रन्थ का समावेश हुआ है। छपाई और गेट अप बहुत अच्छा है।"

कला पुस्तक माला का दूसरा ग्रंथ

आत्म निर्माण

अथवा

विश्वबन्धुत्व और बुद्धिवाद

(देशभक्त ला० हरदयाल के ग्रंथ Hints for Self-culture के पूर्वार्द्ध के आधार पर)

इस पुस्तक में राष्ट्रीयता को उलंघ कर विश्वबन्धुत्व और बुद्धिवाद (Rationalism) की शिक्षा दी गई है। इसके तीन खण्ड हैं—

बुद्धि निर्माण, शरीर निर्माण और ललित-रुचि निर्माण।

बुद्धि निर्माण में अनेक प्रकार के विज्ञानों तथा अन्य विद्याओं—गणित, तर्कशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, अकाशज विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, विज्ञान के इतिहास, विज्ञान के प्रारम्भिक सिद्धांत, इतिहास, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाज विज्ञान, भाषाओं, अन्तराष्ट्रीय भाषा अथवा विश्वभाषा और तुलनात्मक धर्म का वर्णन करते हुए उनके अध्ययन की विधि और बुद्धिवाद में उनके उपयोग का वर्णन किया गया है।

शरीर निर्माण में उत्तम स्वास्थ्य को प्राप्त करने की विधि और ललित-रुचि निर्माण में भिन्न २ ललित कलाओं—वास्तु-कला (Architecture), आलेख्यकला (Sculpture), चित्रकला, संगीतकला, वक्तृत्व कला, कवित्व कला और उनके बुद्धिवाद में उपयोग का वर्णन किया गया है।

वास्तव में इस पुस्तक को पढ़ कर आप सब प्रकार के

अन्धविश्वास तथा रूढ़िपन्थों को छोड़ कर प्रत्येक बात पर विशुद्ध वैज्ञानिक ढंग से विचार करना सीख जावेंगे।

४१६ पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य भी ३) रुपये ही है। साथ में कपड़े की पक्की जिल्द, ऐंटिक कागज़ और सुन्दर टाइटिल है।

कुछ बहुमूल्य सम्मतियां

सैनिक आगरा--

"प्रायः सभी पढ़े लिखे लोग चिरप्रसिद्ध क्रान्तिकारी लाला हरदयाल जी के नाम से परिचित होंगे। पर ऐसे अपेक्षाकृत कम ही होंगे जो उनकी विद्वत्ता और विचार-धारा की पर्याप्त जानकारी रखते हों। ऐसे दोनों ही तरह के लोगों के लिए 'आत्म-निर्माण' एक अभिनन्दनीय ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने लाला हरदयाल की अंग्रेजी पुस्तक Hints for Self Culture के पूर्वार्द्ध के आधार पर लिखा है। एक तरह से इसे उक्त पुस्तक का भाषान्तर ही समझना चाहिये। ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें मानव जीवन के सभी पहलुओं पर बुद्धिवाद (रेशनैलिज्म) के एक निश्चित दृष्टिकोण से विवेचन किया गया है। .... बौद्धिक भूख रखने वाले सभी जिज्ञासु नवयुवकों और प्रौढ़ स्त्री पुरुषों के लिये उक्त पुस्तक एक बढ़िया दावत प्रमाणित होगी।"

स्वराज्य खंडवा--

"इस पुस्तक में आत्म निर्माण की सामग्री का अच्छा चयन है। ... ... हिन्दी में अध्ययन का साहित्य बहुत कम है।

आशा है शास्त्री जी अपनी ग्रन्थ माला से इस कमी को पूरी करने की चेष्टा करेंगे।"

विश्वमित्र कलकत्ता—

"इस पुस्तक में लेखक ने ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, गणित, तर्क शास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र, भाषा विज्ञान, धर्म, वायु, जल, भोजन व्यायाम आदि अनेक विषयों पर प्रकाश डाला है। इस तरह लेखक ने एक ही पुस्तक में कितने ही विषयों का विवेचन किया है।··· पुस्तक की उपयोगिता में सन्देह नहीं किया जा सकता।"

देहली रेडियो स्टेशन का ब्राडकास्ट—

"ला० हरदयाल ने अन्धविश्वास के स्थान में जो तर्क और बुद्धि का प्रतिपादन किया है उसका सभी तरक्की पसन्द हलकों में स्वागत होना चाहिये। आज जब कि एक क़ौम दूसरी क़ौम को और एक फ़िरक़ा दूसरे फिरके को शक्रो शुबह की ही नहीं, बैर की नजर देखता है, तब ऐसे साहित्य की बहुत जरूरत है, जो हमारी आंखों पर पड़े पर्दे को हटाने में इमदाद दे सके। ला० हरदयाल के विचारों को अक्षरश: ठीक न मानते हुये भी मैं उनकी इस किताब की तारीफ किये बिना नहीं रह सकता।"

हिंदू मदरास—

"Dr Shastri's call to espouse the rationalistic attitude to life has about it an unmistakable ring of sincerity."

ट्रिब्यून लाहौर—

"Acharya Chandra Shekhar Shastri is a Hindi writer of repute. his first book "*Hilter Mahan*" was well received throughout the length and breadth of India. The author does not believe iu beating the old

track. He has, therefor, explored those avenues, which have hitherto been neglected by Hindi writers. .... The present book, though, it is in a sense technical, is essentlally a book of popular nature...................... The language of the book is chaste and dignified Hindi."

कला पुस्तक माला का तृतीय ग्रन्थ

चरित्र निर्माण

अथवा

भावी विश्वराज्य और उसकी नागरिकता

(देशभक्त ला० हरदयाल के ग्रंथ Hints for self Culture के उत्तरार्द्ध के आधार पर)

इस ग्रंथ में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के आधार पर मानव चरित्र के निर्माण करने के उपाय बतलाए गए हैं।

इसमें नागरिकों के व्यक्तिगत आचरणों के सिद्धान्तों और नैतिक उन्नति करने के उपायों को बतलाने के पश्चात् दूसरों के प्रति कर्तव्य पूर्ण नैतिक आचरण का वर्णन किया गया है।

इसमें व्यक्तिगत नीति शास्त्र का वर्णन करके देशीयनीति शास्त्र के वर्णन में एक केन्द्र वाले पांच वृत्तों (Five Concentric Circles)—कुटुम्ब, सम्बन्धियों, अपनी म्यूनीसीपैलिटी, अपने राष्ट्र और विश्वराज्य का वर्णन किया गया है। राष्ट्रीयता को

सामाजिक और असामाजिक दो भागों में विभक्त करके उसीके प्रकाश में विश्वराज्य के आदर्श को उपस्थित किया गया है। इसके पीछे का लगभग आधा ग्रन्थ भावी विश्वराज्य के वर्णन से भरा हुआ है।

विश्वराज्य के वर्णन में विश्व इतिहास, विश्व राजधानी, विश्व साहित्य, विश्व भाषा, विश्व यात्रा, विश्व समाज और विश्व दर्शनशास्त्र का प्रथक् २ वर्णन किया गया है।

इस प्रकार भावी विश्वराज्य की रूपरेखा का वर्णन करने के पश्चात् उसके अर्थशास्त्र का वर्णन करते हुए भविष्य की उत्पत्ति, खपत और बटवारे के सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है।

इसके अन्तिम अध्याय का नाम राजनीति है। उसमें नियमित राजतन्त्र प्रणाली (Limited Monarchy),अनियमित राजतन्त्र प्रणाली (Absolute Monarchy), अल्पसत्तात्मक शासन प्रणाली (Oligarchy), पार्लमेंट प्रणाली, बहुमत प्रणाली आदि सभी शासनप्रणालियों के गुण दोषों की आलोचना करके जनतन्त्र शासनप्रणाली (Democracy) पर विशेष बल दिया गया है।

स्वतन्त्रता का आदर्श बतला कर समानता के वर्णन में शारीरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक और आचरण की समानता का वर्णन किया गया है।

फिर संसार भर के मनुष्यों के लिये भाईचारे के कर्तव्य तथा विश्वराज्य के लिए आपके कर्तव्य को बतला कर ग्रंथ को समाप्त किया गया है।

कला पुस्तक माला का तृतीय ग्रंथ

शरीर विज्ञान

लेखक—आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

इस ग्रन्थ में विकासवाद के अनुसार जीव की शरीर रचना के इतिहास को देते हुए जीवन की वैज्ञानिक परिभाषा और पृथ्वी के प्रारम्भिक प्राणि-वृक्षों का वर्णन किया गया है। क्यों कि पृथ्वी के आरम्भिक प्राणि वृक्ष ही थे और वह भी पहिले जल में उत्पन्न हुए थे। फिर प्राणियों के जल से स्थल पर आने का वर्णन करके जीवों द्वारा शरीर की रचना का वर्णन किया गया है। भिन्न-भिन्न प्रकार के सूक्ष्मजीवों अथवा कीटाणुओं (Microbes) का वर्णन करके शरीर में जीव के प्रधान स्थान—सेल (Cell) के केन्द्र का वर्णन किया गया है। फिर रक्त के लाल सेल, श्वेत सेल, हृदय और उसके कार्य के साथ २ शरीर की रक्तावर्त (Blood circulation) प्रणाली का पूर्ण वर्णन कर दिया गया है। इसके पश्चात शरीर के श्वास संस्थान के वर्णन में जीवन क्रिया और फुप्फुसों (Lungs) का वर्णन करके मनुष्य शरीर की त्वचा का वर्णन किया गया है।

फिर शरीर की रचना होने की विधि का वर्णन करके उसके प्रथक् २ अङ्गों की रचना और कार्य-विधि का वर्णन किया गया है।

इस विषय में शिर और हाथ पैर, मांसपेशियों और उनकी संचालक नाड़ियों का वर्णन करके पाचन-संस्थान के वर्णन में मुख और दांतों का वर्णन किया गया है।

इस ग्रन्थ में भोजन का वर्णन अत्यन्त विस्तार से किया गया है। भोजन पचाने की विधि, भोजन और उसके उपयोग, प्रकृति

के आश्चर्य जनक भोजन, रोटी और शराब का प्रथक् २ विस्तृत वर्णन किया गया है।

इसके पश्चात् शरीर के नाड़ी-संस्थान के वर्णन में शरीर के नाड़ीचक्र और मस्तिष्क के रहस्य को बतलाया गया है। मस्तिष्क के बांए और दाहिने भाग की रचना का अत्यन्त विस्तार से वर्णन किया गया है।

फिर शरीर की चुल्लिका, उपचुल्लिका आदि आश्चर्य जनक ग्रन्थियों (Glands) का वर्णन करके कर्ण, स्वरयन्त्र, आंख,नाक और जिव्हा की रचना का प्रथक् २ विस्तार से वर्णन किया गया है।

अन्त में अन्त:करण का वर्णन करके अन्त:करण की मुख्य २ वृत्तियों का भी संक्षिप्त वर्णन कर दिया गया है।

इस प्रकार यह ग्रंथ शरीर, मन और मस्तिष्क की रचना का आदि से लेकर इति तक का इतिहास भी है।

इस ग्रंथ को पढ़ कर आप निश्चय से अपने स्वास्थ्य के विषय में अधिक सतर्क रह कर उसकी अच्छी उन्नति कर सकेंगे। स्थान २ पर इस ग्रंथ में भोजन आदि के परिवर्तन से निरोग रहने के प्राकृतिक नियम भी बतलाए गए हैं। प्राय: सभी विषयों को चित्रों से समझाया गया है।

'कला पुस्तकमाला' की प्रत्यक पुस्तक के समान लगभग ४२५ पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य भी ३) ही है। इसमें अनेक चित्र भी हैं। साथ में कपड़े की पक्की जिल्द और तिरंगा टाइटिल भी है।